राजस्थानी लोक गाथा कोश

लेखक
डा कृष्णबिहारी सहल
अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
सीकर (राज)

राजस्थानी साहित्य संस्थान, जोधपुर

राजस्थानी साहित्य संस्थान
यू आई टी के पास भगवती औषधशाला के सामने
जोधपुर (राज)

ISBN 81 900425 6 4

मूल्य एक सौ पचहत्तर रुपये मात्र

प्रथम संस्करण 1996

मुद्रक
प्रिंटिंग हाउस
जालोरी गेट के अंदर
जोधपुर ☎ 27708

Rajasthani Lok Gatha Kosh By Dr Krishna Bihari Sahal

प्राक्कथन

लोकगाथाए विश्व की सभी भाषाओ मे प्रचलित हैं। वे लोकमानस म यक्ति जातीय गौरव की वे अमर गाथाए है जो एक बार किसी व्यक्ति या जन समूह की वाणी मे मुखरित होकर परम्परया विकसित होती चली हैं काल प्रवाह म पडकर जिनम परिवतन परिवद्धन होता चला आया है और उसके परिणामस्वरूप आकार और वणनीयता मे एक ही गाथा क भिन्न रूप या सस्करण भिन्न क्षेत्रो या उनके गायक समूहों म प्रचलित हो गये हैं।

महाराष्ट्र से लेकर उत्तर भारत के विस्तृत क्षेत्र म प्रचलित य बहुसख्य लोकगाथाए थाडे बहुत उच्चारण भेद से प्राय पवाडे' के नाम से ख्यात है। लोक मे ये गेय कथात्मक गाथाए इसी नाम से परिचित हैं। आज भी लोकचित्त को अपने सम्मोहन म बाध लेने की शक्ति रखने वाले इन पवाडो की राजस्थान म बडी समद्ध परम्परा है। यह परम्परा केवल वीरगाथात्मक या प्रेमगाथात्मक अथवा रोमाच-कथात्मक पवाडों तक ही सीमित नही ह जसा कि वह कई अ य प्रदेशो म है, बल्कि राजस्थान म पवाडा की एक अ य परम्परा निवृत्तिकथात्मक परम्परा भी प्रचलित है।

कवि, आलोचक शोधकर्ता और तटस्थ पत्रिका के यशस्वी सम्पादक डा कृष्णबिहारी सहल ने अपनी वतमान पुस्तक राजस्थानी लोकगाथा कोश मे राजस्थानी लोकगाथाओ के वर्गीकरण म न केवल उक्त चारों प्रकारो का सन्निवेश और उनका स्वरूप विश्लेषण किया है अपितु निवृत्ति कथात्मक लोकगाथाओ को तक पूवक उ हें निर्वेद कथात्मक' लोकगाथाए मानने का खण्डन भी किया है। इसी प्रकार उ होंने इ ह 'योग कथात्मक' लोकगाथा कहे जाने का भी सविवेक निषेध किया है।

डा सहल ने पुस्तक क पहले ही प्रकरण म राजस्थानी लोकगाथाओ के उक्त चारो प्रकारो की कुल 15 लोकगाथाओ की तुलनात्मक तालिका प्रस्तुत करके उनके एतिहासिक अथवा काल्पनिक स्वरूप ज्ञात अज्ञात रचनाकाल गायको की जाति गायन के समय प्रयुक्त वाद्य य त्रा के नाम तथा प्रत्येक लोकगाथा के गायन क्षेत्र का हस्तामलकवत परिचय करा दिया है जो बहुत उपयोगी है। इसी क्रम मे डा सहल न लोकगाथाओ की सामा य प्रवृत्तियो या उनके समान तत्वो पर भी विचार किया है, कि तु लोकगाथाओ के अ य विचारका के द्वारा निर्दशित दस तत्वो की पुनरावत्ति करने के फेर मे न पडकर उ होंने अपनी स्वत त्र मेधा स पाच तत्वो का स्वीकार करते हुए उनका विशद विवेचन प्रस्तुत किया है। ये तत्व हैं 1 सदिग्ध ऐतिहासिकता 2 अलौकिक घटनाओ की प्रधानता 3 कथानको मे यात्राए एव बाधाए 4 शरणागत रक्षा एव वचन निर्वाह तथा 5 युद्धो की अधिकता। अन्तिम विचारणीय तत्व रहा है लोकगाथाओ के पात्र। इ ह अलौकिक मानव तथा पशु पक्षी-ज तु पात्र नामक प्रधान श्रेणिओ मे रखते हुए लेखक न इनके भी यथासभव उप विभाग किए हैं और राजस्थानी लोकगाथाओ के पात्रो का उन भिन्न वर्गों म

आमुख

राजस्थानी लोक साहित्य के अध्ययन और रसास्वादन की ओर प्रारम्भ से ही मेरी रुचि रही है। एम ए की परीक्षा देते समय भी जब मेरे समक्ष शोध निबन्ध का विषय चुनने का प्रश्न उपस्थित हुआ तो मेरा ध्यान लोक साहित्य के विविध अंग-उपांगों की ओर गया और मैंने राजस्थान के सुप्रसिद्ध जातीय काव्य 'ढोला मारू रा दूहा' को अपने शोध निबन्ध का विषय बनाया। इस शोध निबन्ध के प्रकाशन पर विद्वानों से मुझे बहुत प्रोत्साहन मिला तथा लोक साहित्य पर आगे कार्य करने की प्रेरणा भी मिली।

एक बार मुझे स्व श्री राहुल सांस्कृत्यायन के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उनसे वार्तालाप के दौरान मैंने कहा कि मैं राजस्थानी पवाडो पर शोध कार्य करना चाहता हूँ। स्व राहुल जी ने सुझाव दिया कि पवाडा साहित्य तो अत्यन्त विशाल है। सभी पवाडो पर कार्य करने का अर्थ यह होता है कि एक भी पवाडे का अंतरंग एवं विस्तृत अध्ययन नहीं हो पाता। अच्छा हो कोई एक पवाडा ही शोध कार्य के लिए चुना जाय। यह सुझाव मुझे बहुत पसन्द आया।

स्व राहुलजी के सुझाव पर मेरे मन में एक ही लोक गाथा पर शोध कार्य करने की इच्छा हुई किन्तु उस इच्छा को कार्य रूप में परिणत करने की प्रेरणा लोक साहित्य के मर्मी विद्वान डा सत्येन्द्र से प्राप्त हुई। उन्होंने मुझे 'निहालदे सुलतान' लोक गाथा पर कार्य करने का सुझाव दिया। इस लोक गाथा के सन्दर्भ मे विभिन्न अंचलो का भ्रमण करते हुए मुझे राजस्थान की सारी लोक गाथाओं को सुनने का अवसर मिला—जिनके कथानक मैंने सरल हिन्दी मे रूपांतरित कर लिये। प्रस्तुत ग्रंथ मे मैंने राजस्थान की समस्त लोक गाथाओं के रूप, कथानक पात्रों का तुलनात्मक दृष्टि से विशद विवेचन किया है। इस अध्ययन के समस्त विवेचन में मैंने किसी प्रकार की हठवादिता या पूर्वाग्रह से अपने आपको बाधित नहीं किया है तथा सभी तत्वों के विश्लेषण में मैंने तटस्थ रहकर निर्णयों पर पहुंचने की चेष्टा की है। यह भी कह देना मैं उचित समझता हूँ कि अपने विचारों को मैंने बड़ी स्पष्टता तथा निर्भीकता से रखा है तथा भारतीय एवं विदेशी विद्वानों से मेरा यत्र तत्र मत-भेद भी रहा है पर वहां भी किसी प्रकार के अनुचित मताग्रह का आश्रय मैंने नहीं लिया है। किन्तु यहां पर उस मौलिकता का आख्यान कर मैं आत्म श्लाघा दोष का भागी नहीं बनना चाहता।

श्रद्धेय गुरुवर डा आनन्द प्रकाश जी दीक्षित ने 'राजस्थानी लोकगाथा कोश' का प्राक्कथन लिखने की जो महती कृपा की है उसके लिए मैं उनका अत्यन्त अनुगृहीत हूँ। सहधर्मिणी श्रीमती सन्तोष सहल के लिए क्या लिखूं जिन्होंने मेरे साहि

राजस्थानी लोक गाथा स्वरूप और विश्लेषण

लोक गाथा के स्वरूप के सम्बध म यद्यपि विद्वाना म मतभेद है तथापि लगभग सभी विद्वान् यह स्वीकार करते है कि लोक गाथा मे गीति तत्त्व एव कथानक का होना अपरिहार्य है। लोक गाथाओ क वर्गीकरण को लेकर पाश्चात्य एव भारतीय विद्वानो न अपने अपने मत व्यक्त किय हैं कि तु भारतीय विद्वानो ने प्राय पाश्चात्य विद्वानो द्वारा किए गय वर्गीकरण को ही स्वीकार किया है। यह वर्गीकरण इस प्रकार है—

1 परम्परागत पवाडे
2 चारणी पवाडे
3 प्रकाशित पवाडे (आलिखित पवाडे)
4 साहित्यिक पवाडे

परम्परागत पवाडे—शताब्दियो स लोक जीवन मे मौखिक परम्परा द्वारा प्रचारित पवाडे (लोक गाथा) परम्परागत पवाडे कहलाते है। इन पवाडा के रच यिता तथा रचना काल दोनो ही सदिग्ध होते है तथा समय का प्रभाव इनके रूप और आकार दानो पर पडता है। परम्परागत पवाडा को जनप्रिय (पापुलर बलेडस) पवाडो की सज्ञा से भी अभिहित किया जाता है। ये पवाडे वश परम्परा द्वारा मौखिक रूप म सुरक्षित रह सके हैं।

चारणी पवाडे—उन पवाडा को चारणी पवाडो के नाम स पुकारा जाता है जो चारणो द्वारा गाये जाते हैं। चारणो द्वारा पवाडे गान की परम्परा मध्ययुग म इगलण्ड मे प्रचलित थी तथा चारण हाप नामक वाद्य य त्र पर इस प्रकार के पवाडो को गाया करते थ। इस कोटि के पवाडा का सम्ब ध किसी न किसी रचना कार स होता है इसलिए इनम रचनाकार के व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब भी झलकता है तथा का य सौ दय के आडम्बर का आभास भी मिलता है।

आलिखित पवाडे—काला तर म जब मुद्रण कला का प्रचलन हो गया तो कुछ यवसायी पवाडे गाने वाले लोगो ने प्रचलित लोक गाथाओ के आलेखन बडे-बडे कागजो पर प्रकाशित करा के बेचन शुरू कर दिये। इन आलिखित पवाडो के विषय प्राय एतिहासिक हुआ करते थे इनके रचयिताओ के नामो का उल्लेख भी इन कागजो पर मिलता था। 17वी तथा 18वी शताब्दी म इगलण्ड मे इन पवाडा का अत्यधिक प्रचलन था। कही कही इन पवाडो का नाम विक्रेय पवाडे (Stall Ballads) भी मिलता है।

साहित्यिक पवाडे—इस श्रेणी म उन पवाडो की गणना की जाती है जिनकी रचना कवियो न की। प्रचलित लोक गाथाओ को आधार बनाकर इगलण्ड के प्रसिद्ध कवियो ने इन पवाडा को साहित्यिक रूप प्रदान किया। शेक्सपियर वाल्टर

स्काट ब्राउनिंग टेनीसन प्रभृति कवियों ने अनेक लोक गाथाओं को साहित्यिक रूप देकर अंग्रेजी साहित्य की अभिवृद्धि की। इन कवियों के पश्चात् तो लोक गाथाओं पर साहित्यिक रचनाएँ लिखने की परम्परा इंगलैण्ड में बड़ी तेजी से चल निकली एवं वड्सवर्थ तथा स्विनबर्ग जैसे प्रतिभा सम्पन्न कवियों ने साहित्यिक लोक गाथाओं की रचना की। साहित्यिक पवाड़ों के लिए कलात्मक पवाड़े (Art Ballads) तथा सांस्कृतिक पवाड़े (Cultural Ballads) नाम भी प्रयुक्त किये जाते हैं।

किन्तु जब राजस्थानी पवाड़ों के संदर्भ में उक्त वर्गीकरण पर विचार करते हैं तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि उपलब्ध राजस्थानी पवाड़ों को हम इन वर्गों में नहीं रख सकते। वस्तुतः यह वर्गीकरण राजस्थानी पवाड़ों के संदर्भ में वैज्ञानिक भी प्रतीत नहीं होता है—उदाहरणार्थ यहाँ केवल चारण जाति के लोग ही ऐसे नहीं हैं जो पवाड़ों को गाते हों जोगी भोपा मोची भाट ढाढी आदि अनेक जातियों के लोग भी पवाड़ों के गान का व्यवसाय करते हैं। राजस्थान में यह भी देखने में आया है कि चारण लोग पवाड़े गाते ही नहीं है। चारण केवल कविता पाठ (Recitation) के रूप में पवाड़ों को जन समुदाय के समक्ष प्रस्तुत करते रहे हैं। इसके अतिरिक्त चारण जाति के कवियों ने बहुत सम्भव है कि पवाड़ों की रचना की हो यद्यपि किसी व्यक्ति विशेष का उल्लेख नहीं मिलता। भारतवर्ष में आलिखित पवाड़ों की परम्परा भी नहीं रही और न ही बड़े कवियों ने पवाड़ों के आधार पर साहित्यिक रचनाएँ की।

यहाँ यह स्पष्ट कर देना भी समीचीन होगा कि पाश्चात्य विद्वानों द्वारा किया गया पवाड़ों का यह वर्गीकरण वैज्ञानिक नहीं है क्योंकि इस वर्गीकरण से न तो पवाड़ों का प्रवृत्तिगत परिचय मिलता है और न ही उनकी विकसनशीलता का स्पष्टीकरण होता है। वस्तुतः मौखिकता तो पवाड़ा की एक आधारभूत विशेषता है जो सभी प्रकार के पवाड़ों के लिए आवश्यक है। किसी लोक आख्यान का साहित्यिक रूप मिलने पर भी उसे पवाड़ा कहना तक संगत प्रतीत नहीं होता है। साहित्यिक आडम्बर शून्यता तथा शैली की अनगढ़ता भी पवाड़ा के आवश्यक अंग हैं। आलिखित रूप भी पवाड़ों का स्वभाव नहीं है। चारणी पवाड़ों से पवाड़ा की किसी भी विशेष प्रवृत्ति का बोध नहीं होता। इसलिए उपर्युक्त वर्गीकरण पवाड़ा की कतिपय विशेषताओं की ओर संकेत मात्र करता है।

हमारे अध्ययन में यह वर्गीकरण उपादेय सिद्ध नहीं होगा। अस्तु राजस्थानी पवाड़ों का अध्ययन निम्नलिखित प्रवृत्तिमूलक वर्गीकरण के आधार पर किया जा सकता है—

(क) वीर कथात्मक पवाड़े
(ख) प्रेम कथात्मक पवाड़े
(ग) रोमांच कथात्मक पवाड़े
(घ) निवृत्ति कथात्मक पवाड़े

वीर कथात्मक पवाड़े—लोक गाथा (पवाड़ा) लोक मानस की भावनाओं की

सहज अभिव्यक्ति होती है । राजस्थान का जन जीवन प्राचीन काल से शौय तथा युद्धो की घटनाओ से परिपूण रहा है । इसलिए इस प्रदेश की मिट्टी से उपजी सस्कृति से जिन लोक गाथाओ का ज म हुआ उनम शौय पराक्रम ओज आदि के स्वर स्वत ही प्रधान रूप से मुखरित हो गये । इस प्रदेश म लोक गाथाओ का पोषण उन व्यक्तियो के कार्यों से हुआ, जिन्होने कभी किसी अबला की रक्षा के लिए कभी अपनी मर्यादा की रक्षा के लिए कभी धम की रक्षा के लिए कभी गो रक्षा के लिए कभी कत्तव्य पालन के लिए किए गये वचन की सम्पूर्ति के लिए कभी शासन के अत्याचार एव दमन से सामा य जनता को मुक्त करने के लिए कभी किसी विदेशी शत्रु से अपनी मातभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणो का उत्सग किया—युद्ध जिन व्यक्तियो की क्रीडा रही और मरण जिनके लिए त्यौहार एव मत्यु का आलिगन जिन लोगो ने हसते हसते किया, अग्नि की धधकती चिता पर जिन वीरागनाओ ने अपने सतीत्व की परीक्षा दी उनका जीवन इस प्रदश की लोक गाथाओ म प्रतिबिम्बित हुआ है । अत आश्चय नही कि इस प्रदेश की लोक गाथाओ मे वीर कथात्मक गाथाओ का सर्वोपरि स्थान है ।

इन लोक गाथाओ म प्रधानत नायक की अलौकिक वीरता का वणन ही मिलता है तथा ये लोक गाथाएँ नायक के साहसपूण एव शौय सम्पन्न कार्यों से आवेष्टित होती हैं । इन लोक गाथाओ का नायक कभी किसी आपद्ग्रस्त अबला का किसी क्रूर शक्ति स उद्धार करता हुआ दिखाई दता है तो कभी सत्य एव याय की प्रतिष्ठा के लिए दुम यवस्था से जूझता हुआ दिखाई देता है । लकिन इन सबके साथ इन वीर कथात्मक लोक गाथाओ म एक विशेष बात यह भी मिलती है कि नायक किसी विशिष्ट सुदरी को प्राप्त करन के लिए मानवीय तथा दवी शक्तियो से सघषरत मिलता है । बगडावत गाथा म तो इसी सुदरी प्रसग के कारण सारे बगडावत सघष करते करते मत्यु को प्राप्त हो गये । पाबूजी नामक गाथा का प्रारम्भ तो इसी प्रसग स होता है कि तु इसकी परिणति टेक रखन के लिए गो रक्षा म होती है । इनके अतिरिक्त राजस्थान म गोगाजी डू गजी जुवारजी तेजाजी गलालेंग आदि वीर कथात्मक लोक गाथाए अधिक प्रचलित हैं जिनम वीरता का स्वर ही प्रधान है । यह बात दूसरी है कि इन लोक गाथाओ म शौय का प्रदशन कभी शरणागत की रक्षा के लिए हुआ है तो कभी व्यवस्था के अत्याचारो का विरोध करने के लिए तो कभी वचन निर्वाह के लिए ।

इन वीर कथात्मक लोक गाथाओ म द्रष्टव्य यह भी है कि इनम केवल युद्धो का शुष्क वणन नही मिलता प्रत्युत एसा लगन लगता है कि नायक की नियति ही युद्ध बन जाती है । नायक ऐसी परिस्थितियो म घिरता चला जाता है कि बिना युद्ध के उनस उबरा नही जा सकता । इसीलिए दवी शक्तियाँ भी इन नायको की सहायता करती दिखाई देती हैं । फलस्वरूप ये लोक गाथाएँ यहा के जन जीवन म बहुत लोकप्रिय रही हैं और जब नायक इन लोक गाथाओ को सारगी ढोल आदि वाद्य वृदा पर गाते हैं तो श्रोताओ के मन म भी वीर भाव का सचार हो जाता है और वे

काफी उत्तेजित स्थिति म पहुच जाते हैं। वस्तुत यह उत्तेजना बडी सात्विक होती है क्योंकि नायक का सघष सत्य के पक्ष म होता है।

प्रेम कथात्मक पवाडे—प्रम मानव जीवन की एक सहजात वत्ति है। इसका प्रसार मानव जीवन ही नहीं पशु पक्षी एव वनस्पति जगत् मे भी मिलता है। हमारे देश की सास्कृतिक परम्पराए कुछ ऐसी रही कि प्रम माग म मर मिटन की भावना का ता प्राधान्य मिला किन्तु खुन रूप म प्रेम करन की स्वच्छ दता सामाजिक अनुशासन न नहा दी। राजस्थान प्रदेश इस क्षेत्र म और भी अधिक रूढिवादी रहा क्योकि राजपून घरानो म ता लडकिया का ज म ही इसलिए अमगलकारी माना जाता रहा कि उसक कारण उसके माता पिता को कही नीचा न दखना पडे। किंतु इन सब बाधाओ क बावजूद और मामाजिक अनुशासन कठारता के होत हुए प्रम-व्यापार निर तर प्रवहमान रहा है और मानव जीवन म प्रेम की महत्ता रच मात्र भी कम नही हो पाई है। इसीलिए वीर कथात्मक लोक गाथाओ म भी प्रम ही वीर के आलम्बन रूप म प्रयुक्त हुआ है।

राजस्थान म प्रम कथात्मक लोक गाथाए भी बहुत प्रचलित हैं तथा रामाचकारी लोक गाथाओ मे भी प्रम का पर्याप्त वणन मिलता है। निवत्ति कथात्मक गाथाओ का आरम्भ प्रेम स होना है। इन प्रम गाथाओ म नायक नायिका क बीच सहज सात्विक प्रेम होता है तथा इस प्रम की परीक्षा क लिए अनक लौकिक अलौकिक बाधाएँ नायक नायिका को पार करनी पडती हैं। ढोला मारू नाक गाथा म इस प्रकार की बाधाएँ पर्याप्त सख्या म वर्णित है। कभी कभी तो प्रम क लिए नायक नायिका को अपन जीवन का उत्सग भी कर देना पडता है जस जलाल बूबना गाथा म हुआ है। यह बात अवश्य है कि भारतीय परम्परा सुखा त होन के कारण इन लोक गाथाओ का पर्यावसान सुख म ही हाता है। जलाल बूबना गाथा म शिव पावती के द्वारा जलाल बूबना को पुनर्जीवित किया गया है। यहा यह कहना भी प्रासगिक रहगा कि इन प्रेम कथात्मक गाथाओ म शिव पावती का उल्लख नायक नायिका के मिलन म किसी न किसी रूप म सहायता करने की दृष्टि स हुआ है। इस सहायता मे प्रेरणा सम्व पावती की ओर स स्फुटित होती है। ऐसा सभी प्रेम गाथाओ म देखा जा सकता है। ढोला मारू जलाल बूबना नागजी नागवती आदि प्रम कथात्मक लोक गाथाओ म शिव पावती का प्रसग लगभग समान ही है।

इन प्रेम कथाओ म प्रम के दानो पक्षा—सयाग एव वियाग का विशद वणन मिलता है। कही कही ता इन लाक गाथाओ के प्रम वणना की तुलना अच्छे महाकाव्यो के वणनो स की जा सकती है। सयोग वणन म नायिका शृगार मिलनाकाक्षा दूती काय पुष्प उपहार रतिक्रीडा दम्पति विनाद आदि का सागापाग चित्रण इन लोक गाथाओ मे मिलता है। इसी प्रकार विरह वणन म विरह की चारो अवस्थाओ एव दसो दशाओ का बडा व्यापक चित्रण मिलता ह। ढाला मारू लाक गाथा म मारवणी का विरह वणन पद्मावत की नागमती क विरह वणन के समान है। यह अवश्य है कि लोक गाथाओ क विरह वणन म लाक जीवन म प्रच

लित उपमानो का ही प्रयोग हुआ है जो लोक गाथाओ को जन जीवन के और निकट लाकर शास्त्रीय महाका यो से भिन्न करते हैं।

रोमाच कथात्मक पवाडे—राजस्थान म ऐसी लोक गाथाएँ भी प्रचलित हैं जिनम अतिमानवीय तत्त्व अत्यधिक मात्रा म विद्यमान है तथा इनम ऐसी अद्भुत घटनाओ का समायोजन मिलता है जो रोमाचकारी हैं। इन कथाओ की समस्त घटनाओ म नायक द्वारा ऐसे कार्यों की सम्पूर्ति दिखाई जाती है जो सामान्य व्यक्ति के लिए बहुत अद्भुत होती ह तथा हृदय को हिला देने वाली होती है। यहा पर यह स्पष्ट कर देना भी अभीष्ट रहगा कि अद्भुत घटनाओ की समा विष्टि तो लोक गाथाओ की एक स्वाभाविक विशेषता है कि तु हमने राजस्थानी लोक गाथाओ के वर्गीकरण म प्रवृत्तिमूलकता को महत्त्व दिया है इसलिए रोमाच कथात्मक लोक गाथाओ म वे ही लोक गाथाएँ आती हैं जिनम जादू टोना अद्भुत युद्ध अमानवीय तत्त्व आदि का समावेश ही प्रधान होता है। राजस्थान म निहा लद सुल्तान रोमाच कथात्मक लोक गाथा का प्रतिनिधि उदाहरण ह। इस लोक गाथा म जादू टोना परिया रूप परिवतन काया परिवतन, आकाशगमन सवा पहर तक पत्थर का शरीर होना निरापद स्थानो पर चोरी जल-प्रवेश मत्स्य भेदन गोरख इष्ट, दूती क अद्भुत काय, सत्य क्रिया के लिए सत्य की परीक्षा के लिए कगारा का झुकना महल क दरवाजो का स्वत खुलना आदि अतिमानवीय कृत्यो का वणन अत्यधिक मात्रा म मिलता है। सुलतान का जीवन तो एमे ही अद्भुत कार्यों से प्रारम्भ होता ह तथा सारी कथा मे हम उस रोमाचकारी कृत्यो म ही व्यस्त पाते हैं। निहालदे के समक्ष भी अनेक अद्भुत घटनाएँ घटित होती हैं तथा इ ही के कारण उसे बार बार सुलतान स अलग हो जाना पडता है। जानी चोर के समस्त क्रिया कलाप अद्भुत तत्त्वो स अलग हो जाना पडता है। जानी चोर के समस्त क्रिया-कलाप अद्भुत तत्त्वा से भरे पड हैं। सवा पहर तक पत्थर बनकर लडने वाला गाडू भी रोमाचकारी कार्यों की दृष्टि स अपना सानी नहीं रखता। सुलतान और निहालदे का चरित्र तो क्रमश राम अजु न और सीता के समान रोमाचकारी घटनाओ क बीच विकसित होता है। केवल मनुष्य ही नहीं इस कथा म तो घोडा भी अद्भुत है जो औरत की परछाई दिखने मात्र से विचलित हो जाता है। सुलतान का स्वग जाना अपने दादा से मिलना जानी चोर का स्वग से पोप' के पुष्प लाना गोरखनाथ का जगह जगह अद्भुत ढग स सुलतान के पास पहुचना आदि इस कथा की अत्य त रोमाचकारी घटनाएँ है।

निहालदे सुल्तान कथा म यद्यपि सुलतान और निहालदे के माध्यम से उच्चा दर्शों की स्थापना होती ह तथापि इस स्थापना क लिए प्रस्तुत कथा मे रोमाचकारी घटनाओ को ही स्थान दिया गया है। विवेच्य कथा म अद्भुत घटनाओ की अधि कता तथा विविधता होन के कारण ही इस कथा को रोमाच कथात्मक लोक गाथा के अन्तगत लिया गया है।

निवृत्ति कथात्मक पवाडे—निवृत्ति कथात्मक लोक गाथाओ के अ तगत उन

गाथाओं को लिया जा सकता है जिनमे गाथाओ के नायक सासारिक व धनो का परित्याग कर त्याग व वराग्य म अपना जीवन समर्पित कर देते है। इन गाथाओ के नायको का चरित्र प्रवत्ति स निवत्ति आसक्ति स अनासक्ति भोग स वराग्य तथा बन्धन स मुक्ति की ओर उ मुख होता है। इस कोटि म गोपीचन्द व भरथरी की नाक गाथाएँ आ जाती है।

ये दोना ही लोक गाथाए भारत के विभिन्न प्रा तो म कतिपय शलीगत परिवतन के समान रूपो म पाई जाती है। य लोक गाथाए जनता की वराग्य वत्ति को परिताप प्रदान करती हैं। जोगी नाथ आदि जातिया अपनी सारगी या रावण-हत्था पर घर घर जाकर इन गाथाओ को गात हैं जो जनता म धन सम्पत्ति ऐश्वय के मोह को दूर करन का और माया मोह स परे एक अलौकिक ज्ञान द प्राप्त करने का म त्र फूकती हैं।

इस प्रकार की लोक गाथा को डा सत्यव्रत सि हा न योग कथात्मक लोक गाथा नाम दिया है[1] क्योकि इन कथाओ म सासारिक मोह माया को त्याग कर ये राजा योगी वेश धारण कर तप के लिए चल जाते हैं।[2] डा सिन्हा के अनुसार इन गाथाओ म नाथ धम के जटिल सिद्धा तो का अत्य त सरस तथा लोकप्रिय ढग से प्रतिपादन किया गया है।[3] कि तु डा सि हा का यह नाम अपन ग्रथ और भाव को स्पष्ट करने म असमथ है। योगात्मक गाथाओ के नामकरण से एसा प्रतीत होता है कि इन गाथाओ म योग की नीरस चर्चा की गइ होगी। योगात्मक कहने से डा सि हा का तात्पय विशेषत भरथरी और गोपीच द के वराग्यमय जीवन को जताना है। जबकि वराग्य तो उन लोगो के जीवन म भी आया जो कभी सासारिकता म प्रवत्त ही नही हुए थे। उदाहरणाथ आदि शकराचाय को आठ वष की अवस्था म ही वराग्य हो गया था। इस वराग्य को प्रवत्ति स निवत्ति म जाना नही माना जा सकता अत योग शब्द को वराग्य क लिए प्रयुक्त मानना उचित नही है। यदि हम योग को नाथ पथ या गोरख पथ का पर्याय मान लें तो भी यह नाम सगत प्रतीत नही होता क्योकि इन गाथाओ म न तो नाथ पथ का तात्विक विवेचन ही हुआ है और न योग की शास्त्रीय व्याख्या ही है। यदि एसा होता तो ये लोक गाथाए जन जीवन के लिए बोधगम्य ही नही होती। या गोरखनाथ की चर्चा तो पद पद पर या स्थान स्थान पर निहालदे सुलतान' गाथा म भी हुई है पर इसको योग कथात्मक गाथा नही कहा जा सकता। इसी आधार पर कि गोपीच द व भरथरी ने नाथ पथ की दीक्षा ली इन गाथाओ को योग कथात्मक गाथा कहना सवथा असगत है।

डा क के शर्मा न राजस्थानी लोक गाथाए नामक पुस्तिका म इन

1 भोजपुरी लोक गाथा डा सत्यव्रत सिन्हा पृष्ठ 55

2 वही पृष्ठ 55

3 वही पृष्ठ 55

कथाओं को 'निर्वेद कथात्मक'[1] नाम दिया है क्योंकि इन गाथाओं में सांसारिक राग की परिणति निर्वेद में दिखाई जाती है। संसार की असारता और परमार्थ के प्रति आसक्ति इनका मुख्य उद्देश्य रहा है।[2] निर्वेद कथात्मक शब्द में निर्वेद शब्द एक भाव का द्योतक है जो परिस्थिति विशेष में संचारी अथवा स्थायी भाव किसी भी रूप में किसी व्यक्ति में संचरित हो सकता है। प्रेम कथात्मक तथा वीर कथात्मक गाथाओं में भी नायक के हृदय में निर्वेद भाव का संचरण हो सकता है तो क्या उन गाथाओं को हम निर्वेद कथात्मक गाथाएँ कह सकेंगे ? जबकि उनकी प्रवृत्ति मुख्यतः प्रेम अथवा वीरता की है। 'आल्हा' वीर कथात्मक गाथा में कई बार आल्हा के मन में निर्वेद की निष्पत्ति होती है किन्तु आल्हा निर्वेद कथात्मक लोक गाथा नहीं है। परिवार और समाज में ही अपना जीवन को खपा देने वाले कबीर और रैदास जैसे सन्तों के काव्य में निर्वेद भाव का क्रम प्रवाह नहीं है ? कबीर जिनमें निर्वेद आपूरित था जीवन और गृहस्थ में ही रहे किन्तु गोपीचन्द और भरथरी आरम्भ में प्रवृत्तिमय थे और अपनी चढ़ती वय में प्रवृत्ति से निवृत्ति मार्ग में बढ़ गये। उन्होंने घर द्वार राज्य सम्पत्ति नवोढ़ा पत्नी सुन्दर काया आदि का मोह त्याग कर निवृत्ति ग्रहण की। अतः इन गाथाओं को निर्वेद कथात्मक गाथाएं कहना अनुपयुक्त है।

इन दोनों ही लोक गाथाओं में दोनों ही नायक प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर गये हैं। और दोनों ही कथाओं में शृंगार का पर्यवसान शान्त में भोग का त्याग में और प्रवृत्ति का निवृत्ति में हुआ है। 'निवृत्ति' शब्द यह संकेत देता है कि निवृत्त व्यक्ति किसी ऐसी प्रवृत्ति से निवृत्त हुआ है जिसे छोड़ना साधारण व्यक्ति के लिए सम्भव नहीं होता। इन दोनों नायकों की यह निवृत्ति ही जन मानस के ऊपर गहरा प्रभाव छोड़ती है। तथा इन गाथाओं का लक्ष्य भी किसी पथ विशेष की प्रतिष्ठा न कर जन जीवन को यह समझाना है कि संसार असार है और धन वैभव ऐश्वर्य के प्रति आसक्ति जीवन को उन्नत नहीं बना सकती। यह निवृत्ति ही इन गाथाओं का मूल तत्त्व है और इसी तत्त्व को जन जीवन में प्रसारित करने के लिए इन गाथाओं का जन्म हुआ। अस्तु गोपीचन्द और भरथरी जैसी लोक गाथाओं को निवृत्ति कथात्मक लोक गाथा नाम से अभिहित करना अधिक तर्कसंगत और तथ्यपरक होगा।

लोक गाथाओं के इस सामान्य परिचय से स्पष्ट है कि ये लोक गाथाएं अनेक प्रकार की हैं। अतः सबकी तुलना सम्भव नहीं है। पर इस लेखक ने अधिकांश लोक गाथाओं के समान तत्त्वों को खोजकर उनकी तुलना करने का प्रयास किया है।

सामान्य परिचय से पता चल जाता है कि राजस्थान लोक गाथाएँ विषय

1 राजस्थानी लोक गाथाएं डा० क० के० शर्मा पृ 56
2 वही, पृष्ठ 56

राजस्थानी लोक गाथाओ का तुलनात्मक परिचय

लोक गाथा का नाम	लोक गाथा का प्रकार	कथानक का आधार	रचना काल	गायकों की जाति	वाद्य यत्र जिनका गाते समय प्रयोग होता है।	गाये जाने वाले क्षेत्र
1 बगडावत	वीर कथात्मक	ऐतिहासिक (कल्पना का योग)	स 1300 के लगभग	देव नारायण के भोपे	बीन	जोधपुर
2 पाबूजी	वीर कथात्मक	ऐतिहासिक + काल्पनिक	स 1400 के लगभग	पाबूजी के भोपे (दो या तीन)	सारगी रावण हत्था	जसलमर जयपुर शेखावाटी
3 गोगाजी	वीर कथात्मक	ऐतिहासिक + काल्पनिक	अज्ञात	गोगाजी के भोपे (सामूहिक रूप से)	ढाल बचेला डरू	राज के सभी प्रदेशो मे हरियाणा तथा उ प्र म भी
4 तेजाजी	वीर कथात्मक	ऐतिहासिक + काल्पनिक	अज्ञात	भोपे (सामूहिक तथा एक व्यक्ति द्वारा)	अलगोजा थाली ढोल सारगी हारमोनियम	समस्त राजस्थान मे
5 डूगजी जुवारजी	वीर कथात्मक	ऐतिहासिक + काल्पनिक	अज्ञात	भोपा	सारगी	समस्त राजस्थान
6 गेला रेंग	वीर कथात्मक	ऐतिहासिक	अज्ञात	जोगी	इकतारा	वागड प्रदेश

7 ढोला मारू	प्रेम कथात्मक	ऐतिहासिक+ काल्पनिक	स 1450 लगभग	भोपा भोपी	सारगी	समस्त राजस्थान छत्तीसगढ ब्रज क्षेत्र
8 जलाल बूबना	प्रेम कथात्मक	काल्पनिक	अज्ञात	दा व्यक्ति	सारगी	शेखावाटी, तोरावाटी
9 नागजी नागवती	प्रेम कथात्मक	काल्पनिक	अज्ञात	भोपा	रावण-हत्था	राजस्थान
10 सोरठी	प्रम कथात्मक	काल्पनिक	अज्ञात	भोपा	खजडी टुनटुनी	राजस्थान, हरियाणा, भोजपुरी क्षेत्र
11 सणी बीजाणद	प्रेम कथात्मक	काल्पनिक	अज्ञात	भोपा	बीन	राजस्थान
12 माता गूजरी	प्रेम कथात्मक	काल्पनिक	अज्ञात	भोपा	बीन	राजस्थान
13 निहालदे-सुलतान	रोमाचक कथात्मक	काल्पनिक	लगभग 16वी 17वी शती रचयिता अज्ञात	जोगी ढाढी भाट	सारगी ढोलक	समस्त राजस्थान, ब्रज क्षेत्र हरियाणा
14 गोपी च द	निवत्ति कथात्मक	काल्पनिक	अज्ञात	जोगी व नाथ	सारगी ढोलक	शेखावाटी, तोरावाटी जसल-मेर कोटा बूदी, मेवाड, हरियाणा, ब्रज, भोजपुरी क्षेत्र
15 भरथरी	निवत्ति कथात्मक	काल्पनिक	अज्ञात	जोगी व नाथ	सारगी ढोलक	राजस्थान हरियाणा, ब्रज क्षेत्र, भोजपुरी क्षेत्र

की दृष्टि से चार प्रकार की हैं—वीर कथात्मक प्रेम कथात्मक रोमाच कथात्मक एव निवृत्ति कथात्मक। इन चारो प्रकार की लोक गाथाओ म अलग अलग विषयो का प्रतिपादन किया गया है। अत इनम मिश्रता होना स्वाभाविक है पर इस मिश्रता के बाच कुछ एस तत्त्व सभी लोक गाथाओ म प्राप्त हैं।

1 संदिग्ध ऐतिहासिकता—ये सभी लोक गाथाए लोक नायको की मानस पुत्रिया हैं। उ होने गाथाओ के निर्माण म ऐतिहासिक तथ्यो क निर्वाह की ओर ध्यान ही नही दिया है। निहालदे सुलतान जलाल बूबना नागजी नागवती सोरठी आदि लाक गाथाए तो पूर्णतया काल्पनिक कथानक पर आधारित हैं जबकि पाबूजी गोगाजी बगडावत ढोला मारू आदि के कथानक इतिहास से निकले हैं किन्तु इन लोक गाथाओ म ऐतिहासिकता केवल नाम मात्र की ही रह गयी है और गायको ने ऐतिहासिक पात्रो को मनचाहे ढग से प्रस्तुत किया है। बगडावत देवनारायण की कथा को बिल्कुल ही आश्चर्यजनक ढग स प्रस्तुत किया गया है। गोगाजी का जीवित धरती म समा जाना तेजाजी का सप पास अ त म जाना जसी घटनाए इतिहास समर्थित नही हो सकती। अत ऐतिहासिक स न्भ तो इन लोक गाथाओ म नाम मात्र के हैं।

इस सन्भ मे एक महत्वपूर्ण बात कही जा सकती है—इन सारी लोक गाथाओ म यापक सामाजिकता को यापक अभि यक्ति न‌ही मिल पाती। बगडावत की कथा विशाल है पर उसम केवल युद्ध है षडयत्र हैं तथा बगडावतो का विनाश ह पाबूजी गोगाजी तेजाजी आदि वीर गाथाए इन नायको क शौय एव पराक्रम का चित्रण करती हैं। ढोला मारू सोर ी नागजी नागवती जलाल बूबना, प्रम कथाए हैं अत उनका विषय बहुत सीमित है गोपीचद भरथरी दोनो कथाओ म जीवन के प्रति वराग्यपूर्ण दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति है। अत विषय की दृष्टि स इन सभी लाक गाथाओ का फलक सीमित है तथा किसी भी कथा म एक पूर्ण सामाजिक जीवन का चित्र नही उभरता। निहालदे सुलतान ही एक मात्र ऐसी लोक गाथा है जो काल्पनिक होते हुए भी यापक सामाजिक धरातल पर खडी होकर हमारे समक्ष एक ऐतिहासिक सदभ प्रस्तुत कर दती है। उसम यक्तिगत एव सामाजिक जीवन का आदश धम का आ न्श पारिवारिक आदश राज्या न्श आदि तत्त्व एक साथ अपनी ऊचाई पर हैं। जीवन का कोई क्षेत्र एसा नही है जिसका चित्र निहालदे सुल तान म न मिलता हो। इसका फलक रामचरित मानस के समान अत्यत व्यापक है अत राजस्थान की अ य लाक गाथाओ म यह गाथा कही महत्वपूर्ण है। यद्यपि इसकी कथा काल्पनिक है तथापि काल्पनिक कथा के माध्यम से एक प्राचीन सास्कृतिक परिवेश इस रचना म साकार हो गया है यह इसकी सबसे बडी विशेषता है।

अलौकिक घटनाओ की प्रधानता—राजस्थान की सभी लोक गाथाओ म अलौकिक घटनाओ का प्र यय मिला है। बगडावतो की सारी शक्ति अलौकिक है गोगाजी गुरु गोरखनाथ की कृपा स अपने आदश का निर्वाह करते हैं। पाबूजी को

ु बालीनाथ का आशीर्वाद प्राप्त है। निहालदे सुलतान मे भी सुलतान को गुरु ोरखनाथ का इष्ट है।

पात्रो को अलौकिक इष्टो की प्राप्ति—

सुलतान	—	गोरख का इष्ट
पाबूजी	—	बालीनाथ की कृपा
बगडावत	—	शिव का इष्ट
गोगाजी	—	गोरखनाथ का इष्ट
जानी	—	दुर्गा का

इष्टो द्वारा प्रत्यक्ष होना—

सुलतान के समक्ष गोरख स्मरण करते ही प्रस्तुत होते हैं।
बगडावत शिव के कई बार दर्शन करते हैं।
पाबूजी साक्षात बालीनाथ से दीक्षा लेते हैं।
गोगाजी को गोरखनाथ दर्शन देते हैं।
दुर्गा जानी के याद करते ही प्रत्यक्ष हो जाती है।
गोदू का हनुमान का इष्ट है।
कणमणिय मे भरव आता है।

अलौकिक कार्यों की निष्पत्ति—

निहालदे सुलतान में स्वर्ग से पाप के फूल लाने की घटना।
पाबूजी में लका से ऊट लाने की घटना।
निहालदे को पीवणा सर्प द्वारा काटना तथा उसका पुनर्जीवित होना।
मरवण को सर्प द्वारा काटना तथा उसका पुनर्जीवित होना।
सुलतान की सारी सेना का शिव के प्रताप से जीवित होना।
शिव की कृपा से जलाल बूबना का पुनर्जीवित होना।
शिव की कृपा से नागजी का पुनर्जीवित होना।

पात्रो में रूप परिवर्तन की शक्ति—

बगडावत में जमती का बार बार रूप बदलना।
पाबूजी व गोगाजी का कछुआ व मेढक बनना।
शिव का कोढी बनना।

इन अलौकिक घटनाओ की तुलना के संदर्भ में हम यह अवश्य स्वीकार करना होगा कि निहालदे सुलतान में अलौकिक तत्व सबसे अधिक मात्रा मे है। कितनी ही बार गोरख सुलतान की दुर्गा जानी की शिव निहालदे की सहायता करते हैं। कितनी ही बार गोरख सुल्तान की सहायता करते हैं। एक बार सुलतान स्वर्ग जाता है तो दूसरी बार जानी। इस कथा में दानवो की अतिप्राकृतिक कथाएं हैं। लेकिन यह तथ्य और भी विचारणीय है कि निहालदे सुल्तान मे इन समस्त अलौकिक घटनाओ के पीछे उदात्त विचारो की स्थापना तथा उच्च सामाजिक आदर्शों की प्राप्ति है। सुलतान कही भी व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए अपने इष्ट की शक्ति का

प्रयोग नही करता । बगडावतो ने अपने इष्ट की शक्ति का प्रयोग अपनी शक्ति प्रद शन के लिए किया । पाबूजी गोगाजी अपनी अपनी श्रष्ठता सिद्ध करने के लिए रूप परिवतन करत हैं । जलाल बूबना म शिव दोनो को जि दा कर दते हैं पर उन दोनो की जि दगी का लक्ष्य किसी सामाजिक काय की निष्पत्ति नही है । अत यह नि सकोच कहा जा सकता है कि अलौकिक घटनाएँ तो सभी गाथाग्रा म हैं पर उनके पीछे जो उदात्त तत्व निहालदे सुलतान म हैं वे किसी म नही हैं ।

3 कथानको मे यात्राए एव बाधाएँ—राजस्थानी लोक गाथाग्रा के निर्माण म पात्रो की लम्बी लम्बी यात्राग्रो का महत्वपूण योगदान है । सभी लोक गाथाग्रो मे नायक नायिका दूर दशो की यात्रा करते हैं—

बगडावतो की राणा की राण की यात्राएँ
पाबूजी की लका की यात्रा
तजाजी की पनेर की यात्रा
ढोला की पूगल की यात्रा
डू गजी-जुवारजी की अनेक यात्राएँ
जलाल को गिरउडगढ की यात्रा
सुलतान की ईडरगढ कीचलकोट नरवलगढ के बीच अनेक यात्राए ।

य सभी यात्राए कष्टो एव आपदाग्रो स भरी होती हैं । बगडावतो को यात्राग्रा म युद्ध करने पडते हैं । तेजाजी को तो अपनी ससुराल यात्रा मे बलिदान ही हो जाना पडता है । पाबूजी अनेक कष्टो को झलते हुए लका स ऊट ला पाते है । ढाला पूगल स लौटता है तो ऊमर सूमरा मरवण को पाने के लिए अनेक षडयन्त्र रचता है । मरवण को बीच म सप भी डस लेता है । सुलतान की यात्राग्रा म तो बाधाए पग पग पर खडी हैं । इन यात्राग्रो म कितनी ही बार उसे निहालदे स अलग होना पडता है कभी दानवो के चक्कर म पडता है तो कभी जादूगरनियो के । इन यात्राग्रो म रोचकता एव गतिशीलता की दृष्टि से निहालदे-सुलतान अन्य लोक गाथाग्रो से श्रेष्ठ है । अ य लोक गाथाग्रा म पात्रा की यात्राएँ प्राय अपने निजी कार्यों क लिये हैं जबकि सुलतान को अधिकाश यात्राएँ परोपकाराय करनी पडती है । दूसरे खण्ड म वह मारू के घर भात भरने जाता है । ईडरगढ स नरवरगढ तक उस अनेक कष्टा का सामना करना पडता है । इन कष्टा म भी वह दूसरो के लिए ही अपने आपको डालता है । जगतसिंह से उसका युद्ध वनसिंह के कारण है । मह कदे की मुक्ति उसका नतिक दायित्व है इसलिए वह जानी को आबू भेजता है जो जनसुत नगरी म जाकर महकदे का अदनी खा की कद स छुडाता है । इस प्रकार निहालदे सुलतान की बाधाप्रद यात्राग्रो म सत्य एव याय की रक्षा की भावना ही काय कर रही है ।

4 शरणागत रक्षा एव वचन निर्वाह—शरणागत रक्षा वीर का एक आव-श्यक गुण माना गया है । ईश्वर को शरणागत वत्सल कहा गया है । धीर वीर पुरुषा ने भी ईश्वर के इस गुण को प्राप्त करने का प्रयास किया है तथा शरण म

माए हुए व्यक्ति की रक्षा के लिए उन्होने अपने जीवन का उत्सग तक कर दिया है। तेजाजी की शरण म पनेर की एक बुढिया आती ह और तेजाजी से अपनी गाय व बछडा की रक्षा की प्रार्थना करती है। गाय एव बछडा की रक्षा म ही तेजाजी को अपने जीवन का उत्सग करना पडता है और वे अपनी पत्नी स भी मिल नही पात। पाबूजी की शरण म एक चारणी आ जाती है और चारणी को पाबूजी वचन देते हैं कि वे उनकी गाया की रक्षा करेंगे। विचित्र बात है कि चारणी पाबूजी के पास उस समय आती है जब उनका विवाह हो रहा है। अपनी भावरा को बीच म ही छोड कर पाबूजी गायो की रक्षा के लिए चल देते हैं और अपने शरणागत की रक्षा के लिए प्राणो का बलिदान कर देत हैं। निहालदे सुलतान की शरण म बनेसिंह आता है और सुलतान स वैसी ही प्रार्थना करता है जसी राम से सुग्रीव या विभीषण ने की थी। बनसिंह की रक्षा के लिए सुलतान जगतसिंह स युद्ध करता है तथा जगत सिंह को परास्त कर बनेसिंह को उसका राज्य दिलवा देता है। पत्र के माध्यम स महकदे भी सुलतान की शरण म आ जाती है और सुलतान से अपनी मुक्ति की प्राथना करती है। सुलतान तुर त जानी को इस काय के लिए भेज देता है।

इन तीना ही लोक गाथाओ म शरणागत की रक्षा स्वाथ से लिप्त न हाकर शुद्ध परोपकार भावना स अभिप्ररित है। तेजाजी पाबूजी तथा सुलतान तीनो ही सत्य न्याय एव अपने वचन के निर्वाह के लिए ये काय करत हैं। वचन निर्वाह म भी ये पात्र पूरी तरह दृढ हैं। तजाजी अपना क्षत, विक्षत शरीर लेकर सप के पास पहु चते हैं क्याकि वे सप को वचन देकर आये थे और सप स जिन्हा पर डसने के लिय कहत हैं पाबूजी अपनी शादी को बीच म छोडकर ही अपने वचन का निर्वाह करन के लिए चले जात हैं। सुलतान भी अपने वचन निर्वाह के लिए मारू के घर भात भरता है फूलसिंह क लिए आभलदे को लाता है जगतसिंह से युद्ध करता है राजा गेंद को पराजित करता है।

इस क्षत्र म तीनो ही चरित्र पूरी गरिमा लिए हुए हैं किन्तु कथा अधिक विशाल होन के कारण सुलतान को शरणागत की रक्षा एव वचन निर्वाह के अधिक अवसर मिले हैं अत सुलतान का चरित्र अधिक उजागर हो सका है।

5 **युद्धो की अधिकता**—गोपीचन्द तथा भरथरी लोक गाथाओ के अतिरिक्त अन्य सभी लोक गाथाओ म युद्धो की भरमार है। बगडावत का विशाल कथानक तो युद्धो स ही निर्मित है। *जलाल, गुलाबसिंह पाबूजी गूगाजी, तेजाजी ढोला आदि* सभी पात्रो को युद्ध म जाना ही पडता है। जलाल गिरवरगढ म युद्ध करन जाता है, तेजाजी बुढिया की गायो को ल जाने वाल डाकुओ से युद्ध करते है डूगजी जुवारजी अग्रेजो स युद्ध करते हैं, पाबूजी को ऊट प्राप्त करने के लिए लका म युद्ध करना पडता है। सुलतान को समस्त जीवन युद्धा मे ही व्यतीत करना होता है। गोगाजी को अपने मौसे के भाइयो अरजन सरजन तथा दिल्ली के बादशाह स युद्ध करना पडा था।

इन सभी लोक गाथाओ म युद्धा के विषय मे विचारणीय प्रश्न यह है कि

प्राय सभी लोक गाथाओ म नायक को आत्म रक्षा या शौय प्रदशन के लिए युद्ध करने पड़ते हैं। बगडावत अपने पराक्रम को दिखाने के लिए ही युद्ध करते रहते हैं। गोगाजी युद्ध म अरजन सरजन को इसलिय मारते हैं कि उन्होने उनके साथ धोखा किया था पाबूजी ऊट लने गये थे तब उन्ह युद्ध करना पडा था। कि तु निहालदे सुलतान म अधिकाश युद्ध मुलतान परोपकार भाव स ही करता है। उसकी किसी स व्यक्तिगत शत्रुता नही पर कभी शरणागत की रक्षा के लिए उस युद्ध भी करना पडता है ता कभी परोपकार के लिए। मदा क भाई को बचान के लिए ही नही प्रत्युत नरवरगढ को च द्रबली दानव के आतक स मुक्त करन के लिए वह उस दानव के साथ द्वद्व युद्ध करता है। मारू की रक्षा क लिए वह भोमसिंह बनजारे से लडता है। बर्नसिंह के लिए जगतसिंह को पराजित करता है। ढालसिंह की मुक्ति के लिए राजा मेद से युद्ध करता है। मात्र श्यामसिंह तथा भानुसिंह स वह निहालदे की मुक्ति के लिए युद्ध करता है अ यथा शप सभी युद्धो म उसका अपना कोई स्वाथ नही है। वह शक्ति प्रदशन के लिए नही लडता सत्य और याय की प्रतिष्टा क लिए लडता है। इस तरह का भाव अन्य लाक गाथाओ म नही है अत निहालदे सुल तान' लोक गाथा युद्ध वणन की दृष्टि से अ य लोक गाथाओ की तुलना म श्रेष्ठ रचना सिद्ध होती है।

6 **लोक गाथाओ के पात्र**—राजस्थानी लोक गाथा क पात्रो को इन वर्गों म रखा जा सकता है—

(1) **अलौकिक पात्र**

(क) दवी पात्र — शिव पावती दुर्गा हनुमान विष्णु।

(ख) दवी शक्तिया से सम्पन्न पात्र — गोरखनाथ बालीनाथ मत्स्ये द्रनाथ।

(2) **मानव पात्र**

(क) नायक — सुलतान पाबूजी गोगाजी दवनारायण आदि।

(ख) नायिका — निहालद मरवरण नागवती बूबना आदि

(ग) खलनायक — फूलसिंह मगतमायवी ऊमर सूमरा आदि।

(3) **पशु पक्षी ज तु पात्र**

(क) पशु — दरियाई घोडा नीली घोडी ऊट हाथी।

(ख) पक्षी — तोता कुजरी मना

(ग) ज तु — कछुआ सप।

देव पात्र—राज थानी लाक गाथाओ क पात्रा पर दृष्टिपात करने पर हम पाते हैं कि प्राय सभी लाक गाथाग्रा म शिव पावती दुर्गा हनुमान आदि दवी पात्र हैं। निहालदे सुलतान म शिव पावती बार बार निहालदे की सहायता करत है निहालदे सुलतान का पुर्नविवाह करात हैं, जगतसिंह के साथ युद्ध के समय जगतसिंह को आकर समझाते हैं। बगडावत म बगडावत शिव का वरदान प्राप्त करते हैं शिव उन्ह अजेय

शक्ति प्रदान करते है। जलाल बूबना म शिव पावती आकर इन दोनो मत व्यक्तियो को जीवित करते हैं। ढोला मारू' म शिव ढोला को सती होने से बचाते हैं और मारवणी को पुनर्जीवित कर देते हैं। नागजी नागवती' म शिव इन दोनो को पुनर्जीवित करते हैं। इन उदाहरणो स स्पष्ट है कि शिव पावती इन कथाओ म प्राय मतको को जीवित करते हैं। किन्तु निहालदे सुलतान का एक प्रसग इस सदभ म विशेष उल्लेखनीय है—जगतसिह भी शिव का आराधक है तथा शिव न वरदान स्वरूप उस खाडा सरजीत दिया है। उधर निहालदे भी शिव की आराधिका है। जगतसिह तथा सुलतान के बीच सघप है सुलतान की जाघ म जगतसिह का भाला धुस जाता है और सुलतान की सारी सना मारी जाती है। गोरखनाथ निहालदे स शिव की आराधना का परामश देते हैं। निहालदे की आराधना पर शिव प्रत्यक्ष होते हैं तथा जगतसिह को आकाशवाणी द्वारा सचेत करते हैं कि वह सुलतान का विरोध न करे। यह देखने की बात है कि देवता उसी पात्र के प्रति अधिक लगाव रखत हैं जो सत्य के माग पर चलत हैं। यदि कोई पात्र दवी वरदान का दुरुपयोग करने लगता है ता देवपात्र ही उसका निराकरण खाजते हैं। शिव जानते थे कि जगतसिह न अपने चाचा के साथ अत्याचार किया है तथा सुलतान का जगतसिह स युद्ध धर्मानुमोदित है इसीलिए शिव न सुलतान का पक्ष लिया।

इसका और भी अच्छा उदाहरण बगडावत म मिल जाता है। शिव प्रसन्न होकर बगडावतो को बहुत शक्ति सम्पन्नता के वरदान दे देते हैं। बगडावत अपनी शक्ति का प्रयोग आतक के लिए करन लगते है तथा उनको रास्त पर लाना कठिन हो जाता है। वरदान वापस लिये नहीं जा सकते। परिणाम यह होता है कि जमती के रूप म दुर्गा को जन्म लेना पडता है और वही बगडावता का सहार करती है। बगडावता मे जेमती (दुर्गा) का रूप बडा विचित्र है जबकि निहालदे सुलतान म दुर्गा निरन्तर जानी की सहायता करती है। जब भी जानी स्मरण करता है दुर्गा उसके सामने प्रत्यक्ष हो जाती है और उसकी सहायता करती है पर जानी के मन मे अहकार आते ही वे अपनी कृपा जानी से उठा लेती हैं। इसका तात्पय यही हुआ कि इन लोक गाथाओ म जितन भी दवी पात्र है वे उन्ही पात्रो की सहायता करते है जो सत्य के माग पर आगे बढ रहे हैं। असत् एव कलुषो से अपन कृपा पात्रो का बचाने म भी ये देव पात्र सक्रिय रहते हैं। निहालदे सुलतान ही एक मात्र एसी रचना है जिसम शिव दुर्गा महावीर आदि देवता सुलतान की सहायता करते हैं। जबकि बगडावत मे जेमती के रूप म दुर्गा बगडावतो का सहार करती है।

दवी शक्तियो से सम्पन्न पात्र—राजस्थानी लोक गाथाओ म कुछ ऐस पात्र हैं जो देवता तो नही हैं पर देव तुल्य है तथा दवी शक्तियो से युक्त है। निहालदे सुलतान मे गुरु गोरखनाथ तथा मत्स्येन्द्रनाथ गापीचन्द मे जालधरनाथ भरथरी मे गोरखनाथ पाबूजी मे बालीनाथ दवी शक्तियो स सम्पन्न है। वे पात्र गुरु मे लोक गाथाओ म प्रस्तुत होत हैं तथा जिन पात्रो पर इनकी कृपा है उन्ह सत्य माग पर ल जाते हैं तथा सकटो म इनकी रक्षा करते हैं। किन्तु यदि तुलनात्मक दृष्टि स देखें तो

पाते हैं कि निहालदे सुलतान के गुरु गोरखनाथ अन्य दवी पात्रो की अपेक्षा अधिक सक्रिय, यावहारिक एव समाज मे न्याय एव सत्य की प्रतिष्ठा के उन्नायक हैं। गोपीचन्द म जालधरनाथ तथा भरथरी म गोरखनाथ तो गोपीचन्द तथा भरथरी को वराग्य का उपदेश न्ते हैं। दोना ही नायक सासारिक बन्धनो से मुक्त होकर वराग्य म आश्रय पात हैं। इन दोना गुरुप्रो का काय नायको को प्रवत्ति स निवत्ति की ओर ले जाना है। पाबूजी म बालीनाथ लका म ऊट लेने को गये हरीसिंह की सहायता करते हैं पर निहालदे सुलतान के गोरखनाथ तो बहुत विराट व्यक्तित्व वाले पात्र हैं। सुलतान को उनके चारो उपदेश जीवन म प्रवत्त करते हैं एक पवित्र जीवन व्यतीत करने को प्रेरणा देते हैं तथा समाज म सत्य न्याय की प्रतिष्ठा के लिए सुलतान को सक्रिय करते हैं। एसा लगता है सुलतान गोरखनाथ के सिद्धान्तो का मूत्त रूप है और उन चारो आदर्शों का पालन करते हुए ही सुलतान एक आदश व्यक्ति मित्र भाई पति शरणागत वत्सल वीर प्रशासक पुत्र आदि के रूप मे हमारे समक्ष आता है। तात्पय यह है कि निहालदे सुलतान के गोरखनाथ अन्य लोक गाथाओ क दवी शक्तिया से युक्त पात्रो की तुलना म अधिक विराट व्यक्तित्व लिये हुए हैं।

चमत्कारी पात्र—चमत्कारी पात्रो म अप्सरा, गधव किन्नर आदि आते हैं। बगडावत तथा निहालदे सुलतान दोनो रचनाओ मे अप्सरा पात्र हैं। अप्सराए इन्द्र की सभा की नतकी होती हैं जो स्वच्छ द विचरण करती हैं। वे पृथ्वी के किसी पुरुष पर भी आसक्त हो जाती हैं। पर आश्चय है कि निहालदे सुलतान की अप्सरा भी सुलतान से सत् की बात कहती है। वस्तुत निहालद सुलतान लोक गाथा मे रचनाकारा ने आदश की स्थापना का लक्ष्य सदव अपना दृष्टि म रखा है और कही भी पात्रो को आदश स इधर उधर नही होने दिया है।

मानव पात्र—सुलतान ढोना बगडावत, पाबूजी गोगाजी तेजाजी, जलाल डूगजी जुवारजी गुलाबसिंह भरथरी गोपीचन्द आदि राजस्थानी लोक गाथाओ क नायक हैं। गोपीचन्द तथा भरथरी दोना ही निवत्ति माग पर प्रवत्त वराग्य लिए नायक हैं। शेप सभी नायक धीरोदात्त नायक की कोटि म आते हैं। पर इन नायको मे कोई भी नायक सुलतान के समान विराट व्यक्तित्व वाला व्यक्ति नही है। आश्चय तो यह है कि वह गहस्थ होत हुए भी गोपीचन्द भरथरी के समान वरागी भी है व्यक्ति होत हुए भी वह पूण समाज है सवक होते हुए भी स्वामी है, शत्रुओ का भी मित्र है परनारिया का भाई है विनम्र होते भी निर्भीक है वीर होते हुए भी विनीत है असहाय होते हुए भी सहाया का सहारा है। इतना व्यापक व्यक्तित्व शिष्ट महाकाव्यो म भी दखने को नही मिलता। पाबूजी गोगाजी तेजाजी ये तीनो भी बडे निमल चरित्र वाले पात्र हैं पर इन नायको का चरित्र उतना विकसित नहीं हो पाया है जितना सुलतान का। कुछ तो इन नायको की कथा भी छोटी है। बलिदान की भावना इन लोगो म भी पूरी तरह प्रबल है पर जो अवसर सुलतान को मिलते हैं वे अ य किसी नायक को नहीं।

नायिकाओं मे निहालदे का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वह अन्य नायिकाओं की 'रह सुलतान पर आसक्त होकर उससे विवाह करती है। मरवण बूबना, सोरठी, ागवन्ती आदि नायिकाओं के समान उसके हृदय मे भी सुलतान के प्रति प्रेम का थाह सागर है वह भी सुलतान के विरह म व्याकुल होती है पर वह बडी कमशील ारी है। वह विपत्तियो म भी अपना मानसिक स तुलन बनाए रखती है। रूप सौन्दय म वह अ य नारियो के समान है। नारी पात्रो के सम्बन्ध मे राजस्थानी लोक गाथाओं म कतिपय साम्य इस प्रकार है—

1 प्राय सभी नायिकायें अपने प्रियतम पर आसक्त होती हैं और हठ कर उन्हे प्राप्त करती हैं।

2 सभी लोक गाथाओं म नायक नायिका मिलन मे अनेक बाधाए आती हैं। वे लोग कई बार बिछुडते हैं। बीच म नायिका की मत्यु भी हो जाती है—जसे मरवण व निहालदे की। पर किसी दवी पात्र के आशीर्वाद स वे जीवित हो जाती हैं।

3 इन नायिकाओं पर अ य पात्र भी आसक्त हो जाते हैं और वे उन्हे पाने की चेष्टा करते हैं जसे—

निहालदे—फूलसिह भानुसिह, श्यामसिह जगतसिह।

मरवण—ऊमर सूमरा।

बूबना—*मगत मायचो*

4 ये सभी नायिकायें सती साध्वी नारिया हैं तथा सती होने के लिए तत्पर रहती हैं। नागवन्ती नागजी के साथ सती हो जाती है। सोरठी का चरित्र विशष उल्लेखनीय है कि तीन पुरुषो की अकशायिनी होने के बाद जू भी सोरठी को रचनाकारा न सती ही घोषित किया।

राजस्थानी लोक गाथाओं म विशेष रूप से प्रेम कथात्मक लोक गाथाओं मे खलनायक पाए जात हैं। य खलनायक नायिका पर आसक्त होते हैं तथा उसे जबरदस्ती पान की चेष्टा भी करते हैं। फूलसिह, श्यामसिह जगतसिह, भानु सिह (निहालदे सुलतान) ऊमर सूमरा (ढोला मारू), मगतमायची (जलाल बूबना) आदि इसी तरह के पात्र हैं पर इन पात्रा को नायिकायें मिल नहीं पाती। 'निहालदे सुलतान म ऐसे चार खलनायक हैं। ये चारा ही निहालदे को पाने का प्रयास करते हैं पर असफल रहते हैं। इनस निहालदे का चरित्र और निखार पा गया है।

पशु पक्षि जन्तु पात्र—*सभी राजस्थानी लोक गाथाओं म पशु पक्षी एव जन्तु* पात्र पाए जाते हैं। पशुओ म हाथी, घाडा ऊट आदि पात्र हैं। नीली घोडी, पाबूजी, तेजाजी बगडावत तीनो लोक गाथाओं म है। सुलतान के पास भी बडा स्वामिभक्त घोडा है। वह नीली घोडी के समान ही है। निहालदे सुलतान का दरियाई घोडा अपन जसा विचित्र पात्र है जिसका तप नारी की परछाई देखने से भग हो जाता है। ढाला मारू म घोड़ा न होकर ऊट पात्र है।

नायिकाओं में निहालदे का महत्वपूर्ण स्थान है। वह अन्य नायिकाओं की तरह सुलतान पर आसक्त होकर उससे विवाह करती है। मरवण, बूबना, सोरठी नागवन्ती आदि नायिकाओं के समान उसके हृदय में भी सुलतान के प्रति प्रेम का अथाह सागर है, वह भी सुलतान के विरह में व्याकुल होती है पर वह बड़ी कर्मशील नारी है। वह विपत्तियों में भी अपना मानसिक सन्तुलन बनाए रखती है। रूप सौन्दर्य में वह अन्य नारियों के समान है। नारी पात्रों के सम्बन्ध में राजस्थानी लोक गाथाओं में कतिपय साम्य इस प्रकार है—

1. प्रायः सभी नायिकायें अपने प्रियतम पर आसक्त होती हैं और हठ कर उन्हें प्राप्त करती हैं।
2. सभी लोक गाथाओं में नायक नायिका मिलन में अनेक बाधाएं आती हैं। वे लोग कई बार बिछुड़ते हैं। बीच में नायिका की मृत्यु भी हो जाती है—जैसे मरवण व निहालदे की। पर किसी दैवी पात्र के आशीर्वाद से वे जीवित हो जाती हैं।
3. इन नायिकाओं पर अन्य पात्र भी आसक्त हो जाते हैं और वे उन्हें पाने की चेष्टा करते हैं जैसे—
   निहालदे—फूलसिंह भानुसिंह श्यामसिंह जगतसिंह।
   मरवण—ऊमर सूमरा।
   बूबना—मगत मायचा
4. ये सभी नायिकायें सती साध्वी नारियां हैं तथा सती होने के लिए तत्पर रहती हैं। नागवन्ती नागजी के साथ सती हो जाती है। सोरठी का चरित्र विशेष उल्लेखनीय है कि तीन पुरुषों की अंकशायिनी होने के बाद भी सोरठी को रचनाकारों ने सती ही घोषित किया।

राजस्थानी लोक गाथाओं में विशेष रूप से प्रेम कथात्मक लोक गाथाओं में खलनायक पाए जाते हैं। ये खलनायक नायिका पर आसक्त होते हैं तथा उसे जबरदस्ती पाने की चेष्टा भी करते हैं। फूलसिंह श्यामसिंह जगतसिंह, भानुसिंह (निहालदे सुलतान) ऊमर सूमरा (ढोला मारू), मगतमायचो (जलाल बूबना) आदि इसी तरह के पात्र हैं पर इन पात्रों को नायिकायें मिल नहीं पाती। 'निहालदे सुलतान' में ऐसे चार खलनायक हैं। ये चारों ही निहालदे को पाने का प्रयास करते हैं पर असफल रहते हैं। इनसे निहालदे का चरित्र और निखार पा गया है।

पशु पक्षि जन्तु पात्र—सभी राजस्थानी लोक गाथाओं में पशु पक्षी एवं जन्तु पात्र पाए जाते हैं। पशुओं में हाथी घोड़ा, ऊंट आदि पात्र हैं। नीली घोड़ी, पाबूजी, तेजाजी बगड़ावत तीनों लोक गाथाओं में है। सुलतान के पास भी बड़ा स्वामिभक्त घोड़ा है। वह नीली घोड़ी के समान ही है। 'निहालदे सुलतान' का दरियाई घोड़ा अपने जैसा विचित्र पात्र है जिसका तप नारी की परछाई देखने से भंग हो जाता है। ढोला मारू में घोड़ा न होकर ऊंट पात्र है।

पक्षियों में तोता मना क्रौंच कौवा आदि पक्षी पात्र राजस्थानी लोक गाथाओं में है। तोता सामान्यत सन्देश ले जाता है कौवा प्रिय के आगमन का सूचक है। निहालदे सुलतान में मना सुलतान को भावी सङ्कट से सचेत करती है। पर निहालदे तथा मादा क्रौंच का संवाद अपने आप में एक महत्वपूर्ण स्थल है। मादा क्रौंच के तर्कों ने प्रसंग को नवीन गरिमा प्रदान की है।

जन्तुओं में सर्प तथा कछवा पात्र राजस्थानी लोक गाथाओं में प्रयुक्त हुए हैं। गोगा जी ढोला मारू निहालदे सुलतान में सर्प पात्र हैं जो मानव पात्रों को काटते हैं। निहालदे सुलतान में कछुआ ऐसा पात्र है जो किसी भी अन्य लोक गाथा में नहीं मिलता। कछुआ योनि से जन्तु है किन्तु आदर्श मित्र का प्रतीक बन मानवीय संवेदनाओं की पुष्टि करता है।

पात्रों के संदर्भ में निहालदे सुलतान लोक गाथा की एक विशेषता और है— दानव पात्रों की स्थिति। अन्य किसी भी लोक गाथा में दानव पात्र नहीं हैं। निहालदे सुलतान में दानव पात्रों के माध्यम से रचनाकारों ने मानव तथा मानव प्रकृति का जो इतिहास व्यक्त किया है वह अपने आप में एक अद्वितीय प्रसंग है। यह परिकल्पना शिष्ट महाकाव्यों में भी विरल है। अत पात्रों के चरित्र चित्रण की दृष्टि से निहालदे सुलतान एक सशक्त लोक गाथा है।

7 राजस्थानी लोक गाथाओं के कथानकों पर विचार करते समय एक तथ्य और सामने आता है— कई पात्र एक से अधिक लोक गाथाओं में आये हैं पर उनके क्रिया कलाप एवं व्यक्तित्व में पर्याप्त भिन्नता है। नीचे इनका परिचय दिया जा रहा है।

पात्र का नाम		रचना का नाम तथा पात्र की विशेषता		रचना का नाम तथा पात्र की विशेषता
		ढोला मारू		निहालदे सुलतान
1 मारू	मरवण	1 आदर्श प्रेमिका		1 आदर्श धर्म बहन
		2 आज्ञाकारी पत्नी		2 कमजोर पति की
			मारू	शक्ति सम्पन्न पत्नी
				3 योग्य प्रशासक
				4 व्यावहारिक तथा

	5 पत्नी मालवणी से आतंकित	4 पत्नी के समक्ष महत्वहीन
	6 दानवीर	
	गोगाजी	पाबूजी
3 गोगाजी	1 नायक	1 पाबूजी के सम-कालीन
	2 अलौकिक शक्ति सम्पन्न	2 अलौकिक शक्ति सम्पन्न
		3 पाबूजी से भी शक्ति सम्पन्न
	भरथरी	निहालदे सुलतान
4 गुरु गोरखनाथ	1 अलौकिक शक्तियों से सम्पन्न	1 अलौकिक शक्तियों से सम्पन्न
	2 नायक के प्रेरक	2 नायक के प्रेरक
	3 नायक को वीतरागी बनाने वाला	3 नायक को संसार में सत्य न्याय की रक्षा की प्रेरणा देने वाले

8 राजस्थानी लोक गाथाओं में पात्रों के जन्म सम्बन्धी विचित्र घटनाओं में भी पर्याप्त साम्य है। इन रचनाओं में अनेक पात्रों का जन्म वरदान, दर्शन, छाया पड़ने आदि से हुआ है। नीचे ऐसे पात्रों का परिचय दिया जा रहा है—

पात्र	लोक गाथा	जन्म की भूमिका
1 सुलतान	निहालदे सुलतान	गोरख द्वारा करणावती को दिये जाने पर
2 जलदीप	निहालदे सुलतान	रूपादे पर सुलतान की छाया पड़ने से
3 गोगाजी	गोगाजी	गोरखनाथ द्वारा बाछल को वरदान देने पर
4 देवनारायण	बगड़ावत	साढूजी के स्तन पर भंवरा लगने से दुर्गा का वरदान से
5 ढोला (साल्ह कुमार)	ढोला मारू	नल द्वारा तीर्थराज पुष्कर की यात्रा की मनौती से
6 सोरठी	सोरठी	राजा जयसिंह को स्वप्न में दैविक स्वर सुनाई देने से
7 गोपीचंद	गोपीचंद	जालंधरनाथ के आशीर्वाद से

9 राजस्थानी लोक गाथाओं म राजस्थानी सास्कृतिक जीवन का प्रतिबिम्बन समग्र रूप से हुआ है। धार्मिक विश्वास, म ध विश्वास लोक देवता सामाजिक परम्पराए (विवाह आदि) शकुन त्योहार पव आदि का विशद वणन इन सभी लोक गाथाओं म मिल जाता है। सभी लोक गाथाओ म शव मत, शक्ति मत नाथ पथ आदि का समय हुआ है। इस सम वय की दृष्टि से निहालदे सुलतान सबसे महत्त्व पूण लोक गाथा है। सभी मतो का सु दर सम वय इस रचना म हुआ है। यह लोक गायको की कुशलता का प्रमाण है कि शिव दुर्गा, गोरख आदि दव पात्र इस रचना मे एक धरातल पर हैं।

10 सभी लोक गाथाए गय रचनाए हैं। यद्यपि इनम विभिन्न रागो एव छ दो का प्रयोग हुआ है पर राजस्थान के विभिन्न अचलो म गायक इन लोक गाथाओं को गाकर लोकरजन करत हैं लोकोपदेश देते है तथा अपनी जीविका का उपाजन करते हैं। निहालदे सुलतान गोपाजी सोरठी ढालामारू गोपीचन्द भरथरी लाक गाथाए तो राजस्थान के अतिरिक्त हरियाणा ब्रज क्ष त्र भोजपुरी क्षत्र आदि प्रदेशो मे भी गायी जाती हैं।

इन लोक गाथाओं का महत्व एक ओर भी दृष्टि से है—कुछ लोक गाथाओ के नायक तो जन जीवन मे लोक देवता के रूप मे पूजे जाने लगे है। गोगाजी तजाजी लोक देवता के रूप म पूज जाते हैं। लोग देवनारायण की भी पूजा करत हैं। सुलतान जसे नायक तो लोक भावनाओं के रक्षक पात्र हैं।

उपयु क्त विवचन मे लेखक ने निहालदे सुलतान की तुलना अ य राजस्थानी लोक गाथाओ से की है कि तु उसकी धारणा यही है कि निहालदे सुलतान अन्य राजस्थानी लोक गाथाओं से श्रेष्ठतर रचना है। उसम शिष्ट महाका य जसी गरिमा है उसके पात्रो म पूणता है उसम भावनाओ की गहरी अभिव्यक्ति है तथा जीवन का व्यापक फलक उसके माध्यम से हमारे समक्ष उभरता है।

वीर कथात्मक लोक गाथाए—

पाबूजी

राजस्थान की वीर भूमि वीरो का समुचित सम्मान करना जानती है। जिन वीरो ने प्रान, मान मर्यादा के लिए लोकहित के लिए जन जीवन की रक्षा के लिए अपन तन मन का हसते हसते बलिदान कर दिया है, उन वीरो मे पाबूजी का नाम राजस्थानी जन जीवन म माला के सुमेरु की भाति महत्वपूर्ण है।

कालूगढ़ के राजा धाधल के दो पुत्र थे। बडे का नाम बूडोजी और छोटे का नाम पाबूजी था। राजा धाधल के एक पौत्री भी थी, जिसका नाम कलमदे था। राजा धाधल अपनी पौत्री के लिए बडे चिंतित थे। पाबूजी और बूडाजी दोनो भाई केलमदे के लिए योग्य वर की तलाश म थे। पाबूजी अपने चमत्कारो के लिए किशो रावस्था मे ही प्रसिद्ध हो गये थ। उनकी वीरता और अदम्य साहस की कई कहा नियां घर घर म प्रचलित थी। कलमदे का विवाह वे किसी समान कुल म करना चाहते थे। *एक बार सयोग से ददरेवा के राजकुमार गोगा चौहान स उनकी भेंट हो* गई। दाना न अपन अपने चमत्कार दिखलाये। दुर्भाग्य से चमत्कारा की इस होड म पाबूजी गागाजी स हार गय। इस हार के परिणाम स्वरूप पूव निश्चित की गई *गोगा की शत के अनुसार केलमदे का विवाह गोगाजी के साथ ही कर देना पडा था* यद्यपि राजा धांधल और बूडोजी एकमत नहीं य। लकिन समय की गति को कौन टाल सकता है। केलमदे का विवाह गोगा चौहान क साथ धूमधाम से सम्पन्न हो गया। हीरे जवाहरात, सोना चादी हाथी घोडा पिंजस पालकी आदि दहेज मे दिया गया। पाबूजी को अपनी भतीजी से अत्यधिक स्नह था, इस लिए उ होन दहज म कुछ ऊट दने का भी वचन दिया। ऐसा कहा जाता है उस समय राजस्थान म ऊटो का अत्य त अभाव था। ऊट रखना शान की बात समझी जाती थी। राजा लाग भी ऊटो की सवारी के लिए तरसते थे। पाबूजी ने ऐसा असम्भव वचन अपनी भतीजी को दकर अपने स्नह का इजहार किया। केलमदे के ससुराल मे ऊट देन की बात का हल्ला उड गया।

केलमदे की ननदो एव सास ने जब देखा कि विवाह हुए इतने दिन व्यतीत हो गय हैं, पर पाबू के अभी ऊट नही आये तो उन्होने देखा कि यह तो सूखा वायदा ही था। लगता है पाबूजी ने अपना नाम ऊचा रखन के लिए जात बिरादरी के सामने ऊटो को देन की बात कह दी। ऊट देना लोहे के चने चबाना है। ननद और सास केलमदे का ऊटो के बहाने ताने मारन लगी। व्यग्य स वे केलमदे को कहती— कुवरानीजी, तुम्हारे ऊट हमारे उपवन मे लगे पुष्पो को तो न खा जायेंगे। कभी

कहती हमारे घाडो के बीच तुम्हारे यहा से आये हुए ऊट बहुत ही सुहावने लगते हैं। देखो न ऊटो की कतारें आ रही हैं। इस तरह के कथनो के साथ जब वे हसती तो हसी केलमदे की छाती के आरपार निकल जाती। आंचल म मुह छिपा कर रोती रहती। अपने पीहर वालो पर छोड़े गये व्यग्य बाणो को सहन करने म जब वह असमथ हो गई तो उसने अपने काका पाबूजी को एक पत्र लिखा जिसमे उसने ऊटो के भेजने का वायदा याद दिलाया। साथ ही साथ उसने सास ननद के तीखे व्यग्य प्रहारो को भी लिखकर काका को वस्तु स्थिति से अवगत कराया। जब पत्रवाहक कोलूगढ पहुचा तो उस समय सध्या हो चली थी। तारे आकाश मे निकलने लगे थे। पलपल अ धेरा बढ़ता जा रहा था। केलमदे के निर्देश क अनुसार हलकारा बिना कही विश्राम किये कोलूगढ पहुचा। उसने तुर त अपने आने का स देश पाबूजी के पास भेजा। पाबूजी न स देश को अपने भाले के प्रकाश म पढ़ा। भाले की चमक और पाबूजी की आखो से निकलती आग समान रूप से देखी जा सकती थी। पाबूजी की आंखो से अगारे बरसने लगे। उ होने कुछ निश्चय करके अपने होठ काट लिये, हाथ बरबस भाले की ओर बढे केलमदे के पत्रो का विवरण पढकर वे व्याकुल हो गये। उ हे अपने वचन को पूरा न करने क कारण बार बार अपने ही ऊपर क्रोध आने लगा। अपने बडे भाई बूडोजी की सलाह से दरबार लगाया गया। अधीनस्थ सभी सरदार हथियारो स सज्जित होकर दरबार म उपस्थित हुए। बीडा डाला गया। पाबूजी न बीड का आशय स्पष्ट करते हुए कहा कि जो कोई वीर ऊटो का पता लगा येगा उस 21 गाव जागीर म दिये जायेंगे। सभा म सन्नाटा छा गया। ऊ ट तो इन्द्रासन प्राप्त करने स भी ज्यादा मुश्किल थ। ऐसे असम्भव काय को करने का साहस किसमे था। किस के दो सिर थ। बहुत दर तक की चुप्पी के पश्चात हरीसिंह अपने स्थान से आग बढा और उसन बडे साहस के साथ बीडा उठा लिया। पाबूजी ने हरीसिंह की पीठ थपथपाई और कहा तुम्हे जसा घोडा चाहिये वसा ले लो जितना धन चाहिए उतना धन ले लो तथा जितने आदमी मदद के लिए चाहिए उतन आदमी अपन साथ ल लो और अब इस काय को पूरा करने के लिए शीघ्र ही प्रस्थान कर जावो। सभी सरदारो ने उसे विदा किया।

जब हरीसिंह अपनी मा से विदा लेने आया तो मा भावविह्वल हो गई। वह जानती थी कि हजार हजार कोश तक ऊट का नामोनिशान भी नही मिलेगा। केवल रावण की लका ही एकमात्र ऐसा स्थान है जहा ऊटो की भरमार है। समुद्र पार की ऐसी विकट धरती पर अपने को जाते देख वह फूट फूट कर रोने लगी। उसने अपने बेटे को वचन से मुकर जाने के लिए कहा। यदि हरीसिंह राजी हो जाता तो वह पाबूजी की धरती छोडकर दूसरे राज्य म बस जाने को भी तयार थी किन्तु हरीसिंह की पत्नी अपने वीर पति पर वचन भग का कलक नही लगने देना चाहती थी। उसने आरती सजाई और अपने पति को कुकुम का तिलक लगाया। माला पहनाई और बड हष स विदा किया। हरीसिंह अपनी मा के मोह को भग करना चाहता था। रोते रोते मा ने उसे जाने की आज्ञा देदी। उसने जोगी

का वेष बना कर अपनी मा को छलना चाहा। मा ने जब अपने पुत्र को साधु के वेष म देखा तो वह उस पहचान गई और रा रो कर कहने लगी बेटा तू साधु होकर जा रहा है मुझ बुढ़िया का क्या होगा? तेरी बहिन सयानी हो चली है। उसके हाथ पील कौन करेगा? उसके मडप को कौन सम्भालेगा? कौन क यादान देगा? हरीसिंह मोहमुक्त हो चला था फिर भी क्षण भर को वह बहिन के प्यार के कारण ठिठक गया लेकिन उसी क्षण उसे अपनी प्रतिज्ञा याद हो आई। उसन अपनी मा को आश्वस्त करते हुए कहा मा जब तक बूडोजी और पाबूजी जस धनी हैं चादा और डामा जमे मेरे मित्र हैं तब तक तू किसी बात की चिंता न कर। लेकिन मा के स्तनो म खुजलाहट आ रही थी। हरीसिंह की मा इसे अपशकुन मान कर उसे भेजने मे डर रही थी। हरीसिंह के हठ के आगे मा को झुकना पड़ा। हरीसिंह आवश्यक साज सामान तथा मोहरें लेकर लका की ओर चल पड़ा। तीन विश्राम उसने दक्षिण की धरती पर किय। किन्तु जिसन सिर पर कफन बाध रखा हो उसे चन कहा? वह तो अगला सूरज ऊटो के बीच उगाना चाहता था। दिन निकलने से पूव ही उसने घोड़े को ऐड लगाई। देखते देखते घोड़ा हवा से बातें करने लगा। वह समुद्र के किनारे पहुच चुका था। समुद्र ऊची ऊची लहरो स खेल रहा था। ऐसा लगता था मानो वह आकाश से ठिठोली कर रहा हो। उसकी गजना दिल दहला रही थी। हरीसिंह तूफानी समुद्र को देख वही खड़ा हो गया। समुद्र को पार करना उसे असम्भव दिखाई पड़ा। उसने अपन गुरु बालीनाथ का ध्यान किया। बालीनाथ ने अपने भक्त का सकट समझ तुर त ही अपने योगबल से समुद्र पर सेतु बाध दिया। हरीसिंह ने घाड़े को ऐड लगाई। घोड़ा सेतु पार करता हुआ लका पहुचा। हरीसिंह न अपने घोड़े को कहा जिस दिशा मे ऊटो की गध उठ रही है उसी ओर चलो। अपन स्वामी के मन की बात जानने वाला वह स्वामी भक्त अश्व यद्यपि थक कर चर चूर हो गया था, कि तु स्वामी का प्रोत्साहन पाकर वह पुन दौड़ने लगा। जगल दर जगल घूमन पर एक बीहड़ मे उसने ऊटो का झुण्ड चरते हुए देखा। उनके रखवाल पेड़ा के नीचे सा रहे थ और कुछ इधर उधर बठे गप शप कर रहे थे।

हरीसिंह न वस्तुस्थिति को समझ कर घोड़े को वक्षो क बीच मे बाध दिया और ऊटो से थोड़ी दूर पर आग जला कर तपने लगा। उसकी धूनी से उठने वाला धुआ जगल मे फलन लगा। ऊटो के रखवाले अचानक किसी साधु को आया देख कर भयभीत हो गये। वे हरीसिंह को सिद्ध साधु समझ कर पूजने लगे। साधु के लिए दूध और फल इकट्ठा करने लगे। जब बहुत सारे लोगो ने हरीसिंह को दूध समर्पित किया तो वह चौकन्ना होकर उठ बठा और कहन लगा मैं तो साधु हूं। न मैं तुम्हारा दूध ग्रहण करूगा न फल। इतना कह कर वह पुन ध्यान म लीन हो गया। गाव के लोग विस्मय विमूढ होकर लौट पड़े। उन्होंने इस साधु क सम्ब ध मे सवत्र चर्चा फला दी। पण्डितो की सभा म साधु के विषय म विचार हुआ। ज्योतिषियो ने अपना पतड़ा फलाया और कहा वह व्यक्ति साधु नहीं है, **वह तो** कोलूगढ

वे चमत्कारिक पुरुष पाबूजी का सेवक है। सात सम दर पार करके वह ऊंट चुराने के लिये आया है। जब चोरी का यह अद्भुत ढग उन्होंने समझा तो वे लाठियों सहित साधु पर चढ बठे। हरीसिंह गाव वालो की फौज को देखकर उनके म तव्य को समझ गया था। वह भलीभांति जानता था कि इस प्रदेश म वह अकेला इतने लोगो से युद्ध म पार नही पा सकेगा इसलिए उसने चमत्कार दिखलाने का निश्चय किया। गुरु बालीनाथ का स्मरण किया। जब गाव वाले अत्य त समीप आ गये तो वह धूणी के जलते हुए अगारो को अपनी झोली म रखकर चलने लगा। गाव वाले अपने आश्चय का न रोक सके। साधु के इस कृत्य को उन्होने अत्य त श्रद्धा के साथ देखा। उनकी लाठियां झुक गई। अब तो वे उसके माग म पलक-पावडे बिछाने लगे। स्वागत सत्कार करने लगे। उसके चरण पकड कर अपने अपराध की क्षमा मागने लगे। दूध और फल फूल लाये गये। सबने हाथ जोडकर साधु से निवेदन किया कि आप सिद्ध पुरुष हैं कृपा कर हमारा दूध स्वीकार कीजिये। हरीसिंह ने खाली खप्पर आसन पर रख दिया और अपने इष्ट बालीनाथ का ध्यान करने लगा। गाव वाले दूध की हांडिया खप्पर म डालने लगे लेकिन खप्पर ज्यो का त्यो खाली पडा रहा। इस करामात को देखकर सभी लोग हैरत म रह गये। उन्होने भयभीत कातर वाणी म गाव की रक्षा करने के लिए बाबा स प्राथना की। हरीसिंह ने सबको सतोष बधाया कि डरने की कोई बात नही है। मैं किसी का अनिष्ट नही करू गा। तुम्हारे ऊट भी मैं चुराकर नही ल जाऊगा ऊटो की कुछ मीगनिया ले आओ। लोग दौड और मीगनिया लाकर बाबा को भेंट की। बाबा ने सबो को आशीर्वाद दिया और अपने अपने घर लौटने को कहा। हरीसिंह ने अब अधिक विलम्ब करना उचितन हीं समझा। अपने काय की साक्षी के रूप म मीगनियो को झोली म डालकर वह कोलूगढ लौट आया।

पाबूजी की सभा बठी। हरीसिंह ने ऊटो का विस्तृत विवरण दिया। उसने कहा कि रावण की लका म लक्षाधिक ऊट हैं। यदि ऊट प्राप्त करने हैं तो रावण से सघष करने का प्रब ध करना चाहिए। पाबूजी ने अपने वीरो को एकत्रित किया और लका की ओर प्रयाण किया। उनकी सेना की हलचल से धरती धसकती थी। जुझाऊ बाजो के नाद से आकाश फटा पडता था। माग म जितने राजा लोग मिल सब भयभीत होकर पाबूजी की शरण मे आ गये। पाबूजी ने सेना सहित सात समु दर पार करके लका म प्रवेश किया। पाबूजी की केशर घोडी युद्ध के लिए छटपटा रही थी। हरीसिंह ऊटो के चारागाह तक पथ प्रदशन किया। लाख लाख ऊटो के झुण्ड इधर उधर चर रहे थे। पाबूजी की सनाओ ने बाके ऊटो को घेर लिया। चरवाहे भाग छूटे। उन्होने रावण के दरबार मे जाकर फरियाद की। रावण स्वय अपनी सेना सजा कर युद्ध स्थल पर उपस्थित हुआ। रावण की सेना म विकराल राक्षस और भीषण आकार वाले जीव ज तु थे। पाबूजी इस यमदूती सेना से जरा भी विचलित नही हुए। उन्होने रावण को ललकारा। उनकी आवाज दशो दिशाओ मे गू ज उठी। रावण को पाबूजी ने कहा यदि अपना भला चाहते हो

। लौट जाग्रो । मैंने जिन ऊटो को घेरा है उ ह मैं हरगिज वापस करने वाला नही । भीषण सग्राम होने लगा । एक ग्रोर रावण का ग्रट्टहास दूसरी ग्रोर पाबूजी की उद्द गजना युद्ध को ग्रौर भी ग्रधिक भयकर बना रही थी । पाबूजी के दायें बायें चादा ग्रोर डामा ग्रपनी तलवार का जौहर दिखलाने लगे । उन्होने रावण की सेना को गाजर मूली की तरह उडा दिया । रावण को ग्रपनी बची हुई सना के साथ भागना पडा । विजयश्री का सेहरा पाबूजी को बधा । पाबूजी न घेरे हुए ऊटो को लेकर कोलूगढ की ग्रोर प्रस्थान किया । पाबूजी स्वय ऊटो का लेकर ददरेवा जाने के इच्छुक थे । ग्रत कालूगढ पहुचन के पूव ही उ होने ग्रपना माग बदल लिया । वे उतावले उतावले बढ रहे थे । उ ह ग्रपनी भतीजी केलमदे को दिये हुए वचनो को पूण करने की ग्रातुरता थी । माग म सोढो का सूखा प्रदेश थम बाग-बगीचे कुग्रा बावडी, पेड-पौधे सब सूख गये थे । उस भूमि पर पाबूजी के चरण पडते ही सूखा रेगिस्तान लहराने लगा । पौधो के फूल ग्रौर वक्षो क फल ग्रा गये । पाबूजी के इस चमत्कार को वहा की राजकुमारी सोढी ने ग्रनुभूत किया । वह टकटकी लगा कर घोडी पर चढे पाबूजी को देखती रही । कितु पाबूजी न उस ग्रोर स मु ह मोड लिया । वे उसी निस्पृह भाव स ग्रागे बढ गये । ददरेवा पहुँच कर उ होने ऊट केलमदे को ग्रश्वशाला म भेज दिया । काका भतीजी का स्नेह मिलन हुग्रा । पाबूजी ने ग्रपने वचन का निर्वाह कर ग्रपन धम की रक्षा की । लोगो ने पाबूजी के वीरत्व की सराहना की । सभी के मुख पर पाबूजी का नाम था । केलमदे के हृष का कोई पारावार नही था ।

राजकुमारी सोढी पहली झलक म ही पाबूजी को ग्रपना सवस्व दे चुकी थी । वह मनसा वाचा कमणा उ ह ग्रपना पति वरण कर चुकी थी । उसने मन ही मन प्रतिज्ञा की कि यदि विवाह करना ही है तो पाबूजी के साथ ही करूँगी ग्र यथा ज म भर कुवारी रह कर जीवन व्यतीत करूँगी । वह ग्रब सयानी हो चुकी थी । उसके पिता को भी सोढी के विवाह की चिता सतान लगी थी । ठाकुर ने ग्रपने कुलपण्डित को बुलाया ग्रौर राजकुमारी सोढी के लिए समान ग्रौर सुयोग्य वर तलाश करन के लिए कहा । जब पण्डित की प्रस्थानगी का राजकुमारी को पता लगा तो उसने कुलपण्डित को ग्रपने पास बुलवाया । साने की चौकी पर उसे बठा कर सोढी ने उपहार स उस प्रसन्न किया । हाथ जोड कर सोढी ने निवेदन किया, हे पण्डितराज ! मेरा निश्चय है कि मैं पाबूजी से ही ग्रपना विवाह करूगी, ग्र यथा ज मभर कुग्रारी रहूगी । इसलिए महाराज को समझा कर तुम सीधे कोलूगढ ही जाग्रो । पण्डित ने कालूगढ ही जाने का निश्चय किया । राजकुमारी के मन की बात का जान पण्डित ने ग्रपना काम ग्रौर भी ग्रधिक सरल पाया । पण्डित कोलूगढ पहुचा । दूर से ही पाबूजी का धवल महल जिसके इद गिद हरे वक्षो की कतारें खडी थी, दिखाई दिया । पाबूजी क सफेद महल के झरोखो पर लाल लाल किवाड हैं । मुख्य द्वार चदन से बना हुग्रा है । पण्डित ने चदन निर्मित दरवाजे स महल म प्रवेश किया । पाबूजी की सभा म बाके सरदारो को देखकर पाबूजी के शौय को वह ग्र दर ही ग्र दर भाप गया ।

पण्डित ने आशीर्वाद देकर अपने आने का प्रयोजन बताया। राजकुमारी सोढ़ी के विवाह सम्बन्ध का स्वर्ण निर्मित नारियल तथा बहुत सी मोहरें पाबूजी को भेंट की। तिलक निकाल कर पान का बीड़ा पाबूजी के मुंह में दिया। सभी लोग इस सम्बन्ध से प्रसन्न थे। बूड़ोजी ने चुटकी लेते हुए पण्डित से कहा—पण्डित यहीं यह नारियल मेरे लिए तो नहीं था। इस पर पाबूजी ने अपने भाई को झिड़क दिया—दादा, बड़ी मुश्किल से मनुष्य की देही मिलती है। इस देही को पापमय मत करो। छोटे भाई के लिए आया हुआ नारियल बड़े भाई को भेंट नहीं किया जा सकता। सरदारों के बीच कहे गये इस कथन ने बूड़ोजी को रुष्ट कर दिया। वे वहां से उठकर महलों की ओर चल दिये। पण्डित ने विवाह की तिथि निश्चित आने वाली पूर्णिमा को पाणि-ग्रहण संस्कार का मुहूर्त निकाला गया। पण्डित बेशुमार उपहार लेकर अपने गांव लौट आया। दोनों ओर विवाह की तैयारियां होने लगी। राजकुमारी सोढ़ी का यौवन निखार पर था। पाबूजी द्वारा सम्बन्ध स्वीकार कर लिए जाने पर वह अत्यन्त प्रफुल्लित थी।

पाबूजी ने अपने सगे सम्बन्धियों को विवाह के लिए आमन्त्रित किया। जगह जगह पीले चावल भेजे गये। पाबूजी ने अपने प्रधान चांदा को कहा कि हनुमानजी करणीजी के यहां निमन्त्रण भेजो। गोरखनाथ के यहां पीले चावल अपेक्षाकृत अधिक भेजो ताकि वे अपनी समस्त जमात के साथ आवें। पितरों और सतियों के यहां निमन्त्रण भेजो ताकि वे रंगवाके के विवाह में आवें। अपनी बहिन को बुलाने के लिए रथ भेजा गया। किन्तु पाबू ने अपने बहनोई जायल खींची के यहां जानबूझ कर निमन्त्रण नहीं भेजा। चांदा और डामा ने पाबूजी को बहुतेरा समझाया कि बहनोई पूज्य होता है विवाह में अनेक अवसरों पर बहनोई की आवश्यकता होती है। उनके बिना बहुत से नेग चार अधूरे ही रह जायेंगे। और फिर सेठ साहूकार लोग भी क्या कहेंगे? सर्वत्र इस बात की चर्चा बनेगी जो अपनी प्रतिष्ठा के लिए खराब रहेगी। पर पाबूजी ने एक न सुनी। उन्होंने साफ कह दिया जायल जिंदराज खींची की नजरों से मेरी नजर नहीं मिलती। साफ कह देता हूं वह राठौड़ों की बारात नहीं चढ़ेगा।

> करो र थे मोला चांदा भोल मन की बात।
> कोई जायल की निजरयां हूं र ये म्हारी निजरयां ना मिल।
> चांदा बाघेला थ माने भला मत मान
> कोई नहीं तो चढगो खींची राठोडा री जान मे।

विवाह से कुछ दिन पूर्व उनकी बहिन रथ में बैठ कर आ गई। उससे कलश बधाया गया। घर द्वार सजाये गये। महल के कंगूरों पर वन्दनवार लटकाई गईं। पाबूजी की बारात के लिए हाथी घोड़ा और रथों को सजाया गया। पाबूजी की सवारी के लिए उनकी अश्वशाला में उनके योग्य नवली घोड़ी नहीं थी। दूल्हे के रूप में वे किसी नई केशर घोड़ी पर चढ़कर तोरण मारना चाहते थे। मित्र चांदा ने कहा ऐसी केशर घोड़ी है तो केवल देवल चारणी के यहां है। पाबूजी ने यह सुन

चादा का चारणी के पास भेजा। चान्दा न चारणी का समस्त बातो स ग्रवगत कराया और कहा कि तुम इसके बदले हीरा पन्ना जवाहरात जो चाहो ले लो। चारणी ने कहा कि मेरी घोडी मेरी गायो की रक्षा करती है। उसकी रखवाली से मुझे बडा सहारा है। यदि केसर घोडी मेरे घर से चली जायगी तो दुश्मन मेरी गायो को घेर कर ले जायेंगे। इसलिए मैं इस घोडी को देने म असमर्थ हू। चांदा ने उसे विश्वास दिलाया कि पाबूजी तेरी रक्षा करेंगे। गौ ब्राह्मण की रक्षा करना तो उनका धर्म है। राठोड़ अपनी बात के पक्के होते हैं। चान्दा से वचन पाकर चारणी ने पाबूजी के लिए घोडी दे दी। उसने कहा यह घोडी हवा से तेज चलती है। मन से भी ज्यादा चचल है। साढो के घोडे अपनी तेज चाल के लिए प्रसिद्ध हैं कि तु वे भी इस न पा सकेंगे। इस विलक्षण घोडी को तुम ले जाओ। मेरी गायो की रक्षा की जिम्मेदारी अब पाबूजी पर रहेगी।

पाबूजी को चारणी की शर्त स्वीकार थी। घोडी देखकर पाबूजी बडे प्रसन्न हुए। पाबूजी दूल्हे बने, सूर्य की तरह चमकता हुआ मोड उन्होने सिर पर धारण किया। केसर घोडी पर सवार होकर वे सोढो की राजधानी उमरकोट की ओर चलने लगे। घोडी की शोभा अपनी निराली ही थी। पाबूजी ने अपने चारण भाटो को दिल खोल कर नेग देने का आदेश दिया। मोहरो की थलिया खुल गई। बहिन बेटियो को सन्तुष्ट किया गया। चादा ने आकर तब पाबूजी से निवेदन किया कि आपके दान पुण्य से सब लोग छक गये हैं, केवल देवल चारणी नेग लेने से इकार करती है और खडी खडी आसू बहा रही है। न किसी से कुछ कहती है और न किसी की सुनती है। यह सुनकर पाबूजी स्वय चारणी के पास आये। उन्होने बडे आदर के साथ देवल चारणी से कहा—बारठ रानी, इस मागलिक वेला में तुम रो रो कर क्यो अपशकुन कर रही हो। तुम्हे जो चाहिए कहो। यदि नेग मे कमी है तो अभी भी खजाना खुला है। देवल चारणी ने पाबूजी के इन वचनो को सुनकर कहा—हे पाबूजी आप सोढो की उमरकोट जा रहे हो। अपने साथ सभी सरदारो को वीरो को, योद्धाओ को बारात मे ले जा रहे हो। पीछे से मेरी गायो की रक्षा का क्या प्रबन्ध किया है? उनकी रक्षा कौन करेगा? पाबूजी ने चारणी से कहा मेरे भाइयो और सरदारो के बिना बारात फीकी रहेगी। मेरे आने तक सूर्य भगवान प्रजा की और गढ की रक्षा करेंगे।

बारठ रानी भायां बिन या फीकी लागे जान
कोई भाया बिन कुण राचलो यो पाबूजी री पीठ पर ॥

चारण रानी कोट रुखाळो छोडयो श्री भगवान
कोई ससकिरण छोडयो ये म्हे रूखाळो सूरज देवता ॥

चारणी को इस उत्तर से सताप नही हुआ। उसने डामा और चादा को पीछे छोडने के लिए पाबूजी से कहा। कि तु पाबूजी के लिए डामा और चादा दायें बायें हाथ की तरह थे। इसलिए उन्हे कैसे छोडा जा सकता था। चारणी को पाबूजी ने

विश्वास दिलाया कि मेरे बड़े भाई बूडोजी तुम्हारी रक्षार्थ गढ़ में ही रहेंगे। हे देवल रानी हम तीन चार दिन उमरकोट से लौट आयेंगे यदि इस बीच जायल खीची तुम्हारी गायों को घेर ले तो मुझे उमरकोट खबर पहुंचा देना। ज्यों ही मेरे कान में खबर पड़ेगी मैं केशर घोड़ी पर जीण कस कर दौड़ पड़ूंगा। रोटी खाता हुआ भी होऊंगा तो चुल्लू तुम्हारे ही मकान पर आकर करूंगा। हे देवल यह मेरा पक्का प्रण समझना। राठोड़ो के प्रण कभी झूठे नहीं होते। आवश्यकता पड़ने पर हे देवल भवानी बीच भावरें से भी उठकर चला आऊंगा। और आकर तुम्हारी गायों की रक्षा करूंगा। देवल ने पाबूजी की इस शर्त पर नेग लिया और उन्हें विदा किया। पाबूजी की बारात चल पड़ी। डामा और चांदा पाबूजी के आगे पीछे घोड़े नचाते चल रहे थे।

सूर्योदय हुआ। काले नाग ने मार्ग रोक लिया। काले नाग को देखकर बारात ठिठक कर रह गई। चांदा डामा ने अपनी तलवारें खींच ली। पीछे से पाबूजी आये वस्तुस्थिति को देखकर उन्होंने कहा हे डामा सर्प पाताल नगरी का नाग कहा जाता है और हम भूमिपति होते हैं। इसलिए इस काले नाग को दाहिना लेकर बारात को आगे बढ़ाओ। पाबूजी के आदेश पर बारात आगे बढ़ी। थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर पर्वत की चोटी पर से नौ हत्थी सिंहनी उतरी। पाबूजी को सिंहनी द्वारा रास्ता रोकना अपशकुन दिखलाई दिया। डामा की सलाह से शकुनशास्त्री सल्ले को बुलाया गया। सल्ले ने शकुन देखकर कहा यदि शकुन को स्वीकार करते हो तो पाबूजी बारात वापिस मोड़ लो और सोढ़ी के साथ विवाह करने के लिए हाथ का खाडा भेज दो। किन्तु पाबूजी ने पाणिग्रहण की प्रथा के महत्त्व पर ही जोर दिया और कहा कि मैं सिंहनी अथवा ऐसे ही किसी अपशकुन से डर कर हिन्दू रीति को नहीं छोड़ूंगा। राठौडा के मुंह पर कलंक नहीं लगाऊंगा। अपनी माता कुंवलादे का दूध न लजाऊंगा। मेरी प्रतीक्षा में सोढ़ी नववधू बनी विवाह की घड़ियां गिन रही है। यदि मैं मार्ग से वापिस मुड़ जाऊंगा तो वह मुझे कायर गीदड़ समझेगी। उसकी सहेलियाँ उसे ताना से बेध देंगी।

दुनिया सब प्रकार की मर्यादा मानने से रह जायेगी और संसार में पाबू के नाम की जो दुहाई लगती है वह आगे मन्द हो जायगी। इस धरती पर मेरे गीत फिर नहीं चलेंगे और युग युग में मेरा यश नहीं गाया जाया करेगा। इसलिए जब तक मेरे शरीर पर सिर है मुझ से इस संसार में ऐसी कायरता न हो सकेगी। इस पर डामा सिंहनी का सफाया कर देने को तैयार हुआ कि तु डामा को पाबूजी ने सिंहनी पर शस्त्र प्रहार करने से रोक दिया और कहा कि हम क्षत्रिय सिंह है नारी पर शस्त्र प्रहार नहीं करेंगे। डामा ने सिंहनी को ललकार कर वापिस मोड़ना चाहा तभी सिंहनी झपट कर डामा पर टूट पड़ी। डामा ने उसके प्रहार को अपने ढाल पर रोक कर ऐसा प्रहार किया कि सिंहनी वहां से भाग छूटी। पाबूजी केशर कालमी घोड़ी पर बैठ बारात के साथ आगे बढ़े।

उमरकोट थोड़ी दूरी पर ही था। उमरकोट के ऊंचे ऊंचे सफेद भवन नज

दीक भ्रात जा रहे थे। काकड म राठोडो की बारात की भ्रगवानी करने के लिए बहुत से उमरकोट के लोग एकत्रित हो गए थ। माडा भ्रौर बारात के लागा का राम जुहार हुम्रा। डामा का हरी डाली के साथ किल म भेजा। उसक नारी नरवम शरीर भ्रौर शक्ति को पहचान कर लोग भयभीत मे थे। सहलिया ने गीत गाल गाये। सोढो के नाई न डामा को भ्रफीम क भण्डार म ले जाकर खडा कर दिया क्योकि भ्रमल की मामूली मनुहार स ता उसकी जीभ का कुछ पता ही नहीं लगा। देखते देखते डामा भ्रफीम क भण्डार को चट कर गया। वहा पडे हुए पोस्त क छिलके तक भी डामा न नही छाडे। लोगो के भ्राश्चय का ठिकाना न रहा। सभी भ्रवाक स डामा की भ्रोर देखते रह गय। माडा के लोग दाता तल भ्रगुलियां दबाने लगे। भ्रफीम स मस्त डामा को भोजन कराया गया। भोजन क्या वह तो उसे कलेवा ही बता रहा था। इसलिए उस भोजन क भण्डार म ल गय। भ्रब क्या था—भण्डार का समस्त माल डामा क पेट म चला गया फिर भी डामा चुल्लू नही करना चाहता था। रसाई साफ हो गई। सोढा की कलई खुल गई। लोग कहने लगे लडकी का वध ही कर डालो। डामा जस इस बारात म कितने भ्रौर होगे क्या कहा जा सकता है? नाई न डामा को कहा जो पकाया था वह ता भ्राप खत्म कर गये भ्रब भ्रौर क्या दें। डामा न बडी लापरवाही स कहा भ्रभी ता सच पूछो तो कलेवा भी नही हुम्रा है। सोढो मे खलबली मच गई। जिस कन्या क विवाह क शुरू म ही साढा की हेठी हाने लगी है, उस कन्या का ता वध ही कर देना भ्रच्छा है। डामा ने जलती मे घी डाला। कहने लगा भ्रभी हुम्रा ही क्या है? बारातिया म सबस कम खान वाला मैं ही हू। पेटू डामा की बात सुन कर सभी हसी स लोटपोट हो गय।

राठौडा के साथ सम्बन्ध करक साढा म पछतावा उभरता जा रहा था। पाबूजी की बारात सोढीजी क बाग म ठहराई गई भ्रौर बाकी बारात सफद तम्बुम्रो म उतरी। पाबूजी की केसर घाडी का देखकर लागा म सराहना होने लगा। उनके साले केसर घोडी के साथ भ्रपन घोडे का दौडाना चाहते थे। किन्तु पाबूजी ने भ्रपनी घोडी को भ्रकी जान भ्रानाकानी की। तब साढा ने कहा बहनोई जी, भ्रापकी घोडी थक गई है तो हमारे नो लाख वाले मूल्य वाल घोडे पर सवारी कीजिये। पाबूजी न तत्काल उत्तर देते हुए कहा–भ्रापके घाडे पर ता राव उमराव ही चढेंगे। मैं तो मेरी केसर घाडी पर ही सवारी करूगा। सोढो को कुछ ताव हो भ्राया। उन्होने शत रखी कि जिसकी घाडी हार जाय वह भ्रपनी घोडी चारण भाट का बख्सीस मे दे देगा। पाबूजी ने यह शत स्वीकार की। साल बहनोई हाथ म हाथ डाले घोडे पर चढे। दौड हुई। केशर कालमी न सब को धूल चटा दी। सोढो के टट्टू चारणो को दे दिये गये।

सध्या का समय निकट था। तोरण पर जाने का वक्त हो गया था। पाबूजी को सोने का सेहरा बाध कर सवा लाख की कलगी लगा कर दूल्हा बनाया गया। गाज बाजा के साथ कालमी घोडी पर चढ कर पाबूजी सहला के लिए चले। घाडी

नाचती आ रही थी। ढोलक ढोल विवाह के बाज बज रहे थे। घोड़ी का रिमझिम रिमझिम नृत्य सभी को सुहावना लग रहा था। हरे लाल रेशम की जाजिम बिछी हुई थी। चौक पूरे हुए थे। महल में बड़ा रंग जमा हुआ है। राठौड़ों और सोढों के ठाठबाठ हो रहे हैं। पंडित के लड़के ने देवताओं की पूजा की। सूरजमल सोढे ने पाबूजी के तिलक किया। तोरण मारने की तयारी हुई। पाबूजी तोरण मारने के लिए यथास्थान गये। उन्होंने देखा तोरण गगनचुम्बी गढ़ के कंगूरों पर बंधा हुआ है। पाबू ने घोड़ी को थपथपाया। उसे पुचकार कर लाड़ प्यार करते हुए कहा हे कालमी घोड़ी 'तू अगर इसमें जीत गई तो तेरे खुरों में मेहंदी लगवाऊंगा पांवों में रत्न जड़ित घुंघरू की माला डलवाऊंगा गले में सोने की माला पहनाऊंगा और चमकता हुआ गहना मस्तक पर लगाऊंगा इसलिए हे घोड़ी राठौड़ों की प्रतिष्ठा को बनाए रखना और यदि हार गई तो चारण नाटों का कलंक दूंगा। तभी घोड़ी ने कहा हे पाबू तू यदि मेरी पीठ पर चाप मारे तो मैं चन्दमा और सूर्य के कंगूरों पर स्थित तोरण को भी मरवा दूं। हे पाबू मेरी पीठ पर भली प्रकार से जम रहना। पाबू ने नृत्य करती हुई घोड़ी की पीठ ठोंकी। चाप लगते ही वह केसर कालमी उछल पड़ी और उछलती हुई उसने सोढ़ों के गढ़ की दीवार को गिरा दिया और गगन चुम्बी गढ़ के कंगूरों पर अपने चिह्न अंकित कर दिये। केसर ने कहा हे पाबूजी आपको तोरण मारने का चाव था आप जी भर कर तोरण स्थित चिड़ियों को गिन गिन कर मार लीजिए। केसर ने अच्छी प्रकार तोरण मरवा दिया। चांदा डेमा ने यह दृश्य अपनी मूंछों पर ताव दिया। सभी बाग बाग हो गए। पाबूजी के इस कार्य से सोढ़ीजी का चेहरा दमक गई।

> थांरै ताण बरदा छ वो मूंछां ऊपर हाथ
> काई बाग बाग होग्या छ र राठौड़ कुल रा मानवी।
> नीचा तो भूकाया र सोढ़ां माड़ां साथ
> काई पाबूप र बारठिय रै सोढ़ी की एलो र

पण्डित ने पाणिग्रहण करवाया। पाबूजी पीछे और सोढो की लाडली कन्या आगे हुई। पहले भवर म वरवधू के हृदय मिल कर एक हो गये। दूसरे फेरे मे वरवधू दोनो के प्राण मिल कर एकाकार हो गये। राठौडो और सोढो का सम्ब ध घुलमिल कर एक हो गया।

पल फेरे जुडग्या छ बनडे बनडी का जीव
कोई साढा अर राठौडा का वे वाला सगपण जुड गया।
दूजे फेर दूद नीर ज्यू मिल्या दोयनडा जीव,
कोई सोढा अर राठौडा का ब गाढा सगपण घुळ गया।

इधर अचानक ही केसर घोडी हिनहिनाई और उसन अपने फौलादी पाद बधनो को तोड डाला। पाबू न चादा को भेजा कि तुम जाकर कालमी का आश्वस्त करो। उसने यह उत्पाद क्यो मचाया। चादा ने केशर से कहा पाबू ने दा भवर ले लिये दो और बाकी हैं। तू रग मे भग न कर। यदि पाबूजी तुम्हारी दूसरी हिनहिनाहट सुन लेगा तो वचनबद्ध वह भवर को अधबिच छोडकर उठ पडेगा। हे केशर विघ्न न डालो। सोढो की स्त्रियां मुझे गालियां देंगी। इस पर केशर कालमी कहने लगी हे चान्दा जिन गायो का मीठा दूध मैंने पीया था उ ही को जायल खीची घेर कर ले जा रहा है। मैं कड कड दांत चबा रही हूं। हे चादा मेरे मन की बात सुनिये दखा यह देवल भवानी चली आ रही है। उसने सोढा के दरवाजे आकर करुण पुकार मचाई है कि पाबूजी आप ता सोढीजी से पाणिग्रहण करके रीझे हैं और उधर खीची मरी गायो से रीझा है। अब तुम्ही बताओ वह देवल भवानी यहां किस निमित्त आई है? चादा वेदी के पास गया और कहने लगा—क्या बात सुनाऊ? खीची देवल चारणी की गायें घेर कर ल गया है। इतना सुनते ही पाबूजी ने अपने चोगे की डोरी झन्काई पाणिग्रहण छोड दिया और फेरो के बीच ही उठ खडे हुए।

उठते हुए पाबूजी का सोढी न अचल पकड लिया। वह कहने लगी, हे पाबू, मेरे पिता ने कौनसा अपराध किया था? मरी जन्मदात्री माता का क्या कसूर था? मुझ मे कौनसा खोट तुम्हे दिखलाई दिया? पाबूजी ने कहा—हे सोढीजी, न तो कोई तुम्हारे पिता ने ही अपराध किया है और न तुम्हारी जननी से ही अपराध हुआ। हे सोढीजी आप मे कोई दोष है ही नही। इस पर सोढीजी न कहा बीच भवर फिर आप क्यो उठे हो?

मैं आधी कुमारी और आधी विवाहित रह गई। पाबूजी इस पर कहने लगे, हे सोढीजी खास अपराध तो मेरा है, वचनबद्ध होने के कारण मैं तीसरे भांवर मे ही उठकर जा रहा हू। जिस प्रकार मर्दों का पिता एक ही होता है, उसी प्रकार उनका वचन भी एक ही होता है। भावरा की अपेक्षा धम को बडा कहा गया है। यह धरती और आकाश वचनो से बधे अपना काय कर रहे हैं। पवन पानी सूर्य और चांद भी वचनो स परे हैं। वचना से बढ़कर इस ससार मे दूसरा कोई नहीं है। ह साढी, देवल चारणी मेरे समाप बसती है खीची उसके पीछे पडा है।

इस युद्ध म मारे गये । पाबूजी के सिरोभूषण तथा प्र य चि ह लकर दूत सोढीजी के पास पहुचा । साढ जी पहले ही प्रशुभ स डरी हुई थी । उसे भयानक स्वप्न प्राया था जिसम उसन प्रपने प्रापको विधवा वेशभूषा म देखा था । पाबूजी की मृत्यु का समाचार उसने छाती पर वज्र रखकर सुना प्रौर वीर पत्नी की भाति पाबूजी के शव को गोद म लकर वह प्राग म बठ गइ ।

बूडोजी की पत्नी के गभ म एक बालक पल रहा था । इसलिए सती होने स पहल पट चीर कर बालक को बाहर निकाला गया । यही बालक प्रागे चलकर वीर नानडिया कहलाया जिसन भाटी का सिर काटकर प्रपन पिता प्रौर काका का वर शोधन किया ।

> पाबू खातर प्राया छ बदरगा हू बीवाए
> कोई चाल डाम खातर प्राई प्ररमा पर हू पालखी
> जसडे तो जीत्यो है र वो बोलम को दरबार
> कोई खोड सा जीत्यो है र वा गोची जायल जीन को
> खाड जीतणियां का वससी धरती ऊपर बास
> कोई जस जीतणिया री ता होसी वडा म भाया देवलो ।

तेजाजी

राजस्थान के लोक देवता के रूप के जिन गोभक्त तेजाजी को पूजा जाता है, वे सामान्य जाट किसान के घर में जन्मे थे। राजस्थान की धरती सदा से वीरों का सम्मान करती आई है। लोकरक्षा और व्यक्तिगत आन के लिए बलिदान होने वालों को समान रूप से यहां के जन जीवन ने अपने हृदय में स्थान दिया है। तेजाजी अपने गांव और आसपास में अपनी वीरता के लिए तथा निर्भयता के लिए तेजा के नाम से सुविख्यात था। उनके बलिदान के पश्चात सम्बोधन सूचक जी जोड़कर जनता ने उन्हें अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित की और ग्राम की रक्षा करने वाले व्यक्ति को पीड़ाओं से मुक्त कराने वाले ग्राम देवताओं में उन्हें स्थान देकर अपनी श्रद्धा को मूर्त रूप दिया।

बचपन से ही तेजाजी शरीर का बलिष्ठ और कार्यकुशल था। अपने पिता के कार्य में वह यथासम्भव हाथ बटाता और घर के सभी छोटे बड़ों की सेवा में तत्पर रहता। उसे अपने गांव में लोगों के दुःख दर्द का बहुत अधिक ध्यान रहता। नित्य वह घर घर जाकर लोगों के प्रति अपनी सद्भावनाएं व्यक्त करता और जहां कहीं भी सेवा का अवसर देखता करने से कभी नहीं चूकता था। एक विशेष बात जो उसमें थी वह थी अपनी धुन को पूर्ण करने की। जिस काम को करने का वह बीड़ा उठाता जब तक उसे समाप्त नहीं कर लेता—दम नहीं लेता था। दुर्योग की बात थी किशोरावस्था तक पहुंचने के पहले ही पिता का छत्रछाया उन पर से उठ गई थी। घर में बड़े भाई भाभियां थीं और बूढ़ी मां थी। अब तक भी तेजाजी स्वेच्छा से पशुओं को बांधना पानी पिलाना चारा डालना आदि कार्य व अन्य तो कुशलता और प्रसन्नता के साथ सम्पन्न करते रहते थे। इसी प्रकार आषाढ़ का महीना आया। पास पड़ौस के सभी किसान खेतों को जोतने और संवारने में लग गये।

तेजाजी के घर में उनके पिता ने मर कर जो रिक्त स्थान खेत के काम में बना दिया था उस भरन की चिंता उनकी मां और भाइयों को सताने लगी थी। *वर्षा की पहली झड़ियां ने धरती को सजल कर दिया। काली काली घटाएं आकाश* में उमड़ने लगी। किसान का मन खेतों को हरा भरा देखने के लिए नृत्य करने लगा। उसकी मां ने अपने भविष्य को समझ कर ही ऐसे समय में तेजा को अपने पास बुलाया और घर की सारी परिस्थितियां समझा कर यह आग्रह किया कि बेटा अब तो अपने भाइयों का हाथ बटाने के लिए तुम्हें भी खेत में जाना चाहिए। तुम्हारे भाई देखो कितना परिश्रम करते हैं। तुम्हारे दादा (पिता) तो चले गये। अब उनका काम भी भाइयों को ही देखना पड़ता है। इसलिए अपनी अतिरिक्त बल की जोड़ी को तुम सम्भाल लो। तुम्हारे भाग्य से खेतों में सोना निपजेगा।

चालजो चाल मत्रलियां री चाल म्हारा साइबर र
चाल जी चाल मत्रलियां री चाल र ।
कोई दारसो ता उतरयो र चामासा बटा लागिया ।
मूग्यो भी मूग्या घर घर रो माज म्हारा साइबर र
मूगरा भी मूग्यो घर घर हुन रा साज र ।
काई प्रलिय ता प्रलिय का र मही मैं भो लागिया ।
प्राया बी प्राया जठ र साड म्हारा साइबर र
प्राया बी प्राया जेठ र साड र ।
कोई लगता वी प्रार र र मुरगा सांवण आम्बा ।
जूड जी जूड जोत सवारो म्हारा साइबर र
व जूड बी जूड जोत सवारो र ।
कोई थारी तो जाडी का र बोजेंगा मोती बाजरो ।

तजा न प्रपनी बाल्यावस्था की चर्चा की । लकिन मां क प्राग्रह का देख उन्हान हल जोता प्रौर दूसरे दिन म खेत हा की भूमि को जोतना प्रारम्भ कर दिया । तेजा क ज्रिम्म का परटू राम मां ने प्रौर जिमना चार र न सम्भाल लिया ।

प्राषाढ बीता प्रौर सावन । पदापण किया । चारा प्रोर धरती पर हरि याली ही हरियाली दिखाई देन लगा । ताल-तलया नाडा खोचर प्रादि सभी पानी स लबालब भर गय । खेता पर मगन ही मगल दिखलाई दन लगा । किसान बालक प्रलगाजा पर मीठी तान छडन लग । मन्द्रह युवक कजरी गाने लगे । युवतियां घूमर नत्य की ताल पर इठलाने लगी । होने वाली फसल के काल्पनिक भण्डार का सहजत सहलाते वृद्ध प्रसन्नता के सागर म डुबकियां लगाने लगे । मोटे ताज हृष्ट-पुष्ट ढोर जहां तहां खेता की मेड़ा पर चारागाहो म प्रपन गले म बधी घटियो का बजाते हुए वर्षा का प्रभिनन्दन करन लगे ।

खेता पर दोपहर म विश्राम होता । किसान स्त्रियां प्रपने पतियो प्रथवा सम्बन्धियों के लिए छाछ राबडी का कलेवा लकर ठीक समय पर उपस्थित हो जाती । चारा प्रोर सतजुग ही सतजुग दिखाई देता । सूर्योदय से लकर मध्याह्न तक काम करत करते तेजा छाछ राबडी प्रौर लूण्या स भीगी बाजरे की रोटी लेकर प्रान वाली क स्वागत क लिए तयार रहता । नित्य प्रति इसी प्रकार कठोर परिश्रम पारिवारिक स्नेह तथा उल्लास के साथ दिन गुजरत रहे । एक दिन तेजाजी की भावज दोपहर म बहुत देर तक भोजन लेकर नही प्राई थी । दूसरे लाग प्रपना प्रपना भोजन कर खत के बनो पर विश्राम के लिए लट गय । तेजा ने एक हलाई प्रौर मांडी । लकिन प्रभी तक भी भाभी नहीं प्राई थी । दूसरे किसान लोग विश्राम करन के बाद पुन काम म लग गये थ । तेजा ने न भोजन किया न प्राराम । इस पर भी वह काम म लगा रहा । ताप स भरा हुमा तेजा यद्यपि काम म लगा हुमा था लेकिन मन ही मन मे प्रपनी भाभी पर बडा नाराज हो रहा था । प्रन्तत सिर पर रोटी की टोकरी लिए हुए भाभी प्राई । भाभी न बड़ मनोबल स प्रपने देवर

को हेला मारा। तेजा भूखा था अन्दर ही अन्दर क्रोध स लाल पीला हो रहा था। उसने जानबूझकर भाभी की आवाज की उपेक्षा की और अपने बलो को हाक्ता रहा। भाभी न जब पुन भोजन करन के लिए हेला माग तो तजा ने क्रोध मे कहा राटी कौग्रो को फेंक दा, मुझे तो नही खानी है। यह भी राटी लाने का कोई समय है। तुम्हारी तरफ स काई मर या जीय भूखा रहे या प्यासा रहे तुम्हे क्यो चिता हान लगी। भाभी ने जब अपन देवर को इस प्रकार उत्तेजित हाते देखा तो उससे भी न रहा गया। भाभी ने भी आक्रोश भग स्वरो म कहा—मैं कौन ठाली बठी रहती हू या पलग पर सोय रहती हू। मु ह अधेरे उठकर चक्की चलाती हू बीस आदमियो के लिए दस सर आट का लोथडा सेकती हू। पानी के बेवड भर भर कर लाती हू। गाया की गोबर बुहारी करती हू। उपल थापती हू। यह ता मैं ही हू जा तुम्हारे कठार और तीखे बाल सुन रही हू। भाभी क ही शब्दो म देखिय—

घडिया जा पास्या घडिया पोया मोती देवरिया रे
घडिया जी पीस्यो घडिया पायो र।
कोई सारे तो घर को र पाणीडो ढोयो एकली
मण भर जी दूयो मण भर बिलायो मोती दवरिया रे।
भागीजी दोडी मैं ल्याई थारी छाक रैं।
कोई विना चूची भतीजो र छोडयाई लरा रोवतो।

मैं तो पराई नार हू जा कहते हो सुन लती हू। अपनी लुगाई को तो पीहर म छोड रखा है जहा वह अपने मा बाप के राज म चन की बासुरी बजाती है और मैं अपन हाड मास गाळ कर भी तुम्हारी तीखी बातो को सुनन यहा पडी हू। ऐसा ही रोश उतारना हो ता अपनी लुगाई को ल आओ और फिर उसे सुनाना।

म ता जी मैं तो नार छू विराणी मोती दवरिया रैं
मैं तो जी मैं तो नार छू विराणी रैं।
काई थारी तो ब्यायाडी र वा गबर गेरू बाप क।
ल्यावा जी ल्यावो थारी परण्योडी ने जाय मोती देवरिया र
ल्यावो जी ल्यावो थारी ब्यायाडी न जाय रैं।

तजा को काटो तो खून नही। भाभी की बात तीर की तरह उस बेध गई। आग-बबूला हो गया किसका खेत किसकी फसल। वह तो उसी समय हल बलो को खेत म छोड कर लौट आया। उस समय तेजा की मा अपने पोते को खिला रही थी। तजा का मौन और क्राध स भरा लाल चेहरा देखकर वह सहम गई। तजा और अधिक गम हो गया। मॉं न कारण पूछा। तजा बहुत देर तक क्राध के कारण बोल नहीं पाया। उसन भाभी के साथ हुए वार्तालाप का तो मा के सम्मुख नही रखा लकिन यह पूछने स नहीं रुका कि मरा ससुराल कहा है? मेरी शादी कब और किससे हुई? अब तक भी मा तेजा के किसी निश्चय का नही समझ सकी थी। उसने सहज भाव स कहा बेटा तेरा विवाह तो जब तू छोटा था तभी कर दिया गया था। पनर म तेरा ससुराल है। वहा का पटेल जो जात विरादरी का मुखिया है

तेरा ससुर है। अब जल्दी ही तेरा गोना करने वाली हू। आज ही पण्डित से पूछा था कि गौण के लिए शुभ मुहूर्त कब का है? पण्डित ने अगले महीने के लिए कहा है। तेजा ने तो मन म कुछ और ही सकल्प कर रखा था। रह रह कर भावज के बोल उसे साल रहे थे। वह तो कल के सूरज को ससुराल मे उगते देखना चाहता है।

अपनी मां के पास से चुपचाप उठकर पिछाड मे गया और अपनी नीली घोडी पर जीन कसने लगा। चाकर चिमनिया को घोडी को दाना पानी देने के लिए उसने आदेश दिया। चिमनिया ने जब घोडी को दाना डाला तो घोडी पीछे हट गई। चाकर भयभीत मन से तेजा के पास आया और अनुनय करने लगा कि मालिक घोडी ने दाना डालने पर वह पीछे हट गई है। यह अपशकुन है। इस लिए आप आज जाने का अपना निश्चय बदल ही डालिये। घोडी ने पैर पीछे हटा लिए हैं और यदि आपको विश्वास न हो तो किसी पण्डित को बुलाकर इसका फल पूछ लो। तेजा स्वय पण्डित के यहां गया। पण्डित ने चिमनिया की बात पर मोहर लगा दी। साथ मे यह भी आग्रह कर लिया कि यदि इस समय यात्रा की गई तो नक्षत्रो के दुष्प्रभाव के कारण तेजा की मृत्यु का योग है।

एक ओर मौत तो दूसरी ओर भाभी के तीखे एव कटु वचन तेजा के मानस मे अन्तर्द्वन्द्व का तूफान उठाने लगे। रह रह कर उसका पूर्व निश्चय ही आकार ग्रहण करता गया। अपने सकल्पो के सामने उसे मृत्यु का भय भी भयभीत न कर सका। उसने अपना निश्चय दोहराया। मृत्यु या जीवन सफलता या असफलता कुछ भी हाथ लगे मैं अपने निश्चय से एक तिल भी नही हटू गा। चिमनिया को घोडी सजा कर दरवाजे पर खडी करने का हुक्म दिया और स्वय मा का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए घर मे गया। मा ने पुत्र का दृढ निश्चय जान कर इतना ही कहा हे बेटा, तुम्हारी प्रतीक्षा कब तक करती रहू? मुझे कोई निश्चित सहारा बता जाओ। तेजा ने लापरवाही के साथ पीपल के पत्तो की ओर सकेत करके कहा इन पत्तो को गिन लो और मां के चरण स्पर्श कर बिजली की तरह पोली से बाहर निकल पडा। नीलडी घोडी पे छलाग मार कर बैठ गया। घोड़ी हवा से बातें करने लगी।

सिर पर पेचा और तुर्रा कमर पर झूलती हुई तलवार उसके वीरत्व का बखान कर रही थी। दूल्हे के भेष मे तेजा नीलडी का श्रेंड लगा रहा था। नीलडी की नस नस मे बिजली भर गई थी। वह भी लगाम की ढील और खीच के सकेतो को प्राणपण से समझ रही थी। रास्ते मे गायें और रोते गीदड मिले। रेंकते हुए गधे मिले। और सुहाग चिह्नो से रहित चिह्नो से रहित गाव गाव मे औरतें फलसो पर ही दिखाई दी। पणिहारिन खाली घड लिए हुए आती मिलीं। ग्राम की सीमा पर बाई ओर से आता हुआ एक भारी भरकम साव मिला। तेजा ने इन अप शकुनो को ध्यान से दूर रखा और अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर बढता ही गया। दिन ढलता जा रहा था पनेर गाव के पेड निकटतम आते जा रहे थे। राह चलते लोगो से एक आध जगह रुक कर तेजा ने पनेर का सही पता पा लिया था। जब उसे

अपना ग तव्य ग्रत्य त समीप दिखलाई दिया तो उसने घोडी की लगाम को और अधिक खीचा, घोडी हिनहिनाई और त्वरित गति स गाव के फलसे तक एक ही सास मे पहुच गई। इस समय झालर बज रही थी। ढार गाव की ओर लौट रहे थे। गोधूलि से वातावरण धूमिल हो रहा था। पक्षी अपने अपने घोसलो की ओर प्रयाण कर रहे थे। बछडे अपनी माओ का प्रतीक्षा म रम्भा रहे थे। कोलाहल जगलो से सिमट कर गाव म समा रहा था। फलसो पर सुनसान व्याप्त होता जा रहा था।

तेजा का पनेर की सीमा पर प्रवेश करते ही वक्षो स घिरा हुआ एक कुआ दिखाइ पडा। इस समय भी गाव की औरतें जो खेत स देर स लौटी थी पानी भर रही थी। तेजा को प्यास लगी हुई थी। घोडी भी जल पीने का आतुर दिखाई देती थी। पानी का स्थान जान कर घोडी ने अपना रुख कुए की ओर कर लिया। तेजा ने भी विरोध नही किया। घोडी स उतर कर एक स्नेह भरा हाथ फेर कर तेजा ने अपनी नीलडी को दुलारा। पानी भरने वाली युवतिया ठिठोली कर रही थी। नवागतुक बटोही को देख कर कुछ सहमी सिकुडी और अपनी चूनडियो को सम्भालने लगी। युवतिया के समूह म से एक युवती न तेजा को बाकी निगाहो से देखा। तेजा के बलिष्ठ शरीर एव सुदृढ़ माशपेशियो तथा तेजादीप्त मुख मडल को देखकर थोडी देर के लिए वह आत्म विस्मति म खो गई। उसे लगा एक दिन ऐसा ही कोई बटोही सज सवर कर घोडी पर चढ कर आयेगा और गौणे की रस्म पूरी कर उसे अपने सग ले जाएगा। लज्जा की एक स्मित रेखा उसके आनन पर बिखर गई। अपने बाल विवाह के बिखरे त तुओ को विस्मति के गत मे बटोरने लगी। यकायक उसने सम्भल कर कुए मे लटकते घडे को भरा हुआ जान कर ऊपर खीचा।

प्यास से विह्वल तेजा ने उन युवतियो को सम्बोधित करते हुए कहा हे सु दर पणिहारियो! अपनी रेशम की डोर से खीच खीच कर हमे भी मीठा जल पिलाओ। जात बिरादरी को पूछ कर जल पिलान की प्रथा तब भी प्रचलित थी। इसलिए स्वभाववश एक युवती ने पूछा तुम कौन जाति क हो कहा के रहने वाले हो क्या नाम है? तेजा न अपना गाव वश तथा नाम बताया। बोलिया जाट का लडका तेजा इस प्रकार जब अपना परिचय द चुका तो उनम स एक युवती जा उसकी सल हज थी उसे पहचान गई और ननदोई के नाम से सम्बोधित किया। यह सम्बोधन तेजा को बहुत मधुर लगा। इसी को तो सुनने वह यहा आया था। तेजा की सलहज ने पानी खीचती हुई अपनी ननद की ओर भेदभरी दृष्टि से देखा। जब तक वह किसी सुखद आश्चय मे डूबी हुई आग तुक और अपनी भाभी के बीच चल रही मधुर वार्ता को सुन रही थी। अपने मन चीते का इस प्रकार अनायास आगमन जान कर वह अत्य त हर्षित हुई। अपनी रेशमी चुनडिया को सम्भालती पास म खडी हुई अन्य युवतियो की ओट म छिप गई।

तेजाजी ने जल पिया और अपनी घोडी नीलडी को भी जल पिलाया। सल हज से शालीन ठिठोली करते हुए वह पुन नीलडी पर सवार हो गया। अब ग्राम

गलिया मे नीलडी ने ठुमक ठुमक कर चलना प्रारम्भ किया। सवार पेचे के तुर्रे को लहराता हुआ ऊचा माथा किये देदीप्यमान होने लगा। उसके शरीर से एक तरुण काति बिखर रही थी। सध्या के इस मटमल वातावरण म भी वह अपूण रूपवान मन का लुभान वाले अपने सौ दय स जन जीवन को आकृष्ट कर रहा था। इस प्रकार नभोनीलिमा को चीरता हुआ पनर की गुवाडियो को पीछे छोडता हुआ वह चाद सा चेहरा पटेल की पोली की ओर बढ़ रहा था। जिस किसी ने उसके विषय म सुना वह देखने की लालसा का सवरण नही कर सका। हल्ला हो गया। सभी इस सौ दय से परिपूण युवक को देखन के लिए उमड पड। महिलाए घर का काम काज छोड कर गवाक्षो म खडी हो गइ। दरवाजे म खडी वधुए अपन घू घट को उठा उठा कर चन्द्रमुख का देखन मे लीन थी। बच्चो का झुण्ड उस सवार का घेरे हुए आगे और पीछे दौडता जा रहा था। सभी के मुख से तेजा के रूप शौय ओज और शालीनता की महिमा गाई जा रही थी। बहुत से लोग पटेल को बधाई दन के लिए दौडे। बाल्ला को चीरता हुआ जरो सूय अपने ग त य की ओर बढता रहता है। उसी प्रकार तेजा सभी के मन को लुभाता हुआ भीड की ओर निकलता जा रहा था।

क्या दूकानदार क्या फूल बेचती हुई मालिन क्या लडडू बाधते हुए हलवाई क्या पान का बीडा लगाती हुई पनवाडिन और क्या शराब बेचती हुई कलालिन सभी तेजा को निहार रहे थे।

> कोई मालण थूथकारा र गेरू छ फुलडा बेचती
> लाडूडा सनाता देख छ हलवाई कवर तज न र
> लाडूडा सनाता दखे छ क दोई र।
> काई दूदडलो बच ती र निरख छ गोरी गूजरी।
> पान वी लगाता निरख छ पनवाडन कवर तेज न र
> पान बी लगाती निरखे छ पनवाडन र।

तेजा का उठा हुआ वक्षस्थल विशाल बाहु उन्नत भाल तेजयुक्त नन बर बस ही लोगो की श्रद्धा अपनी ओर खीच रहे थ। नीलडी की पदचाप तजा के पद भार से माना बाभिल थी। धरती लचक रही थी और नीलडी एक एक पग सम्भल सम्भल कर उठा रही थी जिसम नत्य की झकृति थी। इस अपूव शोभा को देखन क लिए नक्षत्रो की खिडकियो स देवता भी टकटकी लगा कर झाक रहे थे। उस रूप माधुय पर सौ दय का देवता काम भी लज्जित था।

तेजा का मन विभिन्न भावो के आलोडन विलोडन से उद्वेलित था। कभी उस जन समूह का अपार स्नेह गदगद करता था तो कभी ग्राम की शोभा उसके नेत्रो मे उभर आती थी और कभी उसका मन अपनी अनदेखी पत्नी के रूप की कल्पना करके चचल हो उठता था। सोचता था प्रथम मिलन पर पत्नी को क्या कहूगा, कसे समझाऊगा कि तुम तक पहुचने म मैंने रास्ते के अकेलेपन को कस सहन किया है। पर उसे उस समय क्या कहूगा जब वह पूछेगी कि इतने दिनो बाद कसे सुधि ली ?

उसे वस सन्तोष दे पाऊगा कि पनेर का कुछ मील रास्ता मेरे लिए हजारो कास लम्बा हो गया था। सास ससुर प्रादि स्नेहिल सम्बन्धियो से किस प्रकार समुचित व्यवहार कर पाऊगा। इसी उधेड बुन म तेजा प्रपने ससुराल के दरवाज के सामन प्रा रुका। घोडी स उतर कर प्रावाज दी, दरवाजा खोलो, पाहुने प्राये हैं। पर मे वहुए रोटियां बना रही थीं, सास गायें दुह रही थी। ससुर बलो को सानी दे रहा था। नीलडी की टापों की प्रावाज प्रौर तेजा के बेधडक शब्दो ने गायो को विचका दिया। दूध का बतन गाय की टांग से टकरा कर झन्नाटे की प्रावाज के साथ दूर जा पडा। सास ने प्रनजाने म ही नवागत प्रिय पाहुने को दो चार कटु गालिया तक निकाल डाली। कोई घटना प्रप्रिय घटने स पहले ही वह सलहज जिसने तेजा को कुए पर पानी पिलाया था, सिर पर जल से भरा हुप्रा घडा लिए प्रा पहुची। प्रपनी सास को प्रिय पाहुने का परिचय दिया। कितनी प्रसन्न थी सास। प्रौर चुपचाप ही सारा वातावरण बदलता सा जा रहा था। प्रपनी ननद को प्रत्यन्त मीठे स्वर मे भाभी ने समझाया—ननदरानी सम्भलो, लेन वाले प्रा गये हैं। वर्षों से जिनके लिए पलक पावड बिछाए हुए थी, जिनके लिए मन्दिरा मे प्रचना करती थी, दीपक जलाती थी, वे पाहुने प्रा गये हैं। उठो, मलिनता त्यागो। दखिनी चीर धारण करा। पावो म पायल पहनो, माथे पर वार बाधा नाक म नथ पहनो प्रौर इस प्रकार प्रपने मधुर प्राकपण के प्रद्भुत यौवन से परदेशी पाहुने को लुभाप्रो। तेजा की पत्नी सुन्दरी लाज स गड गइ। कहती भी क्या ? भीतर ही भीतर प्रफुल्लित प्रौर बाहर से सकुचित सुन्दरी मन ही मन मिलन की वाट जोह रही थी। सुन्दरी को सकोच हुप्रा कि प्रभी जिस परदेसी का माता ने कटु वचन सुनाए वह उसके प्राणो का प्राण भरतार है। प्रपनी मा की तरफ स क्षमा भी मागे तो कैसे मागे ? तेजा का प्रश्व सास के कटु वचना को सुन कर कुछ प्रागे बढ गया था। सुन्दरी दुविधा मे पड गई। मायके की लज्जा प्रपने रूठे पति को मनाने मे बाधा उपस्थित कर रही थी। लोक लाज तोडे भी तो कसे तोडे। जाते हुए परदेशी को किन शब्दो मे सम्बोधित करके वापस लुभावे। वह शब्दहीना, लज्जावता सुन्दरी जमीन को नाखूनो से कुरेदती हुई प्राचल को मुह म दबाते हुए चित्रलिखित सी खडी रही। सोच रही थी कोई प्रपना पराया मिल तो उसे प्रपन मन की बात कहू। गाव मे इतने बडे बूढे हैं, कोई तो इस परदेशी को रोके। एक बार मुड कर देखने को तो कहे। जब वह इसी प्रकार मन म सकल्प विकल्प कर रही थी तभी उसकी सखी हीरा गूजरी उधर प्रा निकली। उसे देखते ही वह उसकी छाती से जा लिपटी प्रौर बडे प्रनुनय विनय, मान मनौवल, लज्जा सकोच के साथ कहने लगी हीरा, तू मेरी बचपन की सखी है। मेरी माजायी बहिन से बढकर है एक बार उस जाने वाले पाहुन को रोक दे। उस लौटा ला। मैं जन्म भर तेरे चरणो की धूल माथे पर लगाती रहूगी। तुझे दखिनी चीर मगा कर दूगी। हीरा चतुर थी परिस्थिति को समझ गई। गाव की बेटी थी, इसलिए दौडने म भी उसे किसी प्रकार का सकोच नहीं हुप्रा। येन केन उसने नीलडी की वलगा प्रपने हाथो में थाम ली। घोडी को हीरा कहने लगी,

भीगी दाना खिलाऊगी। तेरे ग्राभानो को इत्र मे सराबोर करूगी। तेरे घुटने पर सोने की नेवरी बाधूगी। गले म कठा पहनाऊगी। तू वापस लौट चल। जब घोडी अपने सवार की इच्छा के विरुद्ध टस स मस नही हुई तो हीरा ने अश्वारोही के सामने गले मे आचल डालकर हाथ पसार कर प्रार्थना की जीजा तुम वीर हो, पुरुष हो बलवान हो तुम्हारे जसे व्यक्ति के होते हुए भी मेरे गुवाडे के चोर मेरी गायो को ले गये। इस गाव म कोई सुनने वाला नही है। तुम जसा वीर भी यहा कोई और नही है। सब तरफ से निराश होकर मैं अब तुम्हारे सामने आचल पसार कर यह भिक्षा मागती हू कि दुष्टो के पजो से मेरी गायो का उद्धार करो रक्षा करो। हीरा गूजरी की आखो से झर झर आसू झर रहे थे। दोनो आखें सावन भादो की तरह बरस रही थी।

तेजा ने लीलडी को रुकने का इशारा किया। उसके हृदय म दुष्टो को दण्ड देने की भावना सदव से प्रबल रही थी। अन्याय के विरुद्ध सवस्व न्यौछावर कर देना मानो उसके सस्कारी गुण थ। आज अपनी शक्ति का परिचय देने का उसे सुअवसर प्राप्त हुआ था। क्त य की पुकार उसने सुनी। गायो पर आई हुई विपत्ति को देख उसका हृदय द्रवीभूत हो गया। गाय चोरो के गिरोह को समाप्त करने का उसने दृढ सकल्प किया। घोडे स उतर कर हीरा गूजरी को उसने आश्वस्त किया। गूजरी तुम्हारी गायो को दुष्टो स जब तक मुक्त नही कर दूगा तब तक दम नही लूगा और यहा किसी का भी अन्न जल ग्रहण नही करूगा। तुम निश्चिन्त होकर घर जाओ। तेजा के रहते कोई किसी पर अत्याचार नही कर सकता। बछडो को उनकी माताओ से मिलाऊगा। तेरे गवाड को पुन गायो से भर दूगा।

तेजा उस दिशा की ओर रवाना हो गया जिधर मीणा लोग हीरा गूजरी की गायो को लेकर भागे थे। पलक मारते ही लीलडी ने मीणो का रास्ता रोक लिया। अभी तक इन दुष्टो ने पनेर का नाका भी पार नही किया था कि तेजा की निर्भय तलवार ने सबको भयभीत कर दिया। तेजा के हाथ म चमचमाती हुई नगी तलवार दुश्मनो को घूर रही थी। तेजा की आखो से अग्नि स्फुल्लिग झड रहे थे। उसकी वाणी मे वीरत्व का ज्वार उमड रहा था। बहुत देर तक उनकी घिघियी बधी रही। अन्त मे साहस बटोर कर उन्होने तेजा से कहा तू अभी दूधमुहा बालक है। बीसी पर भी नहीं पहुचा है। क्या व्यथ ही हमारे हाथो प्राण देकर अपनी नवेली नार को दुहागिन बनाने का आतुर हो रहा है। तेरे रूप और अवस्था को देखकर हमे दया आती है। अभी भी मौका है लौट जा हमारे काम म बाधक मत बन। तेजा इन शब्दो को सुन कर आग बबूला हो गया। आखो म खून उबलने लगा भुजाए फडफडाने लगी। नसो म रक्त खौल उठा तलवार ने प्रहार का रास्ता अपना लिया। एक का अनेक से घमासान युद्ध हुआ। सवा घडी तक भीषण युद्ध होता रहा। तेजा आगे बढ कर वार कर रहा था। परिणामस्वरूप शत्रुओ ने मदान छोड दिया। हाथ से तलवारें गिर गइ। एक एक कर मीणे भागने लगे। तेजा आश्वस्त होकर गायो को मोडने लगा। इसी बीच एक मीणा अपने साथ एक उठती उम्र के दो दातिय बछडे को ले

ा। तजा को यह ध्यान भी नही रहा कि भागते समय व किमी बछडे को भी
व ले गये हैं। विजय स्वरूप मदमस्त चाल से तेजा गायो का लिए हुए हीरा
री के पास आया।

तजा का युद्ध क्लात शरीर विश्राम का इच्छुक था। हीरा गूजरी न गाया
सम्भाल कर कहा जीजा मेरा वह बछडा तो रह गया जा मुझे बहुत प्यारा
। उसके बिना तो मेरा गुवाडा ही सूना है। तुम्हारी वीरता ता इसी म है कि
म मेरा वह बछडा भी लाकर दो। तजा को लगा जैसे मोणे उसकी आख म धूल
ोंक गये। वह क्रोध से फुफकारता हुआ उ ही परो लौट चला। वह चोरो के खाज
खता हुआ कोसो दूर निकल गया था। माग तय कर रहा था कि उसे भाड म
लगी आग म एक साप जलता हुआ दिखलाई पडा। तजा के लिए यह देखना असह्य
था। उसने दया द्रवित होकर जलते साप को अपनी तलवार की नोक स बाहर
निकाल लिया। साप ज्यो ही अग्नि से बाहर गिरा त्यो ही क्रोध से फुफकार उठा
और बोला तूने मेरी जलती हुई दही का नाग लगा दिया है। यदि मैं जल जाता
तो इस योनि स छुटकारा पा जाता। अब मैं तुझे किसी भी अवस्था म नही
छोडूगा। तजा ने अपनी भूल स्वीकार की कि उसन अनजाने म किसी जीव का
अपराध कर दिया है। पश्चात्ताप स्वरूप उस अपने अपराध का दण्ड तो पाना ही
था अत उसन कहा हे नागदव! अपराध का प्रायश्चित्त करने को मैं तैयार हूँ,
किन्तु हीरा गूजरी को मैन वचन दिया है कि मैं उसका बछडा चोरो स छुडा कर
उसे लाकर दूगा। मुझे मेरा वचन पूरा कर लेन दो। बछडा सौंपकर मैं तुम्हारे
पास पुन आऊगा तब तुम मुझे डस लेना। सप ने बात को स्वीकार करते हुए कहा
मैं तुम्हारी प्रतीक्षा म जिन्दा रहूगा।

तजा मीना को पकडने चल पडा। थोडी दूर ही उनका आमना सामना
हुआ। पुन भीषण युद्ध हुआ। अब की बार तेजा का शरीर घावो स क्षत विक्षत हो
गया था फिर भी मीनो को उसन मार भगाया। हीरा गूजरी का बछडा अपने कब्जे
म कर पनेर की ओर रवाना हुआ। उसक शरीर स खून टपक रहा था। गूजरी का
बछडा सौंप कर वह लौटने लगा। हीरा और सुन्दरी ने ऐसे वीर पाहुने को रोकने
का असफल प्रयत्न किया। तेजा न इतना ही कहा गूजरी, मै वचनबद्ध हूँ। एक साप
को मैन वचन दिया है कि तुम्हारा काम करके म अपनी जिन्दगी उसे सौंप दूगा।
इसलिए अब मुझे अपन दूसरे वचन का पूरा करन दो।

तजा हीरा से विदा लेकर साप के पास पहुचा। तेजा न साप स कहा मै आ
गया हू। जहा चाहो वही पर डस लो। साप ने उसके क्षत विक्षत शरीर को देखकर
कहा तुम्हारा शरीर कही स भी घावविहीन नही है। बोल मैं कहा डसू। तेजा
समझ गया कि साप घायल अगो को नही डसा करता है। इसलिए वचनबद्ध तेजा ने
अपनी जीभ की ओर सकेत करते हुए कहा तुम्हारे डसने के लिए मेरा यह अग
निर्घाव है। तुम यहा डस लो। सप ने तेजा की जीभ को डस लिया।

तेजा विष के कारण अपनी चेतना खाने लगा। देखते देखते उसका तेजयुक्त

भोगी दान मिनाऊगी। तेरे ग्राभानो वा इश म मराजार करूगी। तेरे पूटन पर सान की नेबरी बाधू गी। गले म कठा पहनाउगी। तू वापस लौट चल। जब घोडी अपने सवार की इच्छा क विरुद्ध टस स मस नही हुई तब हीरा न अश्वारोही क सामन गले म आचल डालकर हाथ पसार कर प्रार्थना की जीजा तुम वीर हो, पुरुष हो बलवान हो तुम्हार जस व्यक्ति के होते हुए भी मेरे गुवाडे के चोर मेरी गायो को ले गये। इस गाव म कोई गनने वाला नही है। तुम जसा वीर भी यहा कोई और नही है। सब तरफ म निराश होकर मैं अब तुम्हार सामने आचल पसार कर यह भिक्षा मागती हू कि दुष्टा क पजा स मेरी गाया का उद्धार करो रक्षा करो। हीरा गूजरी की आखा स भर भर आसू भर रहे थे। दानो आँखें सावन भादो की तरह बरस रही थी।

तेजा न लीलडी को रुकने का इशारा किया। उसक हृदय म दुष्टो को दण्ड देने की भावना सन्द स प्रबल रही थी। अ याय के विरुद्ध सवस्व न्यौछावर कर देना माना उसक सस्कारी गुण थ। आज अपनी शक्ति का परिचय दने का उसे सुअवसर प्राप्त हुआ था। कत्तव्य की पुकार उसन सुनी। गायो पर आई हुई विपत्ति को देख उसका हृदय द्रवीभूत हो गया। गाय चोरो के गिराह का समाप्त करने का उसने दृढ सकल्प किया। घाडे स उतर कर हीरा गूजरी को उसन आश्वस्त किया। गूजरी तुम्हारी गायो को दुष्टो म जब तक मुक्त नही कर दू गा तब तक दम नही लू गा और यहा किसी का भी अन्न जल ग्रहण नहीं करूगा। तुम निश्चित होकर घर जाओ। तेजा के रहते कोई किसी पर अ याचार नही कर सकता। बछडो को उनकी माताओ से मिनाऊगा। तरे गुवाड का पुन गायो स भर दू गा।

तेजा उस दिशा की ओर रवाना हो गया जिधर मीणा लोग हीरा गूजरी की गायो का लकर भागे थे। पलक मारते ही लीलडी न मीणो का रास्ता रोक लिया। अभी तक इन दुष्टो ने पनर का काकड भी पार नही किया था कि तेजा की निर्भय तलवार न सबको भयभीत कर दिया। तेजा के हाथ म चमचमाती हुई नगी तलवार दुष्टो को घूर रही थी। तेजा की आखो स अग्नि स्फुलिंग झर रहे थे। उसकी वाणी मे वीरत्व का ज्वार उमड रहा था। बहुत देर तक उनकी घिघियी बधी रही। अ त मे साहस बटोर कर उ होने तेजा से कहा तू अभी दूधमु हा बालक है। बीसी पर भी नही पहुचा है। क्या यम ही हमारे हाथो प्राण देकर अपनी नवेली नार को दुहागिन बनाने का आतुर हो रहा है। तेरे रूप और अवस्था का देखकर हमे दया आती है। अभी भी मौका है लौट जा हमारे काम म बाधक मत बन। तेजा इन श दो को सुन कर आग बबूला हो गया। आखो मे खून उबलने लगा भुजाए फडफडाने लगी। नसो म रक्त खौल उठा तलवार ने प्रहार का रास्ता अपना लिया। एक का अनेक से घमासान युद्ध हुआ। सवा घडी तक भीषण युद्ध होता रहा। तेजा आगे बढ कर वार कर रहा था। परिणामस्वरूप शत्रुओ न मदान छोड दिया। हाथ से तलवारें गिर गइ। एक एक कर मीण भागन लग। तेजा आश्वस्त होकर गायो को मोडने लगा। इसी बीच एक मीणा अपने साथ एक उठती उम्र के दो दातिय बछड को ले

भागा। तजा को यह ध्यान भी नही रहा कि भागते समय व किसी बछड़े को भी साथ ले गय हैं। विजय स्वरूप मदमस्त चाल स तेजा गायों को लिए हुए हीरा गूजरी क पास आया।

तजा का युद्ध क्लात शरीर विश्राम का इच्छुक था। हीरा गूजरी न गायो को सम्भाल कर कहा जीजा, मरा वह बछड़ा तो रह गया जो मुझे बहुत प्यारा था। उसके बिना तो मरा गुवाडा ही सूना है। तुम्हारी वीरता ता इसी म है कि तुम मरा वह बछड़ा भी लाकर दो। तजा को लगा जस मोण उसकी आख म धूल झोक गये। व० क्रोध स फुफकारता हुआ उ ही परो लौट चला। वह चोरो के खोज देखता हुआ कोसो दूर निकल गया था। माग तय कर रहा था कि उसे झाड म लगी आग म एक साप जलता हुआ दिखलाई पडा। तजा के लिए यह देखना असह्य था। उसन दया द्रवित होकर जलत साप को अपनी तलवार की नोक स बाहर निकाल लिया। साप ज्यो ही अग्नि से बाहर गिरा त्यो ही क्रोध स फुफकार उठा और बोला, तूने मरी जलती हुई देही का दाग लगा दिया है। यदि मैं जल जाता तो इस योनि स छुटकारा पा जाता। अब मैं तुझे किसी भी अवस्था म नहीं छोडूगा। तजा ने अपनी भूल स्वीकार की कि उसन अनजान म किसी जीव का अपराध कर दिया है। पश्चात्ताप स्वरूप उस अपने अपराध का दण्ड तो पाना ही था अत उसने कहा हे नागदव! अपराध का प्रायश्चित्त करने को मैं तयार हूँ, किन्तु हीरा गूजरी को मैंन वचन दिया ह कि मैं उसका बछड़ा चारो स छुडा कर उस लाकर दूगा। मुझे मरा वचन पूरा कर लेने दो। बछड़ा सौपकर मैं तुम्हारे पास पुन आऊगा तब तुम मुझे डस लेना। सप न शत को स्वीकार करते हुए कहा मैं तुम्हारी प्रतीक्षा मे जिदा रहूगा।

तजा मीणो को पकडन चल पडा। थोडी दूर ही उनका आमना सामना हुआ। पुन भीषण युद्ध हुआ। अब की बार तेजा का शरीर घावो स क्षत विक्षत हो गया था फिर भी मीणो को उसन मार भगाया। हीरा गूजरी का बछड़ा अपन कब्जे म कर पनेर की ओर रवाना हुआ। उसक शरीर स खून टपक रहा था। गूजरी का बछडा सौंप कर वह लौटन लगा। हीरा और सु दरी न ऐस वीर पाहुने को रोकने का असफल प्रयत्न किया। तेजा न इतना ही कहा गूजरी, मैं वचनबद्ध हूँ। एक साप को मैंन वचन दिया है कि तुम्हारा काम करके म अपनी जि दगी उसे सौंप दूगा। इसलिए अब मुझे अपन दूसरे वचन का पूरा करन दो।

तजा हीरा स विदा लेकर साप के पास पहुचा। तजा न साप से कहा म आ गया हू। जहा चाहो वही पर डस लो। साप न उसके क्षत विक्षत शरीर को देखकर कहा तुम्हारा शरीर कही स भी घावविहीन नही है। बोल मैं कहा डसू। तेजा समझ गया कि साप घायल अगो को नही डसा करता है। इसलिए वचनबद्ध तेजा ने अपनी जीभ की ओर सकत करते हुए कहा तुम्हारे डसन के लिए मेरा यह अग निर्घाव है। तुम यहा डस लो। सप न तजा की जीभ का डस लिया।

तेजा विष के कारण अपनी चेतना खोने लगा। देखते देखते उसका तजयुक्त

शरीर नीला पड गया। जब तक हीरा सु दरी तथा पनेर के अन्य निवासी वहा तक पहुचे तेजा परलोक सिधार गया था। सु दरी दहाड मार कर अपन पति के शव स लिपट गई। सभी उपस्थित लोग तेजा की मत्यु पर आठ आठ आसू बहाने लगे। दाह क्रिया के लिए चदन की चिता तयार की गई। सु दरी तजा के सर को गोद मे लकर वठ गई। प्रश्न चिता को प्रज्वलित करन का आया। सती सु दरी के ससुराल का गोती पनर गाव म एक भी नहीं था। और शास्त्रानुकूल पीहर का गोती सती की चिता को प्रज्वलित नही कर सकता था। सु दरी आग की प्रतीक्षा करती रही। दिन का देवता सर पर आ गया था। सु दरी ने सूय भगवान से प्राथना करते हुए कहा—पिता अब मैं तुम्हारी ही शरण म हू यदि मै पतिपरायण सच्ची स्त्री हू तो हे पिता तुम स्वय अपनी उष्ण किरणो से मेरी चिता को प्रज्वलित करो। देखते देखत सती सु दरी की चिता प्रज्वलित हो उठी।

तेजा की घोडी जो कि खून स भीग रही थी अपने मालिक के गाव की ओर चल पडी। सध्या समय यतीत हो चला था। रात क अधरे म नीलडा अपने सवार के घर पर जाकर खडी हुई। घोडी की हिनहिनाहट सुनकर तेजा की मा ने तेजा को आया जान लपक कर दरवाजा खोला। दरवाजे पर घोडी नीची गदन किये हुए पत्थर की मूर्ति सी खडी थी। घोडी की खाली पीठ देखते ही तेजा की मा चक्कर खा कर दरवाजे की दहली म गिर गइ।

तजा के वीर कम पर रीझी हुई जनता न उसे लोक देवताओ म स्थान दिया और उसका देहुरा बना कर उस पूजन लगी। तजा अब तजाजी बन कर भादवा सुदी दसमी के दिन विशष पूजा ग्रहण करता है और आधि-याधि सप दश इत्यादि से लोकजीवन को मुक्त करता है।

डूगजी-जुवारजी

राजस्थान के भोप रावण हत्था लेकर जहा एक ओर रामदवजी दवनारायणजी, पाबूजी आदि की गाथाओ का बखान करते रहत हैं वहा दूसरी ओर वे डूगजी जुवारजी की वीरता का ओजभरा चरित्र गा गाकर राजस्थान क वीररक्त का परिचय दत रहत हैं। भोपा द्वारा प्रस्तुत य गाथाए लोकमानस पर पड़े उस प्रभाव की परिचायक हैं जो सहज ही जन जीवन का अपनी ओर आकर्षित किय हुए हैं।

डूगजी और जुवारजी दोना चाचा भतीजा थ। शखावाटी क अ तगत बठाठ नामक गांव क डूगजी जागीरदार थ। अपनी छोटी जागीर का सम्भालन और प्रजा को सन्तुष्ट करने के पुनीत काय म व दिन रात लगे रहत थे। प्रजा का दुख दद समझते थे। अ याय अत्याचार अनाचार आदि अमानवीय कृत्य करन वाले डूगजी के भय से त्रस्त रहत थे। डूगजी आन मान का पक्का और बात का धनी पुरुष था।

एक बार भीषण अकाल की छायाए मडराने लगी। खतो म बाजरे का एक दाना भी पैदा नहीं हुआ। रत म पदा होने वाला खेजरी का वक्ष भी ठूठ सा खडा अपनी निधनता का बता रहा था। चारा और हाय हाय मच रहा था। लाग भूख से परेशान थे। इसस अधिक चिंता उ ह अपने ऊट घोडा गायो और बलो की बनी रहती थी। धन क अभाव म व इन सब साधनो का बटोर भी नहा सकत थे। अग्रेजी शासन की चक्की म छोटे बड़े सभी जागीरदार समान रूप स पिस रह थ। गावो की सम्पन्नता नष्ट प्राय थी। अग्रजी राज्य का आतक सवसाधारण क लिए अत्य त कष्टप्रद था। डूगजी नित्य अपन सरदारो स चर्चा करत रहते थे कि किस प्रकार इस अकाल और अभाव की पूर्ति की जाए। राज ही भूख के मारे लोगो का मरना, बच्चो का रोटी के लिए तरसना, पशुओ की दुदशा का देखना डूगजी के लिए असह्य था। उ होने अपने भतीजे जुवारजी तथा अ य अपन वीर साथियो से भी परामश किया। सब कुछ योछावर कर देने वाल उनक दो मित्र थे। एक था लोटिया जाट और दूसरा था करणिया मीणा। डूगजी क सम्पक स दोनो म उनके वीरत्व की भावना समाहित हो गई थी। डूगजी के प्रत्यक लोकोपकारी काय म य लोग सिर पर कफन बाध कर जुट जात थे। इस कठिन समय म निस्तार पान के लिए उन्होने अपन छुट भाइयो और विश्वासपात्र लोगो को एकत्रित किया और उन्ह समस्त परिस्थितियो से अवगत कराते हुए यह प्रस्ताव रखा कि इस प्रकार भूख की ज्वाला म जल जल कर मर जाने स तो कुछ कर गुजरना ज्यादा श्रेयस्कर है। हमारे पास न अन्न है न धन है। दूसरे ठिकाने स अन्न खरीदा जा सकता है कि तु उसक लिए धन कहा? मरता क्या न करता? अपने लोगो को जिलाने के लिए किसी प्रकार धन की व्यवस्था करना धम का ही अग है। इस पवित्र उद्देश्य के लिए

लूटना और डाका डालना भी कोई जुल्म नही है। आसपास के ठिकानो और सेठो से यदि हम धन छीनेगे तो छिपने के लिए भी जगह न मिलेगी। इसलिए सकटकाल मे कही दूर से धन लाकर वितरण करने की योजना बनाई गई। लोटिया जाट और करणिया मीणा ने तन मन से डूगजी को आश्वासन दिया कि हम तुम्हारे सभी कार्यों मे साथ हैं। हम सिर दे देंगे लेकिन आपका साथ नही छोड़ेंगे। अंग्रेजों के शासन के अन्तर्गत अजमेर मेरवाडा मे अंग्रेजो की छावनी नसीराबाद के सेठो को लूट कर धन लाने की योजना बनाई गई। चतुर व्यक्ति लोटिया जाट और करणिया मीणा को भेद लेने के लिए नसीराबाद भेजा गया।

लोटिया और करणिया ने मांगने वालो का भेष बनाया और नसीराबाद के धन कुबेरो का पता ढूढ निकाला। उनकी तिजोरियो का भी उन्होंने पता लगा लिया। उन्होंने यह भी पता लगाया कि सेठ मोतीचद और घीसामल की अनन्त धन सम्पदा एक सौ ऊटो पर लद कर धन तेरस के दिन दिशावर से नसीराबाद आने वाली है। सभी प्रकार की सूचनाएं बटोर कर वे बठोठ पहुचे। ऊटो को घी पिलाया गया। वीरो को शस्त्रों से सज्जित किया गया। डूगजी के नेतृत्व मे ग्यारह सिर देने वाले बाके सरदारो के साथ जिनमे जुवारजी करणिया और लोटिया जाट भी सम्मिलित थे इस दल ने नसीराबाद की ओर सध्या समय प्रस्थान किया। ऊट हवा से बात करने लगे। दूसरी रात गुप्तचरो से सूचना पाकर वे नसीराबाद की काकड मे छिप कर धन से लदे ऊटो की प्रतीक्षा करने लगे। देखते देखते ही ऊटो का काफला उधर निकल आया। नसीराबाद को सामने देखकर धन के सरक्षक निश्चित हो चले थे। वे बातो मे मस्त थे। डूगजी ने मौका देख फायदा उठाया और अपने सरदारो को सकेत दिया कि इन्हे आगे न बढने दो। फिर क्या था? डूगजी ने कडकडाती आवाज से ललकारा और कहा अपने अपने शस्त्रो को जमीन पर फेंक दो अन्यथा एक भी नही बच पायेगा। घबराते हुए एक ने तो अपने शस्त्रो को जमीन पर फेंक दिया किन्तु कुछ एक ने शस्त्र सम्भालने का प्रयत्न किया। उनके शस्त्रसज्जित होते इससे पूर्व ही डूगजी ने वार कर दिया। घमासान युद्ध हुआ। किन्तु भूखे सिंह की तरह डूगजी के सामने कोई न ठहर पाया। काफले के कई सरक्षक तो खेत रहे और पीछे के कुछ जान बचा भाग निकले। ऊटो के काफले की लगाम डूगजी के हाथो मे थी। उन्होंने पुष्कर का मार्ग पकडा। रास्ते मे आने वाले गावो मे डूगजी धन की वर्षा करता हुआ अपने गन्तव्य की ओर बढ रहा था। जन जीवन मे उत्साह और प्रसन्नता का सागर उमड रहा था। डूगजी और जुवारजी की जय जयकारो से आकाश गूज रहा था। सोना चादी हीरा पन्ना मोती जवाहरात मुहरें रुपये आदि को दोनो हाथो मे भर भर कर डूगजी और जुवारजी लुटा रहे थे। डगर डगर पर सोना और पग पग पर मोती बिछ गये थे। आबाल वृद्ध नर नारी धन बटोरने मे जुट रहे थे। केवल ग्यारह ऊटो पर धन को लेकर डूगजी पुष्कर की ओर पहुचे। तीर्थ स्नान किया मुक्त हस्त से दान किया। ब्राह्मणो को भर पेट भोजन करवाया। पशुओ को चारा डलवाया। हाथ जोडकर ब्रह्माजी से याचना की कि

उसकी प्रजा का इति भीति न व्यापे। ब्राह्मण न डूगजी की स्तुति म स्तोत्र पढ़े। चारण माटा ने यश कीर्ति का बखान किया। *तीर्थ यात्रिया न अपनी यात्रा को सफल* जानकर डूगजी जुवारजी की जयजयकार स आकाश का हिला दिया। इस प्रकार माग म धन का बाटते लूटते हुए शेखावाटी की ओर प्रयाण किया। कुछ धन के ऊटा को बठोठ भेज दिया गया और वहा धन को बाटने का काम अपने सरदारो को दिया। वे स्वय अभी बठोठ नही जाना चाहते थ क्याकि वे अग्रेजा के षडयत्र और पुलिस राज स परिचित थे।

डूगजी अपन ससुराल भडवासे म आय। अपार धन सम्पदा को देखकर ससुराल वाले हैरत म थे। साला ने अपने बहनोई के स्वागत सत्कार म कोई कसर उठा न रखी। भाज हुआ खुशी ही खुशी थी दूध की नदी वहा दी गई। महफिलो का आयोजन हुआ गीत गाली हुई अमल गाली गई। डूगजी सुखपूवक अपन *दिन व्यतीत करने लगे। जुवारजी न बठोठ की व्यवस्था अपने काका की अनुपस्थिति* म अपने हाथ म ली।

शेखावाटी म हल्ला हो गया कि डूगजी न अग्रेजो की छावनी लूट ली। धन सम्पदा गरीबो मे बाट दी। शेखावाटी के सेठ लोग भी भयभीत हो गये। उ हे भय होने लगा कि आज यदि डूगजी ने नसीराबाद के सेठो को लूटा है तो कल हमारे खजानो को भी वह सुरक्षित नही रहने देगा। इसलिए उन्होने गुप्त रूप से सलाह मशविरा करके एक पत्र अग्रेजो को लिख भेजा और निवेदन किया कि शीघ्र ही इस लुटेरे को दण्ड दिया जाय। हमारे जान माल की रक्षा की जाय।

अग्रेजी हुकूमत तो यह चाहती ही थी कि किसी भी बागी सरदार को सिर उठाते ही कुचल दिया जाय। उन्होने अपनी सेनाओ को डूगजी को पकडने का आदेश दिया। अग्रेजी पलटन बठोठ की ओर कूच कर गई। कि तु भेदिया ने जब यह कहा कि डूगजी बठोठ मे नही है तो उ हान कूटनीति का सहारा लिया। आस पास के सभी छोटे बडे जागीरदारो पर दवाव डाला कि डूगजी का पता बतावें। कोई भी जागीरदार डूगजी की गिरफ्तारी म साझीदार नही बनना चाहता था। वे तो डूगजी की वहादुरी पर गव करते थे। जब अग्रेजो ने सीकर के ठाकुर प्रतापसिंह पर कूटनीतिक दवाव डाला तो उसने डूगजी का असली पता बता दिया कि इस समय वह अपनी ससुराल भडवासे म है। अब क्या था अग्रेजी सनाएँ भडवासे की ओर बढ गइ मोर्चाबदी हुई और *ग्राम घेर लिया गया। उस सिंह का ललकार* कर गिरफ्तार करने का साहस किसी म नही हुआ। उसका साला भवरसिंह भी अपने वहनोई को बचाना चाहता था लेकिन एक दिन अग्रेज सेनापति ने भवरसिंह को अपने पास बुलाकर धमकी दी कि यदि तुम डूगजी को हमारे हवाले नही करोगे तो हम तुम्हें बन्दी बनाकर काला पानी भेज देंगे। भवरसिंह डर गया। अन्त मे न चाहते हुए भी भवरसिंह डूगजी को गिरफ्तार करवाने की हा भर आया। अग्रेजो ने उसे अच्छा पुरस्कार देने का भी वादा दिया।

एक रात महफिल का आयोजन किया गया। भवरसिंह ने अपने हाथो से

डूगजी को शराब पिलाई प्याले पर प्याल मनुहारो के साथ पिलाता गया। डूगजी सज्ञाहीन हो गया उसे सुधि न रही। इसी मूच्छित अवस्था मे भवरसिंह ने डूगजी को अग्रेजो के हवाले कर दिया। शस्त्रहीन अचेत डूगजी को हथकडिया वेडिया पहनादी गइ। चेतना लौटने पर जब अपन आपको वेडियो से जकडा हुआ पाया तो मन ही मन साले भवरसिंह की भत्सना करने लगा और क्रोध मे उत्तेजित होकर अग्रेजो को कहने लगा कि तुमन सोये सिंह पर वार किया है। यदि थोडी सी भी शम तुम म होती तो इस प्रकार मुझ नि शस्त्र को कभी न पकडते। अब भी मुझे मेरी तलवार दे दो और फिर देखो सिंह की धाड को। डूगजी की आखो से अगारे वरसने लगे। खून झलकन लगा। फौलादी शरीर फलने लगा। साकलें कट कट बोलने लगी। सिपाहियो न भयक्रात होकर जजीरा को और अधिक मजबूती से जकड दिया। जगल का स्वच्छ द शेर पिंजडे मे ब द था। अग्रेजो का बडा अफसर जब उस बहादुर सिंह को दखने जेल मे आया तो उसके ओजस्वी शरीर और तेजपूण नेत्रा स भय खाने लगा। वह उसकी आखो को देख न सका। कडे पहरे म डूगजी को आगर क किले म भेज दिया गया। किल पर और सशस्त्र सनिक नियुक्त कर दिये गय। अग्रेज एस बागी को एसी भूमि म रखना नही चाहते थे जहा उसके सास को पहचान कर उसकी मदद करन के लिए अनक बागी पदा हो जायें।

फाल्गुन आ गया था। धमाल के आलापो से जीवन म नई चेतना नये जोश का सचार होने लगा था। चग के धमाको ढोलक की तालो और रसियो के स्वरो ने वातावरण को मादक बनाना प्रारम्भ कर दिया था। रागरग के दौर चल रहे थे। शराब की बोतलें उमड रही थी। कचोलो म अफीम तर रही थी। खेता म धान पक चुका था। जुवारजी रागरग म लीन थ। सरदारो मे ठिठोलिया चल रही थी। लोटिया जाट और करणिया मीणा उनमने होकर इन कायक्रमो मे भाग ले रहे थे। डूगजी की स्त्री अपने पति की अनुपस्थिति मे इस रागरग से परे थी। उस न रोटी अच्छी लगती थी न जीना अच्छा लगता था। ऐसे समय म जब कि जुवारजी की रगरेलियो का दौर चल रहा था उस पत्नी ने वहा प्रवेश करके उन्हे धिक्कारते हुए कहा तुम्हारा सगा काका अग्रेजा की जेल मे सड रहा है और तुम यहा पर रागरग मना रहे हो। प्याला पर प्याले पी रहे हो। अपनी आन मान मर्यादा सब कुछ ही भूल गये हो। अपनी काकी का जब दुर्गारूप जुवारजी ने देखा तो खिसिया कर कहने लगा—काकी! हम मुट्ठी भर लोग अग्रेजो की सेना का कसे मुकाबला कर सकते हैं। जिन अग्रेजो के सामने बडे बडे रजवाडे भीगी बिल्ली बने हुए हैं वहा हम शस्त्र उठाकर कस आत्मघात करे। काकी की आखा मे खून खौल उठा। उसके शब्दो म बिजली भर गई। नस नस उत्तजित हो गई। कठोर शब्दों म उसने पुन कहा धिक्कार है तुम्हे! थू है तुम पर! राजपूत होकर कायरता की बात करते हो। अगर तुम्हे अपने प्राण इतने प्यारे हैं तो चूडियां पहन कर चूनडी ओढ़ कर रावले म छिप जाओ। मैं अकेली ही तलवार उठाऊगी और अग्रेजो के

पजे से अपने वीर पति का छुडाकर लाऊगी। यह कह कर वह वीरता की प्रतिमूर्ति आवश के साथ वहा से प्रस्थान कर गई। उपस्थित सरदारा का मन फुकारने लगा। भुजाए फडक उठी। अपार उत्साह उमड पडा। सबा ने अपनी तलवारे निकाल कर प्रतिना की कि जब तक डूगजी को अग्रेजो की कैद से न छुडा लेगे तब तक चन न लेगे। जुवारजी न हाथ मे जल लकर सकल्प किया कि जब तक काका को यहा न ले आऊगा तब तक मदिरा के हाथ न लगाऊगा। अमल से आख नही मिलाऊगा। सारा वातावरण बदल गया। सबो के शरीर म बिजली दौड गई। रागरग के स्थान पर वीरत्व को होड होने लगी। बीडा डाला गया कि डूगजी का पता काइ लगाव। सब लोग सन्न थे। लडकर मर जाना आसान था कि तु अग्रेजा की सकडो जेला क सगीन पहरो म डूगजी का पता लगाना अत्य त टेढी खीर थी—लाहे का चना चबाना था। सभी एक दूसरे के चेहरे को देख मानो अपनी असमथता प्रकट कर रहे थे। लेकिन लोटिया जाट ने सोच समभकर बीडा उठाया और अपने मित्र को ढू ढ निकालने के लिए चल पडा।

लोटिया जाट चतुर था। विभिन्न वशभूषा धारण कर वह अग्रेजा की जेला क आस पास घूमता रहा। चारण भाट, बहुरूपिया भाड साधु फकीर, आदि अनेक रूपो म उसने कई जगह डूगजी का सधान किया। अत म उसे टोह मिली कि डूगजी तो आगरे की जेल मे कद है। उसन साधु का स्वाग रचा। शरीर पर भस्म रमाई जटायें शिर पर लगाइ हाथ म कमण्डल लेकर किले के सामने अपनी धूणी जमाई। भक्त लाग बाबा के दशनाथ आने लगे। लोटिया न निराहार रह कर तपस्या करने का अभिनय किया। किले क सभी छोटे बडे अधिकारी सिपाही बाबा के दशनाथ आने लगे। आशीर्वाद की आकाक्षा न जेल के अधिकारी वग को आकृष्ट किया। लाग बाबा की तपस्या का कारण पूछते, कि तु मौन ही बना रहता। छ मास गुजर गये। भक्ता की भीड लगी रहती। लोटिया जाट दिन मे भूखा रहकर भक्तो को आशीर्वाद देता और युक्ति से रात को अन्न ग्रहण कर लेता। अग्रेज जेल अधिकारी ने जब बाबा के पास अधिक भीड भडाका देखा तो एक दिन स्वय बाबा के पास गया और कहने लगा—बाबा आप क्या चाहते हैं ? यह जेल का क्षेत्र है। इसके आसपास इस प्रकार का भीड भडक्का होना अग्रेजी राज्य के लिए घातक हो सकता है। आपको रुपया चाहिय ता रुपया लेलो आश्रम के लिए जगह चाहिए तो कही जगह माग लीजिय लेकिन इस जगह स अपनी धूणी उठा ला। लोटिया ने अत्य त नि स्पृहता का प्रदशन करत हुए जेल अधिकारी म कहा—धन की चिंता ता गहस्थ करत हैं अपन राम को धन से क्या काम ? मैं तीथ करने चला जाऊगा। केवल एक बार उस वीर डूगजी को देखना चाहता हू जिसके भय स जनता भय भीत है। जेल अधिकारी किसी भी तरह उस बाबा को जल के सामने स हटा दना चाहता था, इसलिए उसने बाबा की बात स्वीकार कर ली। एक दिन प्रात काल सख्त पहर म लोटिया को जल के अन्दर ल जाया गया। अनक दरवाजे घुमाव बुर्जे पार करते हुए लोटिया डूगजी की कोटडी तक पहुचाया गया। करणिया भी—

सिपाही के वश म लोटिया के साथ था । अन्दर ही अ दर उन्होने किले की स्थिति का अध्ययन किया । लोटिया (बाबा) और करणिया ने डू गजी की कोटडी म प्रवश किया । डू गजी पहचान गय । उनका हृदय भर आया । अपने मित्र को देखकर बडी सा त्वना हुई । सकेत म ही डू गजी न लोटिया का बता दिया कि सात दिन बाद उसे काला पानी भेज दगे जहा स लौटना टेढी खीर है । न तुम म से ही कोई वहा पहुच पायेगा और न ही मै वहा से जीवित कभी लौट पाऊगा । लोटिया ने डू गजी को ढाढस बधात हुए बडे ही धीमे स्वर मे कहा आप चिंता न कर । सातवा सूय आपको जेल की कोठरी मे नही देखना होगा । इस प्रकार प्रबोध देकर लोटिया और करणिया वहा स लौट पड । उसने अपनी धूणी उठा ली और गगा को ओर जाने का दिखावा किया । लाटिया और करणिया राता रात शेखावाटी आ पहुचे । बठोठ पहुच कर सभी सरदारो को एकत्रित किया । जुवारजी के सामने डू गजी की स्थिति का ब्यौरा किया । डू गजी के ऊपर किय गये अत्याचारो की बात सुनकर सभी के हृदय भर आय । अपन प्यारे डू गजी को आजाद कराने के लिए वे सभी तत्पर थे । और बिना किसी विलम्ब किए उ होने अपन विश्वस्त यक्तिया को एकत्रित करना प्रारम्भ कर दिया ।

शखावाटी के जाट मीणा राजपूत गुसाइ गूजर आदि वीर जातिया को आह्वान किया । ऊटा का प्रब ध किया गया । अस्त्र शस्त्र स सुसज्जित इतनी बडी सेना आगरा पहुँचने क पहले ही नष्ट की जा सकती थी । इसलिए यह निश्चय किया गया कि छल कपट करके कस भी हम आगरा तक पहुच जाना चाहिए । एक यक्ति का दूल्हा बनाया जाय और शष यक्तिया का बारात का रूप दिया जाय । योजना क्रियाि वत होने लगी । अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित बारात आगरे की ओर प्रस्थान करने लगी । ऊटो पर जाती बारात ब्रज के लोगो के लिए सुखद आश्चय का कारण थी । आगरा स कुछ दूर बारात ने विश्राम किया । यही पर नये षडयत्र की रचना की गई ।

अग्रेजो का छल कर किसी भी प्रकार युद्ध के लिए भडकाने की और जेल तोडकर डू गजी का मुक्त कराने की तरकीब सोची गई । आसपास भेडे चर रही थी । करणिया मीणा ने एक माटा ताजा मेढा खरीदा । बडे उत्सव समारोह के साथ भटका किया गया । अर्थी बनाकर मढे की मु डी उसम रखी । शवयात्रा प्रारम्भ हुई । किले के मदान म चदन की चिता सजाई गई धुआ के बादल उड उड कर किले पर छाने लगे । जेल अधिकारी इस दृश्य को देखकर आग बबूला हो गया । और चिता जलाने वाले समूह का सम्बोधित कर कहा बिना आज्ञा इस मुर्दे को यहा कसे जलाया गया । राजपूतो ने मुर्दा शब्द पर आक्रोश प्रकट करत हुए कहा कि हमारे अतिप्रिय 42 गढा के गढपति को मुर्दा शब्द स सम्बोधित करोगे तो रक्त की नदी बहा देंगे । वह हमारे सिरो का ताज था । ऐसी ओजस्वी वाणी को सुनकर अफसर सहम गया । वह नही चाहता था कि यहा अकारण ही आदमियो का रक्त बहाया जाय । उसने समझौता सा करत हुए कहा कि यद्यपि तुमने इस स्थान पर

चिता जला कर अनुचित कार्य किया है फिर जितना शीघ्र हो तब तीन पड़ी में इसका तीया, 12 पड़ी में बारहवीं और 13 पड़ी में तहरवां आदि क्रियाकर्म समाप्त कर लो अन्यथा विलम्ब का फल तुम्हें भोगना होगा। राजपूतों ने प्रतिवाद किया कि वे अपने सरदार का सभी क्रिया विधि सम्मत एवं यथा समय करेंगे। अंग्रेजी सरकार उनकी निश्चयात्मक वाणी से डर गया। राजपूतों की अक्खड़ता वैसे ही प्रसिद्ध थी। वह जानता था कि ये लोग अपनी आनबान के लिए अपना सर दे देंगे पर पीछे पैर नहीं रखेंगे। झगड़े को टालने की गरज से वह चुपचाप लौट गया।

अगले दिन मुसलमानों का मुहर्रम था। सिपाही और अफसर मुहर्रम के जुलूस की व्यवस्था में लगे थे। किले के अधिकांश सिपाही जुलूस की व्यवस्था में लगे थे। किले के अधिकांश सिपाही जुलूस की रक्षा एवं सुव्यवस्था के लिए शहर में भेज दिये गये थे। अंग्रेज अधिकारी भी ताजिया देखने चले गये थे। जुवारजी उपयुक्त अवसर देख कर लोटिया और करणिया के परामर्श से डूंगजी को मुक्त कराने के लिए किले पर चढ़ बैठे। शस्त्र सम्भाल कर राजपूत आदि सभी किले के मुख्य दरवाजे में प्रवेश कर गये। जुवारजी, लोटिया और करणिया वार करते हुए मार मार मचाते हुए उस कोठड़ी तक पहुंच गये जहां डूंगजी कैद थे। ताले तोड़े गये। सांकलें काटी गई। डूंगजी ने जुवारजी से कहा पहले इन दूसरे कैदियों को मुक्त करो तभी मैं तुम्हारे साथ चलूंगा। इस पर सब कैदियों को मुक्त किया गया। अब तो उनकी शक्ति और भी बढ़ गई थी। सभी कैदियों ने डूंगजी की जय जयकार की। डूंगजी जुवारजी अपने दलबल सहित मारते काटते हुए किले के मुख्यद्वार से बाहर आ गये। सजे सजाये ऊंट उनकी प्रतीक्षा कर ही रहे थे। सभी ने ऊंटों पर चढ़ कर एड़ी को दबाया। ऊंट हवा की माफिक दौड़ पड़े। वे बात ही बात में सीकर पहुंच गये।

जिन सेठों ने डूंगजी को गिरफ्तार कराने के लिये लिखा एवं प्रोत्साहित किया था, उन्हें पकड़ कर ऊंटों पर बांध दिया गया। उनकी तिजारियों से धन निकाला गया। दल के कुछ लोग जब सेठानियों को पकड़ कर लाने लगे तो डूंगजी ने स्त्री सम्मान की भावना से उन्हें तुरन्त ससम्मान लौटाने को कहा। धन सम्पदा को डूंगजी अपने हाथों से गरीबों में बांटकर जोधपुर की ओर चले गये तथा जुवार जी बीकानेर चले गये। जोधपुर महाराजा ने डूंगजी को यह वचन देकर कि मैं तुम्हें अंग्रेजों को नहीं सौंपूंगा, नजरबन्द कर लिया किन्तु अंग्रेजों के दरबार में एक दिन जोधपुर नरेश ने डूंगजी को अंग्रेजों के सुपुर्द कर दिया। जोधपुर महाराज के इस अशोभनीय कार्य को रजवाड़ों ने बड़ी घृणा की दृष्टि से देखा और सभी राजाओं ने मिलकर अंग्रेज सरकार को डूंगजी को वापस करने को कहा। राजाओं को असन्तुष्ट न करने की गरज से अंग्रेजों ने पुनः डूंगजी को जोधपुर भेज दिया। वहां डूंगजी ने अपने शेष जीवन के दिन व्यतीत किये। जुवार जी मृत्युपर्यन्त बीकानेर महाराजा के विशिष्ट अतिथि के रूप में रहे।

आज भी डूंगजी जुवारजी का नाम उनकी दानवीरता, शौर्य निर्भीकता तथा उनके मानवीय गुणों के कारण जन जीवन का कण्ठहार बना हुआ है। लोक गाथाओं में यह वीर चरित्र अमर है और अमर रहेगा।

ाए निष्ठुर हो गय। किसी न मेरी पीडा का नही समझा। का्हया वाछल के चना को सुनकर पिघल गया। उसने गुरु गोरखनाथ के नाम का निर्देश किया ौर कहा, 'गोरख घट घट के जानन वाल और निराश ्यक्तिया का ग्राशा का ल देने वाले है।"

सती वाछल गोरखनाथ का सेवा म लग गई। उसन अपना शरीर सुखाकर ाटा कर दिया। गारख प्रसन्न हुए। दुर्भाग्य की वात था कि जिस दिन गारथनाथ ाछल को उसकी सवा का वदला चुकान वाल थ वाछल समय पर न पहुँची। ारख के सामन वाछल की बहिन आछल खडी थी। गारख न अपनी सेवा करने ाली बाछल के स्थान पर आछल को ही दा पुत्र हान का वरदान दिया। आछल हसती हसती अपन घर चली गई। जब वाछल न गुरु गारखनाथ के पास पहुँच कर प्रपना दुखडा राया, पुत्र प्राप्ति के लिय निवदन किया तो गारखनाथ को अपनी भूल का नान हुआ। जो हो गया सो हो गया जिस दे दिया उससे लिया नही जा सकता। इसलिए बाछल का भी एक शक्तिशाली सिद्ध पुत्र का वरदान दिया ग्रार कहा, सती वाछल ! तेरा पुत्र तरी बहिन आछल के दाना पुत्रो से अधिक बल शाली होगा।" गुरु गारखनाथ स मनचाहा वरदान पाकर सती प्रसन्न हृदय घर लौट आइ। कुछ समय पश्चात् गागा बाछल के गभ म आ गया। इस समय भी बाछल ने सिद्धा ग्रार जोगिया की सवा का परित्याग नही किया था। जिनकी कृपा ग्रार आशीर्वाद स उसकी सूनी गोद म वालक ग्राने वाला था उनके प्रति वह कसे कृतघ्न बनती अतएव वह दिन भर जागिया ग्रौर सिद्धो की सेवा म सलग्न रहती।

वाछल के इस कायक्रम से उसकी ननदें प्राय नाराज रहती थी। उनके विचार म बाछल जागिया की सवा म रह कर चौहान वश की प्रतिष्ठा गिरा रही थी। अतएव एक दिन ननदा ने अपन दादा ऊमर से निवेदन किया कि ग्रापकी पुत्रवधू कलकिनी ह। वह दिन भर जागियो की सवा म रहती ह ग्रौर सायकाल घर आती ह। यह काय हमारी वश मर्यादा के विरुद्ध ह। राजा ऊमर क्रुद्ध हा उठे उ्होन निश्चय किया कि एसी पुत्रवधू का मेरे घर म स्थान नही दिया जा सकता। उ्होंने उसे दुहाग देकर पीहर पहुचाने का निश्चय किया। किसी भी बहाने व वाछल का उसके पीहर भेज देना चाहत थे उ्हान वाछल का कहला भेजा कि उस पीहर जाना ह, उसके भाइयो का पत्र आया ह। वाछल इस षडयन्त्र का समझ गई। उसन अपने श्वसुर का निवदन करवाया कि मरा पाव भारी ह, एसी अवस्था म इतना लम्बा माग पार करना कस सम्भव हा सकेगा। उसके विरोध पर काई ध्यान नही दिया गया और उस जान को विवश किया गया। वह रथ मे वठकर अपन पाहर की तरफ जा रही थी। मजिल दर मजिल वह आग वढ रही थी। सध्या घिर आइ वल भी थक गय थ। एक सुदर सघन वट वक्ष क नीचे रथ छाड दिया गया। वला का चारा पानी दिया गया। गमस्थ शिशु अपनी माँ की पाडाआ को समझ रह थ। गोगा ने सप का रूप धारण किया और एक वल का दशन किया। इस उजाड जगल म वल का इस प्रकार सप दशन वाछल

गोगाजी

बाकानेर म ददरेवा नामक एक स्थान है कहत ह वह गागाजी की जन्म भूमि है। किसी समय ददरवा म चाहान राजपूत राज्य करत थे। इसी वश का प्रसिद्ध राजा ऊमर चौहान हुआ ह। ऊमर चौहान का पुत्र भवर था। अपने पिता के राज्य म भवर शासन सचालन म कई प्रकार स मदद किया करता था। भवर की पत्नी बाछल एक सती साध्वी स्त्री थी। भवर और बाछल सम्पन्न सद्गृहस्थ थे। उह कोई सतान न थी। यह साल रह रह कर उनके हृदय का कुरदता रहता था। राजा ऊमर न अपन पुत्र का स तान लाभ हेतु अनक देवी देव ताओ पीरा साधु महात्माओ के दशनाथ भेजा। अनका पवित्र नदियो तथा तीर्थों म स्नान करवाया। सिद्ध पुरुषो की चरण सेवा करवाई। पर फल कुछ न मिला। नि सतान होना उनक लिए असाध्य राग था। भाइ व बुओ तथा कुटम्ब कबील म बाझ समझ कर उच्चा से दूर रखा जाता। उत्सव समाराह म उसे कभी आग न आने के लिए कहा जाता। पुत्रवती स्त्रिया प्रात काल उस दखकर मुह फेर लती। तब वह अपन पति भवर के चरणो म बठकर फूट फूट कर रान लगती। वह विवश थी। क्या कह और किसे कह। बहुता क सामन वह अपना दुख रा चुकी थी।

एक बार सिद्ध साधु का हया घूमत घूमत ददरवा आये। उस समय व अपनी सिद्धता क लिए प्रसिद्ध हा चुक थे। वे द्वार द्वार पर जाकर ददरेवा पर भीख माग रहे थ। इसी क्रम म वे सता बाछल क दरवाजे पर भी पहुच गय। भिक्षा म देहि की आवाज सुनकर बाछल चावल मूग स थाल भर कर लाई। सिद्ध न चावल मूग पर्याप्त मात्रा म देखकर खप्पर पीछ हटा लिया और कहन लगा, 'देवी! म जागी हू। चावल मूगा की आवश्यकता गहस्थियो को होती है। मुझे ता बच्चा की जूठन भिक्षा क रूप म दा। बाछल के वात्सल्य अभाव की अग्नि म माना घी पडा हा। बालक की जूठन का नाम सुनत ही वह फूट फूट कर रान लगी। उसकी कोख ता अनेकानेक मनातिया मनान क पश्चात् भी सूनी थी। जागी को वह बालक की जूठन कहा स लाकर दे। उसकी छाती फटने लगी। सिसकिया भरत हुए उसने जागी से कहा जागी! बालक का नाम न लो। बालक ता भाग्य शालियो क यहा जन्मत ह। मुझ अभागिन का एसा सौभाग्य कहा?' यह कहकर बाछल जार जोर से रोन लगी। जागी ने पूछा, 'क्या तुमन साधु सन्ता पार परमेश्वरा की आराधना नही की?' बाछल ने अपनी तपस्या का वह वत्तान्त कह सुनाया— मैंने जागी लकडनाथ का सवा करक अपनी कचन सी काया को लकडी के समान सुखा लिया। जागी दूधनाथ की सवा करक मैंने अपन गुलाब से शरीर का दूध के समान सफेद कर दिया। इसी प्रकार जान धरनाथ की सवा करने स भी कोई फल नही मिला। अ य कई दवी देवताओ की आराधना करके भी देख लिया। सब मरे

लिए निष्ठुर हो गय। किसी न मेरी पीडा का नही समझा।" कान्हया बाछल क वचनो का सुनकर पिघल गया। उसने गुरु गोरखनाथ के नाम का निर्देश किया और कहा, 'गारख घट घट क जानन वाले और निराश व्यक्तियो की आशा का फल देने वाले हैं।'

सती बाछल गोरखनाथ की सेवा म लग गई। उसन अपना शरीर सुखाकर काटा कर दिया। गारख प्रसन्न हुए। दुर्भाग्य की बात थी कि जिस दिन गोरखनाथ बाछल का उसकी सेवा का बदला चुकाने वाल थ बाछल समय पर न पहुँची। गोरख क सामन बाछल की बहिन आछल खडी थी। गोरख ने अपनी सेवा करने वाली बाछल के स्थान पर आछल को ही दो पुत्र होन का वरदान दिया। आछल हसती हसती अपन घर चली गई। जब बाछल न गुरु गोरखनाथ क पास पहुँच कर अपना दुखडा रोया, पुत्र प्राप्ति के लिय निवदन किया, तो गोरखनाथ का अपनी भूल का ज्ञान हुआ। जो हो गया सो हो गया जिस दे दिया उससे लिया नही जा सकता। इसलिए बाछल को भी एक शक्तिशाली सिद्ध पुत्र का वरदान दिया और कहा, 'सती बाछल! तेरा पुत्र तेरी बहिन आछल के दोनो पुत्रो स अधिक बलशाली होगा।' गुरु गोरखनाथ न मनचाहा वरदान पाकर सती प्रसन्न हृदय घर लौट आई। कुछ समय पश्चात् *गोगा बाछल के गर्भ म आ गया। इस समय भी बाछल* न सिद्धो और जोगियो की सेवा का परित्याग नहीं किया था। जिनकी कृपा और आशीर्वाद स उसकी सूनी गोद म बालक आने वाला था उनके प्रति वह क्यो कृतघ्न बनती अतएव वह दिन भर जोगियो और सिद्धो की सेवा म सलग्न रहती।

बाछल के इस कार्यक्रम से उसकी ननदें प्राय नाराज रहती थी। उनके विचार म बाछल जोगियो की सेवा म रह कर चौहान वश की प्रतिष्ठा गिरा रही थी। अतएव एक दिन ननदो न अपन दादा ऊमर स निवेदन किया कि आपकी पुत्रवधू कलकिनी ह। वह दिन भर जोगियो की सेवा म रहती है और सायकाल घर आती ह। यह कार्य हमारी वश मर्यादा क विरुद्ध ह। राजा ऊमर क्रुद्ध हो उठे, उन्होने निश्चय किया कि ऐसी पुत्रवधू का मेरे घर म स्थान नहीं दिया जा सकता। उन्होने उसे दुहाग देकर पीहर पहुचान का निश्चय किया। किसी भी बहाने व बाछल को उसके पीहर भेज देना चाहते थ, उन्होने बाछल को कहला भेजा कि उसे पीहर जाना ह उसके भाइयो का पत्र आया ह। बाछल इस षडय न्त्र को समझ गई। उसन अपने श्वसुर का निवेदन करवाया कि मेरा पाव भारी है ऐसी अवस्था म इतना लम्बा मार्ग पार करना कैसे सम्भव हो सकेगा। उसके विरोध पर कोई ध्यान नही दिया गया और उसे जाने को विवश किया गया। वह रथ म बैठकर अपन पीहर की तरफ जा रही थी। मजिल दर मजिल वह आगे बढ रही थी। सध्या घिर आई बैल भी थक गये थ। एक सुन्दर सघन वट वृक्ष क नीचे रथ छोड दिया गया। बैलो को चारा पानी दिया गया। गर्भस्थ शिशु अपनी माँ की पीडाओ को समझ रहे थे। गोगा न सर्प का रूप धारण किया और एक बैल को दशन किया। इस उजाड जगल म बैल को इस प्रकार सर्प दशन बाछल

गोगाजी

बीकानेर म ददरेवा नामक एक स्थान है कहते ह् वह गोगाजी की जन्म भूमि ह्। किसी समय ददरवा म चौहान राजपूत राज्य करते थ। इसी वश का प्रसिद्ध राजा ऊमर चौहान हुआ ह। ऊमर चाहान का पुत्र भवर था। अपने पिता क राज्य म भवर शासन सचालन म कई प्रकार स मदद किया करता था। भवर की पत्नी बाछल एक सती साध्वी स्त्री थी। भवर आर बाछल सम्पन्न सद्गहस्थ थ। उ ह् कोई स तान न थी। यह साल रह् रह कर उनके हृदय को कुरेदता रहता था। राजा ऊमर ने अपन पुत्र का स तान लाभ हेतु अनेक देवी दव ताओ पीरा साधु महात्माओ के दशनाथ भजा। अनेका पवित्र नदिया तथा तीर्थों म स्नान करवाया। सिद्ध पुरुषा की चरण सेवा करवाई। पर फल कुछ न मिला। नि सतान होना उनके लिए असाध्य राग था। भाइ व धुओ तथा कुटुम्ब कबील म वाझ समझ कर बच्चा स दूर रखा जाता। उत्सव समारोह म उमे कभी आगे न आने के लिए कहा जाता। पुत्रवती स्त्रिया प्रात काल उस दखकर मु ह फेर लती। तब वह अपन पति भवर के चरणा म बठकर फूट फूट कर रान लगती। वह विवश थी। क्या कह् और किसे कहे। बहुता क सामन वह अपना दु ख रा चुकी थी।

एक बार सिद्ध साधु का हया घूमते घूमत ददरेवा आय। उस समय व अपनी सिद्धता क लिए प्रसिद्ध हा चुक थ। व द्वार द्वार पर जाकर ददरेवा पर भीख माग रहे थ। इसी क्रम म व सती बाछल क दरवाजे पर भी पहुँच गये। भिक्षा म देहि की आवाज सुनकर बाछल चावल मू ग स थाल भर कर लाइ। सिद्ध ने चावल मू ग पर्याप्त मात्रा म देखकर खप्पर पीछे हटा लिया और कहन लगा 'देवा' म जागी हूँ। चावल मू गा की आवश्यकता गहस्थिया का होती है। मुझ ता बच्चा की जूठन भिक्षा के रूप म दो। बाछल के वात्सल्य अभाव की अग्नि म माना घी पडा हा। बालक की जूठन का नाम सुनत ही वह फूट फूट कर रोने लगी। उसकी काख ता अनेकानक मनातिया मनान के पश्चात् भी सूनी थी। जागी का वह बालक की जूठन कहा से लाकर द। उसकी छाती फटन लगी। सिसकिया भरत हुए उसन जोगी स कहा जागी! बालक का नाम न ला। बालक तो भाग्य शालिया क यहा जन्मत है। मुझ अभागिन का एसा सौभाग्य कहा? यह कहकर बाछल जार जार से राने लगी। जागी न पूछा क्या तुमन साधु सन्ता पीर पगम्बरा की आराधना नही की? बाछल ने अपनी तपस्या का वह बत्ता त कह सुनाया—मैंने जागी लक्कडनाथ की सवा करके अपनी कचन सी काया को लक्डी के समान सुखा लिया। जोगी दूधनाथ की सवा करके मैन अपन गुलाब स शरीर का दूध के समान सफेद कर दिया। इसी प्रकार जाल धरनाथ की सेवा करने से भी कोइ फल नही मिला। अन्य कई स्त्री देवताओ की आराधना करके भी देख लिया। सब मरे

लिए निष्ठुर हो गय । किसी न मेरी पीडा को नहा समझा ।' का ह्या बाछल के वचना को सुनकर पिघल गया । उसने गुरु गोरखनाथ के नाम का निर्देश किया और कहा 'गोरख घट घट के जानने वाले ग्रार निराश व्यक्तिया को ग्राशा का फल देन वाले हैं ।''

सती बाछल गोरखनाथ की सवा म लग गइ । उसन ग्रपना शरीर सुखाकर काटा कर दिया । गारख प्रसन्न हुए । दुर्भाग्य की बात थी कि जिस दिन गोरखनाथ वाछल का उसकी सवा का बदला चुकान वाल थ वाछल समय पर न पहुँची । गोरख के सामने वाछल की बहिन ग्राछल खडी थी । गोरख ने ग्रपनी सेवा करन वाली वाछल के स्थान पर ग्राछल को ही दो पुत्र हान का वरदान दिया । ग्राछल हसती हसती ग्रपने घर चली गई । जब बाछल न गुरु गारखनाथ क पास पहुँच कर ग्रपना दुखडा रोया, पुत्र प्राप्ति के लिय निवेदन किया तो गारखनाथ का ग्रपनी भूल का नान हुग्रा । जा हो गया सो हो गया, जिस दे दिया उससे लिया नहा जा सकता । इसलिए बाछल का भी एक शक्तिशाली सिद्ध पुत्र का वरदान दिया ग्रौर कहा सती बाछल ! तरा पुत्र तरी बहिन ग्राछल के दानो पुत्रा स ग्रधिक बल शाली होगा ।'' गुरु गारखनाथ म मनचाहा वरदान पाकर सती प्रसन्न हृदय घर लौट ग्राई । कुछ समय पश्चात् गोगा बाछल क गभ म ग्रा गया । इस समय भी वाछल ने सिद्धा ग्रौर जागिया की सवा का परित्याग नहा किया था । जिनकी कृपा ग्रौर ग्राशीर्वाद स उसकी सूनी गोद म बालक ग्राने वाला था, उनके प्रति वह कसे कृतघ्न बनती ग्रतएव वह दिन भर जोगिया ग्रार सिद्धा की सवा म सलग्न रहती ।

बाछल के इस कायक्रम से उसकी ननदें प्राय नाराज रहती थी । उनक विचार मे बाछल जागिया की सवा म रह कर चौहान वश की प्रतिष्ठा गिरा रही थी । ग्रतएव एक दिन ननदा न ग्रपन दादा ऊमर से निवेदन किया कि ग्रापकी पुत्रवधू कलकिनी ह । वह दिन भर जागिया की सवा म रहती ह ग्रौर सायकाल घर ग्राती ह । यह काय हमारी वश मर्यादा के विरुद्ध ह । राजा ऊमर क्रुद्ध हा उठे उन्होंन निश्चय किया कि ऐसी पुत्रवधू का मरे घर म स्थान नही दिया जा सकता । उन्होंने उसे दुहाग देकर पीहर पहुचान का निश्चय किया । किसी भी बहाने व बाछल को उसके पीहर भेज देना चाहते थ, उन्होंन बाछल का कहला भेजा कि उस पीहर जाना है उसके भाइया का पत्र ग्राया ह । बाछल इस पडय त्र का समझ गई । उसन ग्रपन श्वसुर का निवदन करवाया कि मेरा पाव भारी ह, एसी ग्रवस्था म इतना लम्बा माग पार करना कसे सम्भव हा सकेगा । उसके विरोध पर काई घ्यान नही दिया गया ग्रौर उस जाने को विवश किया गया । वह रथ म बठकर ग्रपन पीहर की तरफ जा रही थी । मजिल दर मजिल वह ग्रागे बढ रही थी । सध्या घिर ग्राई बल भी थक गये थ । एक सुन्दर सघन वट वक्ष के नीचे रथ छाड दिया गया । बला का चारा पानी दिया गया । गभस्थ शिशु ग्रपनी माँ की पीडाग्रा का समझ रह थ । गोगा न सप का रूप धारण किया ग्रार एक बल का दशन किया । इस उजाड जगल म बल का इस प्रकार सप दशन बाछल

की पीडा का ग्रोर वटान लगा। वह राने लगी। गागा गभ म ग्रपनी माँ का प्रबाधन लगा कि मा! तुम क्या राती हो? तुम्हारा पीहर जाना व्यथ है। यद्यपि मेरे दादा न तुम्हे दश निकाला दिया है किन्तु मैं ग्रपन ननिहाल म जन्म नही लूगा। मुझे लाग नानडिया कह कर चिढायेंगे। वह मेरे लिए ग्रसह्य होगा। इसलिए तुम ददरेवा की ग्रार लाट चला। ग्रब तुम्हे काई कुछ नही कहेगा। सारा परिस्थितिया ठीक हो जायेगी। ज म लकर मैं पीर के रूप म प्रसिद्धि पाऊगा। बल की कुछ चिता न करो। मेरे नाम का तत्र बाध दो। यही किया गया। बल पुनर्जीवित हो गया। रथ के पहिये चू चू करत हुए ददरेवा की दिशा म घूमने लगे। सती बाछल राजा ऊमर क द्वार पर ग्रा पहुची। रथ रुक गया। दादा ऊमर ग्रब भी उस रथ का किसी भी तरह जगल की ग्रार माड देना चाहते थे। रथवान को उन्हाने ग्रादेश दिया कि रथ को माडकर वापिस ल जाग्रो। कि तु न बल हिले न रथ। झुझला कर राजा ऊमर न रथ क दूसरे बल जुतवाय। रथ टस स मस नही हुग्रा। तब हाथियो क द्वारा रथ का धकेला गया। रथ तब भी न हिला। राजा ऊमर ग्रौर उनका पुत्र भवर दाना न वह ग्राश्चयचकित कर दन वाली करामात दखी। वे स्तब्ध रह गय। रानी बाछल का उन्हान ससम्मान पुन महल म भेज दिया।

नौ महीने बीत। बालक गागा का ज म हुग्रा। साने की थाली बजी। हीरा से जडी मूठ वाली साने की कटार स नाला काटा गया। ज मत ही बालक न चमत्कार दिखाया। ग्रपग दाई को पर मिल गय। ग्रधो का ग्राँखें मिली। कोढिया के कलक झड गय। जिस कुण्ड म नाडा डाला गया उसम पचास मोहरें पटकी गइ। जन्म धारण सस्कार धूम धाम स सम्पन्न हात होत नामकरण सस्कार की तयारिया हाने लगी।

देश देशा तर के लागा का ग्रामन्नित किया गया। बालक का नाम गागा रखा गया। बहिन बेटिया को हारा मातिया क भरे थाल तथा ग्रमूल्य वस्त्र उपहार म दिय गय। ग्रपार धन राशि गरीबा का दान म दी गई। बालक क लिए चदन का स्वण जडित पालना रेशम की डार पर लटकाया गया। सवत्र जच्चा के गीता को गूज ग्राकाश पाताल एक करने लगी।

सापा का राजा वासुकि चौहान वश स शत्रुता वरत रहा था। चाहान वश का समूल नष्ट करने पर तुला हुग्रा था। चौहाना के कइ वीरा का वह ग्रपन दश स कवलित कर चुका था। गागा के जन्म का समाचार पाताल म पहुचा। उसकी रानिया इस समाचार का शीघ्र ही वासुकि तक पहुचा दना चाहती थी। वासुकि सो रहा था। फिर भी उन्हान उस शत्रु जन्म की सूचना देने क लिए झकझोरा वह फुफकारता हुग्रा जगा। वह ग्रम कई सापा क साथ बाछल के महला म ग्राया किन्तु गागा क तज ग्रौर प्रकाश का दखकर वह समझ गया कि यह ता हमारा रक्षक है। इसक साथ शत्रुता नहा बरती जा सकती। इसस हम पार भी नही पा सकत। ग्रतएव समपण म ही कल्याण ह। इसका सवा करक हम जावन

का फल पाना चाहिये। वासुकि और अ य सापा ने गोगा के पालने को अपन फनो की छाया मे आच्छादित कर दिया। जब बाछल न गोगा को सर्पों से घिरा हुआ देखा तो उसन दही मथन छोड कर सर्पा का मारन का उपक्रम किया।

गोगा बोला, मा ! इ ह् मत मारा। यह तो मेरी सेवा म आये है। दही मथने के लिए चाहो ता इन सापा का नता बनाओ।" बालक की वाणी का सुनकर माता सहम गई। यह समाचार राजा ऊमर और भवर तक पहुँचा। ऊमर लाठी लेकर दौडे। वे प्रहार करना ही चाहते थे कि गोगा पुन बाल उठा 'बाबा ! इन सर्पों को न मारो। इन सर्पों का पलग बनायें जिस पर आप शयन करेंगे। इसी प्रकार भवर को भी इ होने समझा दिया। अब सभी इस बात को जान गये कि गोगा गोरखनाथ के प्रसाद का फल है। साप उसकी सेवा म नियुक्त किय गय है।

एक दिन समुद्र पार पहुँचने पर गोगा को पाबूजी मिले। पाबूजी की केशर घोडी और गोगा की नीली घोडी पवन वेग स उडती हुई एक ही साथ समुद्र के किनारे पर रुकी। दोना वीरा न एक दूसरे को देखा। दोनो ने एक दूसरे म सिद्धता देखी। पाबूजी ने प्रस्ताव किया कि अगर तुम अपना चमत्कार दिखाकर मुझे परा स्त कर दो तो एक लाख लालो से तुम्हारा अभिन दन करू। यदि मरे चमत्कार क सामने तुम हार जाओगे तो ददरवा का राज्य मैं ले लू गा। गोगाजी न अ तिम शत स्वीकार की और पहले वाली शत मे परिवतन करके कहा कि मुझे लाल नही चाहिए। चमत्कारो की लडाई म मै जीत जाऊ ता तुम्हारी भतीजी केलमदे के साथ पाणिग्रहण करने का अधिकारी हा जाऊगा। दानो ही वीर और सिद्ध थे। पाबूजी ने मढक की खोली ग्रहण की और समुद्र के पदे म जाकर बठ गये। वे मन ही मन अपने गुरु को मना रहे थे। गोगा ने गुरु गारखनाथ का स्मरण किया। पाबूजी का योग क्रिया स उ होने समुद्र के पदे म छिपा देखा। तुर त सप का रूप धारण करके गोगा समुद्र के तल म पहुच कर मढक के रूप म पाबूजी को पकडन म समथ हो गये। बाहर आकर पाबूजी न अपनी हार स्वीकार करली। गोगा ने शर्त की याद दिला कर पाबूजी से विदा ली।

कुछ समय बाद गोगाजी का पाबू द्वारा दिए गये वचनो का स्मरण हुआ इस पर वे पाबू के यहा जाने को तयार होने लगे। सुबह पहले गोगा को घोडी सजाते देखा ता बाछल ने टोका और कहा, 'पुत्र ! आज किस दिशा म सिद्ध कर रह हा। गोगाजी ने पाबूजी की शत का वत्तान्त कह कर बाछल को समझाया। पर बाछल ने यह कह कर विरोध किया कि विवाह शादी तो बराबर वालो म ही शोभनीय है। पाबूजी से अपनी क्या ममता ! और फिर केलमदे के विवाह की जिम्मेदारी पाबूजी के बडे भाई पर है। अत यदि तुमने यह निश्चय ही कर लिया है तो कोल्हूगढ के राजा को यह स देश भज दो कि तुम्हारी पुत्री केलमदे से पाणिग्रहण करने क लिए गागा प्रस्तुत है। इस पर गोगा ने दूत को विभिन्न सु दर वस्त्रो से सुसज्जित करवा कर कोल्हूगढ भेज दिया। दूत जब राजा क द्वार पर पहुँचा तो पट ब द थे। उसन द्वारपाल स दरवाजा खोल देने को कहा। द्वार-

पाल ने अपनी विवशता प्रकट करते हुए कहा कि चाबी मेरे पास नहीं है। वह तो सध्या समय ही राजा क पास भेज दी जाती है। इस पर दूत ने गागा का स्मरण किया। वज्र किवाड अपने आप खुल गये। पाबूजी की कोई गुप्त मत्रणा चल रही थी। एकाएक दूत का वहा पाकर सभी के मन म आश्चय का ठिकाना न रहा। राजा भी वही थे। दूत का आया जानकर राजा न प्रयोजन पूछा। हाथ जोड कर दूत न गोगाजी द्वारा प्रेषित स देश का वह सुनाया। दूत की सुन्दर वशभूषा उपस्थित सभासदा क लिए आकषण का वस्तु बनी हुई थी, किन्तु दूत के सन्देश को सुन सभी लोग चौकन्ने हो गय। राजा इस सम्ब ध का नही करना चाहता था अत उसन प्रतिसन्देश दिया कि मेरी पुत्री कलमदे अभी अल्पवयस्क है और गोगाजी पूणत वयस्क हैं। अत यह अनमेल विवाह रीति विरुद्ध है। पाबूजी ने भी अपने भाई की बात का समथन करते हुए दूत का लौटा दिया। दूत ने ददरेवा का रास्ता लिया। गोगाजी ने पाबूजी क वचनभग की बात जब दूत के मुह स सुनी तो क्रोध स आग बबूला हो गये। उन्होने पद्मा नागिन को आदेश दिया कि वह तत्काल ही जाकर केलमदे का डस ले। सावनी तीज सिर पर थी। बागो म भूले डले हुए थे। केलमदे अपनी सखियो के साथ भूला भूल रही थी। पद्मा नागिन ने वही पर केल मदे को सभी के सम्मुख बडी त्वरित गति स डस लिया और वहाँ स अतर्धान हो गई। सखियो म खलबली मच गई। वद्यो का जमघट लग गया। तांत्रिकाचार्यों को बुलाया गया। जहर उतारने को कहा गया। किसी की कुछ न चली। उस समय गोगाजी सापो के देवता के रूप म ख्याति प्राप्त कर चुके थे। अत गोगाजी के एक भक्त की सलाह स गोगाजी के नाम का डोरा बाधा गया। विष उतर गया। केल मदे अच्छी हो गई। दिन गुजरते गये, कलमदे यौवन की सीढी पर चढने लगी। पिता को अपनी सयानी बेटी क विवाह की चिन्ता होने लगी। देश देश के चारण भाटो को वर की तलाश म भेजा गया। जो जाता वही निराश होकर लौट आता। केलमदे का योग्य वर न मिला। परिवार वालो को चिन्तामुक्त करने के लिए केल मदे ने एक दिन स्वय परामश दिया कि ददरेवा के राजा भवर के पुत्र को मेरा *टीका समर्पित किया जाय*। राजा ने अपनी भूल स्वीकारते हुए गोगा के लिए केलमदे का नारियल भेजा।

जब माता बाछल को कोल्हूगढ स आये नारियल का सन्देश दिया गया तो उसने गोगाजी को पुन टीका और कहा कि बेटा! तुम्हारे बडे भाई अरजन सरजन अभी कुवारे हैं। यह टीका तो उन्हें देना ही उचित है। उन्हे नाराज करना ठीक नही। यदि अरजन सरजन स शत्रुता की गई तो कौन तेरी बारात म सम्मिलित होगा कौन प्रब ध करेगा। गोगा ने अपने लिए आये टीका को लौटाना अनुचित समझा। इस पर उसने माँ को कहा कि गुरु गोरखनाथ मेरे साथ हैं वे विवाह का प्रब ध करेंगे। उनके 9 लाख शिष्य मेरी बारात म जायेंगे। दृढ निश्चय के साथ उन्होने टीका स्वीकार कर लिया। माता बाछल अनेक प्रकार स पुत्र को समझाती रही। माता और पुत्र म मानसिक तनाव उत्पन्न हो गया। गुरु गोरखनाथ

ाथ ने यह सब देखा तो व उड़न खटोले पर बैठ कर आकाशीय मार्ग से वहाँ आये। बाछल को समझाते हुए उन्होंने कहा कि तू धन्य है जो गोगा जैसा पुत्र तेरी कोख में आया। केलमदे भी धन्य हो जायगी जिसे गोगा जैसा पति मिला। इसलिए अपने मन में से सभी शंकाओं को हटा लो। बाछल गुरु की बात को ही ठीक मान कर विवाह की स्वीकृति देने को राजी हो गई।

गाजे बाजे बजे, बारात सजाई गई। धूमधाम से विवाह करके गोगाजी ददरेवा लौट आये। हाथी घोड़े, जिंस पालकी धन दौलत आदि दहेज लिया गया। पाबूजी ने गोगाजी का हर्ष विषाद के साथ विदा किया। समय व्यतीत होता रहा। राजा कंवर परलोकवासी हुए, गोगा ने पिता की गद्दी प्राप्त की। राज्य चलाने के लिए जितने धन की आवश्यकता थी राजकोष में उसका अभाव देखकर गोगा ने अपनी माँ से गुप्त धन के विषय में पूछा। माता बाछल गुप्त धन को प्रकट करके भाइयों में विद्वेष नहीं फैलाना चाहती थी। उसने बेटे को समझाया कि धन की चर्चा करके तुम अपने भाइयों को शत्रु बना लेना चाहते हो। इसलिए भविष्य में मुझ से धन की कभी बात न करना। दीवारों के भी कान होते हैं। किसी ने गुप्त धन की बात जोड़ा (अरजन सरजन) को बता दी और यह भी कहा कि धिक्कार है तुम्हें, तुम बड़े हो और तुम्हारे होते हुए छोटा भाई गोगा राज कर रहा है। जोड़ा ने गोगा को संदेश कहला दिया कि हम जैसे भी होगा तुम्हारे से अपना हक छीन लेंगे। तैयार हो जाना। तुम्हें अन्याय का फल भुगतना होगा। गोगाजी ने अपनी माँ को सारी परिस्थिति से अवगत करा दिया। जिस दिन जोड़े अस्त्र शस्त्र लेकर गोगा से युद्ध करने के लिए आये, माता बाछल ने उन्हें समझाया कि अस्त्र शस्त्र से कट कर मर जाना मूर्खता है। न्याय मांगना बनियापन है। तुम तो राजा के पुत्र हो। चौपड़ पासा खेल कर अपने भाग्य का परीक्षण कर लो। जो जीतेगा वही ददरेवा का राज्य करेगा। जोड़ा ने भी यह बात स्वीकार की। पासे फेंके जाने लगे। अरजन सरजन के भाग्य ने साथ न दिया। इन्होंने धांधली और बेईमानी शुरू की। तब भी उनकी एक न चली। वे हारते गये। अब शर्त से मुकरना और झंझट खड़ा करना ही उन्होंने उचित समझा। गोगा को ताव आ गया। जोड़ा को ललकार कर खड्ग युद्ध में पराजित किया। अरजन सरजन भाग गये। गोगाजी के प्रति उनकी शत्रुता चौगुनी भड़क उठी। जोड़ों ने गोगाजी को समूल नष्ट करने का उपाय सोचा। वे दिल्ली के बादशाह के दरबार में पहुँचे। उन्होंने बादशाह के मन में गोगाजी के प्रति शत्रुता का बीज बोने का प्रयास किया। दरबार में पहुंच कर उन्होंने फरियाद की। बादशाह सलामत जिन्दाबाद। ददरेवा में राज्य करने वाला गोगाजी परम स्वतंत्र होकर शासन चलाता है मुगलों के नियंत्रण को स्वीकार नहीं करता और न बादशाह की आन ही मानता है। ऐसे उद्दण्ड को दण्ड देने के लिए मुगल बादशाह आतुर हो उठा। जैसे वह मानो ऐसे ही अवसर की प्रतीक्षा कर रहा हो जब किसी के घर का भेदिया ही आकर शत्रु के विरुद्ध उसे मदद देने को तैयार हो। दरबार

म बीडा डाला गया । अमीर उमरावा स दरबार खचाखच भरा हुआ था । गोगाजी के वीरत्व और सिद्ध चमत्कारो न लोगो के दिल दहला दिय । सब के मुखो पर स्याही पुत गई । किस की मा ने शरनी का दूध पिलाया है जो गोगाजी स दो ना हाथ करे । बहुत देर की चुप्पी के पश्चात् एक मुगल सरदार न बायें हाथ से बीडा उठाया और दायें हाथ स बादशाह का सलाम करके घर चला आया । उसके पाव मद पड गये थे । जसे पावो म किसी ने वजन बाध दिया हो । मुँह फीका पड गया था । घर म जात ही वह निढाल होकर गिर पडा । उसकी मा ने जब उसस इम खिन्नता का कारण पूछा ता उसन निराशा के साथ कहा कि मैंने जोश ही जोश म बादशाह क सामने गोगाजी से युद्ध करन का बीडा उठाया । कि तु गोगाजी के नाम से मेरा दिल दहलता है । हाथ शस्त्र उठान स जवाब दे चुके हैं । पाव आगे बढने का इकार करत हैं । गोगा तो सिद्ध वीर पुरुष है । आदमी हो तो युद्ध करू । गोगाजी स युद्ध कस सम्भव हो सकता है । उसकी माता ने बादशाह के भय से किसी भी प्रकार उसे युद्ध म ठेल दिया । सात लाख मुगल और 12 लाख पठान सना सजाकर मदान म आ डटे । गोगाजी तनिक भी भयभीत नही हुए । उन्होने अपनी छोटी सना के द्वारा इस विशाल मुगल वाहिनी पर भीषण आक्रमण कर दिया । आकाश से बिजली टूटी हो धरती पर आकाश गिरा हो शिव का तीसरा नेत्र खुला हो । गोगाजी ने इसी प्रकार सहार का दृश्य उपस्थित कर दिया । रुण्ड मुण्ड विच्छिन्न नजर आने लगे । लोही की नदी बह गई । चण्डी ने खप्पर भर भर कर अपनी रक्त पिपासा को शा त किया । गोगाजी ने विजय वजय तो धारण की ।

एक दिन केलमदे न वाटिका म भ्रमण के लिए बाछल म आना चाही । युद्ध काल म प्राय स्त्रिया अपने घरा म ही रहती थी । उनका इधर उधर जाना निषिद्ध था । बाछल न केलमदे को टोकत हुए कहा कि जोड किसी भी समय तुम्हे छेड सकते हैं । तुम्हारा अपमान चौहान वश का अपमान होगा । उस अवस्था म वर बढगा । केलमदे ने यन केन प्रकारेण अपनी सास को मना लिया । उसन सोलह शृ गार किय । चौसठ कली का घेर घूमेर लहगा पहना । दक्षिणी चीर को सिर पर ओढा हाथो म कगन और पावो म पायल पहनी । सजधज कर वह वाटिका मे गई । माली को बख्सास दी । सवा लाख की अगूठी और सात लाख का हार उस दकर प्रसन किया । वाटिका म शुद्ध वायु का सेवन करती हुई पुष्प कलियो म खलती हुई वह इधर उधर घूमती रही । चयन किए हुए पुष्पो से उसने दो हार गूथे थे । उसकी इच्छा थी कि एक हार वह गुरु गोरखनाथ को समर्पित करेगी तथा दूसरा गोगाजी चौहान क गले म डाल कर उन्हे रिझायगी । उसके पाव की पायल स झनकार उठ रही थी । पायल की आवाज पहचान कर जोडो की एक बहिन ने अपने भाइया का उत्साहित किया कि जिस गोगा ने तुम्हे पराजित एव अपमानित किया है उससे बदला लेने का समय आ गया है । केलमदे इस समय वाटिका म घूम रही है । अपन अपमान का बदला उसी स लकर स तोष की सास लो । दोनो भाई केलमदे को लूटने के लिये वाटिका म आये । उन्होने केलमदे के

साथ छेड़छाड़ प्रारम्भ की। केलमदे ने उन्हें झिड़क दिया। आप लोग मेरे देवर जेठ हो, अपने छोटे भाई की बहू से खेलते लाज नहीं लगती? गोगाजी के सामने तो दांतों में तिनका दबा लेते हो और अकेली स्त्री को देखकर अपनी बहादुरी का प्रदर्शन करते हो। अरजन सरजन पर इस प्रतिवाद का कोई असर नहीं पड़ा। उन्होंने केलमदे के हाथ में हार झपट लिये। उसका दखणी चीर उतार कर फाड़ फेंक दिया। केलमदे को अब अपना करणीय सूझा। वह गरज उठी। मैं खाली हाथ हूं अगर वीर हो तो मेरे हाथ में भी तलवार दो। और फिर देखो स्त्री का जौहर। रणचण्डी जैसे उसके रूप को देखकर अरजन सरजन तो नौ दो ग्यारह हो गये। केलमदे रोती रोती घर आई। उसने माता बाछल को रो रो कर आज की घटना का वृत्तान्त सुनाया। कहने लगी कि गोगाजी के यदि और दो तीन भाई होते तो जोड़ों को मेरा अपमान करने का साहस न होता। गोगाजी को अकेला जान कर ही जोड़े घर की मर्यादा को नष्ट करने पर उतारू हो गये हैं। बाछल को अपने एक मात्र पुत्र पर गर्व था। वह कहने लगी कि बहू सिंहनी के तो एक ही शेर होता है। कुतिया और सूअरी दसों बच्चों को जन्म देती हैं। मेरा गोगा तो सिंहनी का जाया सिंह है। उसे जगा कर यह सब वृत्तान्त कहना आवश्यक है।

केलमदे रंग महल में गई। गोगा निमग्न नींद में सो रहे थे। रानी ने शीतल जल छिड़क कर अपने पति को जगाया। गोगा अचानक कड़क कर उठ बैठे। उठने का झटका लगने से जमीन हिल गई। सन्नाटा छा गया। सामने ही केलमदे सहमी सी सिकुड़ी खड़ी थी। अपनी रानी को इस असमय उपस्थित देखकर गोगा ने पूछा, मुझे कच्ची नींद में क्यों जगाया है। कौनसा पहाड़ सिर पर टूट पड़ा है? दुश्मनों ने गढ़ घेर लिया है या गायों का धन लूटा है?

केलमदे ने साहस बटोरा और गोगाजी को निवेदन किया कि न तो सिर पर पहाड़ ही टूटा है और न गढ़ ही घेरा गया है, जोड़ों ने घर की लज्जा लूटी है, मुझे अपमानित किया है। गोगा यह सुन कर आगबबूला हो गया। काटो तो खून नहीं। उसकी नसें फड़फड़ाने लगीं। बिना किसी विलम्ब के वह सेज छोड़कर शस्त्र सज्जित होने लगा। अपने नीले घोड़े को पुचकार कर कहने लगा कि यदि मेरे माथे पर तुमने जीत का सेहरा बंधवाया तो तुम्हारा ठान मेरे महल के सामने अलग बनवा दूंगा। अगर विरुद्ध परिणाम रहा तो तुम्हें अपनी अश्वशाला में भी स्थान नहीं दूंगा। घोड़े ने हिनहिना कर गर्दन ऊंची की। उसके अयाल हवा में लहरा उठे। शरीर में कंपन भर गया। गोगा ने जोड़ों को ललकारा, अकेली अबला को लूट कर मर्द बन मकान में छिपे बैठे हो, बाहर निकलो। देखो, तुम्हारा काल आया है। अरजन सरजन मानो तैयार ही बैठे थे। धनुष बाण धारण करके वे भी मैदान में उतर पड़े। दोनों ओर से अस्त्र शस्त्रों का प्रहार होने लगा। गोगाजी का नीला घोड़ा अरजन के बाण से मारा गया। गुरु गोरखनाथ का स्मरण करते ही घोड़ा उठ बैठा। अब तो गोगा ने दुगुने उत्साह से शत्रुओं पर शस्त्र प्रहार किया। अरजन सरजन के मुण्डविहीन रुण्ड मैदान में पड़े छटपटाने लगे। चील, कौआ और गिद्धों

गुलालसिंह बागडवीर

उत्तरप्रदेश के अलीगढ जिला तगत एक समय चाहानवशा राजपूत राज्य करते थे। गुलालसिंह चौहान भी इस राज्य का भागीदार था कि तु उसके पिता लालसिंह चौहान के मरते ही उसक काका और भाइया न उसका हक दवा लिया और मरने मारने पर उतारू हो गय। गुलालसिंह की रग रग म चौहानी रक्त उबाल ल रहा था। वह अपने पिता की सम्पत्ति के एक एक टुकडे के लिए रक्त की नदिया बहा सकता था कि तु उसकी माँ ने उस उत्पात करने से रोक दिया और कहा कि राजपूत का राज्य तो तलवार की नाक पर होता है, घाडे की पीठ पर होता है। तुम म साहस ह तो चलो अ यत्र कही चल कर अपनी ही भुजाओ के बल से अपने भाग्य को आजमाओ। यहा ॅयथ ही अपन काका और भाइयो स जूझना असगत होगा। लोग क्या कहेंगे। अपनी मा की इस विशाल सहृदयता का देखकर गुलालसिंह आनाकारी पुत्र की तरह चुप हा गया कि तु अब वह एक क्षण के लिए भी ऐस भाइया क साथ नही रहना चाहता था। इसलिए अपने छोटे भाइ बहिन तथा माता को साथ लेकर वह आजीविका की खोज म राजस्थान की ओर चल पडा।

उस समय मवाड के महाराणा जयसिंह प्रथम अपनी वीरता ग्रार गुण ग्राहकता के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध थ। उनकी ख्याति सारे देश म फली हुई थी। अपनी माता के परामश स उसन मेवाड म महाराणा जयसिंह का आश्रय प्राप्त करने का निश्चय किया। मेवाड से सटा हुआ डूगरपुर का राज्य था। गुलालसिंह की एक बहिन डूगरपुर के महारावल के साथ ब्याही गई थी अत उसने मेवाड जाना ही उचित समभा। अपनी वहिन के आश्रय म जाना रीति के विरुद्ध था। जब तक उसकी भुजाओ म बल और रक्त म कम्पन है तब तक अपनी वहिन का अन्न वह कसे खा सकता है। यही उसने सोचा था।

मवाड पहुँच कर उसने महाराणा से निवदन किया। महाराणा न उसक बुद्धिबल की कई प्रकार स परीक्षा ली। महाराणा के अस्तबल म अभी अभी एक नया घोडा खरीदा गया था। वह अपनी पीठ पर हाथ तक न रखने देता था। यदि किसी भी प्रकार काई उस पर सवारी का प्रयत्न भी करता तो दूसरे ही क्षण घाडा जमीन पर फेंक दता था। कई लोग उसे साधन म अपन प्राण द चुके थ। घोडा छोडा गया और गुलालसिंह का कहा गया कि यदि तुम इस घाडे का साधन म सफल हुए ता तुम्हे पच्चीस हजारी का पट्टा दिया जायेगा। मदान के चारा ओर दशक खचाखच भर हुए थ।

घोडा हिनहिनाता हुआ, मदान म आया। उसक नाज और नखर का देखकर गुलालसिंह का उत्साह चौगुणा हा गया। वह लपका और दूसरे ही क्षण

उछल कर घोड़े की पीठ पर बैठ गया। वल्गा खींच कर पांव का बंधन घोड़े के शरीर के साथ इतनी मजबूती से कस दिया कि घोड़ा और गुलालसिंह दोनों एक ही शरीर के अंग प्रतीत हुए। हिनहिना कर घोड़ा उछल कूद करता रहा। गुलालसिंह ने वल्गा ढीली की। जब तक घोड़ा पसीने से तर होकर थकान में चूर होकर झाग झाग न हो गया तब तक बहादुर गुलाल ने उसे रोकने का प्रयत्न नहीं किया। घोड़ा स्वयं ही ढीला पड़ गया। गुलालसिंह महाराणा के सामने गया और अभिवादन कर घोड़े से उतर गया। वाह वाह से गगन मंडल गूंज उठा। महाराणा ने शाबाशी दी और प्रसन्न होकर छप्पन और मेवल की जागीरें उसे प्रदान की। अपनी जागीर को सम्भालने के लिए खराड ग्राम में उसने अपना भवन बनवाया।

इसी समय जयसमंद झील का निर्माण कार्य चल रहा था। यह झील खराड के समीप ही है। गुलालसिंह नित्य ही घूमते घूमते झील के निर्माण कार्यों को देखने चला जाता था। उसने अनुमान किया कि जिन लोगों पर महाराणा ने विश्वास किया है वे लोग अपना घर बनाने में लगे हुए हैं। झील के लिए जितना धन कोश से दिया गया है उसका सदुपयोग नहीं हो रहा है। इसलिए उसने एक दिन महाराणा से निवेदन किया कि झील पर काम कराने वाले परमार दुरुपयोग कर रहे हैं और अपना घर भर रहे हैं। उन्होंने राज्य के कोश का बहुत-सा धन हड़प लिया है। महाराणा को इस प्रकार के समाचार अन्य लोगों से भी प्राप्त हुए थे। इसलिए परमारों को नौकरी से अलग कर दिया और उनके स्थान पर गुलालसिंह को निर्माण का मुख्य अधिकारी मनोनीत किया। गुलालसिंह ने बरवाड़ा खान के मजबूत पत्थर लुहाइया की खान का लोहा और मालव के कारीगर झील को सुदृढ़ बनाने के लिए लगा दिए। उसने मजदूरों पर एक रुपया प्रति मजदूर के हिसाब से अपना निजी टैक्स भी लगा दिया। मजदूरों में हल्ला हो गया। वे विरोधस्वरूप फरियाद लेकर महाराणा के पास पहुंचे। कई सरदार लोग गुलालसिंह पर पहले से भी जलते थे। मजदूरों के असंतोष का लाभ उठा कर उन्होंने भी महाराणा के कान भर दिये। फलस्वरूप महाराणा ने बिना कुछ सोचे-समझे ही गुलालसिंह को देश निकाला दे दिया।

ऐसे संकट के समय में गुलालसिंह अपने बहनोई डूंगरपुर के महारावल रामसिंह की सेवा में आ गया। महारावल ने गुलालसिंह को दसहजारी जागीर प्रदान की। वह महारावल की सेवा में भी उच्च पद पर नियुक्त किया गया।

एक बार महारावल ने बड़ा दरबार लगाया जिसमें छोटे बड़े सभी जागीरदारों को आमन्त्रित किया गया। नजरें हुई। महारावल ने अपने हाथ से बहादुरों को अमल देकर सम्मान किया। दरबार में हर्षोल्लास हो रहा था। इसी बीच दरबार में एक हल्कारा हांफता हुआ आया और हाथ जोड़कर निवेदन करने लगा कि कठाना के परमार पीठ ग्राम को लूट कर ले गये। उन्होंने जागीरदारों की अनुपस्थिति का फायदा उठाया। इस समाचार को सुनकर महारावल रामसिंह आग

बबूला हो गये। परमारा का उचित दण्ड देने के लिए उन्होंने आक्रमण की योजना बनाई। भरी सभा म बीडा डाला गया। परमारो को दण्ड देने के लिए जो कोई बीडा उठायेगा और अपनी जान की रक्षा करेगा उसे जागीरी और सिरोपाव महारावल अपने हाथ से प्रकट करेंगे। सभा म सन्नाटा छा गया। गुलालसिंह के लिए मानो यह सुअवसर था। उसने उत्साह के साथ बीडा उठाया। सेनाए सजाई जाने लगी और युद्ध की तैयारिया होने लगी।

दवयोग म इसी समय गुलालसिंह का टीका आया। सोना चांदी के साथ चान्दखाडा के ठाकुर ने गुलालसिंह के लिए नारियल भेजा। अपनी माँ तथा बहिन के आग्रह के कारण उसने नारियल स्वीकार कर लिया। नौ दिन की रुखसत माग कर वह खैराड गया और धूमधाम से विवाह उत्सव सम्पन्न किया। अपनी दुलहन के लाडचाव म उसे महारावल का दिये गये वचन का ध्यान नही रहा। १३ दिन निकल गये तभी महारावल का एक सेवक सन्देश लेकर आया कि कडाना के परमारा पर चढाई करने के लिए सेना कूच करने का है। महारावल ने आपको याद किया है। गुलालसिंह बहादुर सिपाही की भाति अपनी नवोढा से आज्ञा माग कर युद्ध के लिए चल पडा। अभी उसके हाथो की मेहन्दी भी नही सूखी थी आख का काजल भी न उतरा था फिर भी उस वीरागना ने अपने पति के तिलक कर उसे रणक्षेत्र म जाने की सहर्ष अनुज्ञा प्रदान की। गुलालसिंह अपनी सेना लेकर महारावल की सेना म आ गया। महारावल ने अपना क्रोध भूलकर प्रसन्नता के साथ उसका स्वागत किया। रात्रि का समय था सेनाए चल रही थी। आकाश म पूर्णिमा का चाद झाक रहा था। अपनी नववधू के प्रेम से छका हुआ गुलालसिंह चाद देख रहा था। चन्द्रमुखी उसकी स्मृति म आ गई। अपनी सेना को कडाना की तरफ जाने का उसने आदेश दिया और स्वय एक त्वरितगति से अश्व पर सवार होकर अपनी प्रियतमा से मिलने चल पडा। रास्ता पार कर जब गुलालसिंह घर पहुचा था उस समय चाद ढलने को था। घर के पट बन्द थे। उसकी माँ खट पट की आवाज स जाग उठी और जब उसने अपने पुत्र को युद्ध क्षेत्र छोड कर आया देखा तो सिंहनी की तरह गरज पडी। क्या इसीलिए मैंने अपने स्तनो का दूध तुम्हे पिलाया था। क्या इसी दिन को देखने के लिए तुझे जन्मा था। ऐसे कायर बेटे की माँ बनने की जगह तो मैं बाझ ही रह जाती तो अच्छा था। उसकी पत्नी भी अपनी सास के आक्रोश भरे शब्दो को सुन कर जाग गई थी। जब उसने अपने पति को उस स्थिति म पाया तो उसने भी उसको उपेक्षापूर्ण दृष्टि से देखा और रोष के साथ अपने कक्ष की ओर चली गई। पट पुन बन्द कर लिए गये। इस पर निराशा और ग्लानि म पीडित गुलालसिंह उन्ही पैरो वापिस लौट गया और अपनी सेना म जा मिला।

इधर महारावल को उसकी अनुपस्थिति का भान हो चुका था। इसलिए गुलालसिंह के उत्तरदायित्वहीन व्यवहार स वे क्रुद्ध थे अत उन्होने गुलालसिंह की तरफ आख उठाकर भी नही देखा और गुलालसिंह को उसके दल सहित छोड-

क्र आगे बढ गय। फिर भी गुलालसिह निराश नही हुआ आर शत्रुआ की सेना पर चढ गया। उसके वीरत्व का देखन के लिए सूय भी अपनी चाल भूल गया। हवाए माना नि स्तब्ध हा गइ। घमासान युद्ध हो रहा था। जिधर गुलालसिह वढता उधर रुण्ड ही रुण्ड नजर आते। लाशो को पार करता हुआ वह आग बढ़ता ही गया। शत्रुआ म खलबली मच गई। लोग इधर स उधर पीठ दिखाकर भागने लगे। गुलालसिह सिर क कफन बाधे अकेला ही शत्रुआ की सेना मे गहरा घुस गया। अपने प्राणा का मूल्य देकर उसने विजयश्री महारावल के चरणा म अर्पित की। बहादुर गुलालसिंह की मत्यु पर देवताआ न पुष्प बरसाये। महारावल की आखा स अश्रुधारा बह निक्ली। माता की छाती गव स उन्नत थी तथा शोक से विह्वल थी। गुलालसिह का चरित्र वागड प्रदेश म आज भी गलालेंग के नाम से गाया और सुना जाता है।

बगड़ावत

यह उस समय की बात है जब अजमेर एक बहुत बड़ा राज्य था। वहां चौहानवंश के बीसलदेव राज्य करते थे। राजा के राज्य में सभी प्रकार का अमन-चैन था। एक बार एक बाघ कहीं से अजमेर की पहाड़ियों में आ निकला। वह बड़ा खूंखार और नरभक्षी था। अपनी क्षुधा शांत करने के लिए वह नित्य कई पशुओं तथा मनुष्यों को मार कर खा जाता था। सारा जन समुदाय बाघ से आतंकित हो उठा था। लोग बचने के लिए अनेक यत्न करते थे किन्तु बाघ उनके प्रयत्नों को विफल बनाता हुआ दो चार को उठा ही ले जाता था। राजा बीसलदेव के दरबार में फरियाद की गई। राजा ने अनेक शिकारियों को आदेश दिया कि बाघ को जैसे भी हो मार कर जनता को भय से मुक्त किया जाय। राज्य के योद्धाओं शिकारियों और साहसी लोगों ने इस दिशा में अनेक प्रयत्न किये। बाघ के आगे किसी की न चली। हार कर लोगों ने बाघ को भोजन देने के लिये नियमितकार्यक्रम को अपना लिया। उन्होंने व्यवस्था की कि प्रतिदिन एक आदमी और सात बकरे बाघ को भेंट किये जाते रहेंगे जिससे नगर में अधिक उत्पात न फैले। यह क्रम कई दिनों तक चलता रहा। एक दिन नगर के एक माली के घर की बारी थी। उस घर से माली आज बाघ का आहार बनने के लिए जाने वाला था। अपने छः सात बच्चों और स्त्री के भरण पोषण की सारी जिम्मेदारी इसी की थी। दूसरा उनके घर में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था जो उसके पीछे से घर को सम्भाल लेता। मालिन इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना को देखकर दिन भर रोती रही। संध्या के समय जब वह अपने पति को अंतिम बार विवश होकर विदा कर रही थी तभी एक व्यक्ति ने उसी समय विश्राम के लिए उसका दरवाजा खटखटाया। दुखी परिवार ने आगंतुक को राज्य की ओर से ले जाने वाला आया समझा। बेचारे और अधिक रोने लगे। आगंतुक ने धैर्य बंधाते हुए रोने का कारण पूछा। मालिन ने कहा क्या करोगे कारण सुनकर हमारा रोना न किसी को सुनाने के लिए है न किसी से सहायता लेने के लिए। आगन्तुक के आग्रह करने पर मालिन ने रो रो कर बाघ को दी जाने वाली नर बलि का इतिहास बताया। सारी बात सुन कर आगंतुक ने कहा मालिन तू मेरे धर्म की बहिन है। मुझे भोजन करा दे और आज मैं तेरे पति की जगह बाघ के आहार के लिए तयार हूं। मालिन किसी अनजाने व्यक्ति को मौत के मुंह में कैसे ढकेल देती? वह इंकार करती रही। पर आगंतुक ने कहा बाघ यदि जंगल का राजा है तो मैं भी हरीसिंह चौहान हूं। तुम्हारी शुभ कामना और भाग्य का साथ रहा तो इस बाघ को मार कर मैं यहां की समस्त जनता को दुःख से मुक्त कर दूंगा। उसके आत्मविश्वास

और शारीरिक गठन तथा शस्त्रों को देखकर मालिन और माली को थोडा सा भरोसा भी हुआ। उन्होंने हरीसिंह का भोजन कराया और बाघ के सम्मुख जाने के लिए विदाई दी।

रात बढती जा रही थी। आसपास बंधे हुए बकरे भय मे मिमिया रहे थे। हरीसिंह हाथ मे नंगी तलवार और ढाल लेकर सावधान खडा था। उसकी दृष्टि चारों ओर लगी थी। थोडी सी भी आवाज कहीं होती, त्यों ही हरीसिंह के कान चौकन्ने हो जाते थे। रात्रि का तीसरा पहर आया। बाघ गुर्राता हुआ अपने आहार की ओर बढ रहा था। समीप आकर उसने हरीसिंह पर आक्रमण किया। हरीसिंह ने बाघ के आक्रमण को अपनी ढाल से झेला और दूसरे हाथ से उसका सिर धड से अलग कर दिया। उसका सर उठाकर अपनी रक्तरंजित तलवार को धोने के लिए वह बावडी की ओर चल पडा।

नगर के पण्डित की पुत्री लीला विधवा थी। वह पराया आदमी का मुंह तक भी न देखती थी अपने व्रत का निभाने के लिए वह अंधेरे ही बावडी मे स्नान कर घर लौट आती थी। जब वह बावडी पर पहुची तो बाघ का कटा हुआ सिर उसने द्वार पर देखा। सामने से एक व्यक्ति हाथ मे तलवार लिए बावडी मे से निकल रहा था। लीला की दृष्टि हरीसिंह पर पडी और उसे आशायोगि गम ठहर गया। हरीसिंह की वीरता से प्रभावित होकर वह उस पर रीझ गई। यद्यपि वह साध्वी थी और इस प्रकार उसे दिख जाने पर वह पर पुरुष को शाप भी दे सकती थी किन्तु उसने ऐसा नहीं किया। लीला ने हरीसिंह को उसके प्रति अपना मोह बताया और कहा तुमने इस नरभक्षी बाघ को मारकर बडा पवित्र कार्य किया है। राजा तुम्हें निश्चय ही अच्छा पुरस्कार देगा। तुम पुरस्कार मे मुझे माग लेना। यह कह कर लीला अपने घर चली गई।

प्रात काल होते ही नगर मे हर्ष की लहर फैल गई। नरभक्षी बाघ की मृत्यु का समाचार जन जन तक पहुच गया। राजा ने कोतवाल को बुला कर पूछा कि कल किसकी बारी थी। कोतवाल ने मालिन के पति की बारी के सम्बन्ध मे कहा। मालिन बुलाई गई। राजा उसे खूब इनाम देना चाहता था किन्तु मालिन ने वस्तुस्थिति स्पष्ट करते हुए सारा श्रेय हरीसिंह को दिया। हरीसिंह को बुलाया गया। सिरोपाव और दुपट्टा से उसका स्वागत एव सम्मान किया गया। जब राजा ने हरीसिंह को और कुछ मागने के लिए कहा तो उसने कोकाशाह पण्डित की पुत्री लीला को माग लिया। वचनबद्ध राजा ने पण्डित को समझाकर लीला हरीसिंह को सौंप दी। हरीसिंह राजा के यहा नौकरी करने लगा। लीला के साथ उसके दिन आराम से व्यतीत होने लगे। नौ माह पूर्ण होने पर लीला के पुत्र उत्पन्न हुआ। बालक बडा विचित्र था। उसके सिंह जैसा सिर और मनुष्य सा धड था। लीला और हरीसिंह ने जब इस विचित्र बालक को देखा तो उन्होंने इसे अशुभ समझ कर त्यागने का निश्चय किया। बालक को एक वस्त्र मे लपेट कर हरीसिंह उसे जगल मे रख आया। प्रात काल राजा घोडे पर बैठ कर घूमने के लिए निकला। रास्ते के समीप ही उसने

देखा कि एक बालक सिंहनी के स्तनो का पान कर रहा है। राजा जब और समीप पहुचा तो सिंहनी वहा से भाग गई। राजा इस विचित्र बालक को उठा कर अपने साथ ले गया। राजा ने नगर मे ढिंढोरी पिटवा दी कि इस बालक का इसके मा बाप आकर ले जाय उनका कसूर माफ कर दिया जायगा। पर कोई सामने नही आया। हरीसिंह विश्वासपात्र सेवक था। इसलिए राजा ने वह सिंह मुखी बालक पालन पोषण के लिए हरीसिंह को सौपने की इच्छा प्रकट की। हरीसिंह ने निवेदन किया कि महाराज यह सिंहमुखी बालक है बड़ा होने पर यह खून करेगा। तब आप इसे राज दण्ड देंगे वह मेरे लिए अत्यन्त असह्य रहेगा। इसलिए बालक के पालन पोषण का भार किसी अन्य को ही देने की कृपा करें। वीसलदेव ने हरीसिंह को वचन दिया कि इस बालक के प्रतिदिन तीन अपराध क्षमा कर दूंगा। इसलिए बालक को तुम ले जाओ और प्यार से पालन पोषण करो।

हरीसिंह ने विधाता की यही इच्छा जानकर बालक को सम्भाल लिया क्योकि बालक का मुंह सिंह के समान था इसलिए उसका नाम बाघला रखा। बाघला दिन दूना और रात चौगुना बढ़ने लगा। उसके डीलडौल और शक्ल सूरत से ही लोग भयभीत रहते थे। अब वह गाय चराने के लिए जाने लगा। कभी-कभी अन्य गाय चराने वाले ग्वालो को पीट भी देता था। कभी मार्ग में मिलने वाले बालको को धमका देता था। एक दिन सावन के महीने मे बाघला गाय चराकर आ रहा था मार्ग मे बहुत सी लडकिया एक पेड के नीचे एकत्रित होकर पेड पर टंगे झूले को उतारने का निष्फल प्रयत्न कर रही थी। बाघला को उधर से निकलते देखकर एक बार तो भयभीत हुई लेकिन फिर साहस बटोर कर बाघला से झूला उतारने का निवेदन किया। बाघला ने एक शर्त पर झूला उतारना स्वीकार किया कि वे लडकिया एक एक फेरा उससे लें और फिर झूले। लडकियो ने इस खेल को स्वीकार किया। बाघला ने झूला उतारा और शर्त के अनुसार लडकियो के एक एक फेरा लिया। खेल ही खेल मे उनका विवाह हो गया। एक लगडे ब्राह्मण ने वेद मन्त्रो मे विवाह को धार्मिक संस्कार प्रदान कर दिया। इस विवाह का रहस्य अन्य किसी पर भी प्रकट नही था। लडकिया अपने अपने घर आ गई। लडकिया चूंकि सयानी हो चुकी थी इसलिए उनके माता पिता उनका विवाह करके मुक्ति की सास लेना चाहते थे। किन्तु लग्न दिखलाने पर भी मुहूर्त नही निकला। माता पिता चिंतित हो उठे। उन्होने अपनी चिंता राजा से प्रकट की। राजा ने उन लडकियो को रहस्य जान लेने के लिए उन्हे एक कमरे मे बन्द कर दिया। बातो ही बातो मे बाघला के साथ फेरे खाने की घटना का भी उन्होने रहस्योद्घाटन कर दिया। राजा ने यह सब सुनकर बाघला को बुलाया। उसे आश्वस्त किया कि तुम्हारे सब अपराध क्षमा है इसलिए जो कुछ हुआ उसे स्वीकार करो तथा इन लडकियो को जिनके साथ तुमने फेरे खाये है, अपने साथ ले जाओ। बाघला ने पच्चीस के गामो में से 24 के साथ विवाह कर लिया और 25

वी कन्या का उस लगडे ब्राह्मण को दक्षिणा क रूप म दे न्हे जिसने फेरा के समय वेद म त्रा का उच्चारण किया था ।

चौबीसा स्त्रियो मे बाघला के 24 पुत्र हुए । तजा भाजा नेवो, बाहा ग्राला पल्लो कान्तड गूदड हालू, टीको हमीर, हिम्मत तिलक हालो, दालो, रूपो जाधू जयरूप सुजान, सागड धना, गजू खतोह ग्रौर नरसिंह । ये 24 पुत्र जब बडे हुए तो बाघला क पुत्र होन के कारण बगडावत कहलाये । राजा बीसल दव ने बगडावतो को बहुत सारा धन गैलत गायें भसें ग्रादि के साथ साथ कई गाव भी दिय । इन गावा क ये बगन्नावत ग्रधिपति थे । पशु चारण इनका प्रमुख व्यवसाय था । सवाई भाज तथा नेवा इन 24 बगडावतो मे विशेष प्रतिभा सम्पन्न तथा बुद्धिबल म ग्रद्वितीय थे । बगडावता का कही विवाह सम्ब ध निश्चित नही हो पा रहा था क्योकि इनकी माताए भिन्न भिन्न जातियो की थी । बडे प्रयत्न स गूजरो पर दवाव डालकर गूजर क याग्रो के साथ इनका विवाह कर दिया गया । ग्रब तो ये लाग घर गहस्थी वाले हो गये ग्रौर बडे चन से जीवन बसर करन लगे । भोज प्रतिदिन गायें चराने जाया करत थ । नित्य प्रात काल होत ही एक सुनहरे सागा वाली गाय उनकी चरने वाली गायो क भुण्ड म ग्राकर मिल जाया करता थी ग्रौर सध्या हात हा वह ग्रनजानी दिशाग्रा म चली जाया करती थी । भोज प्रतिदिन इस गाय का देखता ग्रौर साचता कि इस गाय का मालिक कौन है । न ता वह स्वय ग्राकर गाय सम्भालता है ग्रौर न स्वय ले ही जाता है । ग्रपनी जिज्ञासा शान्त करन के लिए एक दिन वह गाय की पू छ पकडकर साथ हा लिया । ग्रनक जगला का पार करती हुई गाय एक यागी के ग्राश्रम म पहुची । नागपहाड की गुफा म यागी का यह ग्राश्रम ग्रत्यन्त रमणीक ग्रौर श्रद्धा उत्पन्न करने वाला था । गाय उसी ग्राश्रम म ग्रपनी ठान पर जाकर खडी हा गइ । भाज न गाय के स्वामी तपस्वी को दखा । यागी की तपस्या स वह ग्रत्यन्त प्रभावित हुग्रा । वह वापिस लौट गया । दूसर दिन वह योगी के लिये भोजन का थान सजा कर लाया । उसकी माँ ने बडे भक्ति भाव से षटरस यजन तयार किय थ । यागी क सामन भाजन का थाल रख कर भाज ने यागी स निवदन किया कि महात्मन ! मरा यह ग्रकिचन भोग स्वीकार कीजिय । यागी न ग्राखें खाला ग्रार कहा तुम नुगर हा तुम्हार हाथ का भाजन मैं नही खा सकता । भाज निराश नहा हुग्रा । उसन करबद्ध निवदन किया—

नुगरा का सुगरा करा धरा सीस पर हाथ

यागी न भाज का ग्राश्वस्त करत हुए कहा यदि तुम सुगरा बनना चाहत हा ता यहा पर सौ मन का कडाहा है जिसम तल भरा ह । हम शकर के घाट पर चलकर उस तल म स्नान करग उसक पश्चात् दूसरा स्नान उबलत हुए तल म करना हागा । यदि यह शत तुम्हे स्वीकार हा ता मर साथ शकर क घाट पर चना । भाज न यागी की शत स्वीकार कर ली । ग्राग ग्राग यागी ग्रौर पीछे पीछे भाज, शकर के घाट तक ग्राय ।

यागी न भाज स कहा म स्नान करके शीघ्र ही लौट कर ग्रा रहा हू । तुम

यही ठहरो। किसी वस्तु को छेड़ना नहीं। योगी के चले जाने पर भोज ने देखा कि वहां ओवरा की चाबियां पड़ी हुई हैं। उसने चाबियां लेकर ओवर खोले। पहले ओवरे में जयमंगला हाथी बंधा हुआ था दूसरे में बूमली घोड़ी और तीसरे में बिजलो खड्ग तथा चौथे में नरमुण्ड हंस रहे थे तथा धड़ अलग अलग लड़ रहे थे। भोज ने साश्चर्य मुण्डों से पूछा तुम मुझे देखकर क्या हंसे? मुंड कहने लगे, अभी थोड़ी देर में तुम भी हमारी गति पा जाओगे और हम में आकर मिल जाओगे। भोज भयभीत हुआ किन्तु तुरन्त सम्भल गया। उसने देखा कि योगी आ गये। योगी ने आते ही भोज को डांटा कि ओवरे क्यों खोले हैं? क्या माया यों ही प्राप्त हो जाती है? अगर तुम माया प्राप्त करना चाहते हो तो उबलते हुए कड़ाह की तीन परिक्रमा करो। सब माया तुम्हें हस्तगत हो जायेगी। योगी का आदेश था, भोज ने दो चक्कर लगाये और कहा बाबा, अब आप आगे हो जाइये तीसरा चक्कर मैं आपके पीछे रह कर लगा लूंगा। ज्योंही योगी आगे हुआ भोज ने उसे उठाकर तेल के कड़ाहे में डाल दिया। योगी का शरीर स्वर्णमय हो गया। भोज की आंखें चौंधिया गई। जब उसने दुबारा आंखें खोली तो देखा साक्षात शिव थे। अब तो भोज अपने कृत्य पर पछताने लगा। उसने क्षमा मांगी। शिव ने प्रसन्न होकर भोज को—

"बारह बरस की माया दीनी
बारह बरस की काया'

साथ ही भोज को बूमली घोड़ी, बिजलो खड्ग तथा जयमंगला हाथी भी योगी ने दिया। भोज इन वस्तुओं को लेकर प्रसन्नचित्त अपने घर लौट आया। बगडावतों के पास अपार धन सम्पदा एकत्रित हो गई। अपने स्वर्ण में से जितना वे खर्च करते उतना ही उसमें बढ़ जाता। इतना धन दौलत प्राप्त करके सब भाई आपस में विचार करने लगे कि इस धन का हम क्या करें?

यह तो ज्यों ज्यों खर्च करते है, त्यों त्यों बढ़ता जाता है। एक ने उत्तर दिया आने वाली पीढ़ियों के लिए इसे गाड़ देना चाहिए। दूसरे ने कहा मन्दिर बनवाकर पुरखों का नाम चलाना चाहिए किन्तु सवाई भोज से छोटे नेवाजी ने कहा संसार में जितनी वस्तुएं दिखती हैं वे सब नष्ट हो जायेंगी। जब तक मनुष्य का शरीर है तभी तक इन वस्तुओं का अस्तित्व है। इसलिए खाने पीने और मौज उड़ाने में धन का खर्च करना चाहिये। यह बात सभी भाइयों को मान्य रही। इस पर उन्होंने सुन्दर सुन्दर बढ़वार अरबी घोड़े खरीदे। कीमती वस्त्र और सोने के आभूषण खरीदे गये। वे समय समय पर घोड़ों पर सजधज कर सवार होते थे और अपने सुन्दर रंग रूप का प्रदर्शन करते हुए घूमते थे—

बन्ने चौबीसो लागता बिना सेवर बीन्द

बिना मुकुट के ही वे दूल्हे के समान दिखाई देते थे। अलमस्त जीवन बिताते हुए वे जहां भी जाते मोहरों की वर्षा करते थे। शराब में चूर रहते थे। दिनरात खाना पीना खेलना,कूदना और रागरंग में मस्त रहना ही उनकी दिनचर्या थी। उनको

इस प्रकार धन का अपव्यय करते देखकर तेजा जो सेठानी से उत्पन्न हुआ था मन ही मन कुढ़ता था। उसकी इच्छा थी कि धन को जमीन में गाड़ देना चाहिए किन्तु भोज ने कहा—

तेजा तू बनिया का भाया
करे बिणज की बात
खाज्यो पीज्यो खरचज्यो करो जीव रा लाड
जीव सरीखा पावना मिल न दूजी बार

इस प्रकार सभी भाई देश देशान्तर का भ्रमण करने के लिए निकल पड़े। घोड़ों की पीठ ही उनके घर थे। शस्त्र उनके मित्र थे। चलते चलते वे राणा की राण में पहुंचे। नगर की हद में पहुंचने पर उन्होंने इधर उधर डेरा डालने के लिए स्थान खोजना प्रारम्भ किया। उनको अपने उपयुक्त कोई स्थान नजर नहीं आया। तब नेवाजी ने कहा कि यह राणाजी का नौलखा बाग है। हम यहीं पर अपना डेरा डालना चाहिए और किसी प्रकार राणा से मित्रता स्थापित करना चाहिए। इसलिए इस उपवन को तहसनहस कर डालना चाहिए क्योंकि शत्रुता या मित्रता दोनों ही कुछ न कुछ प्राप्त कराती है। मित्रता के लिए प्रयत्न करने में काफी समय लगता है। अपने जैसे वीर बहादुर लोग भी राणा के राज्य में आकर सम्मान न पावें तो यहां आने से लाभ ही क्या? इसलिए विरोध मोल लेकर भी राणा से सम्मान प्राप्त करना हमारा कर्त्तव्य है। नेवाजी की यह बात उनके समझ में आ गई। उन्होंने माली को 100 मोहरें दीं और कहा कि हम दरवाजा खोलकर बाग में आने दो। माली बड़ा मक्कार था। उसने मोहरें ले लीं लेकिन दरवाजा नहीं खोला। जब नेवाजी ने उत्तेजित होकर उसे दरवाजा खोलने के लिए कहा तो वह प्रतिवाद बढ़ाने के लिए उतारू हो गया। बगड़ावत किसी की आंख दिखाना कैसे सहन कर सकते थे। उन्होंने दरवाजे तोड़ दिये और बाग में प्रवेश किया। हरे भरे फूल फल बाग को विध्वस्त कर दिया। माली मालिन फरियाद लेकर राणा के पास पहुंचे। राणा ने ऐसे उच्छृंखल लोगों के विषय में सुना तो अपने क्रोध को न रोक सके और तत्काल अपने भाई नीमाजी को उन बदमाशों को दण्ड देने के लिए भेजा। नीमाजी ने बहुत सारे शस्त्र सज्जित सैनिक अपने साथ लिए और बाग की ओर बढ़े। मार्ग में एक सूअर जाता हुआ उन्हें दिखाई दिया शिकार का लोभ वे संवरण नहीं कर पाये। उन्होंने उस पर तीर चलाया पर निशाना चूक गया। सामने से नेवाजी ने यह सब देखा। इस पर उन्होंने सूअर का पीछा किया और देखते देखते उसे अपने भाले से मार गिराया।

नीमाजी मन ही मन शिकस्त खा गये। वे सोचने लगे जब मुझ से एक सूअर ही नहीं मरा तो इन वीरों से लड़ाई लड़कर क्या पा लूंगा। ऐसे बहादुरों से मित्रता करना ही ज्यादा सार्थक है। इसलिए नीमाजी ने नेवाजी को अपना पाग बदल भाई बना लिया। बाग ध्वस्त कर देने के सारे दोष अपराध स्वतः ही क्षमा कर दिये गये। नीमाजी ने समस्त बगड़ावतों को राणा के दरबार में आने का निमंत्रण

दिया। राणा न इन वीरो का यथेष्ट स्वागत सत्कार किया। उनके लिए मास मन्दिरा का विशेष ग्रायाज्न किया गया। राणा के इस सद्व्यवहार और भाईचारे से प्रभावित होकर नेवाजी न सवाई भोज से कहा कि हमने राणा से दोस्ती की है इसलिए दोस्ती निभाने के लिए यह ग्रावश्यक है कि हम भी राणा का ऐसा ही जोरदार सत्कार करें। सवाई भोज ने स्वीकृति देते हुए कहा ग्रन्य सभी प्रब ध तो हो सकेंगे लेकिन मदिरा का प्रब ध करना ग्रत्य त दुष्कर काय है। ग्रतएव तुम कही जाकर शराब की तलाश करो।

उस नगर मे पातू कलाली सबसे ग्रधिक समद्ध कलाली थी। उसके यहा 12 महीना पीने वालो का जमघट लगा रहता था। नेवाजी ग्रपनी घाडी पर चढ कर वही पहुचे। कलाली के ग्रागन का फश स्फटिक का था। नेवाजी ने सुचिक्कन फश देखकर ग्रपनी घोडी उस पर दौडा दी। काच का फश चूर चूर हो गया। कलाली के पारिवारिक सदस्य, जिनमे बहुत सी लडकिया ग्रौर ग्रौरतें भी थी हाथो म बास ले लेकर लडने के लिय ग्राये। ग्रौरता पर हाथ न उठाना पुरुषा की मर्यादा समझ कर नेवाजी चुपचाप वहा स खिसक ग्राय। उन्होने सारी कथा ग्रपन भाइयो स कही। सब भाई क्रोधित हो उठे। वे घोडो पर सवार हो कलाली के घर पहुचे। इस बार कलाली घबरा गई। उसन युक्ति स काम लिया। उसने कहा यदि शराब ही पीना है तो ग्रपनी बूमली घोडी गहने रख दा ग्रौर खूब छककर शराब पिग्रो। मेरे घर का ग्रागन ताडने म क्या फायदा है? यह सुनकर सवाई भोज ने हसते हुए ग्रपने गल का कीमती हार उतार कर कलाली को दे दिया। कलाली ने जोहरियो से हार का मोल करावाया। हार बहुत ही ग्रमूल्य था। वह समझ गई कि बगडा वत मामूली ग्रादमी नही। इसलिए उसने हार लौटा दिया ग्रौर कहा कि ग्रगर बगडावत सारी शराब पी जावें तब तो वह मूल्य नही लगी ग्र यथा समस्त शराब का पूरा माल ग्रौर साथ मे कुछ ग्रौर भी लेगी। बगडावतो ने शत स्वीकार की ग्रौर बात ही बात मे समस्त मदिरा पानी की तरह पी गये। कलाली हार गई। वह उनकी धम बहिन बन गई। राणा का सत्कार करने के लिये उन्होने पातू कलाली से शराब का प्रब ध करने का कहा।

राणा के स्वागत सत्कार का ग्रायोजन किया गया। पातू मदिरा ले ग्राई। राणा ग्रपन सरदारा के साथ बगडावता की महफिल म ग्राय। खूब छककर शराब पिलाई गई। लाखो की मदिरा प्यालो म उडेल दी गई। लाखो की धरती पर वहा दी गई। मदिरा धरती म रिसती गई ग्रौर 14 पडत फाड कर पाताल म पहुची। मदिरा के छीटे शेपनाग की मणि को लग। वह ग्राग बबूला हा धरती पर ग्राया। ग्रासपास चरत हुए पशुग्रो से उसने पूछा किसने इतनी मदिरा धरती पर उडेली है। पशुग्रा ने उत्तर दिया बगडावता ने महफिल लगाई ह। उनकी बहाई मदिरा ही पाताल म पहुची है। यह सुनकर शेपजी को बडा ग्राश्चय हुग्रा। वे विष्णुलोक म पहुचे। उन्होने बगडावतो के उपद्रव की कहानी भगवान् को सुनाई। उन्होने कहा कि सभी देवी देवता बगडावतो से हुए शपजी के ग्रपमान का बदला लें। देवी-

देवताओं ने कहा बगडावत हमारे भक्त हैं। इसलिये हम उनसे बदला नहीं ले सकते। विष्णु ने शिव से कहा कि वे जाकर बगडावतों की परीक्षा लें। बगडावत तो पहले से ही शिव से वरदान प्राप्त कर चुके थे। फिर भी शिव ने कोढ़ी का रूप बनाया—

कह तो सिराप मेरो झेल ले के बाने दे जाय।
ग्रतीक बात सुणता भई ली या कोडया को रूप॥

नवाजी त्रिकालदर्शी थे। काशी के वेश में शिव को आते देखकर वे उन्हें पहचान गये और अपने भाई भोज से कहा भगवान् जा रहे हैं— उनका वेश कोढी का है और उनके आगे पीछे मक्खियों का झुण्ड भिनभिना रहा है इसलिये तुरन्त भगवान् की सेवा का आयोजन करो।

भगवान् का नाम सुनते ही सभी भाइयों ने स्नान कर हाथ में गंगाजल लिया और खड़े होकर प्रतीक्षा करने लगे। ज्योंही कोढीस्वरूप शिव वहां आये बगडावतों ने उन्हें गंगाजल से स्नान कराया और रक्तमिश्रित जल को चरणामृत के समान पी गये। उनकी इस सेवावृत्ति से शिव अत्यन्त प्रसन्न हुए। शिव को अपने घर ले चलने का आग्रह किया किन्तु शिव ने सवाई भोज का ध्यान एक क्षण के लिए अन्यत्र लगा दिया और स्वयं अन्तर्धान हो गये।

शिव ने देखा कि भोज और नवा को छलना आसान काम नहीं है। इसलिए उन्होंने भोज की स्त्री को छलने का निश्चय किया। भोज की स्त्री बड़ी साध्वी तथा धर्मात्मा थी। वह नित्य गो ब्राह्मणों को भोजन देती पांच मन अन्न का दान करती तदुपरान्त स्नान करने को जाया करती थी। जिस समय वह दान धन का कार्यक्रम सम्पन्न करके नग्न होकर स्नान करने बैठी ठीक उसी समय शिव ने योगी के वेश में भिक्षा मांगने के लिए आवाज लगाई। साध्वी ने अपनी दासियों को अन्न धन देकर योगी के पास भेजा किन्तु योगी ने सबका के हाथ का अन्न स्वीकार नहीं किया। उसने अंगारे की सी लाल आंखें कर कहा यदि तुम्हारी रानी स्वयं शीघ्र आकर मुझे सन्तुष्ट नहीं करेगी तो मैं अपने शाप से उसके वंश का विनाश कर दूंगा। दासियां डरी हुई रानी के पास पहुंचीं और योगी के शाप की बात रानी से कही। रानी सोच समझ कर नग्न अवस्था में ही भिक्षा लेकर दौड़ पड़ी। एक स्त्री को नंगी आते देखकर योगी ने मुंह मोड़ लिया। रानी ने कहा— बेटी को बाप से क्या लज्जा ? शिव उसकी सरलता और सच्चाई पर अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने उसे धर्म का स्मरण करने को कहा। रानी ने ज्योंही धर्म का स्मरण किया त्योंही उसके केश बढ़कर वस्त्रों की भांति हो गये जिनसे उसका नग्न शरीर पूर्ण रूप से आवृत हो गया। शिव ने रानी से वचन मांगने के लिए कहा। रानी ने अपना आंचल शिव के सामने फैला दिया और कहा कि भगवान् को मैं पुत्र रूप में दुलारना चाहती हूं। शिव ने कहा तुमने आंचल फैलाया है इसलिए मैं तुम्हारे गर्भ में जन्म न लूंगा वरन् तुम्हारे आंचल में ही आऊंगा और देवनारायण के नाम से बगडावतों की विघ्न बाधाएं दूर करूंगा तथा उनके शत्रुओं से वैर शोधन

करूंगा । यह कहकर शिव अन्तर्धान हो गये ।

जब शेषनाग ने यह देखा कि शिव और विष्णु भी बगडावतो को दण्ड देने में असमर्थ रहे हैं तो वे निराश होकर चामुंडा के पास गये । शेषजी ने चामुंडा को अपनी प्रार्थना से रिझाया और निवेदन किया कि बगडावतो का नाश केवल आप ही के द्वारा हो सकता है । शक्ति ने शेषजी की प्रार्थना स्वीकार की और ईडरकोट के घर में जन्म लिया । चामुण्डा की दासी राजा के खजान्ची की पुत्री के रूप में जन्मी । राजा के यह एक ही कन्या थी अत राजा की लाडली थी । लडकी का नाम जमती रखा रखा गया । खजान्ची की पुत्री का नाम हीरा था । हीरा और जमती दोनो साथ साथ बढने लगी । जब राजकुमारी जमती सयानी हुई तो उसके पदभार में महल गूंजने लगे । राजा को यह देखकर उसके विवाह की चिन्ता हुई ।

एक दिन राजा ने ब्राह्मण को बुलाकर सोना, नारियल और मोहरें देकर जमती का सम्बन्ध तय करने के लिये भेजा । जब जमती को ब्राह्मण को सौंपे गये कार्य का ज्ञान हुआ तो उसने ब्राह्मण को बुलाया और कहा मैं शादी उसी घर में करूंगी जहां 24 भाई हों, जिनके घर में बूमली घोडी तथा जयमंगला हाथी हो । यदि तुमने अन्यत्र कहीं मेरा सम्बन्ध तय किया तो मै तुम्हें शाप से नष्ट कर दूंगी । ब्राह्मण भयभीत हुआ । सोचता सोचता वह वहां से टीका लेकर चल दिया । बगडावत 24 भाइयो के प्रेम के लिए प्रसिद्ध थे । अत ब्राह्मण गोठा मे पहुंचा । उसने सवाई भोज को टीका दिया । भोज ने तथा अन्य भाइयो ने आपस में विचार विमर्श किया कि विवाह सम्बन्ध तो बराबर वालो मे होता है । हम गूजर हैं और यह राजा की लडकी । अच्छा हो हम यह टीका राण के राणाजी को दे दें । राणा उनका मित्र था । इसलिए उन्होंने यही निश्चय किया कि टीका सवाई भोज ले लें किन्तु विवाह राणा के साथ सम्पन्न हो । वे सब भाई टीका लेकर राणा के पास पहुंचे । राणा अत्यन्त वृद्ध था फिर भी उसने टीका स्वीकार किया । बगडावतो ने सब विघ्न बाधाओं को निपटाने का कार्य अपने शिर पर लिया । राणा ने बारात की तयारी की । राजा महाराजाओं देवी देवताओं को निमन्त्रित किया गया । राणा की बारात चली । बगडावत भी जयमंगला हाथी तथा बूमली घोडी को सजाकर बारात में शामिल हुए । बूमली घोडी का विशेष शृंगार किया गया ।

> सारी मेरा साकता करा घोडी बूवली ने सिणगार ।
> घोडी बूवली ने सिणगार कर तबू से बार कढाय ।।
> लाल लाख का घोडी के पागडी सवा लाख की माल ।
> हीरा घोडी के गल जगमग गल माने सीस लगाम ।।
> चौक विराजे घोडी के चौकरे पदम विराजे पांच ।
> नखसी कटारो सोवे भोज के हद वण्योजी के एक मूठ रो धार ।।
> पारत कर कर पग दियो मन वो बाघ क ।
> जणा सब भाग्या क पलो वणगो भोज बूबली असवार ।।

बगड़ावता न अपने साथ 140 ऊटा पर धन नाद लिया। उनकी सजावट रूप रग ऐश्वय के सामन राणा का रग फीका पड गया था। देवता लोग भी अपने अपने वाहन सजाकर बारात म शामिल हो गय थ। गणेशजी चूहो के साथ जब बारात म आये तो राणा ने उनकी सू ड तोद तथा कान को लेकर व्यग्य किया।

न्ात दतूमल भाई गो- का लाडला छाजला बरणा कान।

पाछो पधारज्या गौर का लाडला थासू भू डी लागसी जान॥

यह सुनकर गणेशजी नाराज हो गये। उन्होन अपने चूहा को हुक्म दिया कि धरती म बिल ही बिल कर दा ताकि समस्त धरती खोखली हो जाय। आज्ञाकारी चूहो ने बारात का चलना मुश्किल कर दिया।

राणा न गणेशजी को राजी करन का प्रयत्न किया। राणा ने कहा हे गणेशजी आपकी जो इच्छा हो वही कहियेगा मैं पूण कर दू गा। गणश ने कहा तुम खुश ही करना चाहते हो तो सा मन लू ग और सवा सो मन चावल जिनम घी बह जाय वो मेरे कलेवे के लिए प्रब ध करो। कजूस राणा ने जस तसे यह शत स्वीकार की और बारात को आगे बढाया। आगे आगे बगडावत चल रहे थे। बगडावतो की शान के सामन राणा ने अपनी हेटी समझी इसलिए नेवाजी को बुलाकर कहा बगडावत बारात से पाच कोस आगे रहे—इस तरह की यवस्था करो। बगडावत खूब धन दौलत लुटाते हुए आगे बढ रह थे। जगह जगह उनकी जयजयकार होने लगी।

इडरकोट म जब बगडावत पहुचे तो लोगो ने इनको ही दूल्हा समझा। इस पर नेवाजी ने समझाया कि हम तो बाराती है असली बारात तो पीछे आ रही है। लोगा को आश्चय हुआ कि जिस राणा क बाराती इतना धन लुटा रहे है तो वह स्वय दूल्हा तो न जान कितना धन लुटा रहा होगा। इसीलिए सभी स्त्री पुरुष धन प्राप्त करने के लिए दूल्हे क आने की प्रतीक्षा करने लगे। इसी बीच राणा भी अपनी बारात लकर आ पहुचे। राणा ने नीमाजी से पूछा ये इतने लोग यहा क्या एकत्रित हो रहे हैं। नीमाजी ने कहा कि बगडावत यहा इतना धन लुटा चुक है कि अब व और ज्यादा धन लेने के लिए राजा का इतजार कर रहे ह। इस पर राणा न कहा मैंने पहल ही कहा था कि बगडावता को साथ म मत ला। लकिन आप नही मान। अब बगडावतों के सामने हम नीचा देखना पडगा।

इसी समय कलश बधान क लिए हीरा दासी बहुत बडा कलश लेकर दूल्हे के सामने आई। राणा न कलश म कुछ रुपये डाले। हीरा अस तुष्ट होकर चली गई। जो लाग धन प्राप्त करन क लिए अब भी खड थे वहा राणा ने घोड़े दौडान का आदेश दिया। लाग भाग छूट। राणा तारण मारने के लिए तारण स्थल पर आय। राणा का हाथी आगे बढा। इसी समय चामुण्डा ने नोहत्थी शेरणी बन कर राणा के हाथी को दिखाइ पडने लगी। हाथी चिघाड मार कर भागा। राणा औंधे मुह धरती पर गिर पडे। तोरण न मारा गया। यह देखकर बगडावतो ने

इस अपना अपमान समझा । व राणा को अपना नाम सम्बधी ही समझते थे । अत उन्होंने राणा के एवज में तोरण मारना अपना धर्म समझा । भोज अपनी बूमली घोड़ी पर ऊंचा उछला और महल के कंगूरों पर टंगा तोरण मार दिया । राणा के सरदारों ने बगड़ावतों का जब यह दुःसाहस देखा तो उन्होंने उन्हें रोक दिया । यदि पीताम्बर जोशी बीच में न पड़ता तो नीमाजी और नवाजी में युद्ध छिड़ जाता । जैसे-तैसे समझा बुझाकर दोनों पक्षों को मना लिया ।

बगड़ावतों का डेरा बाग में लगाया गया और राणा की बारात का नदी तट पर । जैमती ने पट दुलन का बहाना बनाया और सवाई भोज को साण्डा मंगवाकर उसके साथ विवाह कर लिया । टीका भी भोज ने स्वीकारा था तोरण भी भोज ने मारा और फेर भी भोज की खड्ग के साथ हो सम्पन्न हो गये । अब लोग दिखावे के लिए राणा के साथ विवाह हो भी जाय तो कोई बुरा नहीं है । यह सोचकर जैमती ने विवाह की सभी विधियां सम्पन्न करना प्रारम्भ कर दिया । साठ वर्ष के राणाजी के फेरे होने लगे । औरतों ने गीत गाये—

पहला फेरा जे लूं लिया तेडा जलू रा बाप ।
रूसी दावड़ दायजा दमी दावड़ दात ।

इस पर जैमती ने रोते रोते कहा—

रहिज्यो दा अड़ दायजा रहिज्या दा बड़ दात ।
बूढा ने परणावता लाज मरू हो बाप ।

सगे-सम्बन्धियों के लिए भी ऐसे ही गीत गाये गये लेकिन जैमती- 'बूढा ने परणावता लाज मरू हो बाप' दोहा दोहराती रही । बारात विदा हुई । राजा ईश्वरदेव ने बहुत सारा धन दौलत, हाथी घोड़ा दहेज में दिया । मार्ग में जैमती ने बगड़ावतों के घोड़ों को देखा तो उसने अपनी सखी हीरा से पूछा-

गला फाटी पून सा राणाजी चाल्यां राण दिसा
अरण किरत्या को दीख झूमको असवार जाय किसा ।।

इस पर हीरा ने जवाब दिया—

ये छ बाईजी अजमेर का अधराजिया
छ भगत भोज का साथ ।
वदला मा कला, सोनंदिया की लाडनी
मत घालै बाईजी ग्रा के हाथ ।

जब हीरा के इस कथन से जैमती ने यह जाना कि दूसरे मार्ग पर जाने वाले ये बगड़ावत ही हैं तो उसने रथवान से कहा हमारा रथ बगड़ावतों के पीछे मोड़ दो । रथवान आनाकानी करने लगा । जैमती ने शेर के रूप में प्रकट होकर बैलों को बिचका दिया और रथवान को डरा दिया । रथवान डरकर भाग छूटा जब हल्ला गुल्ला हुआ तो बगड़ावतों ने अपने घोड़े जैमती के रथ की ओर मोड़े । ज्यों ही सबसे बड़ा भाई तेजा पास में आया त्यों ही जैमती ने हीरा से कहा कि तेजा जेठ से पूछो कि मैं तुम्हारे साथ चलूं या वापिस राणा के लौट जाऊं । तेजा ने

आस्रो आम्रा राणी जमती,
भाई भोज के बाईसा के साथ ।
म ता गऊ चराऊ बाबा न द की
गरो ठिगा ज हाथ ।।

तजा न साचा कि गुरुजी भी कहा करत थ कि बगडावता की मौत एक स्त्री के हाथ म है । इसी समय नेवाजी भी आ गय थ । उ होने वडे अभिमान के साथ कहा कि रानीजी आप भाइ भाज क महला म जाआ । हमार माथे कट जायेंग तो भी हमारे धड लडन म पीछे नही रहेंगे ।

आग्रा राणीजी माइ भाज क
बठ ज्यावा मु ह नेवा की बाह ।
माथा टूटे खारी नदी म
धड लड परत न पाछी थाह ।।

इस पर जमती ने कहा—

नीका बात्या ओ नवा दवर लाडला
तरी जाल आ जया सहर जिवार ।
तू न हुता वगडावत क बस म
ता म देवी भर ज्याती रग मल म अखन कवार ।।
मैं वगडावत बागा की कोयली थ बागा का केला ।
पूरा पाव वचन नही कर दू गी बकु ठ म भला ।।

नवाजी न वचन दिया रानी यदि अब हम तुम्ह अपने साथ ल जायेंगे ता राणा क साथ 6 माह तक युद्ध करना पड जाएगा । इसलिए अभी तुम राणा के साथ चली जाआ । हम 6 माह बाद आकर तुम्हे ल जायेंग । हम सिर दकर भी अपन वचन की रक्षा करेंगे । चन्द्रमा और सूय इस वात के साक्षी ह । हमार धड पर सिर ही न रह तव बात दूसरी है अ यथा 6 माह बाद हम तुम्ह अवश्य ल जायेंग । आखो म आसू भर कर जमती लाट चली । जब उसका रथ राण म पहुचा ता उसन अपना डेरा एक बाग म ही लगवा दिया । और राणा स कहा कि जब तक मेरे लिए नव खण्डा महल अलग नहा बन जायगा म तब तक नगर प्रवेश नही करूगी । राणा की आना स महल का निर्माण काय तेज गति से चलन लगा । तान माह म नव खण्डा महल बन कर तयार हा गया । जमती के लिए यह शोकप्रद था । एक दिन आधी रात को उसने किलकारी लगाई जिसकी गूज स नवखण्डा महल गिर पडा । राणा ने फिर निर्माण काय प्रारम्भ किया । 6 महीना म पुन महल बन कर तयार हुआ । जमती महलो म रहन क लिए चली गई । महल क सबस ऊपर वाल खण्ड म अपना आवास बनाया । एक दिन राणा न नई रानी क महल म जाने का विचार किया । सीढिया चढ़त चढ़त राणा का दम फूल गया । ऊपर पहुच कर ता वह मूच्छित ही हा गया । बडे उपचार किय जान के बाद वह हाश म आ पाया । राणा और रानी न चापड पास खल । राणा असक्त ता था ही खल ही खेल म जमती न

राणा की कलाई पकड ली। राणा धूजने लगा फिर भी उसने हीरा दासी का पलग तयार करने का आदेश दिया। अब तो जमती के क्रोध का पार न रहा। उसने राणा को कुत्ता और हीरा को बिल्ली बना कर रातभर कुत्ते बिल्ली की लडाई कराई। सवेरा होते ही राणा पुन मनुष्य बना दिय गय। ग्लानि के मारे राणा का मुह पीला पड गया। दरबार म भी व उदास ही बने बठे रह। नीमाजी स यह न देखा गया, उन्होने पूछा क्या बात ह रात आराम स नही बीती ? राणा ने कहा रानी औरत नही सिंहनी है। राणा के कथन की सत्यता का पता लगाने के लिए नीमाजी कालू मीर को लेकर रानी के महल म गये। उ होने कालू मीर को आगे भेजा उसने देखा कि एक सिंहनी लोह की जजीरो म बधी हुई है। वह डर कर भाग आया। इस बार नीमाजी स्वय महल म गय। जमती रानी ने अपने देवर का भली प्रकार स्वागत किया। रानी न कहा देवरजी आप भी कसी सिंहनी ढूढत फिरते हो। यहा कहा सिंहनी ह। राणा तो व्यथ ही डर गए थे। आश्वस्त होकर नीमाजी राणा के पास गए और कहा रानी तो सूय की तरह पवित्र ह आप उस पर व्यथ ही दोष लगाते है।

6 माह के स्थान पर 12 माह व्यतीत होने को आये, लकिन बगडावत रानी को लेने नहा आये। जमती न एक पत्र लिखा और हीरा को स्वण चिडी बना कर उडाया। पत्र म लिखा था—

काली पडगी बगडावता म कायली
रही फूला ज्यू कुमलाय।
आगळिया का मूनडा खलक चढयाई वाय॥
केसर भीज र रग महदी को जाय
कागद बचाय सवाई भाज न
आके राणी सुदर ने ले जाय।

जमती क इस पत्र को स्वण चिडा ने भोज की गाद म गिरा दिया। सवाई भोज न पत्र पढकर उसे पाव के नीचे दबा लिया किन्तु नेवाजी की दृष्टि मे यह पत्र पहल ही आ चुका था। इसलिए उन्होने भोज से पूछा पत्र किसका है क्या लिखा हुआ है ? भोज को विवश होकर कहना पडा कि रानी का सन्देह आया ह। वह हमारी प्रतीक्षा म व्याकुल है, लेकिन हम रानी को लेने के लिए नही जायेंगे। क्योकि ऐसा करने से भयकर युद्ध की आशका ह।

कायरतापूण कथन को सुनकर नेवाजी उत्तेजित हो उठे। उन्होने कहा मैंने सूय की साक्षी म रानी को वचन दिया था कि हम तुम्हे अवश्य लेने आयेगे अतएव चाहे कुछ भी हो जाय हम रानी को अवश्य लायेंगे। इस प्रस्ताव का तेजा ने विरोध किया। नेवा ने उसे डाटते हुए कहा तेरा नाना बनिया था वह तेल तम्बाकू बेचता था और डट कर दाम लेता था। हम तो बाघराव के सच्चे बेटे ह। युद्ध म जूझ मरेंगे तब तुम हथियारों के बलिडा और थान बना लेना। भोजा की स्त्री साढू भी नेवा के प्रस्ताव से सहमत नही थी। वह अपने लिये सौत का आना कसे सहन कर

आ रहे थे। सूग्रर राणा को जगल म काफी दूर ले गया। इधर जैमती रानी ने नगर से निकलने की योजना बनाई। अपने चमत्कार स उसने सीढी बनाई और हीरा के साथ दीवार लाघ कर सीढिया के सहारे नीचे उतर गइ। माग म अन्धकार को चीरती हुइ और लोगो की नजर स बचती हुई वह उपवन के द्वार पर आई। नेवाजी ने अपने बडे भाई तजा से कहा रानी दरवाजे पर आ गई है इसे ले चलना चाहिए लेकिन तेजा न ता विनाश के भय मे पुन मना किया। रानी ने तेजा को शाप दिया और माली का मोहरें देकर दरवाजा खुलवा लिया। सवाई भोज और रानी का मिलन हुआ। भोज और नेवा ने रानी का ले चलने का निश्चय किया। भाज के घोड पर जमती और नेवा के घाडे पर हीरा को बैठा कर ले जाने की योजना थी। रानी ने कहा मेरे आभूषण तो महल मे ही रह गए ह और आभूषणो के बिना मैं नही चलूगी। रानी का गहना लाने के लिए नेवाजी महलो मे गए। महलो म सुदर पलग देख कर नेवाजी विश्राम करने लगे। विश्राम करते करते वे सो गये। बहुत देर तक प्रतीक्षा करने पर भी जब नेवा न लौटा तो सवाई भोज ने पातू कलाली को खबर लाने के लिए भेजा। पातू चील बन कर गई और नेवाजी को जगा लाई। अब रानी और हीरा को साथ लेकर वगडावत चल पडे। माग म आमासर की बावडी आई, जमती ने पाव की पायल खोलकर बावडी म पटक दी और बगडावतो से कहा मेरी पायल पानी पर तरे तभी मैं बगडावतो के साथ जाऊगी, अन्यथा नही। नेवाजी ने अपने इष्टदेव का स्मरण करके पायल को पानी पर तरा दिया। इसी प्रकार कई प्रकार से बगडावतो के पौरुष और चमत्कारो की परीक्षा लेती हुई रानी बगडावतो की गोठ सीमा मे पहुची। अब रानी को यह अच्छा नहा लग रहा था कि अपने आगने मे वह घोडे पर बठ कर जाय इसलिए उसने पालकी म आसन जमाया। गूजरो की गाठा म हर्ष की लहर दौड गई। पालकी म बठी जमती के दर्शनार्थ लोगो की भीड लग गइ। साढूजी और नेतूजी ने आरती उतारी केशर का तिलक किया और रानी को महलो म लाकर अन्य स्वागत किया। खूब जलसे हुए, नाच गान राग रग आदि की बाढ आ गई। सवाई भोज ने धन लुटा लुटाकर सबको सन्तुष्ट किया।

जब राणा शिकार से वापिस आया तब उसने रानी के महल को वीरान पाया। नीमाजी ने उससे सब समाचार पूछे। ज्ञात हुआ कि रानी को बगडावत ले गये। थोडी दूर खोज हुई चिन्ह प्राप्त करने के लिए राणा स्वय इधर उधर गये। आमासर की बावडी पर राणा ने रानी की पायल पडी देखी। उन्हे विश्वास हो गया कि रानी को बगडावत नही ले गए वह ता बावडी म डूब कर मर गई है। किन्तु नीमाजी ने राणा के इस निर्णय को व्यथ करार दिया और कहा कि रानी तो बगडावतो के हृदय का हार बनकर रह गई है। राणा ने महलो म लौट कर देखा कि रानी की सेज उल्टी पडी है। यहा वहा कबूतर गुटरगू कर रहे हैं। राणा की आखो म आसू भर आये। उन्ह रानी का सौन्दर्य और स्वभाव रह रहकर याद आने लगा। चाहे कितने ही विवाह और हो जाए, राणा की दृष्टि म वसी सौन्दर्यवती

मिलना असम्भव था। प्रा व किसी तरकीब से ही रानी को बगड़ावतों के यहां से ले आना चाहते थे। राणा ने बगड़ावतों को पत्र लिखा कि रानी आपकी है। आप राणा को हमारा हितैषी जानकर वह आपके साथ में चली गई है। उसके गले में एक बेशकीमती हार है उसका अवश्य ध्यान रखना। जब यह पत्र सवाई भोज ने पढ़ा तो वह समझ गया कि राणा ने स्पष्ट बात न लिखकर सांकेतिक ढंग से ही जमती को भेजने का कहा है। भोज ने भी उसी प्रकार उत्तर लिख दिया कि आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें। हमारे लिए रानी से बढ़कर हार और हार से बढ़कर रानी है। उत्तर पाकर राणा चिंतित हुए। उन्होंने फिर भोज को एक पत्र लिखा कि मैं शिकार खेल कर लौट आया हूं। रानी बीमार है उसे यहां शीघ्र भेज दो ताकि उसका उपचार कराया जा सके। इसके प्रत्युत्तर में नेवाजी ने लिखा कि चौबीसों बगड़ावतों की लाशों पर ही रानी को ले जाया जा सकता है। राणा ने यह पढ़कर पुनः गम्भीरता से विचार किया। वे जानते थे कि बगड़ावतों जैसे वीर और सच्चे मित्र मिल नहीं सकते। इसलिए एक बार समस्या को शांति से सुलझाने के लिए बगड़ावतों के गुरु रूपनाथजी को उन्होंने पत्र लिखा कि वे उन्हें समझायें।

रूपनाथजी ने भी बगड़ावतों को यही शिक्षा दी कि चाहे कुछ भी हो लाई हुई रानी को वापिस मत भेजना। राणा ने अपनी सेनाओं को तैयार होने का आदेश दिया। अपने अधीनस्थ बावन गढ़ों के सरदारों को युद्ध के लिये तैयार किया। अपनी चतुरंगिनी सेना लेकर राणा ने बगड़ावतों के राठौड़ा सरोवर पर डेरा डाल दिया। एक बार पुनः अपने कुछ सरदारों को राणा ने बगड़ावतों के पिता बाघजी तथा तेजा के पास भेजा। नेवाजी को भी समझाने का प्रयास किया गया, लेकिन सभी को वहां से निराश होकर लौटना पड़ा। अब तो युद्ध के अतिरिक्त कोई दूसरा चारा न था। बगड़ावतों की सेना का नेतृत्व स्वयं बाघजी ने किया। घमासान युद्ध में लड़ते लड़ते बाघजी वीरगति को प्राप्त हुए। जब बगड़ावतों को अपने पिता की मृत्यु का समाचार मिला तो वे सब एक साथ युद्ध करने के लिए जाने लगे। इस पर जमती ने उन्हें कहा कि एक एक करके ही युद्ध करना चाहिये क्योंकि वह जानती थी कि यदि बगड़ावतों ने एक साथ किया तो काल भी उनके सामने नहीं ठहर सकेगा। जमती के परामर्श के अनुसार सबसे पहले छोटा भाई भालाजी युद्ध करने के लिये गये। नेवाजी अपने महल में 6 माह की नींद में सो गये। भाला ने राणा की सेना में प्रलय मचा दिया। चामुण्डा ने स्वयं शत्रु का वेश बनाकर भाला का सिर काट लिया। विजयोल्लास में राणा आगे बढ़े। भोज के पुत्र जसा और महरवाण युद्ध करते करते मारे गये। उसकी पुत्री दीपकंवर भी लड़ते लड़ते लड़ाई के मैदान में सो गई।

जमती ने इस समय चार देह धारण की। एक देह से वह सवाई भोज के साथ चौपड़ खेल रही थी दूसरी देह अन्य रानियों से बातें कर रही थी, तीसरी देह से युद्ध में सैनिकों को प्रेरित कर रही थी चौथी से नेवाजी को जगाकर युद्ध में भेजने

का प्रयास कर रही थी। जमती के अनेक प्रयत्ना के बावजूद भी नेवाजी न जागे। तब जमती ने नेवा की माता को उकसाया कि तुम्हारा पुत्र कायर है, तभी सो गया है। माता ने कहा जब तक चाद और सूय हैं, तब तक मेरे बच्चे को कायर नही कहा जा सकता। वह स्वय नेवा के कमरे म गयी। दरवाजे से ही उसने अपने स्तना से दूध धारा बहाई। दूध की धार नेवाजी के मुख पर पडी। नेवाजी की नीद टूट गई। माता ने कहा शत्रुओ ने चारो ओर से घेर रखा है गायें प्यासी मर रही ह, नीद छोडकर कुछ करणीय करा। नवा न अपनी माता को विश्वास दिलाया कि मैं एसा युद्ध करू गा, जिसे देवता भी देखते रह जायेंगे। राणा की सेना म एक को भी जिन्दा नही छोडू गा, यह कहकर नेवाजी पुन 6 महीने की नीद म सो गये। माता ने अपनी पुत्रवधू को भेजा। नेतूजी जब अपने पति का जगाने आ रही थी तो उनका पुत्र माग म मिला और कहने लगा पिताजी का सोने दो। उनके आराम मे विघ्न न डालो, युद्ध करने मैं जा रहा हू। भयकर युद्ध के पश्चात् नेवाजी के पुत्र भी मारे गये। वे भी चामुण्डा की रुण्डमाल के मनके बन गये। पुत्र के निधन पर नेतूजी विलाप करने लगी। अब व जल लेकर अपने पति को जगाने गई नेवाजी जगे, उठते ही उन्होने आसपास कुरजो का शोर सुना। यह लाल मुह और लम्बी गदन वाली कुरजें यहा कसे आ गइ। इसी आश्चय म वे थे। उन्हाने एक कुरज को पूछा तुम समुद्र पार से यहा क्यो आई हो ? कुरज न उत्तर दिया बगडावता और राणा के युद्ध की सूचना पाकर वे नर मास खाने यहा आई है। इस कथन से नेवा न युद्ध की भयकरता का अनुमान लगाया। उन्हाने युद्ध मे जाने का निश्चय किया। सरदारो का दरबार बुलाया गया। सबने मिलकर युद्ध म प्रस्थान के लिए तयारिया की। तोपो की सलामी दी गई। नेवाजी ने अश्वशाला म जाकर घोडा लिया। नेतूजी ने आरती उतारकर माला पहनाई। घोडो को भी पुष्पहार पहनाया गया। माता ने नेवाजी को विदा करते हुए आदेश दिया कि युद्ध म जाने से पूव सवाई भोज स मिलकर जाना आवश्यक है। दोनो भाई गले मिलकर आसू बहाते रहे। युद्ध म जाने से पूव थाडा सा मोह उन्हें रुलाने लगा। अपने पुत्रो को छोटू भाट के सरक्षण म रखकर नेवाजी ने युद्ध का नगाडा बजवा दिया। वे स्वय गुरु रूपनाथजी की सेवा म उपस्थित हुए। गुरु न कहा पुत्र नेवा, एक बार म केवल सवा प्रहर ही युद्ध करना। सवा प्रहर से अधिक किसी भी अवस्था म युद्ध म न रुकना। सवा प्रहर हाते ही मरी धूनी पर लौट आना। बाबा रूपनाथ अपनी धूनी को युद्ध स्थल क और भी समीप ल आय, जिसमे नेवा विश्राम क लिए शीघ्र ही गुरु के सान्निध्य म आ सक। गुरु का चरण रज लेकर नेवाजी युद्ध म आ डट।

घमासान युद्ध प्रारम्भ हुआ। नवाजी ने राणा की सेना को तहस नहस कर दिया। रक्त की नदिया बह चली। राणा के बडे-बडे योद्धाओ का धराशाही करके सवा प्रहर के बाद नेवाजी गुरु के पास लौट आय। रूपनाथजी ने अमृत मिला जल उसके शरीर पर डाला तथा पवित्र भस्म से उनके घावो को भर दिया। पूर्ण स्वस्थ हाकर नेवाजी पुन युद्ध भूमि म गय। 6 माह तक इसी प्रकार नेवा ...

ग्रौर शत्रुग्रा का नाश । व गुरु कृपा स निर्भाव बने रह । चामुण्डा न जब नवाजी को इस प्रकार निर्भाव देखा तो उसने नेतूजी से ग्रमत जल तथा धूनी की भस्म का रहस्य जान लिया । एक दिन जमती रूपनाथजी की धूनी म यह दोना ग्रलौकिक वस्तुए चुरा कर ल गई । जब नवाजी रूपनाथजी क पास ग्राये तो गुरु ने कहा कि सिद्ध वस्तुग्रा का भेद किसी का लग गया है वे यहा से लुप्त कर दी गई हैं । ग्रत एव ग्रब तुम्हारी रक्षा करना मेरे लिए ग्रत्यधिक कठिन हो गया ह । फिर भी नेवाजी की प्राथना पर गुरु न प्रसन्न होकर सजीवनी बूटी नेवा के शरीर को चीर कर त्वचा म रखना चाहा । नेवा ने गिडगिडा कर कहा कि हे गुरु मेरे शरीर पर दाग न लगाग्रो । रूपनाथजी समझ गय मत्यु इसक सर पर मडरा रही है । फिर भी उ होन कहा कि सजीवनी बूटी को ग्रपनी पगडी म रखलो । माग म ही जमती मिली । नेवाजी ने सजीवनी बूटी का भेद ग्रपनी भाभी जमती को बतला'दिया । फिर क्या था जमती ने चील बनकर सजीवनी बूटी पर झपट्टा मारा । नवाजी इस घटना स बडे ग्रसहाय एव दु खी हुए । उनकी पत्नी ने उ ह बहुत धय बधाया । उ हाने नेवाजी का जीव ग्रपनी पायल म रखा ग्रौर पायल को घोडे क पर स बाध दिया ।

जमती ने नेतूजी से यह रहस्य भी जान लिया । उसने राणा की सेना के साण ग्रौर भाण नामक दो भाइया का पायल का रहस्य बता दिया । य दाना भाई राणा के पास गय ग्रौर राणा के सामने प्रतिज्ञा की कि वे नेवाजी का युद्ध म धराशायी कर देंगे । राणा ने उ हे जागीर देने का वायदा किया । दोना ग्रोर से घमासान युद्ध प्रारम्भ हुग्रा । नेवाजी घाडे पर बठे हए बिजली की तरह तलवार चला रहे थ । शत्रु सेना म त्राहि त्राहि मची हुई थी । साण ग्रौर भाण नेवा से युद्ध करने लग । उ होने व्यग्य किया कि युद्ध तुम नही बल्कि घोडे की पायल कर रही है । व्यग्य को सुनकर नवाजी उत्तजित हो गये । उ होने पायल को खोलकर फेंक दी । जा पूव निश्चित हाता है वह हुए बिना नही रह सकता । नियति के सम्मुख किसी की कभी चली नही । ग्रब क्या था । साण ग्रौर भाण एक साथ नेवाजी पर टूट पडे किन्तु नेवाजी की तलवार ग्रथक गति स घूम रही थी । एक ही हाथ म साण ग्रौर भाण धराशायी हो गये । जमती न जब यह देखा ता उसन स्वय ने चक्र से नेवाजी का माथा काट लिया । नवाजी जुझारू वीर थ । ग्रत मस्तक पर के स्थान पर धड पर कमल का फूल खिल ग्राया । सीन म ग्राख ग्रा गए । उनका धड उसी प्रकार युद्ध करता रहा । नेवाजी के इस युद्ध का देखने के लिए सूय ने ग्रपना रथ राक लिया । देवता गण ग्रपने ग्रपने विमान लकर ग्राकाश मे घूमने लगे । 6 माह तक नेवाजी का धड लडता रहा ग्रौर शत्रग्रो का भयकर रूप स सहार करता रहा ।

राणा की सेना म त्राहिमाम त्राहिमाम हा गइ । जमती न यह देखकर नेवाजी पर नील के छीटे बरसाय । नील की छाया पडत ही नेवाजी का जुभारू धड गिर पडा । बगडावता की सेना म खलबली मच गई । नेतूजी सती होने क लिए प्रस्तुत हो गइ । इस समय उनक गभ म एक शिशु पल रहा था । पट चीरकर

शिशु को बाहर निकाला गया। शिशु रूपनाथजी के हाथ में सौंपा गया। चिता पर अपने पति के शरीर को गोद में लेकर बैठते समय नेतूजी ने कहा, जमती रानी कोढ़ी हो जायगी और कमल के पुष्प में देवनारायण का अवतार होगा, वही देव नारायण बगड़ावतों का वैर शोधन करेंगे। युद्ध का तथा किये गये छल कपट का पूरा ब्योरा भी नेतूजी ने सवाई भोज को बताया। जनगण की जयजयकारों के बीच नेतूजी सती हो गई।

अब बगड़ावतों की सेना का नेतृत्व सवाई भोज के हाथ में आया। वह युद्ध में जब जाने लगा तो जमती ने भी युद्ध में साथ जाने को कहा, साथ ही उसने अपनी शर्त बताते हुए कहा कि आप पीछे मुड़कर नहीं देखेंगे। यदि आपने पीछे मुड़कर देखा तो मैं अपने हाथ से आपका सिर काट लूंगी। सवाई भोज किंचित झिझका, फिर सोच विचार कर उक्त शर्त को स्वीकार कर लिया। युद्ध अपनी भयानक विभीषिका के दौर में था। राणा ने अचूक प्रहार किया। जमती ने अपना हाथ आगे बढ़ाकर प्रहार को झेल लिया। उसके हाथों की स्वर्णमय चूड़ियां टूट गई। सवाई भोज अपनी शर्त भूल गये थे। उन्होंने घूमकर पीछे देखा देखने के साथ ही रानी ने अपने चक्र से भोज का माथा काट लिया और चामुण्डा का भेष धारण करके नरमुण्डमाला पहन कर बड़ के पेड़ पर बैठ गई। जब राणा ने साक्षात् भवानी को युद्ध में इस प्रकार देखा तो वह चकित रह गया। बगड़ावतों की सेना में भगदड़ मच गई। तेजा युद्धस्थल छोड़कर भागने लगा, तभी पीछे से किसी ने उसे अपने बाण का लक्ष्य बना दिया। विजयी राणा हर्षोल्लास के साथ राण को लौट आया।

इस विध्वंस के पश्चात् जमती ने भोज का सिर लेकर साढूजी के पास पहुंचा। अपने पति के साथ वह साध्वी सती होने के लिए तैयार हो गई किन्तु जमती ने उसे रोक कर कहा कि तुम्हारे यहां देवनारायण अवतार लेंगे, इसलिए तुम सती मत होना। मैं स्वयं चामुण्डा की अवतार हूं। तुम्हारे शत्रुओं से प्रतिशोध लेना अभी बाकी है। तुम्हारे तालाब में दो कमल हैं। एक बन्द और दूसरा खिला हुआ। माहा सप्तमी के रोज कमल के एक भंवरा तुम्हारे स्तनों का पान करने के लिए चिपक जायगा वही फिर मनुष्य के रूप में बदल जायगा। उसे पाल पोस कर बड़ा करना। वह वंश का वैर शोधन करेगा। यह कहकर जमती चली गई।

जमती ने विष्णु से जाकर निवेदन किया कि कलयुग में बगड़ावतों ने अपने पौरुष की धाक जमा दी, इसलिए इनकी कीर्ति को अमरता प्रदान की जानी चाहिए। भगवान ने नियत समय पर अवतार लिया और भंवरे के रूप में साढू की गोद में खेलने लगे। जब साढू की गोद में बालक खेलने लगा तभी राणा के महल में भटारो हिलने लगा। उसके गढ़ के कंगूरे टूट गये। पलंग के पाये टूट गये। राणा का सिर चकरा गया। रानियां भयभीत हो गई। राणा ने इन घटनाओं को देखकर ब्राह्मणों को बुलाया और पूछा कि बालक का भविष्य क्या कहता है? ब्राह्मणों ने बताया कि भगवान का अवतार है और बगड़ावतों का वैर चुकाने के लिए जन्मा

है। यह सुनकर राणा के पैरा के नीचे स धरती खिसकने लगी। वह घबरा गया। उसने ब्राह्मणो को भेजा कि किसी भी प्रकार स बालक को मौत के घाट उतार दिया जाय। ब्राह्मणा ने साढूजी के दरवाज पर भोजन की और बालक के नक्षत्र ग्रह देखने का आग्रह किया। साढूजी ने ब्राह्मणो की बात स्वीकार अन्दर पानी लेने क लिए गइ। ब्राह्मणा का सुअवसर मिला। पहला ब्राह्मण महल क अन्दर गया ता उसने देखा कि बालक सा रहा है। शेषनाग फन फलाकर उस पर छाया किये हुए ह। बावन भरव उसके पहरा दे रह हैं। ब्राह्मण यह देखकर भयभीत हाकर उन्हा परा लौट आया। अबकी बार दूसरा ब्राह्मण अन्दर गया, उसने देवनारायण का तरुण रूप देखा और नागो का पहरा लगते हुए पाया। वह भी डर कर भागा। तीसर ब्राह्मण न अन्दर जाकर देवनारायण को वृद्ध के रूप म देखा। चाथा ब्राह्मण जब अन्दर गया तो उसन देवनारायण का वही बालक रूप देखा। व लाग देवनारायण क अवतारी रूप को देखकर अपन भाग्य को सराहन लग। साढूजी जब आइ ता व लोग उनके चरणा म अपना सर भुकाकर गिर गये। ब्राह्मणो ने अपनी बुरी धारणा का बताते हुए राणा की पूरी मनसा साढूजी के सामन अभिव्यक्त की। ब्राह्मण लाग पश्चात्ताप कर रहे थे और साढूजी का माता कह कर धन्य धन्य हो रहे थे।

ब्राह्मणा ने राणा का वस्तुस्थिति स अवगत कराया। राणा बालक के चमत्कारी रूप के बारे म सुनकर स्तब्ध रह गया। इधर माता साढू देवनारायण का पालन पोषण अपने पीहर उज्जन म करने लगी। एक दिन बगडावता का भाट छोछू उज्जन आया। वह देवनारायण स मिलना चाहता था। माता साढू ने झूठ बाल कर छाछू का बहका दिया कि दवनारायण यहा नही है। उसे सोदबहा की ओर भेज दिया है। बेचारा भाट वहा पहुचा। यागिनिया उसके अप्रत्याशित आग मन स क्रुद्ध हो उठी। व भाट के टुकडे टुकडे कर खा गइ। दवनारायण का अपन योग बल स छाछू तथा यागिनियो की इस घटना का ज्ञान हुआ तब उन्होने काला गारा भरव को वहा पर भेजा। भरव ने योगिनिया को पीट पीट कर छोछू को उगलवा लिया। म अमृत जल डालकर उसे पुन जीवित किया गया। वही देवजी ने नागपुरी के साथ अपना विवाह किया। छोछू ने बगडावतो की वश परम्परा का पूरा इतिहास देवनारायण को बताया। अब ता दवनारायण अपनी गोठा म आन के लिए मचल पडे। मामा और माता नही चाहते थे कि दवनारायण गाठा म जाकर सकट म पडे। कि तु दवनारायण अपने निणय पर अडिग रहा। उसने अपन लागा का एकत्रित कर उज्जन म गाठा क लिए प्रस्थान किया।

जब दवनारायण की सवारी धारानगरी स गुजर रही थी तब जयसिहदेव परमार की पुत्री पीपल दे ने उन्ह झरोख क नीच स गुजरते हुए देख लिया था। प्रथम दशन म ही वह अपन आपका भूल गई थी। उसने अपन माता पिता से निवदन किया उसका विवाह देवनारायण के साथ ही कर दिया जाय। माता पिता तथा परिजनो न पीपल दे को बहुत समझाया कि देवनारायण साधारण गूजर है। इस

लिय इसके साथ विवाह करना राजाओ क लिए शोभनीय नही है। पीपल दे क हठ के सामन एक न चली। अ त म उनका विवाह कर दिया गया। बहुत सारा धन दौलत, साज सामान दकर जयसिहदेव न अपन दामाद और पुत्री को हप से विदा किया। अवतारी दवनारायण के स्पशमात्र स पीपल दे की आख का फूला मिट गया। देवनारायण पीपल द सहित गोठा म आ गय।

देवनारायण ने 24 गोठा का पुन बसाया। अजमर क राजा न भी दव नारायण का सम्मान किया और सम्मान म एक घाडा भी प्रदान किया। अपन पिता की बूवली घाडी जा दहिया जाधग के पास थी वह भी दवनारायण ने उसस वापिस मगाली। नवाजी क पुत्र भूणमल राणा की राण म ही पल कर बड हुए थे। जब दवनारायण का अपने भाइ का ज्ञान हुआ ता उ हाने छोछू भाट का भेजा कि वह जाकर राण से भूणमल का ल आय। तब भाट न देवनारायण स कहा—

वगडावता क साग जावल भाइ
जाण (म्हान) राणा शहर का रूख।
छानी कानी आह सूरमा म्हान
राणाजी देसी व ध क माय॥

देवनारायण न उक्त कथन का सुनकर भाट स कहा कि राख रमा कर भैरव वस्त्र धारण कर ला। भाट न एसा ही किया। वह पच्चीस वष का युवक बन गया। राण का तरफ उसने कूच किया। शहर की सीमा पर पानी भरन वाली पणिहा रियो ने छोछू को एक सिद्ध महात्मा समझा। व महात्मा के आतिथ्य म गइ व महात्मा क लिए घरा स दूध लाया गया। छोछू न काला गारा भरव का स्मरण किया। उसकी तुम्बी म दूध डाला गया कि तु वह भरी ही नही। इस चमत्कार की चर्चा सार शहर म हवा की तरह फल गइ।

छोछू शहर का पहल स ही जानता था। अत उसन पातू कलाली और फूला मालिन को सहायता स भूण का पता लगाया। भूण को युक्ति से बुलाकर उस सारी घटना स अवगत कराया गया। समस्त वाता को सुनकर भूण न कहा कि मैं तभी गोठो म लौटू गा जब दवनारायण पीलूदा क इन कुम्हारा स जयमगला हाथी वापिस ले लें। भाट न वापिस आकर देवनारायण को भूण की शत सुनाई।

देवनारायण ने पीलूदा पर आक्रमण कर दिया। पीलूदा के राणा पडिहार न जब हल्ला गुल्ला सुना तो उसन धावाई तथा अ य वीरा का युद्ध म भेजा। सब मैदान म खत रहे तब राणा न भूण से पूछा कि क्या बात है? उसने बहाना बना कर कहा कि कुम्हारा के यहा बतन पकाय जा रह हैं बतना को लकर ही दगा हो गया है। आप चिता न करें। राणा का विश्वास नहा हुआ, उसने असलियत का पता लगाया। उस विश्वास हो गया कि इस उपद्रव म भूण का हाथ है। फिर भी उसकी विश्वासपात्रता परखन के लिए रानी कमलावती ने भूण का कहलवाया कि तुम यदि सच्चे नमकहलाल हो तो दवनारायण का सर काट लाओ। भूण रानी के

पीहर गया। वहा उसने सातल दे और पीतल दे नामक रानी के दो भाइयो का सर काट कर रानी के सामने पेश किया। अब तो राणा और रानी के क्रोध की कोई सीमा ही नही रही। राणा ने भूण को मृत्यु दण्ड दिया। राणा की पुत्री तारा कुवर जो बचपन से ही भूण के साथ पाली पोसी गई थी ने उसे बचा लिया। भूण ने गोठा का मार्ग पकडा। वह देवनारायण से जा मिला। सब लोग बडे प्रसन्न हुए। बगडावतो के युद्ध मे काम आये वीरो और सतियो की देवलियो पर दोनो भाइयो ने पूजा के पुष्प चढाये। भूणमल ने कहा —

> एकर मुख सू बोल ए म्हारी माताजी
> लस्यू राणाजी सू बैर।
> अती बात कहता पथर की देवलिया म
> अचल छूटग्या दूध।।
> मूछारा म जा पड्या आ बा भूणमल के माथ।।
> मरबो मरबो मत कर म्हारा लालजी
> मरबा हू दर ई हाथ।
> भाजा मरगो बाघा का नइ (तो) चानू थार साथ।।

वीरो की समाधियो से प्रेरणा लेकर दोनो भाइयो ने राणा से प्रतिशोध लेने की तयारी की। उन्होने सेना सजाई और राणा की ओर प्रस्थान किया। देवजी और भूण के साथ अनेक पशु थे। पशुओ को राणा की खडी खेती मे छोड दिया। राणा ने अपनी सेना लडने के लिए भेजी। सेना मार खाकर लौट आई। इस पर स्वय राणा ने सेना का नेतृत्व किया। देवनारायण और भूण ने सारी सेना को मार कर राणा को पकड लिया। परन्तु ताराकुवर की प्रार्थना पर राणा को प्राण दान दे दिया गया। शत्रुओ से प्रतिशोध लेकर दोनो भाई अपनी माता साढूजी के पास लौट आये। देवनारायण ने कहा—

> माताजी कवल के फूल अवतार धारया
> भाल्या थारी खेल्या आय।
> वर ले दिया आ बगडावता का
> अब (म्हारी) माताजी ए बन म जावा जाय।

पीपल दे भी वही उपस्थित थी। जब उसने देवजी का उपर्युक्त कथन सुना तो उसने अचल पकड लिया और कहा कि मुझे मझधार मे छोडकर कहा जा रहे हो? मेरी की क्या स्थिति होगी। देवजी ने वचन दिया कि जब भी तुम गोबर की गूहली देकर मुझे याद करोगी मैं उपस्थित हो जाऊगा। गूहली के सूखने तक मैं तुम्हारे पास रहूगा। यह कह कर देवनारायण अन्तर्धान हो गये।

पीपल दे बिलखती रही। जब जब वह गोबर की गूहली देकर देवनारायण को याद करती वे आ जाते। एक दिन देवनारायण के जाने और अदृश्य होने की बात अपनी सास से कही। तब तेल की गूहली दी गई ताकि गूहली जल्दी न सूखे। इस पर देवनारायण ने कहा कि अब मै नही आऊगा।

राना पीपा ने देवों से रो-रोकर अनुनय विनय की। तब देवजी ने उसे दो पुष्प देकर कहा तुम्हारे एक पुत्र और एक पुत्री होगी उनमें से जो भी मुझे याद करेगा मैं उसे दर्शन दूंगा। इसके पश्चात् वे अन्तर्धान हो गये।

आज भी गूजरों में और लोकजीवन में देवनारायण की पूजा का विशेष विधान है तथा बगडावतों की वीरता और शौर्य के गीत बड़े गर्व से गाये और सुने जाते हैं।

एक दिन जसल एक तेज बलगाडी जात कर जालौर आया। उसने ऊमा को बलगाडी म बठा कर पूगल के लिए चल पडा। रातारात वह ऊमादे के साथ पूगल पहुच गया। इधर जब गुजरात की सेना को जब यह पता चला कि ऊमादे पूगल पहुच गई है तो विवश होकर उन्होंने अपना घेरा उठा लिया। पिंगल और ऊमादे सुखपूवक दाम्पत्य जीवन बिताने लगे।

कुछ समय व्यतीत होने पर रानी ऊमादे ने एक पुत्री को जन्म दिया। पुत्री होनी की सो भल और आभा की भी बिजली के समान थी। कन्या का नाम मार वणी रखा गया। एक बार पूगल मे भयकर अकाल की छायाएँ मडराने लगीं। किसी का भी जीवन पूगल म सुरक्षित नही था। अत राजा ने सपरिवार पुष्कर की ओर प्रयाण किया।

उस समय नरवलगढ़ म राजा नल राज्य करता था। राजा के कोई सन्तान नहा थी। उसने मनौती की कि यदि उसके कोई स तान हुई तो वह तीथराज पुष्कर की यात्रा करेगा। दान पुण्य क द्वारा देवताओ को प्रसन्न करूगा। हरि इच्छा प्रबल होती है। उसका सौभाग्य था कि राजा के एक पुत्र हुआ। पुत्र का नाम साल्हकु वर रखा गया। प्यार म राजा नल उसे ढोला कह कर पुकारते थे। प्रजा म खुशिया मनाई गइ। चारण भाटो को घोड और सिरोपाव प्रदान किये गये। रानी दमयन्ती ने राजा से एक दिन निवेदन किया कि अब अपना ढोला तीन वष का होने जा रहा है हम पुष्कर की यात्रा कर लनी चाहिए। राजा न इसे सहष स्वीकार किया और अपने मीर उमरावो के साथ पुष्कर म आ गया। ब्राह्मणो को भोजन कराया गया। देवताओ और पितरो की पूजा की। पुष्कर स्नान कर अपने आपको धन्य समझा। वहाँ व चार माह तक रहे। इसी बीच उनका परिचय पूगल के राजा पिंगल से हुआ। दोनो राजा बडे प्रेम से मिले। एक दूसरे के सम्मान म दोनो ने मतवाल भागी। अफीम के कटोरे पीये और पिलाये गये। एक ही पातिया पर दोनो राजाओ ने सम्मिलित भोजन किया। साथ साथ चौपड पासे खेले। इसी समय पिंगल की पुत्री मारवणी को गोद म लेकर उसकी धाय वहा आ निकली। राजा नल ने कन्या की सौम्यता और सौन्दय को देखकर पूछा कि यह कन्या किसकी है? धाय ने विनम्रता से कहा यह राजा पिंगल की पुत्री और जालौर के राजा सावतसी की दोहती है। इसक बाद जब रानी दमयन्ती राजा स मिली तब राजा ने पिंगल की सुन्दर पुत्री के विषय म चर्चा की। दोनो ने यह निश्चय किया कि कु वर ढोला का विवाह यदि इस रूपसी कन्या के साथ हो जाय तो अति उत्तम हो। अत दूसरे दिन व राजा पिंगल के आवास पर गये। राजा रानी ने नल दम्पति का यथेष्ट स्वागत किया। अवसर देखकर दमयन्ती ने कु वर ढोला के लिए मारवणी मागली। राजा पिंगल ने इस प्रस्ताव का स्वीकार करत हुए अपने भाग्य को सराहा। वही मार वणी की गोद भरी और थाली मे बठा कर दानो शिशुओ का विवाह कर दिया गया। इस विवाह म रानी ऊमादे थोडी असन्तुष्ट अवश्य थी क्योकि राजा नल का प्रदेश पूगल स पर्याप्त दूर था। ऊमादे ने कहा—

आखै ऊमा देवडी, मालम हीय विचार।
मोह पियारी मारवी, दीधी समदा पार ।।

राजा ने अपनी रानी को समझाया कि राजा नल ऐश्वयशाली प्रतापी राजा है। अकाल के कारण हम इस समय सकट म हैं। भल सम्ब धी मिलने स दु ख ददों की प्रतीति कम होती है और मान बढता ही है। बेटी का धन दूर ही अच्छा। इसलिए जो कुछ हुआ अच्छा ही हुआ है। मन मे प्रसन्न होकर होनहार को स्वीकार करा और सम्बन्धियो का आतिथ्य करा। राजा ने घोडा, ऊट साना चादी, धन, दौलत आदि दहेज मे दिये। इसी समय राजा पिंगल के भाई गोपालदास का एक पत्र राजा को प्राप्त हुआ जिसम उनको शीघ्र पूगल आने के लिए लिखा था क्योकि अच्छी वर्षा के कारण अब वहा सुकाल के लक्षण दिखलाई दे रहे थे। वह विदा के लिए राजा नल के पास पहुचा। राजा नल ने अपने सम्ब धी को बडे स्नेह से विदा किया।

राजा नल नरवलगढ लौट आया। उसने सब लोगो पर ढोला के विवाह की बात प्रकट कर दी। *सभी लाग वडे प्रसन्न हुए। इसी प्रकार दिन पर दिन वय गुजर गये।* ढोला 16 वप का हो गया—

साल्हकु वर आयो हिमैं जोबन मे भरपूर।
राजा मन मे जाणियौ, पिंगल हुई जहर।।
मत कोई जाणा वजयो मारवणि विरवत।
भु य अलगी नै भुच नर थल न भरट अनत।।

इस प्रकार राजा ने लोगो को मना कर दिया कि ढोला से मारवणी के साथ हुए उसके विवाह की चर्चा कोई न करे। क्योकि राजा नल ढोला का विवाह मालवा क राजा की क*न्या से करना चाहता था। इसी सम्ब ध म राजा नल ने अपने प्रधान* को मालवा के राजा भीमसेन के पास भेजा। प्रधान ने राजा भीमसन से निवेदन किया कि राजा नल आपकी पुत्री को अपनी पुत्रवधू बनाना चाहते ह। भीमसेन इस प्रस्ताव को सुनकर अत्य त प्रसन्न हुआ। शुभ मुहूत म ढोला और मालवणी का विवाह सम्पन्न हुआ। राजा नल अपने पुत्र को ब्याह कर नरवलगढ लौट आया। मालवणी अति चतुर स्त्री थी अत उसने ढोला का मन मोह लिया—

सोलज बरसा मालवि कतज बरसा बीस।
जोडी इसडी तो मिलै, जा तूठे जगदीस।।
हसै विकसै मालवी अरगल लावै कत।
ढोलो मोहित अति घणे दाडिया जेहा दत।।

मालवणी को अपने पति के प्रेम पर बडा गव था। उस यह भी शक हो चला था कि उसके *भी मारवणी नाम की पत्नी है। इसलिए उसने* अपने रूप सौन्दय और प्रेम के पाश म ढोला को जकड रखा था। अपने पुत्र को बहू के वशीभूत देख कर मालवणी की सास अत्यधिक नाराज थी। एक दिन जब वह अपनी सास क पगा लागने गई तब सास ने उसे झिडक दिया, मुह से नही बोली

और अपनी नाराजगी प्रकट करती । सास ने सखिया से वहा मेरी बडी बहू मारवणी का परिचय ढोला को नही है इसीलिए यह इतना घमण्ड करती है । मै अपनी बसी बहू को बुलाऊगी तभी इसका सारा नशा उतरेगा ।

गरव गहेली मालवण कहिया कोहक बाल ।
मारवणि अळगी हुई तव मोहुया त ढोल ।।

मालवणी ने जब अपनी सास की योजना के विषय म सुना तो बडी चिंतित हुई अत उसने एक दिन ढोला को प्रसन्न करके चारो दिशाओ की चाबियो उसे साप दी । इस पर मालवणी ने चारो दिशाओ म अपने खास आदमी नियुक्त करके आदेश दिया कि कोई भी बाहर का व्यक्ति नरवलगढ म प्रवेश करे तो उसकी पूरी छानबीन करके अन्दर आने दो । यदि वह पूगलगढ से मारवणी का सन्देश लेकर आवे तो उसको स दश जना दिया जाय और उसे मार दिया जाय । इसमे किसी ने भी यदि तनिक सी भी ढील की तो उसे मृत्युदण्ड दिया जायगा । इस प्रकार बाहर से आने वाले व्यक्ति से निश्चित होकर मालवणी ढोला को रिझाने म ही पूरी शक्ति लगाती रही ।

एक बार एक सौदागर जिसने नरवलगढ के राजकुमार ढोला को भी अनेक घोडे बेचे थे पूगलगढ म आया । राजा पिंगल ने उससे घोडे खरीदे उसका मान सम्मान किया । बातो के प्रसग म मारवणी की चर्चा भी आई । सौदागर ने एक बाग मे अपने डेरे लगाये । एक दिन खलते खलते मारवणी उसी बाग म आ निकली । उसने देवागना जसी मारवणी को कहा —

सुन्दर साहा सुन्दरी अहर आलता रग ।
कहर लकी खीण कट कामल नेत्र कुरग ।।

सौदागर ने सखिया म पूछा यह राजकुमारी कौन है ? इसका पीहर और ससुराल कहा है ? सखिया ने बताया कि यह पिंगल राजा की पुत्री मारवणी है बचपन म ही इसका विवाह नरवलगढ के राजकुमार ढोला के साथ कर दिया गया था । सौदागर ने जब ढोला और मारवणी का सम्बध समझा तब उसने कहा कि मैं नरवलगढ म भी घोडे बेचकर ही आया हू । राजकुमार ढोला ने मुझ से अनेक घोडे खरीदे है । ढोला का विवाह तो मालवे की राजकुमारी मालवणी के साथ हो चुका है तथा मालवणी के प्रेम म वह पूरी तरह डूबा हुआ है । उसे तो यह भी ज्ञान नहीं है कि मारवणी उसकी पहली पत्नी है । मालवणी ने शहर के चारो दरवाजो और मार्गों पर अपने पीहर के आदमी रक्षक के रूप मे नियुक्त कर रखे हैं । पूगल का कोई भी व्यक्ति उधर जाता है तो उसे वहा मार दिया जाता है । यह बात वहीं पास म खडा राजा का एक खास सेवक सुन रहा था । उसने राजा को जाकर सारा समाचार सुनाया । सौदागर को बुलाकर राजा ने सभी बातो की जानकारी उससे पुन प्राप्त की । सौदागर ने बताया कि ढोला बडा दातार है और कामदेव का अवतार है । आपकी बेटी पदिमनी है । राजा के मन म यह सुनकर चिंता व्याप्त हो गई ।

मारवणी ने अपने का ढोला की पत्नी की बात सुनी तब तन मन म विरह व्याप्त हो गया। उसका रोम-राम ढोला स मिलन के लिए आतुर हो उठा। स्वप्न म ढोला के दशन करक वह चौंक चौंक पडती कि तु जागन पर प्रत्येक बार निराशा ही उसक हाथ लगती।

जाणू हू हिवड हुवा मेंणी हुन्दा साथ।
जे सुपनो साचो हुव, तो पालू गळ बाथ॥

जद जागू तद एकली जद सोऊ तब सत।
सुपना मौन छेतरी, बीवो तीजो हेल॥

सुपना म सज्जण मिल्या, म भर घाली बत्थ।
नीद गई पिउ बीछडया जागत पटकू हत्थ॥
जब सोऊ तब जागय जद जागू तद जाय।
मारू ढोलो समर, इण इण रयण विहाय॥

उसका विरह विलाप दिग्दिगन्त म व्याप्त होन लगा। सखियों को चिन्ता हुई। उन्होंने मारवणी को बहुत समझाया किन्तु लगता था जसे उसके वश मे कुछ भी न था। एक एक पल मारवणी के लिए भारी हो रहा था। राजकुमारी की यह दशा सखिया ने देखी तो उन्होंने रानी तक यह समाचार पहुचाया। रानी ने अपने खास आदमी ढोला के पास समाचार देकर भेजे। वहां क पहरेदारों ने सब को मार डाला। जो गया वह लौटकर नहीं आया। रानी ने सखियों स कहा कि म क्या करू, ढोला को बुलाने के सारे प्रयास व्यथ हो गये हैं। ढोला तक सन्देश भी नहीं पहुच पाता है अत तुम मारवणी को समझा बुझा कर धैय धारण करने के लिए कहो। प्रकृति भी मानो मारवणी के विरह को बढ़ाने म लगी थी। पपीहा ने पिउ पिउ करके मारवणी के हृदय म छिपे प्रियतम के प्यार को और अधिक जगा दिया। कुरभा ने उसके हृदय म प्रेम का कम्पन कर दिया। पशु पक्षिया तक मारवणी के प्रमविह्वल हृदय का अपना सन्देश सुनाने पहुच गये। उसका विलाप अब सभी क लिये असह्य हो गया। राजा और रानी अपनी पुत्री के दुख से सतप्त थे। वे किसी न किसी युक्ति स नरवरगढ तक मारवणी का सन्देश पहुचा देना चाहते थे। इस बार राजा पिंगल ने अपने पुरोहित आमसेन को बुलाकर यह काम सौंपा कि किसी भी प्रकार वेष बदलकर तुम नरवलगढ पहुचो और राजा नल, रानी दमयन्ती तथा राजकुमार ढोला को हमारा सन्देश पहुचाओ। पुरोहित ने कहा मुझे अत्यन्त विश्वसनीय प्रमाण प्रदान कीजिये। राजा ने अपनी कलम स राजा नल का पत्र लिखा और मोहर लगाई। रानी न दमयन्ती रानी को लिखा कि हमने तो बेटी आपको सौंप दी है अब आप कुवर साहब को भेजो ताकि वे आकर मारवणी को ले जावें। मारवणी ने अपनी सखी को कुछ दोहे लिखकर दिय और कहा कि इन्हें पुरोहित को दे आओ और कहना कि य ढोला को उसका मिलने स

है इसलिए ढोला को ही जाकर देना—

ढाढी जे ढोलो मिले कहे अम्होरणी बात ।
चरण कणियर री भव ज्यू सूकी तोई सुरत ।।

जे ढोला न आवियो काजलिया री तीज ।
चमक मरेसी मारवी देख खिवती बीज ।।

बालम अेक हिलोर दे आइ सकइ तो आइ ।
बाहडियां वे थक्किया, काग उडाइ उडाइ ।।

पुरोहित ने ढाढी का वेष धारण कर नरवलगढ की ओर प्रस्थान किया । मार्ग मे मिलने वालो से वह यही कहता कि राजा नल बडा दातार है मैं उनको जाचने जा रहा हू । मार्ग म ऊहड सोलकी ने ढाढी को नरवलगढ का सारा भेद बताया और कहा कि नरवलगढ की सीमा पर मालवरणी ने चौकी बठा रखी है । मारवरणी के समाचार लान वाले को वहां पहुचत ही मौत के घाट उतार दिया जाता है । फिर भी ढाढी निराश नही हुआ वह अपन गन्त य की ओर आगे बढ गया ।

उधर मारवणी पूगल म बठी बठी दिन गिनती रही । ढोला की बाट जोहती रही । नित्य ही काग और मोर उडाती रही ।

कागा पिव न आवियो कियो बडेरो चित्त ।
लक्डी होयस दाय जली हू अकेल ही नित्त ।।
कागा जया पिव बस उडी तिहा चलि जाय ।
ले मारू की पासली ढोला देखत साय ।।

मारवणी इस प्रकार विलाप करती रही और ढाढी चलते चलते एक दिन नरवलगढ के दरवाजे पर आ पहुचा । ढाढी को देखते ही चौकीदार तीरकमान लेकर उसे मारने के लिए उठ बठ । वे उस पर घातक हमला करना चाहते थे कि एक बुजुग ने उ हे टोकत हुए कहा कि पहले इसकी छानबीन कर लो । ढाढी से कहा गया कि यदि तुम मारवणी का कोई स देशा लाये हो तो तुम्ह जि दा नही छोडा जायगा । ढाढी ने सफाई पश की कि मैं ता पिंगलगढ मारवणी और ढोला आदि किसी के सम्ब ध म कुछ नही जानता हू । उसकी भली प्रकार तलाशी ली गई । जब किसी भी प्रकार का कागज उसके पास नही मिला तो चौकीदारो ने मान सहित उस को वही रखा । शहर का पूरा समाचार ढाढी को बताया । दूसरे दिन ढाढी गढ की ओर रवाना हुआ । सामने आती हुई एक कुम्हारी मिली । ढाढी ने उसे मोहरें उपहार स्वरूप दी और कहा कि हमे रहने के लिए कोई अच्छा सा स्थान बताओ । कुम्हारी का घर दरबार के समीप ही था । यही ढाढी ने अपना डेरा लगाया ।

एक दिन कुम्हारी ने ढाढी से कहा कि कवर ढोला दरबार मे बठ हैं, मुजरा करन का यही उचित अवसर है । ढाढी अवसर का लाभ उठाकर दरबार मे पहुचा । मुजरा किया । कु वर ढोला न ढाढी से कहा कि कुछ सुनाओ । ढाढी

ने मारवणी का सन्देशा दोहों में सुनाया। ढाढी दर्द और मस्ती के साथ अपने दोहे सुना रहा था। सुनते सुनते आधी रात व्यतीत हो गई। ढोला ने ढाढी के आतिथ्य सत्कार की समुचित व्यवस्था की। फिर मतवाले मढो। ढोला मारवणी के विरह तप्त दोहों से अत्यन्त प्रभावित था। उसने ढाढी से पूछा कि यह ढोला मारवणी कौन हैं ? तब ढाढी ने कहा—

पूगल हुता आविया पूगल म्हांको वास।
पिंगल राजा तास घू मेल्या थाके पास॥
मारवणी पिंगल स घू अपछर र उणिहार।
बालपण परणी पछ, भूल न लीन्ही सार॥
सन्देसे ही घर मरया कई आगढा कई बार।
अवसिज लागा दीहडा सेही गिणइ गवार॥

इस पर ढोला ने ढाढी को हकीकत कहने को कहा। ढाढी ने कहा महाराज हकीकत कहने की मेरी हिम्मत नहीं है। आपके राव उमराव सभी इस बात को जानते हैं। इन्ही से पूछो। ढोला ने सभी से पूछा किन्तु मालवणी के भय से किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा और कहा भी तो केवल यही कहा कि इसी ढाढी से सब कुछ जान लीजिये। इस पर ढाढी ने पूगल नगर और राजा पिंगल तथा उसकी बेटी मारवणी के सम्बन्ध मे विस्तत चर्चा की और कहा मैं उन्ही का भेजा हुआ यहां आया हूं। ढाढी न मारवणी के रूप सौन्दय का वणन करते हुए कहा—

चदमुखी हसा गवणि कोमल दीरघ केस।
कचन वरणी कामणी वेगो आय मिलेस॥

हेकण जीहा किम कहूं मारू रूप अपार।
सकर तूठा पाइय उण उदार अवतार॥

जब ढोला ने मारवणी के रूप माधुय की अनुभूति की तो वह अत्यन्त पश्चात्ताप और उत्ताप से भर गया। ढाढी ने मारवणी के हाथ का पत्र भी ढोला को दिया। ढाढी ने मालवणी द्वारा स्थापित चौकी और शस्त्रधारी मनिको की नशसता का ब्यौरा देते हुए ढोला को कहा कि सकडा आदमी जो मारवणी का सन्देश लेकर आप तक पहुचने वाले थे व सब मालवणी द्वारा मरवा दिये गये। बडे प्रयत्न से और छल कपट का सहारा लेकर मैं यह सन्देश आप तक पहुचाने म समथ हुआ हू। ढोला ने कागज को बार बार छाती से लगाया और सन्देश को हृदयगम किया। मारवणी द्वारा घणी घणी मनुहार तथा उसका हृदयताप उस पत्र म अकित था। ढाढी ने राजा पिंगल द्वारा लिखित पत्र राजा नल और रानी दमयन्ती के पास पहुचा दिये। पत्र पढ़कर राजा रानी बडे प्रसन्न हुए।

ढोला के मन म मारवणी से मिलने की उत्कट अभिलाषा जागत हो गई। जब ढाढी विदा होने लगा तो कुवर ढोला ने उसे पूरी पोशाक सोने के हथियार, घोड़े और रुपये मोहरें प्रदान किये। ढाढी के आग्रह पर ढोला ने एक पत्र मारवणी

के नाम लिखा जिसमें कहा कि मैं बहुत शीघ्र ही तुम्हारे पास आऊंगा। मेरा जीव तुम्हारे ही पास है। अब तुम्हारे बिना पल पल युगों के समान व्यतीत हो रहे हैं। ढाढी ढोला का संदेश लेकर पूगलगढ़ की ओर प्रस्थान कर गया।

ढोला ढाढी को पहुंचा कर वापिस महलों में आया। उसने अपनी माँ से मारवणी के साथ हुए विवाह की सत्यता का पता लगाया। माता दमयन्ती ने अपने पुत्र की जिज्ञासा शांत करते हुए कहा कि बचपन में तुम्हारा विवाह राजा पिंगल की पुत्री मारवणी के साथ कर दिया गया था। तब ढोला ने अपनी माँ से निवेदन किया कि यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं पूगल जाऊं। माँ ने अपने पुत्र को सस्नेह स्वीकृति देते हुए कहा यदि तुम्हें तुम्हारी बहू मालवणी जाने दे तो अवश्य जाओ। माँ की व्यंग्यभरी वाणी से वह तिलमिला उठा। वह सीधा मालवणी के महल में आया। न उसने जूतियां उतारी और न प्रसन्न होकर वचन ही बोले। वह उदास होकर पलंग पर बैठा रहा। परोसा थाल भी उसने लौटा दिया। मालवणी स्वयं अपने पति के इस व्यवहार से खिन्न होकर आई और उदासी का कारण पूछने लगी। ढोला ने ढाढी के आगमन और मारवणी के पत्र का समाचार मालवणी को बताया। मालवणी बड़ी चतुर स्त्री थी। उसे इसका भान पहले ही हो चला था अतएव उसने कहा कंवरजी आप बड़े भोले हो। बचपन में एक दुष्ट ग्रह का दुर्योग टालने के लिए एक नीच घराने की लड़की से आपका विवाह कर दिया था। उसी के महल में आपको जाना हो तो आपकी मरजी अन्यथा और कोई आपकी पत्नी नहीं है। मेरी बात का विश्वास न हो तो अन्य लोगों से पूछ देखो। मालवणी ने पहले से ही कई लोगों को इस प्रकार समझा रखा था। सभी ने भयभीत होकर मालवणी के कथन को ही सत्य बताते हुए उक्त बात की पुष्टि की। फिर भी कुंवर को विश्वास नहीं हुआ। उसने एक धनवान पुरोहित श्रीकरण को पूगल जाकर सारे समाचार लेने के लिए भेजा।

पूगल पहुंचने पर राजा पिंगल ने पुरोहित का बड़ा सम्मान किया और आने का कारण पूछा। पुरोहित ने बताया कि मैं मारवणी के संबंध में सत्य का पता लगाने आया हूं। हमारे कुंवर ढोला का जीव मारवणी में ही बसता है। पुरोहित की बात सुनकर राजा अत्यन्त प्रसन्न हुआ। मारवणी ने पुरोहित के सम्मुख अपना दुःख और उपालम्भ व्यक्त किया। जब पुरोहित विदा होकर वापिस जाने लगा तब मारवणी अपने प्रिय के विरह में संतप्त हो मूर्च्छित हो गई। पुरोहित से मारवणी ने कहा—

> प्रोहित ढोलै मोकल्यो मारू कहै वचन्न।
> जोबन लहरां लय छ खोण मयो मो तन्न॥
>
> परणी बरसां डोढ री जोबन पहुंता आय।
> प्रोहित थासूं आखियो कीजो मालम जाय॥

संदेश लेकर तथा राजा पिंगल से विदा में पर्याप्त धन दौलत पाकर

पुरोहित दस दिन म नलवरगढ लौटा । पुरोहित न असमय जान कर उस समय (रात्रि म) महल म जाना उचित नही समझा । वह अपने घर आगया । राजकुमार ढोला भी इसी समय पुरोहित के घर म समाचार सुनने के लिए छिपकर आ बठा । पुरोहिताणी ने जब पूछा कि जिस काय के लिए तुम गये थे उसमे कितना सत्य है ? पुरोहित ने कहा—

हेकण जीहा किम कहू मारू वोत गुणेह ।
इद्र सेसजी गुण कहे थाह न लाभ तेह ॥

ढोला पुरोहित के मुह से यह प्रशसा सुनकर महलो म आगया । ढोला के सामन पुरोहित ने मारवणी का रूप चित्रण इस प्रकार किया—

चद वदनि मगलोचणी लखण बतीस विवेक ।
मारू जही अपछरा, इद्र तणै नहि एक ॥

फिर भी विभिन्न प्रकार से पुरोहित द्वारा मारवणी के सौदय का वणन सुनकर राजकुमार बहुत प्रसन्न हुआ । पुरोहित को विदा करके वह मालवणी के महल म पहुचा । वह इधर उधर की बातें करता रहा और फिर प्रसग लाकर अपनी रानी से कहने लगा— हे रानी । अगर तुम कहो तो मैं दिसावर जाऊ और वहा से तुम्हारे लिए सुदर सुदर आभूषण लाऊ । मालवणी राजकुमार के मन की बात समझ गइ । उसने राजकुमार को समझाया कि दिसावर जाना बनियो का काम है, आप का वहा जाना हमारे कुछ सम्मान के विरुद्ध है । ढोला ने इसी प्रकार से अनेक बहाने बनाय पर एक न चली । अत म ढोला ने विवश होकर अपना मत य प्रकट किया कि मैं मारवणी से मिलने जाऊगा । यह सुनते ही मालवणी के तन मन म आग लग गई । वह विरह की मारी खडी खडी मूच्छित होकर धरती पर गिर पडी । बडे यत्नो से उस होश म लाया गया । मालवणी ने व्याकुल होकर अपने पति को जाने से रोकते हुए कहा—

दाडम अवा मेल कर चाख काचर बोर ।
कत न जावो उण दिस, दस दई को चोर ॥

ग्रीष्म ऋतु सिर पर थी अत मालवणी ने ग्रीष्म की भयानकता लू धूप आंधी आदि का भय बताते हुए उसे रोक लिया । कुमार ढोला ने भी गह कलह को टालने के लिए दो महीने क लिए अपना निश्चय स्थगित कर दिया । फिर जब वर्षा ऋतु आई तब ढोला ने अपना निश्चय फिर दोहराया—

पग पग पाणी पथ सिर गडडी बादल छाह ।
पावस आयो पदमणी कहो त पूगल जाह ॥

इस पर मालवणी ने चित्ताकषक वणन करते हुए कहा—

सावण आयो साहिबा, पगे बिलू बी गार ।
अब्ध बिलू बी बेलडया नरा बिलू बी नार ॥

इस पर ढोला ने कहा—

आज धरा दिस ऊनम्यो, कालो घड सि

वा धण ऐसी म्रोलमा कर कर नांबी बांह ।।

इस पर मालवणी न ढोला को दशहरा तक रुकने का आग्रह किया —

ढोला न हुय उतावळो मिलस दई क लख ।
म्हांरी कहियौ जा करो दसराहा लग देख ।।

दशहरा भी चला गया । सर्दी की ऋतु आ गई । ढोला ने पुन जाने की बात की तो मालवणी पुन कह उठी

सियाळ तो सी पड, ऊन्हाळ लू वाह ।
बरसाळ भु इ चीकणी चालण रितु न काह ।।

इस प्रकार मालवणी ने प्रत्यक ऋतु को राजकुमार के लिए निषिद्ध कर दिया । कुमार ढोला का मन मारवणी मे रम चुका था । उसका मन कराहता था आंखें आसुओ स भरी रहती थी किन्तु मालवणी उसे हिलने नही द रही थी । अ त म मालवणी न यह शत रखी कि जब तक जागू तुम मेरे पास ही बने रहो मैं जब सो जाऊ तब तुम उठ कर मारवणी के नगर को प्रस्थान कर जाना । राजकुमार को यह बात अच्छी लगी । वह प्रतीक्षा करने लगा मालवणी के सोने की ।

राजकुमार ने रबारी को ऊट सज्जित करने के लिए कहा ।

ढोला की आतुरता इन शब्दो म प्रकट हुई—

किण गल घालू घूघरा किण मुख वाहू लज्ज ।
कवण भलेरो करहलो मू भ मिलाव अज्ज ।।

ढोला एक ऊट का वाध कर महल म चला गया । पीछे से मालवणी ने ऊट से कहा हे ऊट ! तू किसी प्रकार लगडा हो जा जिससे मेरा ढोला परदेश न जा सके । उसने ऊट को अपना भाई बनाकर यह वचन ले लिया कि वह ढोला को परदेश ल जाने म नाना प्रकार के बहाने बनायेगा । इतनी निश्चितता के पश्चात् मालवणी भी अपने महल म चली गई । पन्द्रह दिन तक मालवणी जागती रही । वह नीद को टालती रही । राजकुमार भी वचनो से बधा हुआ था । सोलहवें दिन राजकुमार स्वय सोने का बहाना करके सो गया । मालवणी ने भी कुमार को सोया जान कर थोडी देर नीद ले लेना उचित समझा । थोडी ही देर मे मालवणी गहरी नीद मे सो गई । राजकुमार चुपके से उठा । उसने ऊट को जकारा । ऊट गिडगिडा उठा । उसने ऊट से अनुनय किया कि वह आवाज कर मालवणी को न जगाये । यदि वह जाग गई तो मेरा जाना रुक जायगा । ढोला ऊट पर चढकर आधी रात को ही वहा से प्रस्थान कर गया । ऊट की आवाज सुनकर मालवणी चौंक उठी । उसने देखा कि ढोला सेज पर नही है । उसका हृदय कुहुक उठा । उसने विलापते हुए कहा—

ढोलो चाल्यौ हे सखी बाज्या विरह निसाण ।
हाथे चूडी खिस पडी ढोला हुआ सधाण ।।

सज्जण हाल्या हे सखी बड री डाहळ मोड ।
हियौ कळेजो काळजो तीनू लेग्या तोड ।।

हृद र जीव निलज्ज तू, निकस्यो जात न तोहि।
प्रिय बिछुड़त निकस्यौ नहीं, रह्यौ लजावण मोहि ।।

मालवणी अभी भी ढोला को वापिस बुलाने के प्रयत्न करने म लगी हुई थी। उसने तोते का ढोलाजी के पास स देश देकर भेजा—

सूवा एक सदसड़ो, वार सरसी तूझ।
प्रीतम पासे जायन मुई सुणाई मूझ ।।

तोते ने ढोला को माग म ही मालवणी का मृत्यु स देह सुनाया। ढोला वस्तुस्थिति को समझ रहा था। उसने तोते से इतना ही कहा—

वाल्हा माणस वाछड्या, मुवो न मुणिया काय।
सालर केरा रूख ज्यू, झर भुर पीजर हाय ।।

और यदि मालवणी सचमुच ही मर गई है तो—

रस मरण चम्पण मरण अगर, तेल सुगधी लेह।
गुण याहराई मानस्या मालवणी दागेह ।।

इस प्रकार कुमार को अडिग आस्था जानकर सुआ लौट आया। उसन मालवणी को समाचार सुनाते हुए कहा कि रात म वह बड़ा तेज गति से आगे बढ रहा था। एक बनिया ढोला को रोककर कागज लिखना चाहता था और चाहता था कि ढोला उसे लिखे हुए कागज को साठ कोस दूर एक शहर म पहुचाता जाय। ढोला ने बनिय को ऊट पर बठाया और कहा कि मुझे एक पल भी रुकने की फुरसत नहीं है तुम ऊट पर बठे-बठे ही पत्र लिखलो और लिखकर मुझे ददना और ऊट स उतर जाना। पत्र समाप्त होत होते ढोला उसी शहर म पहुच गया जहा वह पत्र पहुचना था। बनिया यह देखकर हर्षित तो हुआ लेकिन आश्चय अधिक हुआ।

इधर ढोला पुष्कर के तालाब की सीमा तक पहुच गया था। आगे चलकर उसने तोरण स्तभ देखकर पूछा ये किसके तोरण हैं। लोगो न बताया यहा ढोला और मारवणी का विवाह हुआ था। ढोला नरवरगढ़ क राजा नल का पुत्र था और मारवणी पूगल क राजा की राजकुमारी था। ढोला मारवणी के साथ हुए अपने विवाह की स्मृति चिह्न को देखकर अत्यधिक प्रसन्न हुआ। ढोला वहा से और भी तेजी के साथ पूगल की ओर चला। ऊट थकने लगा। माग म एक गडरिया मिल गया था। ढोला ने उससे पूगल का रास्ता पूछा और कहा कि पूगल मेरा ससुराल है। मारवणी मरी पत्नी है। मैं उन्ही के पास जा रहा हू। गडरिये ने इस पर बताया कि मारवणी तो उसके साथ भेड बकरिया चराया करती थी। यह सुनकर ढोला का हृदय खण्ड खण्ड होने लगा। वह वापिस मुडन हो को था कि एक भाट आकर उससे परिचय पूछने लगा। ढोला न उसे भी अपना गन्तव्य और मन्तव्य दोनो ही बताया। भाट न मारवणी के सम्ब ध मे बताया—

ढोला माडो आवियो, गह बालापण वश।
अब धण होई सोरड़ी, जाए कहा करेस ।।

यह सुनकर ढोला का मन और भी बठ गया। जब वह चिंतित अवस्था म था तभी

एक रवारिन ने उसे पथ बधाया कि शत्रुग्रों की बातों में न ग्रामो। ढोला का धाडा ढाड़स बधा ग्रौर वह वहां से मारी पगों के साथ चल पड़ा। रास्ते में एक बारहठ मिला। उसने मारवणी के शील का वर्णन करते हुए कहा—

गति गगा मति गोमती गीता सील सुभाय।
महिला सरहर मारवी ग्रवर न दूजी काय।।

मारू घूघट विठू मह जता सहित पुलिंद।
कीर भमर कोकिल कमल चद मयद गयद।।

ग्रहर पयाहर दुइ नयण मीठा जहा मरूख।
ढोला ग्रहो मारवी जाण मीठी दरख।।

इस प्रकार मारवणी की प्रशसा करते हुए बारहठ ने कहा—ग्राप शीघ्र ही पूगल पधारो। ढोला ने पुरस्कार में मोहरें देकर बारहठ से विदा ली। इधर बारहठ ढोला के ग्राने की बधाई लेकर पूगल पहुच गया। राजा रानी बड़े प्रसन्न हुए। इसी समय ढाढी भी पूगल पहुच चुके थे। उन्होंने भी राजा रानी को नल राजा का पत्र दिया ग्रौर मारवणी को ढोला का लिखा हुग्रा कागद भी दिया। तभी मारवणी ने कहा—

कागलिया भल मोकळो मोल मुहुगा लहू।
ग्रक्खर भीज ग्रासुवा नण न वाचण देह।।

समाणी चारणी ने मारू को धीरज बधाया। इसी समय ढोला भी पूगल पहुच गया था। ढोला मारवणी को पहचानता नही था। मारवणी ग्रपनी सात बीसी सखिया के साथ बाग मे क्रीडा के लिए निकल पड़ी थी। इधर ढोला एक कुए पर ग्रपने ऊट को पानी पिला रहा था। ढोला बाग के पास ही था। ढोला ग्रौर मारवणी दोनो ग्रामने सामने थे किन्तु दोनों ही एक दूसरे से ग्रपरिचित थे। चारणी ने जब यह रहस्य खोला तो लाज के मारे मारू ग्रपनी सहेलियो मे घुस गई ग्रौर फिर उन्ही के साथ वह ग्रपने महल में चली गई।

ढोला ने बाग में ग्रपना डेरा लगाया। बागवान ने राजा को बधाई दी कि ढोलाजी ग्राये हैं। राजा पूरे लवाजमे के साथ ढोला का स्वागत करने के लिए ग्राये ग्रौर ग्रादरपूर्वक दरबार मे ले गये।

मारवणी को सोलह शृंगार कराये गये। शरीर पर चन्दन का विलेपन किया गया। केशों में मोती सारे गये। ढोला ने भी स्नान किया ग्रौर पोशाक बदली। ग्रपनी साला वाल्ह कवर से चतुराईपूर्ण विनोद किया। मारवणी ग्रपनी सहेलियों के साथ ग्रासमान से उतरी मोतियों की लड के समान हस की चाल से चली। उसने सर्वप्रथम ढोला के ऊट की निछरावल की।

करहा तू भल सिरजियो मल्यो साल्ह सुजाण।
नाहर कद न ग्रावतो, तू हिज कारण जाण।।

इसके पश्चात् मारवणी अपनी सखिया सहित ढाला क पास गई

साइ सज्जण आविया जाकी जाती वाट।
थाभा नाच घर हसैं, खेलण लागी खाट ॥

मारवणी ने ढाला से मुजरा किया। ढोला ने अत्यन्त सम्मान तथा प्रेम के साथ मारवणी को पलग पर बिठाया। आमने सामने उनकी दृष्टिया एक दूसरे से बध गइ।

ढोल जाण्यो बीजळी मारू जाण्यो मह।
च्यार आख अक्ट हुई सणा बध्या सनेह ॥

कठ विलग्गी मारवी, करि क्चूवा दूर।
चकवी मन आणद हुवो, किरण पसारघा सूर ॥

ढोला और मारवणी एक दूसर के प्रेम म डूबते गय। बहुत दिनो बाद ढोला न राजा पिंगल स निवेदन किया कि अब हम विदा कीजिये। राजा ने रुकने का आग्रह भी किया लेकिन ढोला तुरत जान पर ही बल देता रहा। राजा ने ढोला की बात मान कर पहुचान की व्यवस्था करन लगे। व्यवस्था म समय लगना था। राजा ने ढोला को दो दिन ठहरने को कहा। ढोला ने कहा हमारे लिए रथ की कोई आवश्यकता नहा है हम ऊट पर चढ कर ठठ पहुच जायेंगे। राजा ने समझाया कि रास्ते म ऊमर सूमरा आपका शत्रु पडता है इसलिए अकेले मत जाओ। ढोला न राजा की बात मानली। सौ असवार और अनेक सहेलिया क साथ ढोला मारवणी ने प्रस्थान किया।

जब ऊमर सूमरा का ढोला के प्रस्थानगी की खबर लगी ता ढाला को मार कर मारवणी को छीन लने के लिए उसने माग रोक लिया।

माग मे ढोला और मारवणी परस्पर बातें कर रहे थे। ढोला ने पूछा तुम इतन दिन कसे रही ? मारवणी ने उत्तर दिया—बहुत दिनो तक आपकी खबर ही न लगी। जितने भी आदमी मैंने भेजे वे मार डाले गय। ढोला ने भी कहा तुम्हारे बिना एक एक पल बरस की तरह बीता। इसी प्रकार बातें करते-करते मारवणी और ढाला को नीद आगइ। उसके शरीर से कस्तूरी की सुगन्ध निकल रही थी। उस स्थान पर पीवणे साप बहुत बडी सख्या म थे। उसी रात पीवणा साप मारवणी का सास पी गया। मारवणी निर्जीव हो गई। प्रात जब ढोला न मारवणी को जगाने का प्रयास किया तो वह जागी नही। मारवणी का मरी हुई देख ढाला बहुत दुखी हुआ। मारवणी की मृत्यु पर वह विलाप करने लगा।

निसि भर सूती सुदरी वालम कठ विलग्गि।
मोहण वली मारवी पीधी नाग भुयग्गि ॥
मारू मारू कनइया ऊज्ळ न्ती नार।
हस न दे हुकारडी हिवडो फूटणहार ॥

ढोला के विलाप को सुन कर मारवणी की सखियो ने उस धीरज बधाने

का ¯यथ प्रयास किया। मारवणी की छोटी बहिन चम्पावती से उसका विवाह पुन कर देने का भी वचन दिया कि तु उस तो मारवणी के बिना ससार सूना दिखाई दे रहा था। इसी समय शकर और पावती उधर से निकले। जब उ होने सुना कि ढोला स्वय मारवणी के साथ जलने को तयार है तो पावती ने शकर से कहा—

सकर सू गवरी कहै प्रीत मिळ किए पाडि।
जो स्वामी कहियो करे, तो मारवणि जीवाडि॥

पावती के अत्यधिक आग्रह और जिद्द को देखकर शिवजी ने अमत छिडक कर मारवणी को पुन जीवित कर दिया। ढोला को लगा—

हुई सचेती मारवी ढोले मन आणद।
जाण अधारी रमण म प्रगट्यो पूनमि च¯॥

शकर पावती अ तर्धान हो गये। मारवणी को पीवणा साप की बात का भी पता लगा और फिर सभी लागो ने वहा स आगे चलन के लिए प्रस्थान किया।

ऊमर सूमरा न माग रोक रखा था। मारू ने जब उसे सदल बल देखा तो ढोला से कहा प्रिय य भल नही है इनसे टल कर निकलना ही श्रेयस्कर है। ये अपन शत्रु है।

ढोला भी वीर था। वह टलने का कायरता समझता था अत उसी माग बढ़ता रहा। सामने से ऊमर सूमरा आगया। उसने छल किया और कवर ढोला से मीठी वाणी म कहा आइये राजकुमार घडी भर विश्राम करो साथ साथ अमल पानी करें। ऊमर सूमरा की छलपूण मनुहार क भास म ढोला आगया। उसने ऊट मारवणी को सौंपा और स्वय ऊमर सूमरा के साथ महफिल म चला गया। ऊमर सूमरा ढोला को बाता म लगाने का जाल रचने लगा। उसने ढोला मारवणी एव उसके ऊट की प्रशसा की। मारवणी के पीहर की डूमणी इस बात को समझ गई कि तु उसन सोचा क्या करें ऊट का पर (गोडा) बधा हुआ है उसने कहा।

गीत गावती डूमणी खली नवली घात।
करहा ढालो ऊबर कहि समझाऊ बात॥

मारवणी तू अति चतुर हिय जु चेत गिमार।
ल क्ता सू कामडौ करहै कावे मार॥

मारवणी समझ गई। उसन ऊट का सटकारा। ऊट तीन पावो स भागने लगा। ऊमर सूमरा ने अपने सरदारो से कहा ऊट का जाने मत देना। यह सुन कर राजपूत दौड पडे। मारू न कहा यह ऊट आप लोगो की पकड मे नही आयेगा। इसके स्वामी को बुलादो वे बिसास कर इसे पकड लेंगे। ऊमर सूमरा ने ढोला से कहा आप ऊट को पकड कर शीघ्र वापिस पधारो। ढोला ने बिसास कर ऊट को पकडा तब मारवणी ने कहा—

तत खिण मारवणी कहै, साभळि कथ सुजाण ।
आपा चूको ऊमरो वयू रवम्न आपाण ।।

यह आख खोलने वाली वाणी सुन कर ढाला ऊट पर सवार हो गया। उसने मारवणी की अमृत भरी आखो म देखा जिससे उसकी अमल उतर गई। मारवणी ने ढोला से कहा ऊट को तेज दौडाओ। ढोला ने ऊट को सटकारा। ऊट तीन पावो से ही हवा से बातें करने लगा। यह देख ऊमर सूमरा अपने सरदारो सहित ढोला के पीछे दौडा पर पकड नही पाया।

हल हलो ऊमर कहै, पथी पडै पयाण।
जा झाले तिण लाख द्यू करहा ने केकांण ।।

ऊमर सूमरा और ढोला के बीच म अब पर्याप्त अन्तर पड गया था। मार्ग म एक चारण मिला। उसन ढाला से कहा ठाकुर ऊट का गोडा बधा है और उस पर आप दो असवार चढे हैं ऊट से एसी कौनसी चूक हुई है। ढोला ने चारण से कहा कि ऊट के गाडे से बधी रस्सी का काट दो और वह रस्सी ऊमर सूमरा को दिखा देना और कह देना कि तीन पावो से उस ऊट ने कठिन घडिया काट दी हैं। अब तो उसके चारा पर जमीन पर उडने लगे हैं। ढोला का ऊट हवा म तरने लगा।

दूसरे दिन जब चारण को ऊमर सूमरा मिला ता उसने कहा—

ऊमर सुण मुझ बीनती दउडि न मार तुरग।
करह लवियो कूटियो आडावला बड वग ।।

यह सुनकर ऊमर सूमरा निराश हो अपने घर चला गया।

ढोला नलवरगढ पहुच गया। उसने बाग मे अपना डेरा लगाया। बागवान ने बधाई सन्देश राजा नल के पास पहुचाया। राजा ने बागवान को इस शुभ सन्देश के प्रतिफल बहुत-सा धन पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया। बाग मे उत्सव का आयोजन किया गया। रानी दमयन्ती ने मुख दिखाई मे बहू मारवणी को दस गाव दिये। मारवणी को देखकर राजा दरबार और सभी लोग प्रसन्न हुए।

शुभ मुहूत मे राजकुमार ढोला घोडे पर चढ़कर राजमहल मे प्रवेश के लिए चला। सहेलिया मगल गा रही थी। डूमणिया बधावा गा रही थी। बत्तीसा प्रकार के वाद्य यत्र बज रहे थे। नृत्य और अभिनय का निराला ही आनन्द था। इस प्रकार के स्वागत के बाद ढोला गढ मे पहुचा। वह राजा नल के चरणो मे प्रणाम के लिए झुक गया। राजा ने अति प्रसन्न हाकर राजकुमार का उसके महलो मे राज दरबार मे निछरावल एव मुजरा हुआ। सबको विदा करके ढोला अपने महलों मे आया। इसी समय मारवणी ने महल मे प्रवेश किया। थोडी देर बाद मालवणी भी शृगार करक महल मे आई। तीनो ही झूले पर बठ गये।

मारवीण नैं मालवणि ढोलो तिण भरतार।
एकण मदिर रग रम दी जोडी करतार ।।

मालवणी ने ढोला से माग के समाचार पूछे। ढोला

चारण ऊमर सूमरा आदि सभी प्रसगो को बताया । ढोला ने पूगल और वहा के राजा पिंगल तथा रानी ऊमादे की बडी प्रशसा की, तभी मालवणी ने कहा—

ततखण मालवणी कहै साभळ मत सुरग ।
सगळा देस सुहामणा मारू दस विरग ।।
बाळू बाबा देसडो पाणी सदी ताति ।
पांणी कर कारण पी छड अधराति ।।
जिण भुइ पन्नग पीयण कांट कटाळा रूख ।
आके फोग छाहडी तू छा भाज भूख ।।

यह सुनकर मारवणी ने कहा—

बळती मारवणी कहै मारू देस सुरग ।
बीजा तो सगळा भला, मालव देस विरग ।।
बाळू बाबा देसडो जह पाणी सेवार ।
ना पणिहारी भूलर ना कूव लकार ।।
बाळू बाबा देसडो जह फीकरिया लोग ।
अेक न दीस गोरिया, घरि घरि दीस सोग ।।

इस पर ढोला ने कहा—

मारू देस उपन्निया त्याका दत सुसेत ।
कूझ बची गौरगिया खजर जहा नत ।।
सुणि सुदर केता कहा मारू देस बखाण ।
मारवणी मिळिया पछ जाण्यो जनम प्रवाण ।।

इस प्रकार मारवणी और मालवाणी का बखान करके ढोला ने झगडा शा त किया । फिर भी मालवणी हसी मजाक करती रही । ढोला अपनी दो ो रानियो से बातें करता रहा । ढोला का मारवणी के प्रति बडा प्रेम था । सहेलिया ने मारवणी को बाग दिखाने का कायक्रम बनाया । राजलोक एकत्रित हुआ । राजलोक कहने लगा—

मारू तू तो मोहणी सह सिणगार सपूर ।
महिला माहि उजासडो जाण ऊगो सूर ।।

महल मे जब मारवणी ढोला से पुन मिली तब ढोला ने कहा—

मारू महला सचरी कनक वरण तास ।
पूगळ माहै आपणो, नरवर हुवो उजास ।।

मारवणी को ढोला अत्यधिक प्यार करता है फिर भी मारवणी सास ससुर के कहने म ही रहती है ।

राजा पिंगल ने दहेज भेजा । उसका प्रधान दहेज लेकर नलवरगढ़ आया । मारवणी के लिए सोना चादी मोती और जवाहरात जडित गहना सहेलियो के लिए कीमती वेस वस्त्र और आभूषण । राजा नल और ढोला ने प्रधान का बडे चाव से आतिथ्य किया ।

प्राणद पणा उछाह प्रति, नलवर वाज्या ढोल ।
ससनेही सयणा तणां कलि मे रहिया बोल ।।

ढोला और मारवणी ने प्रानंद और उत्साह के साथ जीवन यापन किया । यह प्रेम कथा युगा युगा तक जन जीवन म अमर रहेगी । इस कथा को सुनकर सभी प्रसन्न रहते हैं ।

जलाल-बूबना

राजस्थानी लोक गाथाओ मे मुसलमानो म हुए ऐसे प्रेमियो को भी विशिष्ट स्थान दिया गया है जो अपने प्रेम के लिए बडी बडी बाधाओ को दूर करते है तथा अपने परिवार वालो का विरोध सहते हैं। यद्यपि यह कथा भारतीय दृष्टिकोण से दूर परकीया प्रेम पर आधारित है फिर भी प्रम क निमल स्वरूप प्रमी प्रेमिका के अथक साहस तथा मिलन की सूझ-बूझ के कारण जलाल बूबना की गाथा राजस्थान की एक विशेष जाति के द्वारा गाई जाती है। इस गाथा का प्रचार हिदुओ के घरो म इतनी गहराई तक पठ गया है कि स्त्रियो द्वारा गाये जाने वाले कई लोकगीतो म भी जलाल का नाम लिया जाता है। यथा— म्हे तो थारा डेरा निरखण आया हा म्हारी जोडी रा जलाल'

बलख के बादशाह कुलनहसीब की जब मत्यु हुई ता उसके दो पुत्रो को लेकर उसकी पत्नी गाहणी अपन भाई मृगतमायची के यहा चली आई। मृगतमायची यटामखर का बादशाह था। गाहणी ने अपने भाई को बलख का सारा वत्तात कह सुनाया। वह रो रा कर कह रही थी कि भोमियो ने कुलनहसीब के मरते ही उसका सारा राज्य दबा लिया, मैं अत्यन्त कठिनाई से अपने इन दोनो पुत्रो को लेकर यहां तक आ सकी हू। तुम मेरे भाई हो। ऐसे कठिन समय मे तुम्हारे अतिरिक्त और कौन मुझे सहारा देगा। मगतमायची बहिन की करुण गाथा को सुन बडा द्रवित हुआ। उसे वसे ही अपनी बहिन स बहुत अधिक स्नेह था। किन्तु अब उसके दु खो का देखकर वह आत्मीयता से भर गया। उसने अपन भानजा का बड लाड-प्यार स पालना प्रारम्भ किया।

दोना लडको म जलाल का व्यक्तित्व अधिक उभरता हुआ था। जो भी उसे दखता रीझ जाता। सभी उसकी वार्ता और कायकलापो की प्रशसा करते। मामा न अपनी बहिन और भानजा की सुख सुविधा का समुचित प्रब ध कर दिया था। दोना लडके घुडसवारी अस्त्र शस्त्र-सचालन राज-व्यवस्था तथा अन्य सामा य ज्ञान म प्रवीण होत गये। मौलवी मुल्लाओ न मगतमायची के सामने जलाल की गुण ग्राहिता की तारीफ क पुल बाध दिय। वे दिन दून और रात चौगुने बढ़ने लगे। जलाल के मन म अपनी शक्ति का स्वतन्त्रतापूवक पूण उपयोग करने की इच्छा उत्पन्न हुई। वह चाहता था कि मरी प्रतिष्ठा सवत्र व्याप्त हो। मेरे बल शौय रूप और विद्या की सवत्र दुदुभि बज उठ। इसके लिए स्वतन्त्र अस्तित्व की आवश्यकता थी। महत्त्वाकांक्षी जलाल अपने स्व की प्रतिष्ठा के लिए दिन रात एक करने लगा। एक दिन उसने अपने मामा स निवेदन किया कि मैं स्वय बलख हुल्के के बादशाह का पुत्र हू इसलिए आप के समान ही मेरी भी प्रतिष्ठा होनी चाहिए।

इस समय जलाल हथियार बाध हुए था। खवास न समझा कि जलाल बादशाह पर ग्राक्रमण करने के लिए ग्राया है इसलिए उसने बादशाह और जलाल के बीच अपनी तलवार खडी कर दी। बादशाह ने जलाल से पूछा कि बराबरी की बात से तुम्हारा ग्रभिप्राय क्या है। जलाल न सिर ऊचा करके निर्भयता से कहा कि मामा! आपने हम पाल-पोस कर बडा किया है अब हम कर गुजरने क काबिल हो गय हैं। मैं वीर हू और जहा भी जाता हू वहा तक अपने शौय का प्रदशन करके अपने लिए उपयुक्त स्थान बना लेता हू। इसलिए मैं अपने भाग्य परीक्षण क लिए परदेश जाना चाहता हू। मैं मेरे पिता के समान स्वतन्त्र राज्य की स्थापना करना चाहता हूँ। मै यदि एसा कर पाया तो अपने भाग्य की सराहना करूगा। मगतमायची ने जलाल के विचारो की प्रशसा की और कहा कि तुम योग्य बाप की योग्य सन्तान हो। अगर तुम चाहो ता तुम्ह मैं इसी राज्य म तुम्हारी प्रतिष्ठा के योग्य पद और मनसब द सकता हू। किन्तु तुम्ह अपना फज बडी मुस्तदो स अजाम देना हागा। जलाल यही चाहता था कि उसे कुछ उत्तरदायित्व सौंपा जाय। वह बासो उछलने लगा। राजा न उसके लिए फरमान जारी कर दिया कि उस राजा के महल का मुख्य सरक्षक और दरबारी नियुक्त किया गया है। जलाल के लिए अलग महल नौकर-चाकर हाथी, घोड आदि की व्यवस्था कर दी गई। जलाल अपनी वीरता और विलासी तबियत के लिए प्रसिद्ध हो गया। एक ओर जहा वह अद्वितीय घुडसवार और तलवारबाज था, दूसरी ओर वह पुष्पो से लदा, इत्र म डूबा मस्त जिन्दगी भी बिताता था। आये दिन उसके घर महफिल सजती नतकिया नाच और मदमाते यौवन की कामुक भगिमाओ से उसका मनोरजन करती। साथियो म बठकर वह सुरा और सुन्दरी का सेवन करता। जिधर से जलाल निकल जाता, उधर ही एक मादक सुगन्ध की लहर दौड जाती। सुगन्ध से ही लोग जलाल की उपस्थिति भाप लते थ। वह मुक्त हस्त से अपन सौन्दय प्रसाधना एश्वय विलास और मित्रा की महफिलो पर धन खच करता था। वीर और शृगार का उसम अद्भुत सम्मिश्रण था।

थटाभखर की सीमाओ स लगा हुआ सिंध का राज था। सिंध म उस समय भवर नाम का राजा राज्य करता था। उसक मूमना और बूबना नाम की दो कन्याए थी। मूमना बडी और बूबना छोटी थी। छोटी लडकी बूबना रूप और बुद्धि दोनो ही दृष्टियो से सम्पन्न थी। उसके रूप की चर्चा हवाओ म थी। उसके रूप की धूप सभी दिशाओ म विकसित थी। जब ये दोनो बहिनें यौवन की पहली सीढ़ी पर चढने लगीं तो अनेक राजकुमारो बादशाहो तथा रसिक तरुणो ने इनका पाणिग्रहण करने के लिए बादशाह भवर के सामने प्रस्ताव भेजे। भवर दोनो बहिनो के लिए समान वर की तलाश म था। बूबना के लिए वह ऐसा वर चाहता था जो बूबना के समान सुन्दर तथा बूबना के सौदय की रक्षा करने म भी समथ हो। उसने अनेक लोगो स सलाह की। काजी ने सुभाया कि थटाभखर का बादशाह मगतमायची और उसका भानजा जलाल आपकी दोनो पुत्रियो के लिए सुयोग्य वर हैं।

यदि आप आज्ञा दें तो मैं नारियल भेंट करके यह सम्बन्ध तय कर आऊं। वायु मे भी जलाल मुगतमायची से छोटा था इसलिए उसने काजी को यह निर्देश दिया कि मूमना की सगाई मगतमायची के साथ तथा बूबना की जलाल के साथ निश्चित कर आना। काजी नारियल लेकर थटाभखर की ओर चल पड़ा।

बादशाह मुगतमायची ने जब यह सुना कि काजी भखर की दोनों लड़कियों के नारियल लेकर आया है तो उसका मन बूबना को प्राप्त करने के लिए मचल उठा किन्तु काजी ने बादशाह भखर के प्रस्ताव को बताया कि मूमना का नारियल आपके लिए तथा बूबना का जलाल के लिए है तो मुगतमायची का चेहरा फीका पड़ गया। मुगतमायची ने काजी को हीरों का हार उपहार में देकर मन्त्री के सामने यह व्यवस्था बदल दी। वह तो बूबना के रूप का साक्षी था। इसलिए बूबना के सौन्दर्य से अपने हरम की शोभा बढ़ाना चाहता था। बड़ा जलसा किया गया और उसमें काजी ने मूमना की जलाल से और बूबना की मुगतमायची के साथ सगाई का दस्तूर किया। लौटकर काजी ने बादशाह भखर से उस कपट फरेब की चर्चा न की। उसे राज कोप का डर था। विवाह के दिन नजदीक आने लगे। भखर ने मुगतमायची और जलाल की बारात लेकर सिंध आने का निमन्त्रण दिया। सिंध को सजाया गया। राजमहल में ध्वजा-पताका फहराने लगे। भवनों पर रंग रोगन किया गया। तोरण द्वार सजाये गये। निश्चित तिथि को जलाल बारात लेकर सिंध पहुंचा। मुगतमायची ने अपना खांडा शाही लवाजमे के साथ बूबना से ब्याह करने के लिए भेज दिया था। सिंध के लोगों ने जलाल और बारात का स्वागत किया। बारात में सात सौ अरबी घोड़े पांच सौ हाथी एक हजार ऊंट तथा पांच हजार रथों में बैठे दस हजार व्यक्ति थे। गाजे बाजे आतिशबाजी के साथ जलाल दूल्हा बना घोड़ी नचाता चल रहा था।

जलाल र सिर सेहरो बूबना सिर सिं दूर।
जाणै सिंध समुद्र में पदमगढ दो सूर॥

(राजस्थानी बात-संग्रह पृ ६७)

निकाह पढ़ने का समय आया। काजी और पंच इकट्ठे हुए। बूबना का विवाह बाराती लोग खाण्डे के साथ कराना चाह रहे थे कि बादशाह भखर असमंजस में पड़ गया, उसने कहा कि बूबना का नारियल जलाल के लिए भेजा गया था और मूमना का मगतमायची के लिए। इसलिए खाण्डे के साथ मूमना की निकाह पढ़ाई जाय। बारातियों ने इसका विरोध किया और कहा कि काजी ने बूबना का दस्तूर मगतमायची के लिए दिया था। काजी बुलाया गया। अब काजी ने अपना अपराध स्वीकार किया। बादशाह आग बबूला हो गया। काजी को साकलों से पिटवाया गया और देश से निष्कासित कर दिया गया। दुर्भाग्य की बात थी कि न चाहते हुए भी रिवाज के अनुसार बूबना का विवाह मगतमायची के खाण्डे के साथ और मूमना का जलाल के साथ कर दिया गया। सगाई की व्यवस्था सबको स्वीकार करनी पड़ी। बूबना मन ही मन जलाल को अपना हृदय दे चुकी थी। अब

यह परिवर्तन हुआ तो उसकी आशाओं का लहर मारता यौवन सागर दरक गया। फिर भी लाविक दृष्टि स मगतमायची के साथ ब्याही जाने पर भी बूबना न जलाल को ही अपना पति समझा। जलाल ने भी डाली म बठते समय जब बूबना के बिजली के समान चमकते हुए रूप सौंदय का देखा तो वह भी बूबना पर रीझ गया। वहा अनायास हो एक भारी निश्वास उसके हृदय से निकल पडा। बूबना और मूमना बारात के डेरे पर आई। माँ के आदेश से बूबना जलाल के आवास पर गई, क्योकि उसे वैवाहिक रश्म के अनुसार बडी बहिन के पति पर धन यौछावर (वार फेर) करना था। बूबना का अपने महल की ओर जाते देख जलाल ने कहा—

अटल माती सिर तिलक बणी अधिक बणाय।
जाणक हस मलफियो मान सरोवर माय॥

न जाणू तै क्या किया लाड गहेली मुज्झ।
नैणा नींद न जीव सुख, जद न देखू तुज्झ॥

इस पर बूबना ने जलाल को सान्त्वना देते हुए कहा कि भल ही मरा विवाह मगतमायची के खाण्डे के साथ कर दिया गया है किन्तु मेरा तन मन, यौवन सौंदय सब कुछ तुम्हारे लिए है। मेरे हृदय म एक मात्र तुम्हारा ही आसन है।

बेटी भवर साह री जवणी जचण माय।
परणी ही पताण की तन मन दियौ तुमाय॥

बूबना का अपने प्रति अगाढ प्रेम जान जलाल बडा प्रसन्न हुआ। बारात कई दिना तक स्वागत सत्कार मे मस्त रही। राजा भवर नित्य मनुहारें करके बारात का चलने से रोकता रहा। मूमना और बूबना रात को बारात के डेरे पर विश्राम करती। बूबना प्राय मूमना के कमरे म बठ कर चौपड खेलती रहती। दोनो के कक्ष सटे हुए थे। एक दिन मूमना और बूबना पासे खेल रही थी। जलाल बूबना को देखने के लिए लालायित हो उठा। वह अपनी बीवी मूमना स छिप कर ही बूबना के रूप का प्याला पीना चहता था। उसने अपनी कटार से कनात चीर दी। सयोग की बात थी कि बूबना की पीठ और मूमना की दृष्टि उस ओर थी। मूमना न जब जलाल का इस अवस्था म देखा तो द्वेष से जल गई। उसके हाथ स पासे गिर पडे फुफकारती हुई वह जीती बाजी छोड वहा से उठ कर बाहर चली गई। बूबना इस अप्रत्याशित परिवर्तन का न समझ सकी। उसने दासी स पूछा कि यह सब क्या हुआ? दासी ने बताया कि कनात चीर कर जलाल आप को निहार रहा था। उसी से नाराज होकर मूमना वहा से चली गई। बूबना जलाल के प्रेम मे डूबती गई। एक दिन बारात के भी विदा होने का समय आगया। दानो बहिनें अपने माता पिता से मिल कर पथक्-पथक डोली म बठ कर थटा नगर की ओर चल पडी। भवर ने अपार धन, सम्पति, हाथी, घाडे, पिंजस, पालकी, दास-

दासियां दहेज में दी। विश्राम करता हुआ धन लूटता हुआ जलाल बारात सहित पटामसर पहुंचा।

इधर मुगलमायची बूबना की प्रतीक्षा में पलक पावड़े बिछाये बैठा था। उसने अपने हरम में सुख सुविधा सम्पन्न एक नया महल बूबना के लिए सजाया। बूबना का रूप देख कर मुगलमायची अत्यन्त प्रसन्न हुआ। जितना सुना था उससे कहीं अधिक देख कर वह अपनी किस्मत की सराहना करने लगा। उसी हरम में सैकड़ों बेगमें थी। लेकिन चाँद का टुकड़ा यही था। बारी बारी से बादशाह सभी बेगमों के महलों में जाता था। प्रायः एक वर्ष में बेगम एक ही बार मुंह देख पाती थी। बूबना ने इन बेगमों की संख्या एक और बढ़ा दी। मुगलमायची ने अपने मुख्य संरक्षक जलाल को बूबना के महल का संरक्षण कार्य सौंपा। जलाल भी यही चाहता था। महल के सामने ही जलाल का दरीखाना था। जहां बैठ कर जलाल अमीर उमरावों के साथ बातचीत करता रहता था। उसकी दृष्टि हमेशा बूबना के महल की खिड़कियों और झरोखों में लगी रहती थी। सोचता था कि कभी तो ईद का चाँद निकलेगा ही।

लोचण प्यासे दीद के, निरखत नित का नित।
दरसण ही पावै नहीं मित मक ही चित।।

वह नित्य मुजरा करने के लिए महल के दरवाजे तक जाता। इस दरवाजे पर बूबना के पीहर का प्रधान पहरेदार पहरा देता था। वह बड़ा बुद्धिमान् और चतुर था। वह स्पर्शमात्र से चोर लुटेरा पाखण्डियों बदमाशों स्त्रियों पुरुषों को पहचान लेता था। महल में प्रवेश करने के पहले वह प्रत्येक व्यक्ति की जांच करता था। उस मध्य से बच कर उसकी आज्ञा बिना महल में कोई प्रवेश नहीं कर पाता था। जलाल दर्शनों की लालसा से नित्य महल को टकटकी लगाकर देखा करता था। बूबना भी अपने प्रेमी को देखने के लिए बेचैन रहती। वह भी किसी बहाने उसे देखना चाहती थी। जब वह किसी भी प्रकार जलाल की खोजबीन न कर सकी तो उसने अपनी एक दासी से पूछा कि क्या जलाल यहां कभी सलाम करने के लिए भी नहीं आता। दासी समझ गई। उसने बूबना पर शीतल जल छिड़कते हुए कहा कि जलाल रोज आपके दर्शनों के लिए द्वार पर आता है और निराश लौट जाता है। दिन भर अपने दरीखाने से आपके झरोखों को टकटकी लगाकर देखता रहता है। यह सुनकर बूबना के मन में जलाल के मिलन की उत्कंठा तीव्रतर होने लगी। वह बहाने की तलाश करने लगी।

एक दिन उसने बादशाह से निवेदन कराया कि मैं अपनी बहिन सूमना से मिलना चाहती हूं। मुझे आज्ञा दी जाय। महल के प्रधान संरक्षक तथा पहरेदारों को बादशाह ने हुक्म दिया कि बूबना को शाही व्यवस्था में सूमना के महलों में पहुंचाया जाय। जलाल ने दासी का वेश बनाया और अपनी दिलरूबा से साक्षात्कार किया। कई दिन से बिछुड़े दो हृदयों का मिलन हुआ। जलाल ने कहा —

आस परदा आज सां, मिलिया जोग दिखाय ।
हम भूखे तुझ नेह के, अबूडा ज चखाय ।।

यह सुनकर बूबना कहने लगी—

जलाल ग्रहडी ना कहो साची बात सुहाय ।
खेत धणी ना चाखिया पंछी क्हा चखाय ।।

यह सुनकर जलाल ने तपाक से कहा—

झूठी झूठ न बोलिय, साँची बात कहत ।
लडी पडी ज गत म, ढाढा ढोर चरत ।।

यह सुन बूबना ग्रदर ही ग्रदर सिमट गई । जलाल ने बूबना को बाहो म समेट गाढालिगन किया । बूबना का चुम्बन किया । ग्रन्दर ही ग्रन्दर दोना एक हो गये । विरह की ग्रग्नि शा त हुई । हँस हँस कर दूसरे को प्रेम-पाश म बांधते रहे । बाद म बूबना ग्रपनी बहिन मूमना से मिलने महल म गई । आपसी बातें होने लगीं । तभी मूमना ने बूबना स कहा कि जलाल के इत्र की खुशबू तुम्हारे ग्रदर ग्रा रही है । क्या रास्ते म जलाल मिल गया था ।

विजय पडी क्या पथ म, मिलियो बीच पठाण ।
हली तोरा कापडा, मौ पिय हदी घाण ।।

इस पर बूबना ने कहा—

ग्रसी बातां ना कहो, समझ राख तू भाण ।
धोबी धोया कापडा कठा विलगी घाण ।।

ग्रौर इस प्रकार मूमना स बातें कर बूबना ग्रपने महलो म लौट ग्राई ।

सावन का महीना लग गया था । बाग-बगीचो म फूलो पर झूलती हुई रमणिया वातावरण को मादक बना रही थी । तीज का त्योहार ग्राने वाला था । तीज पर परदेशी घर जा रहे थ ग्रौर ग्रपनी ग्रपनी पत्नियो का गले लगा रहे थे । बूबना जलाल के विरह म छटपटा रही थी । तीज के ग्रवसर पर जलाल के ग्रालिगन मे बद्ध होने का ग्रातुर थी । युक्ति सोची गई । विश्वासपात्र दासियो ने सहयोग देना स्वीकार किया । बूबना ने जलाल को सदेश भेजा कि सावन की तीज के दिन वह ग्रवश्य ही उपवन में ग्रावे ग्रौर ग्रपनी बूबना को गले लगाये । बूबना का सदेश पाकर जलाल के मन की मुर्झाई कलिया खिल गइ । वह सजधज कर तेल फुलेल लगाकर उपवन के दरवाजे की ग्रोर ग्राया । माली ने उसे रोक दिया । उसने ग्रपना रत्न जडा हार माली को भेंट मे दिया ग्रौर ग्र दर प्रवेश कर गया । पडो के एक झण्ड मे छिपा वह रात्रि की प्रतीक्षा करने लगा । रात बीतते ही बूबना ने ग्रपनी दासियों को भेजा । दासियों ने इधर उधर घूम फिर जलाल को ढूढ निकाला । उसको साथ ले वे बूबना के उपवन मे प्रवेश करना चाहती थीं कि ग्र धा पहरेदार उनकी छानबीन करने लगा । वह जलाल के स्पश स ही समझ गया कि वह कोई लपट है । ग्र धे ने जलाल को वापिस लौटा दिया । ग्रब दासियो ने पुन हिम्मत की, ग्रौर एक फूलों की टोकरी म जलाल को छिपाकर मुख्य द्वार पर लाइ । इस बार

प्रथा प्रहरी प्रादमी की गध को पहचान गया। उसने उन दासियो को डांटा कि तुम पुष्पो म पुरुष को छिपा कर ले जा रही हो। दासियो ने प्रनुनय विनय किया ग्रौर बूबना ने स्वय की इच्छा को दर्शाया। बूबना की इच्छा जान जलाल को प्रन्दर जाने दिया। जलाल ग्रौर बूबना का फिर मिलन हुग्रा। उपवन म दोना ने फूलो का ग्रानन्द उठाया। जलक्रीड़ा की ग्रौर प्रणय रास रचाया। सात दिन तक जलाल बूबना के उपवन म ही रहा। दोनो की सयोग की प्यास बुझती ही न थी। ग्राग म घी की तरह उसकी वासना बढ़ती जा रही थी। लोगा ने बादशाह के कान भर दिये। जलाल ग्रौर बूबना की प्रेम-गाथा घर घर म पहुच चुकी थी। इसलिए सन्देहशील बादशाह वास्तविकता की जानकारी क लिए बूबना के महल म ग्राया। बूबना कुशाग्र बुद्धिशीला थी। उसने जलाल को पुष्पो के ढेर म छिपा दिया। बादशाह ने इधर उधर झांक कर देखा किन्तु जलाल का कोई चिन्ह तक भी उसे दिखाई न दिया। वह बडा प्रसन्न हुग्रा। बूबना ने ग्रपने रूप सौन्दय से इतना मोहित कर लिया कि वह बूबना को पूछ भी न सका। ग्राश्वस्त होकर बादशाह लौट गया। उसे ग्रपने पहरेदार पर विश्वास ग्रौर गव हुग्रा। उसके रहते कोई ग्रपरिचित बूबना के महल म नही जा सकता था किन्तु इन दिनों उसने जलाल को नही देखा था इसलिए ग्रपनी शका का निवारण करने के लिए बादशाह ने जलाल के मित्रो से पूछा कि इन दिनो जलाल कहा है। मुजरा करने भी नहीं ग्राया। मित्रा ने बादशाह की शका को दूर करते हुए कहा कि ग्रपनी नई बीबी मूमना के प्रेम मे इतना मदमस्त हो रहा है कि घर से बाहर ही नही निकलता। मगतमायची पूर्णत सन्तुष्ट हो गया। छ माह गुजर गये। जलाल बूबना के महल से रेशम की डोरी के सहारे बाहर उतर ग्राया।

उसी प्रकार दिन गुजरते गय। बूबना के प्रेम की खुमार ग्रब उतरी तो जलाल के हृदय म मिलन की उत्कट इच्छा हुई। वह फिर ग्रवसर की प्रतीक्षा करने लगा। बूबना ने भी कई बार उसके पास सन्देश भिजवाये। लेकिन उपयुक्त ग्रवसर ही नही मिला। लोग बादशाह को यह बराबर कहते रहे कि जलाल बूबना से रात को मिलता है। बात की सत्यता जानने लिए एक दिन बादशाह ग्रौर जलाल दोनो ही शिकार खेलने के लिए गये। रात हो जाने के कारण जगल मे ही उन्होने विश्राम करना उचित समझा। जलाल का मन इस समय बूबना के पास जाने को मचल रहा था। वह ग्रपने ग्राप को रोक न सका। चारो ग्रोर चांदनी बिखर रही थी। जलाल ने बादशाह को माजूम खिलाया। माजूम के नशे म बादशाह गहरी नीद म सो गया। थोडी रात गुजरने पर उसने बादशाह का ग्ररबी घोडा लिया ग्रौर बूबना के महल मे पहुच गया। बूबना तो स्वय जलाल के विरह मे व्यथित थी। उसके विरह सन्तप्त हृदय म नीद कहा थी ? प्रतीक्षा करते करते वह तो बेहाल हो गई थी। ग्रचानक हवा मे इत्र की सुगन्ध के साथ जलाल के शरीर की भीनी भीनी महक महल म भर गई। जलाल को ग्राया जान कर उसने रस्सी की सीढिया नीच लटकाइ। जलाल ग्रौर बूबना रात भर रग रेलियो म मस्त रहे। प्रात काल होने

से पूर्व ही जलाल बादशाह के समीप पहुंच गया और उसी प्रकार सो गया। जब बादशाह नीद से उठा तो अपने भानजे को सोया देख कर बडा प्रसन्न हुआ। उसे लोगा की चुगली पर क्रोध और जलाल पर विश्वास हो आया। उसने सोचा कि ये लोग व्यर्थ ही मेरे भानजे पर दोष लगाते हैं। चुगलखोरो को उसने डाटा। मुह लगे नौकरो ने हिम्मत करके बादशाह से कहा कि जलाल आपको सुला कर बूबना से मिलने गया था। आपको विश्वास न हो तो अब भी आप अपने घोडे को देख लीजिये। वह पसीने से तर है। मन का भ्रम मिटाने के लिए बादशाह ने घोडे को देखा। घोडा पसीने से नहाया हुआ हाप रहा था। बादशाह की सन्देह की अग्नि मे घी पड गया। उसने जलाल को तो कुछ नही कहा पर कुछ निश्चय करके नगर लौट आया।

मृगतमायची के शासन के अन्तगत गिरवरगढ के परगने पर शत्रुओ ने चढ़ाई करदी और गढ पर शत्रुओ ने अधिकार कर लिया। हलकारे ने कापते हुए बादशाह को यह खबर सुनाई। बादशाह का चिन्तित होना स्वाभाविक था। जलाल को अपने और बूबना के मध्य से हटाने का उसे सुयोग प्राप्त हो गया। जलाल के नाम हुक्म जारी किया गया कि अच्छी खासी सेना के साथ शत्रुओ को मार भगाने के लिए उसे शीघ्र प्रस्थान कर देना चाहिए। और हर हालत म किले को पुन हस्तगत करके ही लौटना चाहिये। युद्ध की कमान प्राप्त कर जलाल बहुत ही प्रसन्न हुआ। आज उसको भुजाओ मे रक्त नही समा रहा था। उसने युद्ध म जाने की तयारियां की। बूबना अपने प्राणप्रिय से मिलने गई। जलाल उसे अपने बाहु पाश मे भर कर विदा माग रहा था। बूबना सिसक सिसक कर कह रही थी कि मैं बादशाह से अनुरोध करके तुम्हे शीघ्र गिरवरगढ से बुला लू गी। आने वाली तीज पर मैं तुम्हारा इन्तजार करू गी।

जलाल की सेना ने कूच किया। बूबना विरह की आग मे झुलसती रही। रह रह कर उसका मन जलाल के साथ साथ हो लेता। रात दिन रो रो कर वह आसुओं से अपना आचल भिगोती रही। विरह विलाप म बूबना कहने लगी—

अब की सज्जण ज मिल, कबहु न छोडू सग।
पी हरणा हरणाख ज्यू होय रहूँ अरधग ॥
सूता नीद न जीव सुख जबहि न देखू तुज्झ।
ना जाणू तैं क्या किया, प्राण पियारे मुज्झ ॥

चादनी रात्रि की छटा को देखकर बूबना कहने लगी—

अहो उजळी रातडी, किण दुसमण दी बाल।
पडी जळू मैं भवन मे प्रीतम बिन बेहाल ॥

बूबना ने जलाल के विरह म सभी शृगार प्रसाधनो को त्याग दिया। न पलग पर सोती है, न सुगन्ध ही लगाती है न नये कपडे ही पहनती है और न ही आभूषणो को धारण करती है। वह तो जमीन पर सूखी लकडी की भाति पडी रहती है।

इधर जलाल ने गिरवरगढ़ को चारों तरफ से घेर लिया। उसकी मोर्चा बन्दी इतनी सशक्त थी कि शत्रु का पिल्ला भी उस व्यूह को भेदकर बाहर नहीं निकल सकता था। उसने गढ़ पर चढ़ाई करके व्यर्थ में खून बहाना उचित नहीं समझा इसलिए बुद्धि बल का सहारा लिया। उसने एक दूत के द्वारा शत्रुओं को सन्देश भेजा कि मैं तो शिकार खेलने के लिए आया हूं और आपको अपना मित्र समझता हूं। मेरी तरफ से किसी भी प्रकार से भड़काने वाली कार्यवाही नहीं होगी। इस सन्देश को सुनकर शत्रु अत्यन्त प्रसन्न हुए। वे जलाल की तरफ से निश्चित होकर रहने लगे। इस प्रकार कालचक्र चलता रहा। खेतों के धान पक गये। शत्रुओं के सैनिक बहुत बड़ी संख्या में अपने खेतों पर चल पड़े। उन्हें अपनी फसल काटनी थी। इधर जलाल ने अपनी सेना को पीछे हटने का हुक्म दिया और यह अफवाह फैलाई कि बादशाह ने उसे वापस बुला लिया है। इस समाचार से शत्रु और भी अधिक निश्चित हो गये। इधर मौका देखकर रात होते ही जलाल ने किले पर धुवाधार हमला बोल दिया। उसके सिपाही सीढ़ियों की सहायता से किले पर चढ़ गये। उन पर तलवारें चली। वार पर वार हुए घमासान युद्ध हुआ।

सूर्योदय होते होते किले का फाटक तोड़कर जलाल के वीर अन्दर प्रवेश कर गये। जलाल ने अपने जौहर से सूर्योदय की पहली किरण के साथ मुगलमायची का झण्डा फहरा दिया। जीत के नगाड़े बजने लगे। धरती और आकाश जयजयकारों से पाट दिये गये। विजय की मस्ती में झूमता हुआ जलाल अपार धन सम्पदा के साथ हाथी पर बैठ कर थटाभखर लौट आया। सावन की तीज के तीन दिन शेष रह गये थे। जलाल का आगमन सुनकर बूबना अत्यन्त प्रफुल्लित हुई। उसने जलाल के सम्बन्ध में बादशाह का सन्देह दूर करने का प्रयत्न भी किया और किसी सीमा तक वह सफल भी रही। इधर वह जलाल के संयोग के लिए छटपटाने लगी। सौतों में काना फूसी होने लगी। बूबना जलाल से अवश्य मिलेगी। सौतों ने बादशाह को ऊंच-नीच समझाया भड़काया कि जलाल अपनी बेबी मूमना के महल में कतई नहीं जाता है। अब आपको जलाल और बूबना को दूर दूर रहने के लिए विशेष सतर्कता अपनानी चाहिये।

बादशाह ने अपने जलमहल में बूबना के लिए रहने की व्यवस्था की। जल में बड़े बड़े मगरमच्छ और नरभक्षी जन्तु छोड़ दिये गये। जल के किनारे पर बड़े बड़े भीमकाय अजगर शेर चीते जहरीले जानवर हिंसक पशु एकत्रित कर छोड़ दिये गये। जगह जगह चौकियां बनाकर स्वामि भक्त पहरेदारों को चेतावनी दे दी गई। इस कठोर व्यवस्था को पार करके चिड़िया का बच्चा भी महल में प्रवेश नहीं कर सकता था।

जलाल को इस कड़े पहरे का भेद ज्ञात हो गया। उसके मन में बूबना के लिए प्यार उमड़ पड़ा। उसने युक्ति सोची। उसने थटाभखर से कुछ दूर अपना डेरा डाला। भेड़ बकरियां के कुछ रेवड़ उसने खरीदे। वह अपने एक विश्वासपात्र मित्र के साथ भेड़ बकरियों को लेकर जलमहल की ओर चल पड़ा। भूखे शेरों,

अजगरो और हिंसक पशुओ को भेड बकरिया खिलाता हुआ वह चौकियो तक पहुचा। चौकी पर रत्नजडित आभूषणो मोहरो रुपयो का लोभ दिखला कर पहरेदारो को अपनी ओर मिला लिया। अब उसके सामने पाताल का दरवाजा खोले हुए सरोवर था। बड बड जीव ज तु उछल उछल कर भय की सष्टि कर रहे थे। जलाल प्रेम दीवाना था। बूबना के प्यार न उसमे साहस का सचार किया। वह अपनी कटार लिए हुए जल म कूद पडा। जल ज तुओ को मारता काटता चीरता तरता हुआ वह जलमहल की ओर बढ रहा था। बूबना ने झरोखे से अपने प्यारे को इस प्रकार म यु के मु ह म कूदते हुए दखा। वह अशुभ से डरी हुई व्याकुल हो गई। उसने एक घडनाव अपने विश्वस्त अनुचर द्वारा सरोवर म डलवा दी। जलाल और बूबना का मिलन हुआ। लम्बे समय के बाद दो प्रमी जी खोल कर मिल रहे थ। दोना ने अपनी प्यास बुझाई। दिन निकलने के पहले ही जलाल ने बूबना से विदा ली। जलाल सूर्योदय से पहल ही अपने महल लौट आया। बादशाह प्रात काल उसकी हाजरी लने वहा आता था। वह इन सब कठिनाइयो को पार करता हुआ नित्य वहा उसे सोया हुआ ही मिलता। बादशाह को विश्वास होने लगा कि जलाल निर्दोष है। जलाल और बूबना का गुप्त मिलन चलता रहा। एक दिन वह रस्सी टूट गई जिसके सहारे स जलाल महल पर उतरता और चढता था। लाचार होकर उसने मुख्य द्वार का रास्ता लिया। यहा तनात पहरेदारो ने जलाल का रोकना और पकडना चाहा। भला वीर इन ब धना को कस स्वीकार करता। उसने अपनी तलवार खीच ली और पहरेदारा को मौत के घाट उतार दिया।

जब यह समाचार मगतमायची क पास पहुँचा तो वह क्रोध म लाल पीला हो गया। वह जलाल को सख्त दण्ड देने के पक्ष मे था लेकिन बूबना ने अनुनय विनय करके उस बचा लिया। बादशाह का मन अब पूरी तरह शका स भर गया था। वह किसी भी तरह अपने इस काटे को निकाल कर फेंक देना चाहता था। उसने सोचा कि यदि किसी भी तरह जलाल के मरने की खबर बूबना तक पहुचा दी जाय तो वह उस धक्के का सम्भाल न सकेगी और प्राण त्याग देगी।

एक दिन बादशाह जलाल को शिकार खेलन अपन साथ ले गया। जगल म पहुचकर उसन अपने विश्वासपात्र सेवक के साथ यह स देश भेज दिया कि जलाल एक शेर की चपेट म आ गया और मारा गया। जब यह समाचार बूबना ने सुना तो उसका हृदय फट गया। प्राण पखेरू उड गये। जलाल जब बादशाह के साथ शिकार से लौटा और बूबना के मरने की बात सुनी तो उसके दु ख का आरपार नही था। बूबना बूबना करते हुए उसन भी उसी क्षण प्राण त्याग दिये।

माहणी फूट फूट कर रोन लगी। शेष सभी लोग बडे प्रसन्न थे। सूमना दुखी थी। बूबना और जलाल दोना को एक ही कब्र मे दफनाया गया। वे जीवित भी एक थे और मरन के बाद भी एक ही रहे।

दफनाने के एक दो दिन बाद शकर पार्वती के साथ नदी पर बठे जलाल बूबना की कब्र के पास से होते हुए जा रहे थे। इस कब्र से भीनी भीनी **महक**

साथ साथ खेत की ओर जा रही थी। बातों ही बातों में पेमलदे ने नागवन्ती को बड़े गर्व के साथ कहा कि जब मेरे देवर नागजी धरती पर कदम रखते हैं तो उनके हर कदम के नीचे रोली का चिन्ह उभर आता है। नागवन्ती को इस अनोखी बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ। पेमलदे को लगा जैसे नागवन्ती को उसके कथन पर विश्वास नहीं हो रहा है। इसलिए पेमलदे ने उसके सामने एक शर्त रखी। यदि मेरा कथन सच निकले अर्थात् नागजी के हर कदम पर कुंकुम के चिन्ह बन जाय तो तुम्हें नागजी के साथ विवाह करना होगा। नागवन्ती ने लज्जा और संकोच के साथ यह शर्त स्वीकार करली। पेमलदे और नागवन्ती नागजी के पास गई। भाभी ने देवर को चौपड पासा खेलने को कहा। चौपड डाल दी गई। नागजी और नागवन्ती की जोड़ी बनी। दूसरी जोड़ी पेमलदे और उसकी सहेली की थी। विनोदपूर्ण बात चीत के साथ पासे फेंके जा रहे थे। दाव दिये जा रहे थे। सर सर करके वन की हवा अबाध गति से बह रही थी। नागवन्ती के मुख पर बालों की लटें उड़ कर नागजी को अपनी ओर आकृष्ट कर रही थी। हवा ने अपनी गति और बढ़ा दी। नागवन्ती अपने वस्त्र सम्भाल कर सिमट जाना चाहती थी कि अनायास ही उसका उत्तरीय उड़कर नागजी को स्पर्श करने लगा। नागवन्ती निवस्त्र दिखाई दी। उसके अनावृत सौन्दर्य की झलक पाकर नागजी अपने आप को सम्भाल न सके। उनकी चेतना एक मादक मूर्छा में ग्रस्त हो गई। वे जड़ीभूत होकर धरती पर गिर पड़े। नागवन्ती लज्जा से लाल हो गई थी। जब देवर की चेतना लौटी तो भाभी ने विनोदपूर्ण ठिठोली की। नागजी ने कहा कि भाभी! नागवन्ती का विवाह मेरे साथ करवा दो। पेमलदे तो स्वयं नागजी और नागवन्ती को विवाहसूत्र में बांध देना चाहती थी। उसने नागवन्ती को इस सम्बन्ध को स्वीकार करने के लिए सहमत कर लिया। पेमलदे ने समझाया कि यह विवाह गुप्त रीति से ही सम्भव हो सकेगा। क्योंकि राजा घोल नागजी का विवाह कहीं अन्यत्र करने के लिए वचनबद्ध थे, इसी प्रकार नागवन्ती भी झाखड परिवार के साथ ब्याही जाने वाली थी। पेमलदे की साक्षी में ही दोनों ने यह सम्बन्ध स्वीकार कर लिया। दैवयोग से गांव का एक पण्डित वहीं आ निकला। ब्राह्मण को समझाया बुझाया और यह विवाह सम्पन्न कराने के लिए राजी कर लिया। उससे वचन ले लिया कि वह इस विवाह की चर्चा अन्यत्र नहीं करेगा। अग्नि की साक्षी और मंत्रों के उच्चारण के साथ नागजी नागवन्ती विवाह सूत्र में बांध दिए गये। नागजी अपनी भाभी के परामर्श से खेत में ही रहने लगे। माघ का महीना अपनी दांत बजाती सर्दी और प्रखर हवाओं के साथ ठण्ड बरसा रहा था। पेमलदे ने नागजी को घर चलने के लिए कहा। अभी नागवन्ती को साथ ले चलना उचित नहीं था। क्योंकि विवाह की जानकारी किसी को भी नहीं थी। लोग भ्रमपूर्ण दूषित प्रचार कर सकते थे। इससे राजा घोल और झाखड़े के निष्कलंक कुल पर धब्बे लगने की सम्भावना थी। इसलिए पेमलदे ने नागवन्ती के साथ न चलने का आग्रह किया। बेचारी नागवन्ती क्या कहती क्या करती, वह तो नागजी के बिना रहने की

कल्पना मात्र से ही व्याकुल हो गइ। उसकी चेतना लुप्त हो गई। वह विदा हो हुए नागजी की छाती से लगकर आसू बहाने लगी। नागजी न अपनी प्राणप्रिय को सान्त्वना देते हुए कहा कि तुम चिन्ता मत करो। मैं बहुत जल्दी विवाह का सब भेद अपने पिताजी पर प्रगट कर दूगा और पालकी भेज कर राज सम्मान के साथ तुम्हे महलो म ले जाऊगा। मन मार कर विरह की सरिता म अपने सौभाग्य को निमग्न करके आकुल प्राणो से उसने नागजी को विदा किया। नागजी महलो मे चल आए।

नागवन्ती नित्य खेतो की मुडेर पर चढ कर राजकुमार की प्रतीक्षा म आँखें बिछाती और नित्य निराश होकर आसुओ के सागर मे डूब जाती। नागवन्ती खत की मुडर पर खडी होकर कौआ का उडाती, पशु पक्षिया को तरह तरह के लालच देती अपने प्रिय के पास सन्देश के लिए किन्तु नागजी न लौटा।

उधर नागजी पिता के सम्मुख जा उपस्थित हुए। पुत्र की खाई अवस्था को देख कर राजा धोल को सन्देह हा गया कि अवश्य ही पुत्र को कोई प्रेम पीडा व्याप्त हुई है। उसने पुत्र की शुभ कामना के लिए महल के सातवें खण्ड मे रहन का आदेश दिया। नीचे कडा पहरा वठा दिया। बिना आज्ञा न कोई भीतर जा सकता था और न कोई भीतर से बाहर ही आ सकता था। नागजी के मन मे नागवन्ती से मिलने की उत्कठा जागत होती किन्तु उसे बाहर निकलन का योग ही न प्राप्त होता। दिन दिन अपनी प्रियतमा के विछोह म वह झूरने लगा। शरीर पीला पडने लगा। गुलाब की तरह खिला हुआ उसका चेहरा मुर्झा गया। अब तो उसका खान पान भी अनियमित हो गया। न किसी से बात करता न कभी हसता। नागवन्ती के विषय मे सोच सोच कर वह बोदा हो गया। अपने दिये हुए वचन रह रह कर याद आने। नागवन्ती के खेत पर खेला गया चौपड का खेल उसकी मद मुस्कानें दाडिम के से दात तोत की सी नाक बिजली की सी देहयष्टि हटाये भी उसकी आखो स नही हटती थी। उसे विरह का असाध्य रोग लग गया था। पुत्र के गिरत हुए स्वास्थ्य से पिता का चिंतित हो जाना स्वाभाविक है। राज्य के कुशल वद्यों को पुत्र के उपचार का काय सौंपा गया। बेचारे वद्य शरीर के रोगो का ही तो उपचार करते। विरह पीडा से मुक्ति दिलाने की कोई औषधि उनक पास नही थी। औषधियों पर औषधिया बदलते रहे, किन्तु नागजी के स्वास्थ्य मे कोई सुधार नहीं हुआ।

नागवन्ती नागजी की इस अवस्था से अपरिचित थी। उस क्या भान था कि जिसके लिए वह दिन रात तडपती है वह स्वय भी उन्ही ज्वालाओ मे जल रहा है। विरह मे बावली वह नागजी का नाम ल लेकर श्वासें गिन रही थी। प्रत्येक श्वास के साथ नागजी का नाम निकल रहा था। आस पास का वातावरण भी नागजी के नाम का स्मरण कर आठ आठ आसू बहा रहा था। नागवन्ती नागजी की स्मृति म गाये जाने वाले गीतो म अपनी विरह-जन्य पीडा को अभिव्यक्ति दे रही थी।-इसी समय जो नागजी का उपचार करने राजधानी में

आया हुआ था वह वद्य निराश हुआ नागवन्ती के महल के नीचे से निकल रहा था। उसने स्त्री कंठ से निकले हुए विरह बोझल नागजी के नाम को सुना तो वह वस्तुस्थिति को समझ गया। नागजी की बीमारी और इस स्त्री की पीड़ा का सम्बन्ध मन ही मन समझ गया। अब उसे नागजी के लिए उपयुक्त औषधि का संधान हो गया। वद्य राजा धोल के पास पुनः गया और विश्वास के साथ निवेदन किया कि मैं नागजी के रोग का निदान कर सकता हूं। जैसा मैं कहूं वैसी व्यवस्था आप कर दीजिये। इस बार मैं एक विशेष जड़ी बूटी के साथ आया हूं। राजा ने एक अवसर और देना उचित समझ कर उसे आज्ञा दे दी।

वद्य ने एकांत भवन में नागजी के रहने की व्यवस्था की। आस पास का वातावरण सौन्दर्य से परिपूर्ण बनाया। चंपा चमेली जूही मोगरा के पौधे महल के इर्दगिर्द लगा दिये गये। वद्य ने नागजी के महल की समुचित व्यवस्था अपने हाथ में रखी। होली के दिन थे धमाल गाई जा रही थी। फागुन सभी को मदमत्त बनाये था। बसंत की श्री सब पर बिखरी हुई थी। औरतों के झुण्ड गीत गाते हुए एक एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाते रहते थे। राजमहल होली के रंग रेलियों से मुखरित था। उपयुक्त अवसर देखकर वद्य नागवंती के पास गया और कहने लगा कि जिसके लिए तुम इतनी विह्वल हो उससे संयोग का अवसर आ गया है। उठो मलिन वस्त्र फेंक दो सोलह शृंगार कर अपने प्रेमी से मिलने की तयारी करो। अपनी सहेलियों के साथ राजकुमार के महलों की ओर प्रयाण करो जिससे तुम सन्देहमुक्त रह सको। नागवंती जैसे सूखी बेल पर पानी पड़ा हो हरी हो गई। प्रसन्नता उसकी छाती में समा नहीं रही थी। कंचुकी के बंध उसके ज्वार को रोक नहीं पा रहे थे। वह रोमांचित हो गई। मां की आज्ञा लेकर नागवंती अपनी सहेलियों के झुण्ड के साथ होली के गीत गाती राजा धोल के महल में पहुंची जहां होली के गीतों की धूम मचाती हुई वह खण्ड प्रखण्डों में घूम गई राजकुमार का आवास कहीं नहीं दिखाई दिया। दासी चम्पा नागवंती की मनोदशा को पहचान गई। वह उसे झुण्ड में से निकाल कर चुपचाप नागजी के उस एकान्त भवन में ले गई जहां नागजी ठहरा हुआ था। नागजी के अस्वस्थ शुष्क शरीर और उजड़े तेज को देखकर वह सन्न रह गई। नागजी भी अपने सपनों की रानी को अचानक देख कर गद्‌गद् हो गया। दोनों ही दौड़कर गले मिल गये। तड़पती मछली को जल मिल गया। चकवा चकवी का सवेरा हो गया। चौपड़ पासे डाल मनोविनोद हुआ। सेज सजाई गई। बातों ही बातों में एक हो गये। सवेरे तक भी वे उस सजी हुई सेज पर वर्षों की नींद ले रहे थे। इन्हें सूर्योदय और संसार की हलचल का कैसे ज्ञान होता? वे तो प्रेम की सुरा पी कर निद्रा देवी की गोद में निमग्न थे।

राजा जाखड़ और राजा धोल दोनों ने ही नागजी के स्वास्थ्य की जानकारी के लिए उस महल में पैर रखा और नागजी नागवंती को एक सेज पर सोये देखा तो राजा धोल आग बबूला होकर अपनी तलवार म्यान से निकाल बैठा। वह अपने पुत्र के दो टुकड़े करने को था कि राजा जाखड़ ने वार साधते ही उसका हाथ

पकड़ लिया। उस समय तो राजा जाखड़ के अनुनय विनय से राजा धोल बिना कुछ किये ही वहाँ से चला गया। लेकिन उसके शरीर में आग लग रही थी।

इधर उधर पहुँच कर जाखड़े ने अपनी रानी को नागवन्ती का सारा वृत्तान्त सुनाया। सयानी बेटी के विवाह की शीघ्र व्यवस्था करने की तैयारी के लिए सोचने लगे। उसने हाकड़ परिवार को सन्देश भेजकर सूचित किया कि यदि वह तीन दिन में नागवन्ती के साथ विवाह करने को उपस्थित न हुआ तो नागवन्ती का विवाह किसी अन्य राजकुमार के साथ कर दिया जायगा। बात बदलने का दोष हम पर न लगेगा।

उधर नागजी भोजन करने से पूर्व अपने पिता से मिलने के लिए उनके महल में गये। वे अभी तक यह नहीं जानते थे कि पिता ने उनको नागवन्ती के साथ सोया देख लिया था और पिता क्रोधित हैं। नागजी को देखते ही राजा धोल ने अपनी तलवार का वार पुत्र पर कर दिया। त्वरित गति से नागजी ने उस वार को निष्फल कर दिया किन्तु पिता का प्रेम वे न पा सके। राजा ने नागजी को देश निकाला दे दिया। आदेश हुआ कि तीन पहर में तुम्हारी छाया भी मेरे राज्य में नहीं रहनी चाहिए। जीते जी कभी मुँह न दिखाना। पिता की आज्ञा का शिरोधार्य करके उल्टे पाँव लौट आए। जाते-जाते नागजी अपनी भाभी के दर्शन कर लेना चाहते थे इसीलिए वे अपनी भाभी के महलों में गये और आँखों में आँसू भर कर कहने लगे, अब जीवन भर विछोह है। कौन जाने इस जीवन में अब कभी मिलना होगा भी या नहीं। मेरे अनजाने में हुए अपराधों को क्षमा करना। मैंने नागवन्ती का पाणिग्रहण तो अवश्य किया पर उसके प्रति किसी कर्त्तव्य का पालन नहीं कर सका। यह दर्द मुझे जन्म भर सालता रहेगा। पमलदे ने अपने देवर को स्नेह से झिड़कते हुए कहा—प्रेम में अधैर्य उचित नहीं। तुम उपवन में प्रतीक्षा करो। नागवन्ती से मैं तुम्हें वहाँ मिलवा दूँगी।

राजा जाखड़ ने हाकड़ परिवार का उत्साहवर्धक उत्तर पाकर पुत्री के विवाह की तैयारियाँ शुरू कर दीं। गाजे बाजे बजने लगे। ढोल पर नृत्य होने लगे। मण्डप सजाया गया। बारात की अगवानी हुई। शहनाइयाँ बजने लगीं। हाकड़ घोड़े पर उछलते हुए, धन बिखेरते हुए तोरण द्वार पहुँचे। ब्राह्मणों ने विवाह मन्त्रों का उच्चारण किया। साक्षी के लिए अग्नि का आह्वान किया। नागवन्ती के हाथों में मेहन्दी रचाई। उसका मन तो अन्दर दुखता रहा था। बाहरी लोक-लाज के लिए सोलह शृंगार किये गये। लेकिन वह सब कुछ न चाहते हुए भी उसे कराना पड़ रहा था। उसका सौन्दर्य तो केवल नागजी को ही अर्पित था। राजा धोल ने यह विवाह व्यवस्था [illegible] के पहरे में की थी। नागवन्ती इस समय सोचती जिस प्रकार रुक्मिणी को कृष्ण हर कर ले गये उसी प्रकार नागजी भी यदि आकर मुझे जंगल में ले जाय तो मैं [illegible] दूँ। घोड़े की [illegible] दूँ। सारे संसार को [illegible] पर झुकाऊँ। पशु-पक्षियों के [illegible] का [illegible] करूँ।

पमलदे ने नागजी को [illegible] में महल में [illegible] करा दिया। नागजी ने

आरती उठाई और सजल नत्रो स चौकी पर बठी हुई नागवन्ती की आरती उतारी। उसके नेत्रो से बहती उष्ण जल की धारा ने नागव ती को अपने प्रिय का परिचय दिया। नागजी को ऐस दुस्साहसिक काय म प्रवृत्त दखकर नागवन्ती कुशल क्षेम के लिए दवताओ को मनाने लगी। अवसर दखकर इतना ही कहा कि तुम उपवन म चलो। मैं वही पास के म दिर म तुमसे मिलने आ रही हू। फिर जहा चाहो मुझ ल चलना। मैं हथलेवा छुडा कर तुमसे मिलने आ रही हू। नागजी सकेतानुसार नियत स्थान पर चला गया।

हथलव पर बठी हुई नागवन्ती न मूच्छित होने का बहाना किया। जल के छीटा से उसकी मूर्च्छा टूटी तो उसने कहा— मरे सर म दद है मुझे खुली हवा म तनिक विश्राम लेने दो। आधी रात का समय था। रात साय साय बोल रही थी। घनघोर अधेरा था। चाद बादलो की ओट म छिप गया था। मानो वह भी नागवन्ती क दु ख से द्रवीभूत होकर उसे अधेरा कर भाग जाने का सुअवसर दे रहा था। अचानक बादलो की गडगडाहट क साथ बिजलिया चमक उठीं। वातावरण भया नात हो गया। पीपल क पत्ते चचल और भयप्रद स्वरो म भिनभिना उठ। उसका शरीर काप गया। उपवन तक पहुंचते पहुंचत वह श्रम और भय से क्लान्त हो चुकी थी। नागजी का नाम ल लेकर वह पुकार रही थी। रास्त पर अधकार ने काली चादर बिछा दी थी। झझावात और मूसलाधार वर्षा को भी यही समय मिला था। वह अपने प्रम सूत्र म बधी हुई नागजी की ओर दौडी जा रही थी। उसक हृदय म भावनाओ का ज्वार भाटा चढ उतर रहा था। कभी उसे भय लगता तो कभी भ्रम होता। नागजी क चल जाने और उसके रह जाने की अशुभ कल्पनाए भी उस सताने लगी। अतत अधेरे म डूबे हुए म दिर की सीढ़िया स टकराई। फिर सम्भल कर मन्दिर के दालान म गई जहा नागजी ओढ कर सो रहा था।

साय हुए नागजी को मधुरतम सम्बोधना से मना मना कर जगान का प्रयत्न किया। नागजी की नीद न टूटी। नागवन्ती ने अपने प्रियतम की हजारो मनुहारें की। कभी मान म तो कभी रीझ म। नागजी को झकझोरा और लगी कहने— कु वरजी 'घू घट तो सगे सम्बन्धियो से घिर घर म तुम्हारे घर मैं ही निकालूगी। तुम किसकी शम करक घू घट निकाले हुए हो ? अभी तो म मनाती हू और फिर तुम हजारो मिन्नतें करके मुझे मनाओगे तब भी नहीं मानू गी। चादर उठाओ दखो मुझे क्या हो गया है।' यह कह कर नागव ती ने नागजी का वस्त्र खीच लिया। वस्त्र उतरत ही नागजी का खून म लथपथ शरीर देखकर वह सफेद हो गई। आकाश टूटकर गिर गया। उसके परो के नीचे स जमीन खिसक गइ। वह सज्ञाहीन हो गयी। नागजी की मुट्ठी म ब द कटार उसकी छाती म घुसकर खून पी रही थी। नागव ती समझ गई कि मेरे आन के विलम्ब ने मेरे प्राण प्यारे को आत्महत्या के लिए विवश कर दिया। वह फूट फूट कर रोने लगी। नागजी का नाम ले लेकर जिस करुण स्वर मे वह रुदन कर रही थी धरती आकाश उस करुणा से फटे जा रहे थ। पक्षी अपन घोसलो से सवेदना मे रो रहे थ। बादल आसू बहा रहे थ। हवा नि श्वासें

छोड़ रही थी। पेड़ पौध हिचकियां ले लेकर मानो नागवन्ती के दुःख में रो रहे थे। रुदन का स्वर नगर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक व्याप्त होता जा रहा था। किसी आर्त के करुण स्वरों को सुनकर जन समुदाय उस ओर दौड़ा जा रहा था। राजा धोल और जाखड़े भी उन्हीं पैरों दौड़े। पुत्र को मरा देखकर राजा धोल अपने किये पर आठ आठ आंसू बहाने लगा। जाखड़े पुत्री को प्रबोध देने लगा। पमलदे लाड़ले दवर को मृत अवस्था में देख दहाड़ मार कर रोने लगी। जाखड़े ने सान्त्वना के साथ अपनी पुत्री को घर चलने का आग्रह किया किन्तु नागवन्ती ने एक न सुनी।

पिता के बार-बार आग्रह करने पर भी वह घर नहीं गई। उसने कहा कि मैं तो उसी घर में जाकर रहूंगी जिस घर में नागजी चला गया है। वह मेरे जन्म जन्म का साथी था इस जन्म का पति था। तुम मेरे लिए चिता की व्यवस्था करो। मैं अपने प्रियतम के साथ अग्नि मां की गोद में समा जाना चाहती हूं। नागवन्ती के इस निर्णय को सुनकर जाखड़े और राजा धोल स्तब्ध रह गये। उनके पश्चाताप का पार न था। बहुत समझाया गीली आंखें कर कर के समझाया पर नागवन्ती अपने निर्णय से टस से मस नहीं हुई। अन्ततोगत्वा चन्दन की चिता सजाई गई। नागवन्ती ने सोलह शृंगार किया शंख घण्टे की घड़ियाल बजने लगी। नायण ने नागवन्ती को नया चूड़ा पहनाया मेहंदी लगाई और फिर नागवन्ती अपने प्रिय को गोद में लेकर उमड़े हुए जन समुदाय की जयजयकार की ध्वनि के बीच चिता पर चढ़ गई। सत् के प्रभाव से अग्नि प्रज्वलित हुई और देखते देखते नागवन्ती और नागजी पंचतत्त्व में विलीन हो गये।

सोरठी

यह उस समय की बात है जब गुजरात में सिद्धराज जयसिंह सोलंकी राज्य कर रहे थे। उस समय सोरठपुर में राजा रामचन्द्र देवड़ा योग्यता के साथ शासन कर रहे थे। राजा के कोई सन्तान न थी। राजा अपने दुःख को मन में ही छिपाये रहता था। किसी पर अपनी व्यथा प्रगट नहीं करता। जब वह छोटे छोटे बच्चों को गली मोहल्लों में खेलते देखता तो उसे अपने जीवन में सन्तान का अभाव सहस्र मुख होकर डसने लगता। उसने पण्डितों साधु महात्माओं का आश्रय लिया। *ज्योतिषियों ने उसका भाग्यफल देखा। भाग्य में सन्तान तो थी किन्तु अनेक बाधाएं* भी स्पष्ट दिखाई दे रही थीं। उन्होंने राजा को परामर्श दिया कि सन्तान सुख के मार्ग में जो बाधा खड़ी है उसे दूर करने के लिए तपस्या कीजिये। राजा अपनी रानी के साथ जंगल में तपस्या करने के लिए निकल पड़ा। राजकाज का भार मन्त्रियों पर छोड़ दिया। अनेक कठिन व्रत ध्यान समाधि जाप आदि से एवं मन शारीरिक क्रियाओं से उसके मानस में आशा का संचार हुआ। एक दिन सपने में किसी दैविक स्वर ने राजा से कहा कि हे राजा! तेरे घर में अत्यन्त गुणवती एवं रूपवती कन्या जन्म लेगी। तेरी तपस्या सफल हुई। राजा ने अचानक उठ कर स्वप्न का वर्णन अपनी पत्नी को सुनाया। दोनों अत्यन्त हर्षित हुए। दूसरे ही दिन मन में सिद्धि का वरण करके नगर की ओर चल पड़े। मन्त्रियों और प्रजाजनों ने राज दम्पत्ति का भव्य स्वागत किया।

समय व्यतीत होता गया। रानी को यथा समय प्रसव हुआ। एक कन्या ने मूल नक्षत्र में जन्म लिया। पण्डितों ने फलाफल पर विचार किया। ग्रह नक्षत्र कुण्डली के प्रभाव को परखा गया। उनके मतानुसार यह कन्या पितृ वंश के लिए घातक थी। अतः ज्योतिषियों ने निवेदन किया कि महाराज! ऐसे विषवृक्ष का पालन उचित नहीं है। कन्या के योग राजा के साथ साथ प्रजा को भी भारी हैं। राजा कन्या का परित्याग करने से पूर्व अपने तपस्या के फल को देख लेने की इच्छा से अन्तःपुर में गया। राजा ने वहाँ जाकर देखा कि कन्या के पालने के चारों ओर एक बड़ा सा भयंकर काला सर्प फन फैलाए चक्कर काट रहा है। वह विस्मय विमूढ़ हो गया। उसने तुरन्त ही अपने विश्वास पात्र सेवक को बुलाकर आदेश दिया कि इस कन्या को किसी सन्तानहीन किन्तु धनवान् के घर छोड़ आओ जिससे बच्चों का स्नेह दुलार एवं भौतिक सुख सुविधाएं सहज भाव से प्राप्त हो सकें।

सेवक ने उस नवजात कन्या को उठाया और नगर में राजा द्वारा बताया गया गृहपति ढूंढना प्रारम्भ किया। ढूंढते ढूंढते वह छागा कुम्हार के घर के सामने पहुंचा। छागा के दरवाजे के सामने एक कुआ था तथा शीतला का चबूतरा।

कुम्हार नगर भर म अपने धन वभव के लिए प्रसिद्ध था। वह आसपास के महा जनो को उधार करने के लिए रुपये भी उधार देता था। सेवक को सभी दृष्टियो से छागा कुम्हार का घर ठीक लगा। वैसे छागा के कोई सन्तान भी नही थी।

रात्रि के अन्धरे म सेवक उस कन्या का शीतला के चबूतरे पर छोडकर महला म लौट आया। कन्या भूख के मारे चिल्लाने लगी। छागा की पत्नी ने जब बच्चे के रुदन को सुना तो उसने अपने पति को जगाया और बच्चे के रोने की बात कही। छागा स्वय भी बच्चे के रुदन को सुनकर द्रवीभूत हो उठा। इस पर वे दोनो पति पत्नी दरवाजे से बाहर आये। उन्होने अकेली बच्ची को गला फाड फाड कर रोते देखा। वे पसीज गये। छागा ने पत्नी से कहा 'लो अपनी वर्षों की साध पूरी हो गई है। शीतला ने हमे कन्या के रूप म लक्ष्मी का ही दान किया है।" कुम्हारी ने शीतला के सात सोमवार करने का निश्चय किया। वे बहुत प्रसन्नचित्त होकर बच्ची को घर ले आये। कुम्हारी वात्सल्य विभोर हो गई। उसके स्तनो से दूध की धारा बह निकली। बच्ची का पालन पोषण होने लगा। सोरठपुर की इस कन्या का नाम सोरठी रखा।

सोरठी चन्द्र कलाओ के समान बढने लगी। बिना सिखाये ही वह १४ विद्याओ और ६४ कलाओ मे पारगत होती गई। उसका स्वरूप दिन दिन निखरने लगा। उसका सौन्दय अप्सराओ को मात करने वाला गाम्भीर्य हसो को लजाने वाला मुस्कान श्वेत कमलो को पराजित करने वाली और वर्ण बिजली को भी प्रकाश प्रदान करने वाला था। अग अग विकसित और सुगढ था मानो खराद से सवार कर उनका निर्माण किया गया हो। खजन के से नेत्रो म मछली की चचलता सुराही सा उतरती गदन कमल सा चेहरा बिम्बाफल से अधर सुक नासिका, सिंहनी की सी कमर, कदली सी जाघें और हथनी सी चाल सोरठी को मानो सौन्दय के प्रतीक कामदेव ने ही प्रदान की हो। वह साक्षात सरस्वती या लक्ष्मी का अवतार थी।

एक दिन सिद्धराज का चारण सोरठ नगर से गुजर रहा था। उसे वहा दिन अस्त हो गया। कुम्हार के घर के सामने से ही चारण रास्ता पार कर रहा था। छागा ने शाम पडे गाव छोड कर जाने वाले व्यक्ति को प्रकाश तथा भोजन एव विश्राम करने का आग्रह किया। चारण ने भी रात का समय जान विश्राम करना ही उचित समझा। चारण स्नान ध्यान कर भोजन करने बठा। उसी समय चारण ने देखा कि कुम्हारी स्नान करके नये वस्त्र, आभूषण धारण कर रही थी। वेशभूषा बदल कर उसने भोजन का थाल सजाया। वह नीचे के तहखाने म गई। चारण इस रहस्य को जान लेना चाहता था कि यह कुम्हारी कहा गई है? आचमन करके आधा भूखा ही वह उठ खडा हुआ। वह भी उस तहखाने के निकट आकर खडा हो गया। ज्यो ही कुम्हारी किवाड खोलने बाहर निकलने को हुई त्यो ही सोरठी के रूप की एक झलक चारण पर पडी। उस सौन्दय का बोझ चारण न सम्भाल सका। वह मूच्छित होकर गिर पडा। इसी समय कुम्हार भी आ गया

कुम्हार ने बडे यत्न से उसे चत य लाभ कराया और उससे प्रार्थना की कि मेरी इस कन्या के विषय म कही भी चर्चा न करना। उसने चारण से वचन ले लिया।

चारण जहा जाना चाहता था वहां न गया। वह तो उसी नगर से वापिस पाटन की ओर मुड गया। बिना कही विश्राम किये वह पाटन पहुचा और सिद्धराज से मुजरा कहलाया तथा आज्ञा चाही कि वह तत्काल दशनो का प्रसाद पाना चाहता है। चारण ने सिद्धराज के सामने सोरठी के रूप सौ दय का बढ़ा चढ़ा कर वणन किया। और कहा कि ऐसी सुन्दर रानी गुजरात के नाथ की होनी चाहिए। इस पर सिद्धराज ने सोरठपुर म छागा को सन्देश कहलाया कि यदि वह अपनी पुत्री सोरठी का विवाह करन को तयार हो तो उसे १२ गाँव जागीर म दिये जा सकेंगे। छागा न जयसिंह के इस प्रस्ताव पर कहलाया कि विवाह सम्बन्ध बराबर वालो को ही शोभा देता है। मेरी बेटी को आपकी अन्य रानियां कुम्हार की बेटी कह कर अपमानित करती रहेगी। गिरनार का राव खेंगार भी सोरठी के रूप की प्रशसा सुन चुका था। वह भी सोरठी को येन केन प्रकारेण प्राप्त करने पर तुला हुआ था। कुम्हार ने खेंगार को भी वही उत्तर भिजवा दिया जो जयसिंह को भिजवाया था।

दिन बीतते गये। एक दिन लक्खी बनजारा अपनी बाळद लेकर सोरठपुर से निकल रहा था। अपार धन दौलत उसके साथ था। बाळद की रक्षा के लिए कई घुडसवार थे। कुम्हार ने बराबर की हस्ती जानकर लक्खी बनजारे के साथ सोरठी का विवाह कर दिया। बनजारे के लिए सोरठी अप्रत्याशित वरदान थी। होली की सी झल और आभा की सी बिजली सदृश पत्नी को वह मक्खन से ज्यादा मदु और फूलो से ज्यादा कामल समझता था। उसने एक लकडी का महल बनवाया जिसके केवल एक ही पहिया लगाया गया। सोरठी उसी महल म प्रतिष्ठित हुई। जहा जहा बाळद जाती सोरठी का महल भी वहीं पहुच जाता। सोरठी के लिए नोकर चाकर, दास दासियो का प्रब ध भी बनजारे ने कर दिया था। गिरनार के राव खेंगार ने सोरठी के विवाह की बात सुनी तो उसे अत्यन्त धक्का लगा। वह सोचता था कि एक न एक दिन वह बनजारा यहा अवश्य आयेगा, सोरठी को पाने के लिए तभी मैं अपने भाग्य की परीक्षा लू गा।

बनजारे की बाळद एक दिन घूमती फिरती गिरनार आ पहुची। लक्खी बनजारा स्थान की समुचित यवस्था के लिए उपवनो को देखने के लिए गया। गिरनार की जनता लक्खी बनजारे के नाम से भली भाति परिचित थी। वहा भी वह वणज करता था। कई छोटे बडे व्यापारी उसके माफत दिशावर से माल मगाते और भेजते। उसके आगमन की खबर गिरनार म सवत्र व्याप्त होगई। खेंगार भी अपरिचित न रहा। उसके मन की मुराद मानो पूरी होने को जा रही थी। उसने मन ही मन सोरठी को पाने के लिए षड्यत्र की सष्टि की। लक्खी बन जारे को उपवन म टिकाने के लिए उसस अपने भतीजे बीजा और बडे बड मुसा हिबो को उसके पास भेजा। लक्खी का स्वागत सत्कार किया गया। बीजा ने

लक्खी बनजारे को उपवन म वह स्थान दिया जा राव खेंगार के महल के सामने पडता था। सोरठी उपवन के इस महल म रहने लगी। खेंगार के आदेश से बनजारे के सभी सदस्यो को सभी प्रकार की सुख सुविधाएँ प्रदान की गईं। एक दिन सोरठी अपने महल की खिडकी से झाक रही थी कि उसकी दृष्टि युवक बीजा के सुगठित और तेजपूण शरीर पर पडी। वह एकटक मोहित सी बीजा को देखती रही। बीजा की आखें भी सोरठी की आंखो म गडी हुइ थी। उसका मन भवर सोरठी के मुख कमल पर मडराने लगा। बीजा और सोरठी ने प्रेम के अदृश्य सूत्र मन ही मन एक दूसरे के बाध लिये।

राव खेंगार बनजारे का ऐसी चाल म उलझाना चाहता था कि साप भी मर जाय और लाठी भी न टूटे। एक दिन लक्खी बनजारे का अपने हाथ से अमल पिला कर राव ने उसके सामने जूआ खेलने का प्रस्ताव रखा। अपने घुमक्कड जीवन मे बनजारा जूआ खेलने म कुशलता कभी न पा सका था। फिर भी राव के साथ उसने जूआ खेलना पसन्द किया। पासे मगाये गये। दाव लगने लगे। बनजारा किसी भी प्रकार अपना हेठी नहा दिखाना चाहता था। उसने भी बढ बढ कर दाव लगाया। जो भी पासा पडता राव के पक्ष म पडता। एक एक कर बनजारे ने अपनी बाळद की सारी धन सम्पदा दाव पर लगा दी। वह हारता गया। जब कुछ भी उसके पास न रहा तो उसने राव खेंगार से क्षमा चाही और उठ कर चलने का हुआ। राव ने कूटनीति का सहारा लेकर बडी चतुराई से लक्खी बनजारे को बताया कि अभी तो तुम्हारे पास मे सोरठी जसा अमूल्य हीरा है। अन्तिम बार भाग्य को अजमा लो। कौन जाने तुम्हारी हारी हुई सम्पदा पुन तुम्ह प्राप्त हो जाय। बनजारा लोभ मे आगया। उसने सोरठी को भी दाव पर लगा दिया। दवी देवताओ का नाम लेकर उसने पासा फेंका। लक्ष्मी उससे रूठ गई थी। अब की बार भी भाग्य न उसका साथ न दिया। वह सोरठी को भी गवा बठा।

बात का धनी लक्खी बनजारा सोरठी और सारी धन सम्पदा राव को साप कर खिन्न मन से अपने भाग्य को कोसता हुआ सूनी दिशाओ मे खोगया। राव ने अपने भतीजे बीजा को आदेश दिया कि वह बनजारे की प्रत्येक वस्तु को सम्भाल सम्भाल कर महलो म पहुँचा दे। साथ ही सोरठी को भी अन्त पुर के मणि महल म पहुँचादे। बीजा जब सोरठी के लिये डोली लाया तो उस अचानक ऐसा लगा कि सोरठी तो जन्म जन्म से उसी की है। एक बार उसने यह भी सोचा कि क्यों न सोरठी की डोली को खेंगार के महल के स्थान पर अपने ही महल में भेज दू। वह सोरठी के प्रति खेंगार के मोह को जानता था इसलिए ऐसा दु साहस न कर सका। सोरठी मणि महल म पहुचा दी गई।

अन्त पुर म खेंगार की अन्य रानियो म कानाफूसी होन लगी। सोतिया डाह की अग्नि रानी सोमलदेवी का सताने लगी। वह नहीं चाहती थी कि राव सोरठी के प्रेम म फस कर अन्य रानियो को उपेक्षा की दृष्टि से देख। उसने युक्ति सोची। जब राव उसके महल म आया तो उसने राव से निवदन किया कि यदि

आप सोरठी को रानी ही बनाना चाहते हैं तो पहले उसे तीर्थों मे स्नान कराइये, क्यो कि अब तक वह बनजारे के घर म रही है। राव गृहकलह से बचने के लिए रानी सोमल देवी के प्रस्ताव मे सहमत हो गया। उसने बीजा को बुला कर सोरठी की तीर्थ यात्रा का प्रब ध करने को कहा। बीजा एक सौ एक सशस्त्र सरदारो के साथ सोरठी को पालकी म बठा कर तीथ यात्रा के लिए चल पडा। सोरठी और बीजा एक दूसरे के प्रति पहले से ही आकृष्ट थे। अब तो उ ह परिचय वार्ता का भी अवसर मिल गया। प्रत्येक पडाव पर बीजा और सोरठी परस्पर खुल कर मिलते, बातें करते। बीजा स्वय रात क पडाव क समय सोरठी की पालकी के पास तनात रहता। इस अत्यधिक लगाव और प्रेम क्रीडा की सुग ध धीरे धीरे सभी सरदारो तक फल गई। वे लोग ऊपर से कुछ न कहते पर मन ही मन बीजा के इस व्यवहार से अस तुष्ट रहते। तीथ यात्रा के पश्चात् जब बीजा लौटकर गिरनार आने लगा तो सोरठी ने याद दिलाया कि हमने गगाजल को हाथ मे लेकर एक दूसरे को अपने जीवन का साथी चुना है। इसे भूल नही जाना। बीजा ने भी तल वार की मूठ पर हाथ रखकर विश्वास दिलाया कि जब तक जीऊगा तब तक तुम्हारा बन कर। गिरनार म प्रवेश करने के पश्चात् सरदारो ने खेंगार को सोरठी और बीजा के अपवित्र प्रम सम्ब ध का परिचय दे दिया। राव को विश्वास नही हुआ फिर उसने सोरठी मे सब कुछ जानना चाहा। सोरठी ने बीजा के साथ अपने प्रेम को प्रकट करना उचित नही समझा इसलिए उसने राव के सामने बीजा की स्वामिभक्ति सरलता तथा पवित्रता का ही बखान किया। सोरठी ने रूप के भवरो में राजा को ऐसा उलझाया कि वह बीजा और सोरठी पर अविश्वास कर ही न सका। एक बार सोरठी ने पेट दुखने का बहाना बनाया। चिल्ला चिल्ला कर सोरठी ने सारे अ त पुर को अधर उठा लिया। राव खेंगार दौडा आया। उसने वद्य को बुलाने के लिए सोरठी की स्वीकृति चाही। सोरठी ने रो रो कर कवल इतना ही कहा कि एक बार तीर्थ यात्रा मे भी उसे पेट म दद हुआ था तब बीजा ने ही उसका उपचार किया था। उसके पास किसी सिद्ध महात्मा की दी गई जड़ी है। यदि उसे बुला दिया जाय तो वह सम्भवत मेरे रोग का निदान कर सकता है। राजा का सकेत पाते ही सवक लोग दौड पडे। बीजा महल म हाजिर हुआ। वह सारी परिस्थिति समझ गया था। सोरठी बीजा की सहायता से राव को कही दूर भेज देना चाहती थी जिससे वे स्वत त्रता पूवक मिल सकें। बीजा ने आंखो की भाषा समझ ली। उसन पेट दद के उपचार की औषधि के रूप म सिहनी के दूध का नाम लिया। राव सोरठी के रूप जाल म इतना फस चुका था कि बिना विलम्ब किये वह स्वय इस काय के लिए चल पडा। सोरठी और बीजा राव की अनुपस्थिति म हसी ठिठोली राग रग म मस्त हो गये। राव जब कुछ दिनो तक न लौटा तो सोरठी और बीजा मन ही मन उसकी मत्यु की कल्पना करने लगे। एक दिन राव अचानक असमय लौट आया। राव सीधा सोरठी के महल म गया। उसने देखा कि बीजा सोरठी के साथ एक ही पलग पर सो रहा है। उसे काटो तो खून नही। वह

सम हो गया । किसे दण्ड दे । एक ओर माई का पुत्र था दूसरी ओर राजा की रानी । दोनो ही किसी न किसी प्रकार से राजा के घनिष्टतम थे । खेंगार ने उन दोनों के मिलने पर कड़ा प्रतिबंध लगा दिया और ऐसी व्यवस्था कर दी कि वे एक दूसरे को दूर से भी न देख सकें । सोरठी के बिना बीजा का जीवन निरर्थक हो गया । वह किसी भी कीमत पर सोरठी को प्राप्त करना चाहता था । सोरठी के लिए चाहे कुटुम्ब चाचा परिवार, राज्य सभी का नाश क्यों न हो जाय उसके लिए वही करणीय है जिससे उसकी जन्म जन्म की साथिन सोरठी मिल सके । काका के व्यवहार से क्रुद्ध होकर वह बादशाह के पास गया और खेंगार के सम्बन्ध में उल्टी सीधी कह कर बादशाह के कान भर दिये । उसने बादशाह को उकसाया कि यदि आप गिरनार पर अधिकार करना चाहते हो तो यही सुअवसर है । इस समय राज्य की प्रजा और परिजन सभी राजा राव के विरुद्ध हैं । लक्खी बनजारा से ली हुई प्रचुर धन सम्पदा भी आपके हरम की शोभा बढ़ायेगी । बादशाह अपना लोभ संवरण नहीं कर सका । उसने कूच के नगाड़े बजाये ।

तीन पहर तक दोनों में घमासान युद्ध हुआ । खेंगार की लड़ाई देखने के लिए सूर्य भगवान् ने अपना रथ वहीं रोक लिया । वीरता के साथ लड़ता हुआ खेंगार खेत रहा । अतुल धन सम्पदा तथा सुन्दरी सोरठा को लेकर बादशाह अपनी राजधानी लौट आया । बीजा ने सपने में भी नहीं सोचा था कि रूप का लोभी बादशाह उसकी प्राण प्यारी को भी ले जायेगा । वह सोरठा के प्रेम में इतना बावला था कि एक दिन सोरठी के महल के सामने जाकर आत्म हत्या कर बैठा । सोरठी ने अपने प्रेमी को इस प्रकार मरते हुए देखा तो वह शोक से मूर्च्छित होकर गिर पड़ी । बादशाह सोरठी को येन केन प्रकारेण अपने अनुकूल करना चाहता था । उसने उसे अपनी अन्य बेगमों में अव्वल दर्जा देने का भी वायदा किया लेकिन सोरठी तो बीजा का नाम ले लेकर रोती रही । हार मान कर बादशाह ने उसे बीजा का दाह संस्कार सम्पन्न कराने की अनुमति दे दी ।

सोरठी अपने प्रिय बीजा के खून में तर शरीर को सबकी सहायता से श्मशान में लाई । चिता सजा कर उसने बीजा का शव अपनी गोद में लिया और अग्नि देवता से प्रार्थना की कि यदि मैं मन कर्म वचन से बीजा की रही हूं तो हे अग्नि देवता ! तुम मुझे अपनी गोद में स्थान दो । धू धू कर के अग्नि जल उठी । सोरठी और बीजा अपने नश्वर शरीर को लेकर भस्म हो गये । किन्तु उनकी प्रेम कहानी लोक जीवन का शृंगार बन कर आज भी लोगों के कंठों में समायी हुई है ।

शेणी-बीजाणद

बीजाणद क माता पिता उसे बाल्यावस्था म ही छोड कर स्वर्गवासी हो गय थे। वह दूसरा के ढोर चरा कर किसी तरह अपना जीवन बसर किया करता था। उसमे एक ईश्वर प्रदत्त गुण था कि वह अपने मधुर कण्ठो से लोगो को रस म निमग्न करता रहता था। सुरीले कठो के साथ वह बासुरी पर भी मीठी तान छेडने म इच्छुक था। इसलिए उसने तूम्बो और बास की सहायता से एक बीणा तयार की और कठोर साधना के पश्चात बीणा बजाने म कुशल हो गया। उसकी सगीत कला पर मुग्ध होकर छत्तीसो राग रागनिया उसके इशारे पर नाचने को तयार रहती थी। बीजाणद इसी प्रकार गाय चराता बीणा बजाता और मधुर कण्ठा से रस धारा बहाता हुआ जगल मे घूमता रहता था। इस मस्ती म एक दिन वह गौर बियाली गाव की सीमा पर पहुच गया। वह प्यासा था समीप ही कुए पर एक युवती पानी भर रही थी। बीजाणद ने तुर त कुए पर पहुच कर उस युवती से जल पिलाने के लिए अनुनय किया। दुर्भाग्य की बात थी कि बीजाणद की कुरूपता को देखकर वह इतनी घणा से भर गई कि पानी पिलाना तो दूर रहा उसने बीजाणद को देखना तक भी पस द नही किया। युवती वहा स अपन घर चली गई। रात हो गई थी। बीजाणद अपने गाव का न जा सका। रात को वह उसी गाव के वदा नामक चारण के यहा ठहर गया।

अपनी आदत के अनुसार उसन उसी मस्ती क साथ बीणा बजाई। लोग झूमन लग। बीणा का स्वर सारे गाव म गू ज गया। वेदा चारण की पुत्री शेणी इस मधुर सगीत को दीवार क पीछे खडी खडी सुनती रही और झूमती रही। जिस बीजाणद की कुरूपता स घणा करके शणी ने उसे पानी तक नही पिलाया था वही शणी उसके सगीत पर अपना तन मन धन सवस्व याछावर करने को तयार हो गइ। उसन चुपचाप बीजाणद को हृदय समर्पित कर दिया। बीजाणद क सगीत स उसका यह प्रथम परिचय था। वेदा चारण बीजाणद के सगीत से इतना प्रभावित हुआ कि उसने उसे यदा कदा गाव म आने का निमन्त्रण दिया। बीजाणद का आना जाना वदा चारण के आतिथ्य और प्रेम के कारण बढता गया। उसक शील स्वभाव मधुर भाषण और मनोमुग्धकारी सगत स प्रसन्न हो कर एक दिन वेदा ने बीजाणद स कहा— तुम्हारी जा इच्छा हो माग लो। धन दौलत गाय भसें हाथी घोडे आदि सभी कुछ मेरे पास है। तुम्हारे लिए मेरे पास कुछ भी अदेय नहा है।'

बीजाणद न थोडा सहम कर कहा— मैं जो मागू गा उसे देने म आप सकोच तो न करेंगे। वेदा न छाती पर हाथ रख कर अपने वचन को निभाने की प्रतिज्ञा की। आश्वस्त बीजाणद न शणी के साथ पाणिग्रहण का वचन माग लिया। वेदा ने स्वप्न म भी यह नहा सोचा था कि वह उनकी क या को माग लेगा। अत वह

आगबबूला हो गया। वदा न कहा—'तुम बडे धोखेबाज हो। क्या कभी कोई अपनी बेटी किसी भीख मागन वाले को द सकता है। पुत्री के विवाह के सम्ब ध म मैं यह सोच भी नही सकता कि किसी अनात कुलशील को मैं अधा होकर अपनी बेटी सौंप दू गा। चाहे मुझे वचनभग का दोष ही क्या न लगे। मैं अपनी बेटी तुम्ह नही दे सकता। बीजाणद चुपचाप बिना खाये पिये अपनी भूल स्वीकार करता हुआ वहा से चल पडा। वेदा के जाति भाइयो ने इस वचनभग पर उसे उपालम्भ दिया। उन्होंने उस पर व्यग्य किया कि अगर वचन निभाना नही जानत थे तो वचन दिया ही क्या था। वदा का भी इन उपालम्भो के परिणाम स्वरूप अपन वचन भग पर पश्चात्ताप होने लगा था। इसलिए उसने बीजाणद को वापिस बुलाया और एक शत क साथ अपनी पुत्री का हाथ उसक हाथ म देने के लिए अपनी स्वीकृति दी। उसकी शत थी कि आज स एक वष भीतर भीतर यदि बीजाणद 101 नवचदी भैंसें लाकर मुझे सौप देगा तो मै अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ कर दू गा। यदि वह एसा नही कर सके तो मुझे अपना मु ह भी न दिखलावे।

मन म शत पूरी करने का निश्चित सकल्प करके बीजाणद चुपचाप वहा से चल पडा। इस कठिन समय म उस अपनी सगीत शक्ति की सहायता का भरोसा था। नवचदी भैंसा की तलाश म वह नगर उपवन गाव सभी कुछ छानता रहा और अपनी वीणा का मधुर स्वर सुना कर लोगा को रिझाता रहा। जहा जहा वह गया लोगो ने उस मनचाहा वरदान मागने को कहा। उसन लोगा के सामन एक मात्र अपनी यही अभिलाषा जाहिर की कि मुझे नवचदा भसें चाहिए। जिनके चारा पर सफेद हो पू छ क बाल सफेद हो, एक एक स्तन धवल हो ललाट पर सफेद तिलक हो मु ह सफेद और एक एक आख सफेद हो। इस प्रकार की स्वेत रगी चन्द्र चिन्ह वाली नवचदी भसें मुझे चाहिए। यदि आप म से कोई इसका पता ठिकाना ही जानता हो तो मुझे बता कर उपकृत करे। समय का चक्र घूमता गया। वष पूरा होने म कुछ ही दिन शेष रहे। एक वष का वह अमूल्य दिन भी आ गया जिसकी समाप्ति के पश्चात् शणी उसके लिए स्वप्न की वस्तु बन जायेगी।

वरस वल्या वादळ वल्या धरती लीलाणी।
बीजाणद रै कारण, शणी सूखाणी॥

(वष भी वापिस आ गया, बादल भी लौट आये पृथ्वी भी हरी भरी हो गई किन्तु बीजाणद के बिना एक शेणी ही झूर झूर कर सूख गई)

पर बीजाणद न लौटा। उस अन्तिम दिन शेणी उसी कुए पर पानी भरने गई जिस कुए पर पहले पहल शणी ने बीजाणद को देखा था। आज वह अपने पानी न पिलान के उस पूव कृत्य पर मन ही मन पछता रही थी और आशा कर रही थी कि यदि उसी प्रकार बीजाणद आकर मुझ से पानी मागे तो मैं उसे जी भर कर पानी पिलाऊ। किन्तु आशा क अन्तिम क्षण भी बीत गये। बीजाणद न लौटा। काली भयकर रात्रि जसे तस करके शणी ने काट दी। **किसकी** रात **और**

किसकी नींद । मुह अधरे ही वह अपने पिता के पास गई और कहने लगी—"पिताजी ! मैंने हिमालय मे जाकर गलने का निश्चय किया है क्योकि मेरे जीने की साथकता समाप्त हो गई है ।' वदा चारण ने जब अपनी पुत्री के इस असाम यिक निश्चय को उसी के मुख से सुना तो उसे धक्का लगा । उसने कहा— पुत्री इस अवस्था म यह वराग्य कसा ? मैं तो तुम्हे ससार म फलते फूलते देखने की अभिलाषा लिए हुए हू । इसीलिए जी रहा हू । कोई अच्छा ठिकाना देखकर तुम्हारे हाथ पीले करना चाहता हू । इसलिए यह पागलपन छोडो ।' शेणी ने उत्तर मे कहा—

'चारणिया लख चार बाधव कह बोलावियै ।
बीजा री वरमाळ औरा गळ ओपे नही ।।"

पिता ने बहुत समझाया किन्तु शेणी अपने निश्चय पर हिमालय की भाति दृढ थी । वह चल पडी । बडी कठिन और साहसिक यात्रा के पश्चात् वह हिमालय म गलने के लिए पहुची । जिस हिमालय पर पाण्डवो के समान बलिष्ठ योद्धा भी अपने आपको गलने से न बचा सके थे उस हिम के आगार म वह कुसुमवत् कोमल नवनीतवत् मदुल शेणी ज्यो की त्यो रही । उसका शरीर क्षतिहीन रहा । वह पवतराज हिमालय से प्राथना करने लगी— हे पिता ! जो व्रत लेकर मैं यहा आई हू उसे पूरा करने मे मेरी मदद करो । मुझे अपनी शरण म ले लो । तब हिमालय ने उत्तर दिया— बेटी ! तू अभी कु वारी है । कोई भी अकेला यहा गल नही सकता । शेणी ने बीजाणद का पुतला बना कर उसे अपन पति के रूप म वरण कर लिया । पुतले को वरमाला पहनाई । पति के प्रतीक को गोद म लेकर वह बफ मे बठ गई । हिम समाधि के फलस्वरूप थोडी देर पहले जिन परो से कु कुमवर्णी आभा फूट पड़ती थी वे पर अब काले पड गये । उनकी चेतना विलुप्त हो गई ।

इधर अचानक शेणी की आवाज से पवतराज गू ज उठा । बीजाणद उसे ढू ढता ढू ढता यहा तक आ पहुचा था । उसने शेणी के पास पहुच कर कहा—' एक दिन की दरी हो गई । तुम्हारे पिता को एक सौ एक नवचदो भसें देकर आया हू । हे प्रिये ! अब लौट चलो । शेणी ने कहा— घुटनो तक मेरा अग गल चुका है ऐसी अवस्था म मैं तुम्हारे लिए भार नही बनना चाहती ।' बीजाणद ने उत्तर दिया, कोई चिंता नही ।

वल रे वदारी, पागळी होय घण पाळसा ।
कावड काध करेह जात्र तुझ ले जावसो ।।

अर्थात् हे वेदा की पुत्री, यदि तू पगु हो गई है तो भी कधे पर कावड रख कर मैं तुझे अपने साथ यात्रा (तीथ) के लिए ले चलू गा ।" नही बीजाणद अब यह नही हो सकता—

गळियो आधो गात आधा म आधो रह्यौ ।
हमें मसळता हात बीझाणद पाछा वळौ ।।

अर्थात्—हे बीजाणद, अब तो शरीर का पौन अग गल चुका है। अब निष्फल प्रयत्न न कर, घर लौट जा।

पर चारण ! एक कामना बच रही है, अन्तिम बार अपनी वीणा बजा कर सुनादे।"

वीजा जन्त्र बजाड हेमाजल हेलो दियो।
मोह्या मच्छीमार, मोही जळ री माछळी।।

बीजाणद ने वीणा हाथ म ली। हिमालय हुकारा देने लगा। जाल डालते हुए मछलीमार स्तब्ध की तरह ज्यों के त्यों रह गये। मछलियां मानो सगीत सुनने के लिए जल के बाहर मुह निकाल कर खडी हो गईं। वीणा की मोहक ध्वनि सुनते सुनते ही शेणी की चेतना लुप्त हो गई। प्रेमियो की जीवन गाथा का यही दु खद अवसान है।

राजस्थान की गौरवपूर्ण लोक गाथाओं को लोकप्रिय और व्यापक बनाने का श्रेय बीजाणद जैसी ही लोक साहित्य की अमूल्य निधियो को है जिनकी शा त और क्रान्त ज्योत्स्ना म अपने सपनों को सजोता व पूरा करता हुआ राजस्थान का जन जन आज भी गव से अपना सिर उन्नत किये हुए है।

रोमांचकथात्मक लोकगाथा

निहालदे-सुलतान

चक्रबन के पुत्र मनपाल के सात रानियो म किसी के सतान नही थी। राजा को पडितो ने सतान का कोई योग नही बताया तो वह बहुत दु खी हुआ। शिकार खेलते हुए राजा ने एक दिन एक हरिण पर बाण चलाया। हरिण के पीछे राजा भी एक गुफा म घुसा तो क्या देखता है कि हरिण ने गोरखनाथ का रूप धारण कर लिया है। राजा ने समाधिस्थ गोरख को शीश झुकाया और बैठ गया। कई दिन बीतने पर भूखा हो गया तब सोचा काश रानी करणावती भोजन कराती। यह सोचते ही रानी बाइ और आकर बठ गई। राजा मनपाल चकित हो गया। गोरख न पलकें खुलते ही झोली से एक जौ निकाल कर रानी को दिया जिसे खाते ही वह गभवती हो गई। राजा के भोजन मागन पर गोरखनाथ ने कहा—

जदबी कह रह्या था वे गोरखनाथजी
म्हारी एक बी सुणो ना बी है राजा मेरा जाव
तीरज तै मारा था या राजा मेरा पर मे
बहुत ही दुख पाया था बी मेरा या जीव।
भोजन ऐसा दृष्टि न राजा ना मिल
मेरा घूणा से बी जाय बी ऊठ
लज्या तेरी रानी हो राजा या करणावती
भाजन धम जीयो बी महला मैं जाय॥

राजा ने रानी का घोडे पर बिठलाया और दोनो कीचलगढ आ पहुचे। कीचलगढ के महलो मे भोजन करते समय राजा ने उस माया का प्रसग छेडा। रानी ने सतान की इच्छा और जौ खाने की बात भी बताई। भोजन के बाद सोने पर स्वप्न म रानी को गोरखनाथ ने दशन देकर कहा चेली तू किसी बात से न घबरा नवें महीने तुम्हारी कोख से एक ऐसा करामाती पुत्र उत्पन्न होगा जो सातो पीढियो को उज्ज्वल कर देगा।

यह सुन रानी जग गई और दासी भेजकर राजा को बुला सारा हाल सुनाया। गोरख की कृपा से राजा बडा खुश हुआ। राजा के यहा नवें महीने पुत्र पैदा हुआ जिसका नाम सुलतान रखा गया। सात वष का होने पर उसे पढने भेजा गया। साथियो क साथ तीरकमान चलाता। कुए पर पानी भरने आई पनिहारियो के घडे फोड डालता। राजा के पास फरियाद पहुँची तो ताबे के कलश बनवा दिए किन्तु पक्के धनुष बाण बनवा उनको भी फोड डालता। एक दिन एक ब्राह्मण

लड़की ने कचहरी म ग्राकर शिकायत की कि या तो राजा सुलतान को 12 वष का देश निकाला दे ग्रन्यथा वह शाप देगी। दीवान के कहने से 12 घडी का देश निकाला तय हुग्रा लेकिन हुक्म लिखते वक्त 12 वष की ही कलम बह गई। घोड़ा ग्रौर काले वस्त्र लेकर करणावती स विदा ले सुलतान चल पडा। सारी नगरी उदास हो गई। चलते चलते गोरख का धूणा ग्राया वहा कु वर ने शीश झुकाया। गोरख ने धाड को बधवा कर काल वस्त्र उतरवा दिए। भगवा पहना दिए। सारा हाल सुन गोरख ने कहा तू 12 वष की तपस्या पूरी कर। पर स्त्री को माता ग्रौर पराए धन को धूल समझना। झूठ न बोलना। युद्ध मे पीठ न दिखाना। 52 साके करने की सिद्धि का वरदान तुम्हे दे रहा हू। भीड पडने पर स्मरण करना सब सकट काट दू गा।

जद गोरखनाथजी चेला कह रह्या
मतना घबरावे बी दिल के मांय
मेरी दवा स रे चेला पदा तू हुग्रा
चेली बारा वरस की तपस्या हू देयी निभाय
पर बी तिरिया न रे चेला माता समझिये
पर धन समझिये धूल समान
मू डा बी सेती झू टज मतना बोलिये
चेला रण म बी जाके उलटा मुडिय नाय
बावन बी साका का वरदाना तने दे रह्या
बावन की साझा काई लिख दिया मस्तक माय

भिक्षा पात्र देकर गोरख ने कहा सीधा ईडरकोट चला जा। वहा जाने के सवा पहर बाद कमधजराव की सवारी निकली। घोडे की फेंट से दाने बिखर गये ग्रौर सुल तान रोने लगा। कमधजराव ने उसके माता पिता का हाल पूछा तो सुलतान कहने लगा—

हाथ जोड के कह रह्या पाता वन का
म्हारी एक बी सुणो ना बी है राजा मेरा जाव
ग्रम्बर भी पटक्या या झली माता धरतरी
को या बी कहिय माई बाप
भिखा बी किसी म हो राजा मत पडा
मुस्कल कटना दिन ग्रौर रात
इतना बी कहकं मणधारी रोवण लाग्या
उबल्या समदर बी पटता नाय ॥

कमधजराव ने छाती के लगाकर कहा तू मेरा धम का पुत्र ग्रौर मैं तेरा बाप हू। ईडरगढ के नरनार सुलतान क सौन्दय ग्रौर तेज को देखकर मुग्ध हो गए। रानी ने भी कहा मैं इसे फूलकु वर से बढ़कर मानू गी। फूलकु वर ग्रौर सुलतान साथ-साथ पढ़ने ग्रौर घुड़सवारी करने लगे।

एक बार शिकार खेलते हुए फलकु वर और सुलतान केलागढ़ जा पहुचे। सुलतान और निहालदे का बाग म वार्तालाप हुआ। सुलतान ने देश निकाले की बात भी बताई। दोनो एक दूसरे पर विमुग्ध हो गये। घर आते ही निहालदे ने माता से कहा कि अन्न जल तभी ग्रहण करू गी जब सुलतान के साथ मेरे सम्बन्ध की स्वीकृति दे दे। कि तु निहालदे के पिता ने उसे समझाते हुए कहा—

जद बी या मधपत जिस दिन कह रह्या
म्हारी एक भी सुणें ना बी बेटी मेरो जाव
कला मैं जद का है बेटी गढपति
आणे छोटो मैं को या कोरडियो सिरदार
करी मैं सगाई है बेटी कमधजराव क
बो बी कर माजना मेरा ख्वार
बचन बाप बी है बेटी दुनिया म एक है
कसे नट ज्याऊ मुश्किल मन मड जाय

कि तु निहालदे तो तन मन स सुलतान को वरण कर चुकी थी। उसने पिता को सुलतान द्वारा बताया गया उपाय सुझाया कि उसका स्वयवर केलागढ म रचवा दें ऊचे बास पर मत्स्य टका दें नीचे तेल का कडाह भरवा दें तेल मे प्रतिबिम्ब देख जो मत्स्य वेधन करेगा उसी के गल म वह वरमाला डालेगी। इस युक्ति से मधपतराव प्रसन्न हुआ। फूलकु वर से की गई सगाई वाली लडकी का स्वयवर हो रहा है यह देखकर वह क्रोध से जल उठा। जहा जहा परवाने पहुचने थे वे राजा आ गए। फूलकु वर सुलतान के साथ कमधराव भी गया। फूलकु वर से सगाई होने के कारण प्रथम अवसर मत्स्यवेध का उसे ही मिला। वह असफल रहा और घोडे ने कडाह से दूर कूदते हुए जान बचाली। फूलकु वर का मान भग हो गया। कमधजराव की इच्छानुसार अब सुलतान को बुलाया गया। गोरखनाथ का स्मरण कर सुलतान ने तीर चलाया और मत्स्य का पेट वेध डाला। सभी ने सुलतान की प्रशसा की। रानी निहालदे ने सुलतान के गल म वरमाला डाल दी। दोनो का विधिवत् विवाह हो गया। नगरी के सभी नरनारियो ने सुलतान की सराहना की। सवत्र उत्साह और उमग की लहर दौड रही थी।

विवाह के बाद बरात के लोग हाथी घोडो पर सवार हो केलागढ से ईडर कोट को चल पडे। वहा पहुचते ही सुलतान की शादी हुई जानकर कमधजराव की रानी क्षुब्ध हो उठी। फूलसिह उदास खडा हो और सेवक तुल्य सुलतान का उसकी माग से विवाह हो जाए वह सहन न कर सकी। राजा ने समझाया पर एक न मानी। रानी ने सुलतान का अपमान किया और यहा तक कह डाला मेरे शहर मे तुम्हारे लिए कोई स्थान नही अन्नपानी की तलाश है जो मेरे शहर मे रहे।

सुलतान ने निहालदे की यवस्था ऊदा नामक भाट की लडकी को टहल म छोड धम के पिता कमधजराव के यहा कर दी। दुर्भाग्य ही कहिए कहा विवाह और कहा सुरपति वियोग। सुलतान ने धम के पिता स विदा लेनी चाही। माता

द्वारा अन्न जल न ग्रहण करने की शपथ की भी याद दिलाइ। पिता ने आधा राज्य देना चाहा पर सुलतान ने माता के वचन का पालन करना ही उचित समझा। कमधजराव ने विश्वास दिलाया कि निहालदे की वह तनिक चिन्ता न करे, उसे वह अपनी पुत्री से भी बढकर मानेगा।

सुलतान न ऊदा को सार सम्हाल दी और पिता से आज्ञा ले घोडा पर सवार हो चल पडा। कमधजराव के नेत्र भी डबडबा जाए। सुलतान नरवलगढ की ओर चल पडा। पनघट पर पनिहारियों स शहर व नरेश का नाम पूछा तथा नौकरी आदि के बारे म पूछा। पनिहारियो न बताया कि यह शहर नरवलगढ है। ढोलसिंह यहा का नरेश है। रानी मारू का यहा हुक्म चलता है। नौकरी की कोई कमी नही। यह सुनकर प्रसन्न हो पानी पीकर सुलतान रवाना हो गया। एक सेठ के जनाने बाग म डेरा लगा दिया। थका हुआ था। नीद आ गई। सेठ की लडकी सहेलियो के साथ बाग मे पहुची। उसके दुपट्टे को हटा डाटने लगी। सुलतान जगा और उसके सौ दय पर सेठ की लडकी मुग्ध हो गई। वह कहने लगी उसके यहा महल पर पहरेदार हो जाओ। मनचाहा वतन लो। पति की भाति वह रखेगी। सुलतान शात पापम् कह कर कहन लगा बहिन एस वचनो से क्षत्रियत्व के कलक न लगाओ। 5 वष की लडकी को मैं पुत्री, 20 वष की को बहिन तथा तीस वष से ऊपर की को माता तुल्य समझता हू।

यह सुनकर त्रिया चरित्र करा कचहरी म शिकायत कर दी। ढोलसिंह ने सारी बातें सुनकर बाग को घरने फौज भेज दी। घेराव देख सुलतान आपत्ति म फस गया और वह गोरख का स्मरण करने लगा। उधर ढोलसिंह के साथ बडे बडे सरदार महाजन और पडित बाग मे आ पहुच। सुलतान के भव्य रूप सौ दय और तेज को देखकर उसकी कुलीनता का अनुमान कर लडकियो की बदमाशी तुरत समझ गये। लडकियो की चर्चा करना ही अनुचित समझ ढोलसिंह न सुलतान से पूरा परिचय देने की प्रायना की। उसन बताया थकने स वह लेट गया था अब जिधर दाना पानी होगा उधर जाऊगा। सभी सुलतान की ओर आकृष्ट थे। मह फिल लग गइ। रानी द्वारा भेजी दासी को हलकारे ने बताया कि आज वही महफिल जमी है वही महाराज का थाल लगेगा। दासी ने उस सुदर शख्स की चर्चा की। रानी ने दशन करने हेतु दासी को डोली सजवाने की आज्ञा दी। बाग म जान और सुलतान से किए गए वार्तालाप का वणन देखिये—

डोली सजवा दी दासी जिस घडी
व कहार बी लिया जा बलाय
हार सिंहार हो सिरदारो मारू कर रही
जाण सोला भरी थी बी वा सिंगार

मारू— मेरा महला को राखूगी म पहरादार
ओरा के भाव मैं नौकरा का वहाना सू राखती
करके राखूगी बो मेरा भरतार।

ठीक सेठ की लड़की की भांति मारू की विनय को देख वही जवाब दिया।

सुलतान— जद बी कह रह्या था व पोता चकववन का
म्हारी एक बी सुणें ना हे बाइजी मेरा जाव
पाच दस बरस की या पुतरी मेरी लागती
जाणें दस बरस की लागे है भाण
नीसी स ढलके हे माता मैं समझता
यो छतरापन का कहिए बी काम
इतनी बी कह क छतरी कोरडा ठालिया
एसी लबाज तो बाई फेर मत बोलिये
नही मारू गा कोरडा बी बदन के मांय

सुलतान न उन लोगो के आग्रह को टाल चलना ही ठीक समझा। वह चल पड़ा। पनिया पठान के समदबुज पर मुलाकात की। पनिया 565 जवाना का अफसर था। रात का पहरेदार था। सुलतान ने उसका अन्न खाया अत रात का स्वय पहरा दिया। नरवलगढ म चन्द्रवली दानव हर परिवार से रोज एक आदमी 12 बकरे 12 बोतल शराब 12 मन पूआ पपडी भट लेता था। उधर सुलतान को गश्त लगाते समय रतना की बहिन मेदा की रोती सी आवाज सुनाई पडी—

नरवल शहर प या बी पडियो बीजली।
तो जाणो ढोलकवर न डसियो बासिक नाग।
बुरी लाग रा अठ दाना की लगवा दई
आज जामण जायो जा रह्यो दाना की भेट

सुलतान जा महल के नीचे खडा या मेदा स कहन लगा—बहिन तू बडी दुखियारी जान पडती है तेरा दुःख मैं दूर करू गा। सारी बात जानकर सुलतान ने कहा वह स्वय दाना की भेंट जाएगा। कि तु मेदा और उसकी भावज का विश्वास नही हुआ। पर सुलतान जल्लादो के साथ प्रसन्नता के साथ चला गया। 12 पुए पपडिया 12 बोतल शराब खा पीकर दानव को ललकारा। दानव भी आज साहसी व्यक्ति का देख आश्चर्य म पड रहा था।

सुलतान और दानव दोना म द्व द्व युद्ध छिड गया। अ त म दानव को पछाड डाला। दानव ने पूछा वह कौन है—क्योकि कीचलगढ के प्रतिहार वशीय क्षत्रिय और जगदेव पवार के सिवाय उसे कोई मार नही सकता। सुलतान का परिचय पाकर दानव काल ही निकट आया समझ गया। सुलतान ने दानव के नाक-कान काट लिए और उसे घसीट कर बाड से बाहर फेंक दिया। सुलतान मेदा रतना आदि का सोया जानकर पनिया पठान के यहा सो गया। प्रात होते ही दानव के मरने की खबर सवत्र फल गई। दनका का मेला सा लग गया। रूमी घूमी पहल वानो ने दानव की अगुलिया काट मारने की गप्प हाक दी कि तु अ त मे रहस्य खुल गया। सुलतान ने कटे नाक कान दिखाए और दानव की प्यारी लाश को

गोरख का स्मरण कर चिता पर रख दिया। सुलतान का शानदार जुलूस निकाला गया।

मारू ने सुलतान को धमभाई बनाया और प्रशासन काय सौप दिया। उसी दिन से मारू का जगह नगरी म ढोलसिह का हुक्म चलने लगा। रतना सेठ सुलतान का पगडी बदल धमभाई वन गया। सुलतान ने प्रजा के दु ख दूर करने की सोची। रतना से प्राप्त धन से कुए खुदवाए।

नरवलगढ मे जानी नामक पक्का चार था। उसे पकडने पर मारू ने शूली का हुकम सुना दिया किन्तु सुलतान ने बचा लिया अत उसका हृदय परिवतन हो गया। दोनो धमभाई बन गये। रतना धमभाइ से रुपये लेकर सुलतान को एक सुदर बावडी दी। सोमवती अमावस्या के पावन पव पर मारू सजधज कर सनिको के साथ सूरत बावडी का चल पडी। देखिय—

ता जावो मारू करवट लागी बी हार सिंगार
डाली सिंगरवाया मारू जिम घडी
डोला म बठी बो मारूपत नार
पालम चढया था वे ढोला का जिए दिन वागिया
ता जाण ढाइ स खोजा बी ले लिया मारू साथ
जान छतीमू वे नरवलगढ की चढ चली
अण्डा व फरवया बी जरद निशान
बाज्या नगारा व मारूपत नार का
न्हाया ने चल देई वो मारू नार

उधर भामसिंह बनजारा 1700 जवाना का साथ लेकर मारू का अपहरण करने सूरत बावडी जा पहुचा। मारू का भला बुरा कहा डोला छीन कर पदल जाने दिया और कहा कौल करार के अनुसार भाई सुलतान से मिलकर सवा पहर के भीतर आ जाना वरना नरवलगढ की इट से इट बजा दू गा।

दासी के हाथ चौपड खलत सुलतान को मारू ने खबर भेजी। वह ढालसिह के पास पहुचा और कहा जानी पनिया पठान और गोद मेरे मित्र हैं फिर बनजारा कौन हस्ती है—लोहोनेगे। बनजारे को पत्र लिख भेजा—

घणी भी लिखी बिणजारे न कग्गी
लाखो ऊपर लिख रह्या जै हर नाव
सवा पहर को करार मारू जै कर लिया
कोई बी बात स भामसिंह मन घबराये
मारू न भेजू मैं थारा साथ के मांय
रात एक रात तो मांगी मन देय द
दिन उगता लेमर डाला आऊ मैं दाहा के मांय
दू गा तनै भापत पण परेम सें
तो जाणै और बी घवाऊ थारे भेंट

राजा बी करके भेजू बिणजारा भोमसिंह
राखेगो मन तू बी सदा रे याद ।

हलकारे के साथ परवाना प्राप्त कर भोमसिंह बड़ा खुश हुआ । उसन हलकारे को 25 अशर्फिया दी तथा सभी सरदारो को पढकर भी सुनाया । सुलतान ने रतना, पनिया गोदू और जानी को बुलाया और विचार विमर्श कर दूसरे रोज युद्धारम्भ करने की फौज को आज्ञा दे दी । रतना सेठ ने सारा फोज खच देने की हा भरी । पनिया पठान ने पटेबाजी की दक्षता बताते हुए तलवार की करामात दिखान की कही । गोदू ने बजरग बली द्वारा सवा प्रहर तक वज्र का शरीर होने के वरदार की बात कही और बताया सवा प्रहर म वह फौज के विपक्षी वीरो को मारेगा । जानी ने सुलतान से कहा उसे दुर्गा का इष्ट है वह रात्रि म सब कुछ करेगा बनजारे की 52 तोपा का भी नही चलने देगा । अ त में घम माइयो क पूछन पर गोरख का इष्ट बताकर बचे हुए काय को सम्पन्न करने की बात सुलतान ने कही ।

रात्रि हो चली । जानी ने दुर्गा का स्मरण कर बनजारे के टाडे के 900 बला, 1500 ऊटा और 750 हाथिया की रस्सिया साकलें खोल डाली । 52 तोपें निष्फल करके 70 बनजारिया का वणिया और भोमसिंह को दाढी मूछ काट लाया । प्रात दोनो फौजो म भयकर युद्ध होन को था । बनजारा 90 हजार फौज ले चढा कि तु सत् की लडाई करने भोमसिंह के भाई प्रभातसिंह और पनिया पठान दगल म पटेबाजी के लिए उतरे । प्रभातसिंह इसमे मारा गया । इधर गोदू ने सवा प्रहर म फौज को खपा डाला । सुलतान ने गोरखनाथ का अभय वरदान प्राप्त कर लिया । बनजारे न हारकर आत्मसमपण कर दिया । मारू न सूरत की बावडी म स्नान किया । बनजारे ने ढोलसिंह को शोश नवा कर सिरोपाव भेंट किया और मारू का चुनडा प्रोढाई । सवा लाख की खरात भिक्षुप्रा म बाटी । सवत्र हुष छा गया ।

सुलतान को नरवल म रहत साढे पाच वष हो चुके थे । वह निहालदे का ईडरकोट मे छोडते वक्त श्रावणी तीज पर लौटने का वचन दे आया था । विरहिणी एक एक दिन मास की तरह बिता रही थी । निहालदे ने चार चारणो को परवाने देकर नरवल भेज । मूसलाधार वषा हा रही थी । चारण मारू के महल के परनाल के नीचे खडे हो गये । दासी के द्वारा पानी की झारी लटकाने पर पानी उडल कर उसम परवान रखकर धोडा ले गए । मारू न प्रथम परवाना खालकर पढ़ा—

साढ क महीने मेरी साकण रत प परवरी ।
बादल घटा बी छाद असमान ।
सावण महीन बी दादर मार ।
भरें भादवे मरी सोकण कोकिला ।
आसोजा म बी समन्दर सीप ।
काती म कृत्तिका मगसर म मिरगली ।
तो पोह के महीने भी जम्बू या सयाल ।

माह म मजारी फागण म गज तुरी ।
चैत महीन वी सब बणराव ।
बसाखा म कोयल काग ।
जेठ के महीन ववर सोकण है जाणिये ।
आपणी आपणी भी सत ले ली सब जणा ।
हे मोकण त्रिया हे कहिय छ भी रुत बारामास ।
अब भी परवाणा मेरी सोकण बाच क ।
विदा कर दे ना मी मेरा भरतार ।

क्रमश माहू ने निहालदे के छ परवान पढ डाले जिनका सार यही था कि तूने पराये पति का अपना लिया है और उसे दुनिया के भाव भाई बना रखा है ।

माहू ने उसी वक्त, नासी को भेजकर सुलतान को बुलाया और सारा किस्सा बताया । निहालदे का श्रावणी तीज का वचन याद दिलाया । सुलतान को शीघ्र इडर जाने की कही । सब नगर नर नारियो से विदा ल सुलतान चल पडा । रास्ते म बेगम न मोहित हो सुलतान के दरियाई घोडे को पत्थर और उसे खरगोश बना दिया । अन्त म गोरख का स्मरण किया तो मुक्ति मिली ।

उधर निहालदे ने हारकर सती होने की तयारी प्रारम्भ कर दी । सखी ऊन ने बहुत समझाया पर उस दुखिया ने जीवन व्यर्थ समझ अब मृत्यु ही उचित समझी । कमपजराव ने ऊची चिता बनवादी थी । सुलतान को ईडर के पास मध्याह्न हो गया । वह थक भी चुका था । बृक्ष के नीचे आराम करते हुए उसे नीद आ गई । चार बजे कौवो का काव काव सुनकर जगा और घोडे को दौडाया और सीधा चिता स्थल पर गया । निहालदे को चिता पर पूरा होश नही था सुलतान ने हाथ पकडा पर उसने फूलसिंह क भरोसे भाई कह दिया । सुलतान चिता स नीचे आ गया । इधर निहालदे का भी सुलतान के आने का पता लगा तो अपनी भूल पर बहुत दुःखी हुई । उसने शिव का स्मरण किया । शिव पार्वती ने निहालद सुलतान के भावर दुबारा फिरवा दिए । उनके विवाह से सभी प्रसन्न हो उठे । अब व कीवलगढ का तयारी करने लगे । कमधजराव से आज्ञा ली । दरियाई घोडे पर चढकर चल पड । रास्त म पानी मे बह गये । प्रातःकाल सुलतान नदी के तट पर लग गया किन्तु निहालदे बिछुड गई । घाट पर ही सुलतान की पनवाडी अगरीमल सेठ से भेंट हुई जिसने सुलतान को धम का पुत्र बनाया । वे पत्न शहर म गए तो सारी बात को सुनकर सभी प्रसन्न हुए ।

उधर काशी के धीवरो ने दरियाई घाडे को निकाल लिया और वही गगा के किनारे निहालदे जा लगी । हवराम पण्डित की चार पुत्रियाँ न जो पूजा हेतु आई थी, उसे माता पार्वती समझा । निहालदे ने अपना परिचय दिया । उसने पर-पुरुष का मुख न देखने के प्रण को बताया । वे उसे अपने घर ल गई ।

काशी का कराडीमल सेठ वर की तलाश म पत्न शहर पहुचा और सुलतान की सगाई कर दी । विवाह का तयारियाँ होने लगी और गाजे बाजे क साथ बारात

रवाना हुई। पन्ना शहर की अट्टालिकाओं के गवाक्षों से सुलतान को देखकर शहर की जनता मंत्र मुग्ध सी हो रही थी। पण्डित की पुत्रियां भी दौडी निहालदे के पास गई पर उसने तो पर पुरुष को न देखने का प्रण ले रखा था। हठ छोडने पर अन्त में निहालदे की आखो की पट्टी खोली तो उसने तो अपने पति को ही वर रूप में पा लिया। पण्डित की लडकियां उसे आडम्बरभरी व झूठी समझने लगी। निहालदे ने परवाना लिखा कि हे पति! आपने प्रण किया था कि जल से जीवित बचा तो दूसरा विवाह न करूंगा। वह करुण क्रन्दन करने लगी। हाथ की मूंदडी फेंकी जो सुलतान की गोद में जा गिरी। मथराजा की निहालदे को देखकर सुलतान बहुत ही प्रसन्न हुआ वह हाथी पर से कूद पडा निहालदे की ओर बढा। सारे शहर में कोहराम मच गया। सुलतान ने सारा रहस्य खोल दिया। उसे अपनी पत्नी और दरियाई घोडा दोनों काशी में मिल गए। हुवेराम से विदा लेकर सुलतान और निहालदे काशी से कीचलगढ के लिए रवाना हो गए।

दोनों चलते चलते कीचलगढ के बाग में पहुंचे। देश निकाले की अवधि में 7 दिन शेष थे। दक्षिण देश का सौदागर बताकर मालिन से बाग का द्वार खोलने को कहा। मालिन ने कहा मनपाल का हुक्म है उसका पुत्र देश निकाले से आने पर स्वयं ही इसे खोलेगा। 25 अशर्फियां पाने पर मालिन ने द्वार खोल दिया। चार घडी के बाद न जाने पर मालिन ने राजा से फरियाद की। 12 हजार फौज इकट्ठी करके मनपाल ने बाग को जा घेरा। सुलतान ने गोरख का स्मरण किया। राजा की तोपें नहीं चली तो चकित हो उसने सौदागर को करामाती जाना। सौदागर उर्फ सुलतान ने कहा—हे राजा! मैं तेरे पुत्र का परवाना लाया हूं। राजा परवाना पाने को उतावला हो गया। किन्तु सुलतान ने कहा पहले मुझे सारी कथा कहो किस तरह तूने उसे देश निकाला दिया। राजा ने सुलतान के जन्म से कथा प्रारम्भ की। कथा पूरी होते होते 7 दिन भी बीत गये। सुलतान ने देश निकाले का आना पत्र सौंप दिया और पिता के चरणों में गिर पडा। उत्सव मनाया गया। शहर हर्ष के समुद्र में हिलोरें लेने लगा। सुलतान की माता भी पालकी में बैठ बाग में मिलने आई। निहालदे सुलतान दोनों ने चरण स्पर्श किये। राजा रानी पुत्र और पुत्रवधू से मिलकर बहुत खुश हुए। शहर में विशाल जुलूस निकाला गया।

मनपाल ने चौबीस वर्षीय पुत्र सुलतान का राज्याभिषेक कर दिया। पंडितों के बाद साहूकारों ने सुलतान का तिलक किया और भेंट अर्पित की। सुलतान के न्याय इन्साफ की सभी प्रशंसा करने लगे। शहर में बाग बगीचे लगवाना सडकें कुए बनवाना आदि लोक कल्याण के कार्यों से प्रजा और राजा मनपाल अत्यधिक हर्षित हुए।

राज्याभिषेक के बाद कीचलगढ में सुलतान को रहते वर्ष बीत गए। मारू ने धर्मभाई के साथ न्याय देना चाहा। ढोलसिंह ने कहा जो चाकरी करके गया है, रह 12 हजार फौज को सजाकर ढोलसिंह चल पडे। मारू ने सुलतान को ढोला के साथ हुई वार्ता लिखकर मराती बाजार लगाने के लिए लिखा। सुलतान ने नत्थू

कोयागर को बुलाकर दादा चकवा बए के खजाने की चाबिया ली। पर सत्यप्रिया से द्वार स्वत ही खुल गया। सुलतान को रत्न प्राप्त हुए। उसने मारू को पत्र लिखा कि ईश्वर की कृपा स खराती बाजार भी लगवा दिया है।

कीचलगढ म ग्रान-दात्सव छा गया। खराती बाजार के दृश्य को देखकर ढोलसिंह चकित हो गया। याचक और गरीब हीरे पन्ने लिए जा रहे थे। मारू ने पति से कहा देखिए मेरे भाई का वैभव, विपत्ति म आया था, अब 52 गढ, भाई के अधिकार म हैं।

बीखा बी किसी म यो बरी मत पडो।
बीखो यो छुटवादे बी जलमी भोम ॥

ढोलसिंह लज्जित हो गए। 52 तोपें छोडकर ढालसिंह का सम्मान किया। ढोल सिंह ने बताया कि सुलतान के पदापण के बाद नरवलगढ म भलाई और नकी क काय होत हैं। मारू ने भोजन करने के बाद भाई से कहा मरे इस तरह का भात लाना—

आप सरीका ल्याय गारा गाबरू
मूछा जिणरी काना तक पूची जाय
बावन गढा का ल्याये भाई गढपती
छप्पन किला का बी वे मिरदार
हाथी बी ल्याये बीरा कजली वन का
लाल अम्बारी सोभा कहिय न जाय
करवा बी ल्याये पूगल र देश का
ओछी गीडी बी लम्बी नाड
घोडा बी ल्याये हो मेरा भाई जलहरा
चीर बगावें बी कहर दरियाव
भावज का डोला लीये भाई साथ म
बावन गढा का बी जिनाना डाला बी लीये साथ
कीचल बी शहर का लीये बामण बाणिया
और लीये बी सारा साथ
काकड ने उठाय हा भाई चूनडी
जल पाछ बी काकड को राखिय आदर सत्कार
काकड स बी हीरा माती पन्ना मुह बरसिय
हो भाई पाटा प बरसो बी पन्ना वे जुहार।
ऐसे बी मरा आदर सत्कार राखीये
नरवल शहर का बी मनस्या पाप धोइर।

सुलतान ने कहा ईश्वर सब भला करेगा वही करने वाला है। ढोलसिंह मारू को प्रेमाश्रुविगलित, भावभीनी विदाई दी गई। उधर मारू की पहुच का प्राप्त कर सुलतान प्रसन्न हुआ ात की तयारी प्रारम्भ कर दी। 52

गढपति और 56 किलो के सरदारो को ससैन्य भात मे शामिल होने की खबर दी गई। भात रवाना करते वक्त 52 तोपें चली। वे ईडरगढ पहुचे जहा सुलतान का धर्म का पिता कमधजराव था। कमधजराव के पुत्र फूलसिंह का साथ लिया। बूदी की सरहद मे फूलसिंह ने धोखा देने की सोचकर अपने मामा श्यामसिंह हाडा को पत्र लिखा—

घणी लिख था मामाजी न वदगी, लाखा ऊपर जैहरनाम।
एक पोता आगा मामाजी चकद वण का लके जाहू मारू क सत को भात
जिण क पचरणी का डोला साथ मे छप्पन बी करोड का कहिये भात
लुटया जातो हो मामाजी लूटल्यो मैं बी मानू गो थारो ग्रहसान।

हाडो ने दावत देनी चाही। दूतिया छल से निहालदे को ले गई। बूदी दुर्ग मे निहालदे रखी गई। जानी ने देवी का ग्रा ह्वान कर हिजडे वेश मे जाकर निहालदे का खुश किया और अब दाना ने बचने का विचार विमर्श किया। हिजडे के वेश मे निहालदे को पार कर दिया। दुर्गा की कृपा से वह सुलतान के डेरे ग्रा गई। उधर जानी ने हाडा सरदारो को शराब पिलाकर पागल कर दिया। श्यामसिंह की दाढी मूछ काट ली और हाडा सरदार के वेश मे निकल पडा। आते दुकानदारो को पीट डाला। बूदी दुर्ग के द्वार खुलवा उन्हे फटकारा कि क्या निगरानी रखते हो निहालदे तो इसी द्वार से निकल गई और कोडो से द्वारपालो को पीटा। जानी सुलतान को मिलने पर सब हाल कह सुनाया। सुलतान गद्गद् हो गया।

उधर क्रोधित हो 1700 हाडाओ ने युद्ध की तयारी की। युद्ध प्रारम्भ हो गया। श्यामसिंह हार गया। फूलसिंह के धोखे की बात कह कर श्यामसिंह ने क्षमा मागी।

भात को चलता किया। जल मे प्रवाहित काठ की कतली को जानी ने सुलतान को दिखाया जिसमे महकदे राजा धोल की लडकी की करुण प्रार्थना पढी कि मुझ हिन्दू बाला को मुसलमान ग्रदलीखा पठान की कद से वली सुलतान या जगदेव पवार ही छुटा सकते हैं। वह रोज एक परवाना लिखकर जल मे प्रवाहित कर देती। दरिया के किनारे महल मे रहती थी। ग्रदलीखा ने छ महीने की अवधि दी थी कि इस बीच कोई हिन्दू राजा छुडा लगा अन्यथा वह कलमा पढाकर अपनी बेगम बना लेगा। सुलतान ने महकदे को छुडाने का निश्चय कर लिया। जानी इस कार्य के लिए गया। अन्दलीखा की तोपो को दुर्गा की कृपा से निष्फल बना दी। बाग की मालिन को मौसी बना अशर्फिया देकर राजी करली। चतुराई से वधू वेश मे जा मिला। परवाना देकर अदलीखा को सचेत कर दिया। महकदे को छुडाकर नथिया मालिन से विदा ली। सूर्योदय होते होते जानी और महकदे सुलतान के तम्बू मे जा पहुचे।

महकदे ने अविवाहिता बताकर सुलतान के उपकारो के प्रति कृतज्ञ हो शादी की याचना की। उसे बहिन मानकर सुलतान ने आदर किया। धोल के शहर आने पर उसकी पुत्री महकदे को सौंप दिया। धोल ने सुलतान का बडा भारी

एहसान माना और चरणो म गिर पडा । सुलतान की भात की फौज अब आगे बढ़ी । आगे रात्रिकाल म दानव की भूमि म विश्राम करत वक्त दानव निहालदे को ले निकला । उसे उसने धमपुत्री बनाकर रखा । सुलतान और जानी ने निहालदे को छुडाने के प्रयत्न प्रारम्भ किये । दानव सप के वेश मे वट के नीचे खेल रहा था । जानी ने कहा बाण चलाओ कि तु सुलतान ने कहा लडने सामने खडा हो तभी चला सकता हू । अन्त म जानी न तीर से दानव को मारा । मरते वक्त जल-महल म रखी निहालदे धमपुत्री को दानव ने बचाने की प्राथना की ।

सुलतान बावडी म मणि की मदद से पानी चीरता हुआ जा पहुचा । निहालदे पहल चिंतित हुई कि दानव प्रात ही निगल जावेगा कि तु दानववध की सुनकर अत्यधिक प्रसन्न हुइ । सुलतान दानव क महल को देखने लगा । एक खुली कोटडी मे घुसा और घुसते ही अजड किवाड ब द हो गए । सुलतान ने भीतर से कहा रानी अब तुम जानी को खबर करो वही किवाड काटकर निकालेगा । मणि ले जाओ पानी फटता जाएगा । रानी को बाहर जाते ही देवलगढ का राजा भानुसिह मिला । वह शिकार खेलने आया था अपने निवास म ले गया । काफी समय बीत जानपर जानी चिंतित हो बावडी की ओर चल पडा । वही उसे निहालद का सदेश मिला । अब बिना मणि के बावडी म कैसे जाए । दुर्गा का स्मरण करते ही उसन निहालदे का पता बता दिया । जानी ने मनिहार का वेश कर लिया और कहता फिरता—

> चूडा काई पहरो जो अे ज्यानी मनिहार का
> तो जाण जका अमर रहेगा बी सुहाग
> ऐजी सुहाग ।

जाते वक्त साधु के झगडते हुए दो शिष्यो स झर झर कथा खडाऊ और सोटा प्राप्त कर लिए । जानी ने निहालदे को छलने वाली दूती का ठगा । उसका सारा गहना लेकर नाक कान तक काट लाया । फिर निहालदे का छुडा लाया । भानुसिह की पराजय हुई । जाते वक्त बडे चेल को सोटा और खडाऊ तथा साधु के छोटे चेले को झरझरकथा वापस देकर इसाफ कर दिया और निहालदे को लेकर आगे बढा । निहालदे को आगे करके मणि की मदद से बावडी मे प्रवश किया । सुलतान का बताया छिणी हथोडा से कटने वाले ये जादू के कपाट नही ह । कहा सुलतान गुरु गोरख का स्मरण क्यो नही करत । तब सुलतान के घ्यान आया कि मैं तो गुरुजी का भूल ही चुका था । ऐसा करते ही किवाड खुल पडे । वहा स चलकर उन लोगा ने कच्छ के अधिपति बनेसिह और उसके भतीजे जगतसिह का सुलह किया । जगतसिह की सत्तर हजार फौज थी और उसे स्वय को शिव का वरदान प्राप्त था कि खांडा सदा सरजीत रहेगा । इधर सुलतान के 1700 जवान ही थे । अन्त मे जगतसिह न आत्मसमपण कर दिया । शिव न रहस्योदघाटन किया कि निहालदे उसी की चेली है । निहालद की पूजा से प्रसन्न हो शिवजी न सेना को पुनर्जीवित कर दिया । जगतसिह ने दावत का आयोजन किया । दोनो काका भतीजे बनेसिह

व जगतसिंह भात में शामिल हो गए।

इधर बुधसिंह को नरवलगढ़ आए छः महीने हो गए थे। उसके साथ 12 हजार फौज थी। पर मारू हठ पर तुली थी कि पहले भाई सुलतान भात भरेगा। ताराचन्द मेघचन्द मारू के दोनों भाई उबल पड़े कि मारू हमारी इज्जत नहीं करती। सुलतान न आया तो कटारी खाकर मरने तक को तैयार हैं। बुधसिंह व ढोलसिंह ने परामर्श किया। बुधसिंह ने सुलतान से युद्ध करने का निश्चय कर लिया। मारू ने पिता को पत्र लिखा तब युद्ध न करने का निश्चय किया। ताराचन्द मेघचन्द ने उसका विरोध किया। पत्र लिखकर मारू को संदेश भेजा। मारू ने बुरा माना कि भाई सुलतान को ये आलगिया कहते हैं। सूयदेव से मारू ने प्रार्थना की कि इधर भाई युद्ध की तैयारी कर रहे हैं उधर सुलतान आया नहीं। फूलकुंवर मारू से कहने लगी है माता भाई भात भरते हैं मित्र नहीं। तूने सुलतान के साथ मित्र का सा तो व्यवहार किया और दुनिया के भरोसे भाई बनाया। मारू को काटो तो खून नहीं। उसके तन बदन में आग लग गई।

दासी ने अटारी पर चढ़कर देखा तो सुलतान की फौज के हाथी, घोड़ों की गर्द उड़ रही थी। उसने सूचना दी। रतना सेठ भी मिलने आया। मारू ने रतना को बताया कि उसके भाई सुलतान से युद्ध करने को तैयार हैं। रतना ने ताराचन्द को समझाया। मारू ने परवाना भेजा कि हे भाई कामड़ को चुनड़ी ओढ़ाना। फूलसिंह झोली भर भर हीरे पन्ने लुटा रहा था। जानी ने आदेश दिया कि इस तरह न लुटाये। फूलसिंह नाराज हो गया। सुलतान ने फूलसिंह को मनाकर खुश किया।

नरवल के सारे साहूकार सुलतान से मिले। मारू ने परवाना भेजकर सुलतान को अपने पिता और भाई की नाराजगी की सूचना दी। फौज को मोतिया बाग में और 52 गढ़ों के गढ़पति सेठ साहूकार मित्र जानी गोदू बावला और निहालदे सहित सुलतान को समद बुर्ज में ठहरने की सलाह दी। समद बुर्ज चलने लगे तो नरवलगढ़ के द्वार बंद पाए। मारू ने द्वार की मोचाबन्दी की सूचना दी। सुलतान ने विनम्रता से बुधसिंह को समझाया कि घर में ही लड़ाई कैसी। आप भात पहले भरिए। पर बुधसिंह और ताराचन्द मेघचन्द तो अहंकार से भरे हुए थे। गोदू ने फौज में तहलका मचा दिया। बुधसिंह बेहोश हो गया। उसके पुत्र भी घबरा गए। अब वे समद बुर्ज की ओर चल पड़े। रात्रि को जानी चोर ने दुर्गा की आज्ञा से बुधसिंह जो चुनड़ी लाए उसकी चोरी करली। समद बुर्ज से सुलतान ने परवाना लिख भेजा—

> धणी बी लिखे या मारू न छतरी बलणी
> तो जाण लाखां उपर बी ज हर नाव
> तेरा बी कहणा बाईजी म्हे करया
> तो जाणें समद बुरज में बी गया म्हे आय॥
> बावन गढ़ां का आया संग में गढ़पति।
> तो जाण उथल किला का बी व सिरदार॥

बडा बी बडा है पडत ल्याया मरे साथ म ।
तो जाणें ग्रौर बी कहिय व साहूकार ।।
बावन व जिनाना डोला भाया साथ म ।
तो जाण तेरी भावज का बी डोला है जिएके माय ।।
ज्यानी ग्रौर कहिय गोदू बावला ।
ता जाण इतएा बी मेला हुम्रा समद बुरज माय
घमड तोडया ताराच-द मधच द का
तो जाणें बावलिय गोदा बी दिया उएान भगाय
भोत खुशियाली बाईजी दिल म्हार हाय रही
सो जाण ग्राछी या घडी बी बाईजी गइ ग्राय
हरख उछाव मोत हो रया बी रग ग्रौर चाव
हुक्म ज देदे ग्रब म्हाने मात का
तो बाईजी ग्रामा बी थारी हथिया पोल ।।

मारू पत्र पढ्कर बहुत ही प्रसन्न हुइ । दासी रतनकु वर का मात को बुलावा दने भेजा । ग्रमियाद रानी न शत लगा दी कि सुलतान पाप क फूलो की वर्षा करें तब ग्राऊ । सुलतान ग्रब चिंतित हो गया । जाना न दुगा का ग्रौर सुलतान ने गोरख का स्मरण किया । इन्द्र क ग्रखाड स पोप के फूला की 7 डालिया उठा लाया । इस तरह ग्रमियादे की शत पूरी की ।

सत् का भात गाज बाजा के साथ चल पडा । हीरे पन्ना की वर्षा की जा रही थी । उधर इन्द्र न हप से वपा की झडी लगा दी । सत् के कारएा 5 नये कगूरों न झुककर प्रएाम किया । ढाई कगूरे पहल ग्रलग सुलतान को जुहार कर चुके थ । नरवलगढ़ के लोग इस दृश्य को देखत ही रह गय । उनका सारा मानसिक पाप धुल गया । रानी ग्रमियादे भी कहन लगी हे भाई प य है ग्रापको ग्रौर ग्रापके सत् को जिससे हथियापोल पर पोप के फूला की वर्षा की है । म ग्राज निश्चय ही इसे सत् का माहिरा मानती हू । सभी नर नारी सुलतान की प्रशसा कर रहे थ ।

सुलतान ने मारू बहिन को ग्रोढाने के लिए सवा लाख की चूनडी निकाली ग्रौर ग्रोढान ही नरवल के ढाई कगूरे झुक गए । फिर सुलतान ने ग्रमियादे को चूनडी ग्रोढाई पोल पर हीरे पन्ना की वपा हो रही थी । 52 गढो के गढ़पतियो ने मारू को चूनडी ग्रोढाई । जानी न सुलतान की ग्राज्ञा लकर बुधसिंह के तम्बू से चोरी हुई चूनडी ग्रोढाई । बुधसिंह नाराज हुए तो सुलतान ने विनम्रता स कहा मैं ग्रापका धम का पुत्र हू । जानी दुर्गा का लाडला ग्रौर मरा दिली दोस्त है ग्राप ग्र यथा न समझें । ढालसिंह न भी सुलतान चक्वा बन ग्रौर पडिहार वश की भूरि भूरि प्रशसा की । बडे ठाठ स बारात घा पहुची । छतीसा प्रकार क व्यजन बारात के लिए बनाए गए । जोरदार पहरावनी तयार की । सार नगचार कर बरात की विदाइ की तयारिया की गई । बरात जब सूरतगढ़ की ग्रार लौट चली तो सुलतान नी मारू स जान की ग्राज्ञा पान का उतावला होने लगा । ढालसिंह न कहा ग्रभी

ता मैंन भली भाति दावत भी नही दी । इतने म रतना सेठ ग्रा गया, वह कहने लगा कि ग्राज ग्राप सबकी दावत मेरे यहा होगी । तदनन्तर मारू से विदा होकर चल पडे । उस समय छत्तीसो जाति के लोग सत्यवादी सुलतान के दशन करने इक्ट्ठे हो गए थे । जब जुलूस चल पडा तो मारू के नेत्रो मे ग्रासू उमड ग्राए । रतना सेठ के भी नेत्र भर ग्राए । ढोलसिंह ने कहा जब जब भात का प्रसग चलेगा ग्रापके सत् के माहिरा का प्रसग ग्रवश्य चलगा । सुलतान ने विनम्रता से कहा मैं तो भात भरने म निमित्त मात्र था । यह सब कुदरती साथ की कृपा का फल है । चकवे बन का पाता सुलतान भात भर कर फौज के साथ कीचलगढ को चल पडा । मारू के यहा सुलतान द्वारा भरे हुए भात की चर्चा सदव मानस पट पर स्वर्णाक्षरो मे ग्रकित रहेगी । जनता प्रेम ग्रौर श्रद्धा स नत होकर सुलतान को स्मरण करती है ग्रौर करती रहेगी ।

घर कू चा धर मजला फौज सहित सुलतान गगराड की भाडी म पहुचा । सूर्यास्त होने से वे लोग वही रुक गए । हिंसक जानवरो क बचाव हेतु रात को कठिन पहरा लगा । प्रात सुलतान के स्नान करके ग्राने पर रानी ने भीडी म सर करने की इच्छा व्यक्त की । साथ ही कहा ग्राप चीते या शर का शिकार करें ग्रौर सर के समय हमारे साथ तीमरा ग्रादमी न रहे । वसा ही किया गया । दो घोडो पर सवार हो चल गए । दोनो धूप म एक वट वक्ष के नीचे चौपड खेलकर तलया म स्नान कर शीतल छाया मे सो गए । वट से उतर एक पीवणा साप ने निहालदे को पी लिया । सुलतान बडा दु खी हुग्रा । निहालदे के घोडे की सार-सम्भाल रखने की कहकर वही छोड ग्रपने घोडे पर कफन लाने मोती शहर को रवाना हुग्रा । शहर के द्वार पर पनवाडिन जादूगरनी का पान खाते ही शुक बन गए । उधर वट की ग्रोर सयोग से भोमसिंह बनजारा ग्रा निकला । पूछने पर घोडे ने निहालदे को पीवणा पीने की बात कही । मोमसिंह ने गारडी मत्र पढा । वह हर हर करती जी उठी । घोडे न निहालदे को सारी कथा खोल कर कही । भोमसिंह सुलतान की खोज म निकल पडा । मोती शहर के द्वार पर उसी जादूगरनी पनवाडिन का पान खाते ही भोमसिंह खरगोश बन गया । भोमसिंह निहालदे को 70 बनजारिया ग्रौर सेना की सुरक्षा मे छोड गया था । काफी देर हुई जानकर जानी सुलतान को खोजने चला । निहालदे ग्रौर बनजारियो को ग्राश्वस्त कर वह चला था । पनवाडिनने ग्राते ही पान खाने को कहा पर जानी न कहा मैं पसे चुकाए बिना नही खाता । उधर शुक सुलतान ने जानी को पहचान लिया । पिंजडे के नीच टप टप ग्रासू गिरने लगे । जानी को सारा रहस्य समझते देर न लगी ।

जानी ने उसके सौदय की प्रशसा कर चौपड का खल खलन का प्रस्ताव रखा । वह बडी प्रसन्न हुई । पर जानी न कहा चार ग्रादमी होने जरूरी हैं । पन वाडिन ने शुक ग्रौर खरगोश का क्रमश सुलतान ग्रौर भोमसिंह बना दिए । जानी ने दोनो को इशार स समझा दिया ग्रौर उसे कहा ग्राप तीनो की पार्टी हार गई तो दो म स एक ल लूगा । पनवाडिन की शत थी कि हारने पर जानी पर उसका

अधिकार हो जाएगा। जानी ने दुर्गा का ध्यान किया। जादू की विफलता से वह घबरा उठी। गोरख के स्मरण से सुलतान बच गया। भोमसिंह फिर खरगोश बना दिया गया। गोरख ने आकर मत्स्येन्द्रनाथ का स्मरण किया। जादूगरनी को दण्ड दिलाया। भोमसिंह को भी खरगोश योनि से छुड़ाया। पनवाड़िन को गोरख ने गधी बना दिया। तीनों भोमसिंह के डेरे आए जहां सुलतान व जानी का आदर सत्कार किया फिर भोमसिंह ने प्रस्थान की तयारी की।

प्रात काल सुलतान तालाब पर स्नान करने गया जहा 7 परियो का विमान आया। उसमे से परिचय प्राप्त कर चम्पा नामक शिरामणि परी ने बताया कि एक चकवे बन इन्द्र की सभा मे भी जाते हैं जो परिया का दान देते है। प्रतिहारवशी हैं। सुलतान ने कहा मैं उन्ही का पोता हू। सदेश देने लगा तो कहा साथ चलो। स्वर्ग मे परियो के यहा लडकी की शादी थी। एक प्रतिहार व दूसरा कछवाहा वश के वर थे। विजयी वर शादी करेगा यह शर्त थी। कछवाहा वर जीतने पर प्रतिहार की मांग का सवाल देख गोरख की आज्ञा से युद्ध मे कूद पडा और प्रतिहार से परी की शादी करा दी। सबलसिंह कछवाहा के हार मानने पर गोरख के द्वारा 1400 सनिको का पुनर्जीवित किया। वही इन्द्र के अखाडे मे चकवे बन और पोता सुलतान का मिलन हुआ। दोनो हर्ष से फूले न समाये। परिया ने फिर सुलतान को मत्युलोक म छोड दिया।

दूसरे दिन झीडी के शखपाड दानव को सुलतान ने मारा। फिर कीचल काट चल पडे। वहा पण्डितों ने पूजन विधि से तिलक किया। सुलतान ने अशर्फिया और मोहरें दी। राजगद्दी की पूजा हुई तथा हीरे पन्ने खरात म बाटे गये।

कीचलगढ पहुचने के बाद एक दिन सुलतान और फूलसिंह शिकार के लिए निकल पड़े। एक बारह कोस की झीडी मे पानी की तलाश मे बावडी पर जा पहुचे। वहा एक सुन्दरी की मूर्ति पर मोहित हो हठ पर तुले फूलसिंह ने वही रह कर सुन्दरी को प्राप्त करना उचित समझा। सुलतान के लाख समझाने पर भी एक न मानी। हारकर सुलतान को नारी की तलाश म जाना पडा। एक खाती की लडकी का धम बहिन बनाकर उसके पिता खाती से उस सुन्दरी का परिचय पाया कि यह आमनगर के राव आभसिंह की लडकी आभलदे की प्रतिकृति है जिसको फूलसिंह ने बावडी म देखा है। यह जानकर पम्पापुर के माग से सुलतान चल पडा। माग मे एक कछुए का उद्धार किया। सूखते तालाब के कीचड म वह तिलमिला रहा था। सुलतान ने आभानगर के दरिया मे ले जाकर उसे छोड दिया। कछुए ने कृतज्ञतावश सुलतान को हीरे मोती पानी मे से लाकर दिए और आभलदे का हार बनाने पुन हीरे पन्ने मोती दिए। अन्त मे दरिया के तट पर सुलतान ने आसन बिछा दिया जिस पर सुलतान जो सौदागर के वेश म था तथा आभलदे बैठी सुलतान के इशारा करते ही कछुए उन्हें दरिया के उस पार ले गया। सुलतान पम्पापुर म आ गया। मित्र की लडकी के यहा भोजन कर विदाई ली। आभसिंह फौज लेकर लडकी की तलाश मे चल पडा।

सुलतान के पीछे ही फूलसिंह चल पड़ा था। पम्पापुर की धमवहिन के (खाती की लडकी) सुलतान का घोडा बधा देखकर रुक कर सब समाचार ज्ञात किए। भोजन करके अच्छी ढाल आदि बनवाकर आभनगर को चल पडा। शाम को वटवक्ष के नीचे ठहर सप वेश म भ्रमण करते दानव को मार मणि प्राप्त की तथा बावडी म उसकी मदन से प्रवेश किया। बावडी मे घुसत ही सुन्दर रमणी दीख पडी। दोनो देखते ही एक दूसरे के हो गए। दानो ने दानव की लाश को जलाया। दानव स मुक्ति दिलाने वाले के प्रति कृतज्ञ हो चौपड खेलना प्रमालाप करना दानो न प्रारम्भ कर दिया। पम्पापुर का राजकुमार उधर शिकार खेलने आया था उसी वक्त वह फूलसिंह के कहने से बली सुलतान का देखन आई थी। उनक देखते ही दौडी तो एक दूती बाहर रह गई। बावडी मे वे लाग घुस नही सके। एक दूती का घर जाकर भेजा जो बावडी के तट पर आ रोने लगी और राजकुमारी के पास दु खदद पूछने आने पर भगा ले गई। आखिर राजा दोर्दसिंह ने रात दिन राने बिलखने पर बावडी वापस भिजवाया। सुलतान के बावडी पहुचने पर दोनो भाई मिले। इसी बीच आभसिंह फौज सहित आ पहुचा। आभसिंह और सुलतान का युद्ध हुआ। गोरख की माया व कृपा स हारे हुए आभसिंह की फौज पुनर्जीवित हुई। राजा ने सुलतान के साथ आभलदे का विवाह करने की मना कामना प्रकट की किन्तु उसक मना करने पर फूलसिंह के साथ आभलदे की शादी की गई। चलते वक्त बावडी से फूलसिंह दानव की लडकी को भी ले आया। फूल सिंह न आभसिंह तथा आभलदे को सारा किस्सा बताया और कहा इस लडकी के कारण आभलदे को किसी प्रकार का कष्ट नही होगा। व हाथी के हौदे पर बठ गई और सुलतान और फूलसिंह अपने घोडो पर सवार हो गए। उधर आभसिंह ने सस य आभानगरी को वापस प्रयाण किया। फूलसिंह को ईडरगढ छोडकर सुलतान कीचलगढ पहुच गया।

कई दिन बीत जाने पर एक राज 700 सवार और 1700 घोडो के साथ सुलतान फिर शिकार को निकल पडा। जगल म एक दिन और एक रात महफिल होती रही। दूसरे दिन भाजनोपरा त शेर की शिकार को निकले। बहुत प्यास लगने पर एक तालाब पर जा पहुचे। किन्तु तालाब का जलदीप नामक क्षत्रिय पहरा दे रहा था। उसने कहा जब तक आप लोग मुझे न हरा देंगे पानी को छूने तक न दूगा। सरदारो ने कोई शेर न मिला देख उसी स युद्ध करना उचित समझा। सुलतान ने समझाया कि उसका दोष नही है। वह ता किसी की आज्ञा से पहरेदार है। परिचय पूछा। सुलतान द्वारा करामाती योद्धा बताने पर 1700 वीरों में से कोई जलदीप से लडने को राजी न हुआ अत सुलतान स्वय तयार हुआ। उसने बच्चा जानकर कहा पहल तुम्ही वार करो किन्तु जलदीप ने अचूक प्रहार होने की बात कह पुन सुलतान से कहा। सुलतान के पुन कहने पर तीर चलाया जो सुलतान क चरणो म गिरकर वापस जलदीप के पास चला गया। दोनो इस जादू से परेशान। आखिर सुलतान ने पिता का नाम पूछा पर पता न लगा। जलदीप

को माता के पास भेजा। माता ने उन्हें पास बुलाया और सुलतान को पति स्वीकार करते हुए जलदीप के जन्म की कथा का रहस्य उद्घाटित किया। किस प्रकार निहालदे के मरदाने वेश पर मोहित हो उसने सुलतान के खाडे से फेरे लिए। कैसे दासियों द्वारा फूल शराब में मस्त सुलतान को उसके पास भेजा गया और उसकी उस पर छाया पडी। कैसे उसे निकलवा दिया गया। फिर बावडी पर दानव को धर्म की पुत्री बना लिया। यही पुत्र का जन्म हुआ। पिता दानव की आज्ञा से विदा होकर सुलतान की इच्छानुसार पुत्र सहित रानी साथ हो ली। सुलतान जब इस रानी रूपादे और पुत्र जलदीप सहित कीचलगढ पहुंचा तो मैनपाल सहित प्रजा अत्यधिक प्रसन्न हुई। सुलतान व प्रजा के बेहद खुश होने का कारण यह था कि उसके कोई पुत्र नहीं हुआ था। समय की ही महिमा देखिए कि एक दिन रूपादे दानव के फन्दे में फंस गई जिसे पुत्री बना लिया अ यथा खा जाता। जलदीप का ऐसा म य स्वागत भी होगा रूपादे ने स्वप्न में भी नहीं विचार किया था। आज कीचलगढ में सवत्र हर्षोल्लास छाया हुआ था।

समय की महिमा से ही राजा गेंद ने रघु नामक दुर्ग में दरबार लगाया और ढोलसिंह को पकडने का बीडा फेरा कि कोई नरवलगढ के स्वामी ढोलसिंह को पकड कर हाजिर कर दे तो बहुत बडा इनाम दूंगा। मोहन नामक एक बनजारे ने बीडा झेल और म्यान से तलवार निकाल राजा को मुजरा किया। गेंद ने कहा इस काय में दुर्ग और प्रजा को तकलीफ न उठानी पडे। 10 दिन की अवधि लेकर और 50 अशर्फियां लेकर बनजारा गया। एक दिन सदर बाजार से गोरख का स्मरण करके घोडे सहित ढोलसिंह को आकाश माग से ले चला और पहरेदारों पर जादू चलाया कि वे मूर्च्छित हो गए। बनजारे ने घोडा आगे कर लिया तथा मोहिनी विद्या से आकृष्ट राजा पीछे पीछे चल रहा था। 13 दिन की यात्रा करके वे रघुकोट पहुंचे। कचहरी में गेंद ढोलसिंह को सम्मुख उपस्थित देखकर बडा प्रसन्न हुआ। राजा को बिना कष्ट लाने का उपाय बनजारे ने बताया कि मैंने 12 वर्ष तक गोरख की कडी साधना की थी तब 12 कोस तक अन्तरिक्ष यात्रा करने का वरदान दिया था इसी मोहिनी विद्या का यह फल है। राजा ने बनजारे को पगडी बदल भाई बना लिया।

राजा गेंद ने ढोलसिंह के साथ अच्छा बर्ताव किया। उसकी सारी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखा। रहने को महल सुन्दर कक्ष तथा सेवा में नौकर चाकर रख दिए पर राजा को एक चिन्ता थी कि मारू उसके विरह में व्याकुल रहती होगी। गेंद से कहा आप मारू का परवाना लिख भेजें कि मैं यहां आराम से रह रहा हूं कोई कष्ट नहीं। इस सुझाव को पसन्द कर गेंद ने मारू को लिखा कि ढोलसिंह रघुकोट में कैद है। नित्य उठते ही उसे घोडे का दाना दलना पडता है जो मुझसे युद्ध करके हरा देगा वही ढोलसिंह को कैद से छुडा सकेगा। हलकारा परवाना लेकर पहुंचा। मारू पढ़कर स्तब्ध रह गई। मारू ने बली सुलतान का भय दिखाते हुए हलकारे को कहा गेंद की भवितव्यता सिर पर चढकर बोल

रही है । अब उसकी खर नही । हलकारे के द्वारा यह सदेश पाकर राजा ने तोप व रेवलो की मरम्मत करवानी शुरू कर दी और ढोलसिंह को कद म डाल दिया। फौज की सख्या बढाई जाने लगी । अस्त्र शस्त्र बनवाए जाने लगे ।

मारू की विपत्ति की इन घडियो म रतना सेठ से परामश किया और उसकी सलाह से 750 वीरो को घोडो पर सवार किया तथा कीचलगढ चल पडे । मारामल तारामल, टोलाच द तथा शकुन शास्त्री पडित सेना के साथ थे । घर कूचा घर मजना कीचलगढ के काकड पर जा पहुचे वही पर तम्बू रुपवा दिये । हलकारा भेजा । सुलतान सर को गया हुआ था अत मारू सेठ साहूकारो के साथ स्वय कीचलगढ जाकर जलदीपकु वर से मिली । सदर बाजार म कु वर की सवारी जाती दिखाई दी । परिचय पूछने पर जलदीप ने रतना सेठ को ताऊजी कहकर समाचार पूछे । रतना क हृदय म प्रेम उमड आया । जलदीप ने दशन लाभ का अहोभाग्य माना । वे लाग मनपाल स मिले । सारी बात सुनकर मनपाल गुस्स मे भर गया कि मेरे बेटे को पहले भी इसी मारू के कारण कई राजाओ से बर बाधना पडा है और अब फिर आ गई है । रक्षा के लिए अ यत्र आश्रय ढू ढो सुलतान को रघुकोट पर आक्रमण करने कभी नही भेज सकता । वे लोग उदास हो रहे थे तभी कचहरी के माग मे जलदीप मिला जिसने आश्वासन दिया कि शरणागत उनके द्वार से निराश नही लौट सकत । दादाजी ने तो पुत्र के प्रति वात्सल्य भाव से प्ररित हो ऐसा कहा है उसे अ यथा न समझें ।

तीसरे पहर 500 सरदारो के साथ सुलतान सर करके लौटा । रतना को देख छाती से लगाया । पूछने पर गेंद द्वारा ढोलसिंह को कद करने की कथा कही । सुलतान ने हसकर कहा काई चिन्ता न करो गुरु महाराज की कृपा से सब भला होगा । मारू को पत्र लिखा कि कोई चि ता न करो । साहूकारो को मैंने रोक लिया है । कल प्रात काल मैं मिलने आ रहा हू । गुरु गोरखनाथ के अनुग्रह स सब कुछ ठीक होगा । हलकारे का भेज दिया । इधर साहूकारो के लिए भ य दावत का आयोजन किया । महफिल जमी । चौपड का खेल शुरू किया । सुलतान ने पीछे के सस्मरणो की चर्चा छेड दी । रात्रि को सो गए । प्रात काल काकड पर मारू से मिले । जलदीप न मारू का प्रणाम किया । सुलतान ने कहा बहिन किसी प्रकार की चिन्ता मत करो । मारू को नरवलकोट के लिए रवाना कर सुलतान रानियो सहित कीचलगढ आया । राजा मनपाल को सब हाल कह सुनाया । मनपाल नाराज होकर कहने लगे मारू तुम्हारी बहिन नही हुणी है ।

सुलतान न समझाया कि गेंद राजा की आंखो म ढोलसिंह नही खटकता है । उसने कद इसलिए किया है कि सुलतान छुडाने आएगा और वरदान के प्रभाव से मैं उसे परास्त कर ससार म अमर हो जाऊगा । वस्तुत गेंद मुझे नीचा दिखाना चाहता है । मैं युद्ध नही करता हू तो दादा बन और प्रतिहार वश को कलक का घ बा लगता है । सुलतान की दूरदर्शिता और बुद्धिमत्तापूण निणय से राजा मन पाल खुश हुआ और अपनी भूल को स्वीकार किया ।

राजा गेंद स युद्ध करन की तैयारी होन लगी । 52 गढ़ो क गढपतियो को सेना सजाकर गेंद के विरुद्ध चलने का निमत्रण भेजा गया । दुर्गा के लडलो जानी को सुलतान न परवाना लिखा—

> सिद्ध वी श्री लिख धा श्रोपमा
> जाणै ज्यानी न लिखना वी ज हरि नाव
> रघुवी काट प ज्यानी चढाई करा
> नाई गेंद राजा के सग की लडाई लई म म्राट
> ढाल सिंह ने वी करया कद म
> श्राणे श्रपणा विना वी छुडवावणिया व न है कू ए ?
> मारू मी चला के श्रा गई कीचलकोट म
> तो ज्यानी श्राई की राखिय वी लाज ॥

हलकारे का भीनागढ़ भेजा गया । उस वक्त जानी चौहान की कचहरी लग रही थी । परवाना पढ़ते ही फौज तयार करन का हुक्म दिया । हलकार का कह दिया कि सग य शीघ्र श्रा रहा हू, कोई चिन्ता न करें ।

सुलतान ने ढालसिंह का बिना श्रपराध कद करन श्रोर मारू बहिन का छुड़ान हेतु कीचलगढ श्रान की बात गेंद को लिखी । स्वय द्वारा रघुकाट पर श्राक्रमण करन श्राने की लिखकर सावधान किया कि श्रापको जो भी करना हो कर लेना । हलकारा परवाना लेकर पहुचा । प्रत्युत्तर म गेंद न ललकार भरा पत्र लिख भेजा । 52 गढ़ो क गढ़पति श्रपनी श्रपनी सनाए सजाकर श्रा गए । जानी सेना लेकर श्रा गया । इस प्रकार 90 हजार योद्धाश्रो क साथ सुलतान न रघुकाट की श्रोर प्रयाण किया । रघुकाट स 7 कोस की दूरी पर 52 गढ़ों पहाड़ पर लगाकर पड़ाव डाल दिया । पत्र भेजकर सेना क श्रान श्रोर गेंद का तयार हो जान की सूचना दी । दोनो सेनाश्रो म घमासान युद्ध हुश्रा । तीन दिन म गेंद की फौज क 3 भागों का सफाया कर दिया, बाकी भाग भागन लग । फौज रघु दुर्ग म भीतर जा घुसी श्रोर कु वर जगदीप न गेंद राजा को जीवित पकड़ लिया । सुलतान न कहा कोई भी सनिक जनाना महलों म न जाए न प्रजा को कष्ट पहुचाए । ढालसिंह क साथ जितने भी कदी थ उनको जेल स छुड़वाया गया । ढालसिंह सुसज्जित होकर सुलतान स मिला श्रोर प्रसन्नता प्रकट करत हुए कहा श्राप न होत तो मुझ कारागार स कौन मुक्त करता । सुलतान न कहा गेंद को जीवित पकड़ लिया है कीचमगढ़ म ल जाकर कद म डाल देंग । रात को विजयोल्लास म महफिल जमी । नर्तकियो का नृत्य होता रहा श्रोर दूसरी श्रोर जश्न मनाया गया । गेंद न कहा है सुलतान मुझ श्रापकी करामात का पता नहीं था । श्रापन न मुझको पकड़ लिया । जगा न कहा था कि रघु दुर्ग को तोड़ने वाला इस ससार म कोई नहीं है । उसी कारण ढालसिंह को कद करवाया । मुझ पता था श्राप हो सुलतान हैं । पहले श्रापन को महाराजाश्रो श्रौर युद्ध म भी । 52 गढ़पति जिनक साथ लगान देते हैं उन्ह हराकर विजयश्री को वरण करन का विचार मैंन किया था ।

सुलतान ने कहा ढालसिंह महाराज का कैद कर तून अनीति का काम किया है। इन्ही की आज्ञा से कीचलगढ के जेल से मुक्ति मिल सकेगी। मारू को विजय की खुशी का परवाना मिला तो हृष से पागल सी हो गई। नरवलगढ मे राग रग मनाया गया। सारा शहर सजाया गया। याचको को खरात बाटी गई। मारू न भाई को नेक बधाई दे प्रत्युत्तर भेजा।

कीचलगढ म सवत्र खुशी छा गयी थी। तभी ताबागढ नरेश हरिसिंह ने जलदीप के साथ अपनी पुत्री कुम्भकु वर की शादी करने का प्रस्ताव भेजा। सुलतान न सभी की सलाह स इसे स्वीकार कर लिया। 52 गढो के गढपति मारू बहिन, ईडर म फूलसिंह को निम त्रण भज गए। मघपतराव भात लेकर पहुचा। कीचलकोट क अपार हष म शामिल होने दव भी तरसन लगे। यथा समय 52 हजार 750 हाथियो व 1500 ऊटो और असख्य घोडा पर सवार होकर बारात चली। कु वर जलदीप की शोभा का तो कहना ही क्या। चलते चलत सुभान नगरी की सीमा पर जानी के इन्कार करने पर भी सुलतान ने डरा डलवा दिया।

फूलसिंह को इस बरात म ऐसा लगा कि उसकी कोई पूछ नही अत नगरी क राजा बड को छल कपट करन की सोचकर पत्र लिखा कि कीचलगढ का बली सुलतान अपन पुत्र जलदीप की शादी करने ताबागढ नरेश हरिसिंह के यहा जा रहा है। साथ अपार धनमाल है। लूटने का यह सुअवसर है। मैं ईडरगढ का कमधज-राव का पुत्र फूलसिंह हू। अपना पीढियो स प्रेमभाव रहा है अत आपको लिखा है। चुपके से घाडे पर सवार करा हलकारा भेज दिया। हलकार ने बड का प्रत्युत्तर दिया तो फूलसिंह फूल न समाया। बड ने बली सुलतान को दूसरे दिन ही चुनौती दी कि आप छिप कर लडके का विवाह करन जा रह है कि तु ताबागढ हरिसिंह की लडकी कु भकु वर स मने अपने कु वर का सगाई कर रखी है। मैं इस अपमान को सहन नही कर सकता। इस माग को छोडकर ही विवाह रचाओ। ऐसा करोग तो मेरी सना ठक्के छुडा देगी।

यह परवाना मिला उस समय 52 गढो के सरदार व जानी बठे थ। जानी ने कहा कही जाओ एक साका तुम्हार लिए तयार है। बड को युद्ध की चुनौती स्वीकार करते हुए पत्र लिखा। बड के छोटे भाई सबलसिंह भी आग बबूला हो उठे और उन्होन 70 हजार सना सजा कर रवाना कर दी। सुलतान की ओर से पहल सवा पहर तक गोदू बावला 500 वीरो के साथ लडा पर अ त म हार गया। दूसरे दिन जानो के पुत्र दिलार न 7 हजार सना को लकर युद्ध किया और विजय प्राप्त की। बड न चिमनगढ़ क राजा भारमल को परवाना भजा। 1400 कलके घोडे मगान चाह। इसी बीच दुर्गा ने जानी को सारा रहस्य बता दिया। जानी ने लुहार का रूप किया और जामाता (चुनिया दे लुहार की लडकी का पति) मोती लुहार का बनकर गया। मोती की भू पहचान भी नही पाई। जानी रूपी जामाता न प्रणाम किया और दु ख क साथ बताया कि वह सुलतान की कद म है। आज बड राजा से सुलतान का युद्ध छिडन पर इसी शत पर उस छोडा गया है कि अपन

ससुर से 1400 मल के घोड़े लाए। माती लुहार मारामल राजा के लिए बना रहा था। मत उसमें लाग राजा द हार हो गया कि बड़ रा दन वह वचनबद्ध है। माती ने घर आकर कहा तो बुढ़िया आप म अरसर वाला आप जसा कौन मूर्ख है जिस समय पर उसी की बनाई चीज मांगी नहीं मिलती।

इस पर माती लुहार ने छल करने की सोची। उसने 1400 नकली घोड़ मारामल को दे दिए और 1400 असली घोड़ जानी का। जानी का किसान के गाड़ो पर 1400 असली घोड़ माती ने अर्द्ध रात्रि का लदवा दिए। दुर्गा माता की माया स रहस्य का कोई न खोल सका। गाड़ सन्दर बाजार से गुजर तो जानी ने चिमनगढ़ के राजा मारामल का पत्र लिखा है—राजा तूने माती लुहार का जवाई समझा है किन्तु मैं तो मीनागढ़ का जानी चोर हूँ। माती से छल किया है और तूने जो 1400 घोड़ मगाए हैं व नकली हैं असली 1400 घोड़े तो मैं चार लाया हूँ। मुझे दुर्गा का वरदान है। इसमें माती का कोई दोष नहीं है। यदि तू उसे दण्ड देगा तो तुझे जीता नहीं छोड़ूंगा। तुम्हारा जवाई बनकर घोड़े चोर के लिए जा रहा हूँ जो करना हो सो करना किन्तु दुर्गा के लाडल जानी के सामने तेरी एक न चलेगी। तू उसका बाल भी बांका न कर सकेगा। जानी ने यह परवाना राजा मारामल की कचहरी के दरवाजे पर लगवा दिया। मातेश्वरी दुर्गा की कृपा से सूर्योदय होते होते जानी लश्कर में जा पहुंचा और सुलतान से कहने लगा बाहर निकल कर देख मैं कल के घोड़े ले आया हूँ। सुलतान ने 1400 घोड़ों को देखा और देखते ही उसके मुख से निकल पड़ा है जानी, धन्य है तुम्हारे माता पिता को और धन्य है तुम्हारी दुर्गा माता को। मेरे अटके हुए कामों को तू ही पार लगाता है। यदि तू न होता तो मेरा बड़ा गर्क हो जाय।

कल के घोड़े लाने वाले गाड़ीवानों को जानी ने सुलतान की आज्ञा से हीरे पन्ने जवाहरात देकर सन्तुष्ट किया। उनके जाने पर जानी ने सुलतान से कहा कि उन कल के घोड़ों को चलाने की कला भी उसने सीख ली है और फिर सुलतान को भी कल के घोड़े चलाने की कला सिखा दी। युद्ध की तैयारियां होने लगी। कुछ घोड़ों को ऊंटों पर तथा कुछ को हाथियों के होदों पर लगवा दिया।

युद्ध का नगाड़ा बज उठा। राजा बढ ने जब युद्ध का नगाड़ा बजते सुना तो नकली घोड़ों को चलाने का प्रयत्न किया। सारे यत्न विफल रहे। चाबी भरने की बड़ी कोशिश की किन्तु सब व्यर्थ रहा। किले पर चढ़कर बढ राजा ने कहा कि नकली घोड़ भेज कर मारामल राजा ने हमें बड़ा धोखा दिया है किन्तु जो हुआ सो हुआ अब 90 हजार फौज लेकर सुलतान पर धावा बोल देना है। बैंड राजा की फौज आती देखकर जानी 1400 घोड़ों से काम लिया। उन पर नकली सवार बैठे थे। जानी ने ज्योंही कल दबाई उन घोड़ों ने शत्रु सेना का सफाया करना प्रारम्भ कर दिया।

असली स्थिति समझकर बड राजा चकरा गया। उसने कहा इसमें मारामल

का काई दोष नहा है । मीनागढ़ का जानी चोर असली घाडो को चुरा लाया है और नकली घोडा को इधर भेज दिया है । इनसे कोई न बच सकेगा जिसे बचना हो भागकर प्राण बचा ल । सारी सेना भाग उठी ।

सुलतान ने यह देखकर कहा जानी तुम धन्य हो । तुम्हार कारण ही आज की विजय हुई है । पीठ दिखाती सेना का सहार करना क्षत्रिय धम की मर्यादा के विपरीत है । जानी ने तुरत घोडा को चलाना बन्द कर दिया । बड ने पराजित होकर सुलतान को आत्मसमपण कर दिया । मुह म घास लेने पर क्षमा कर दिया गया । बरात को अब तांबागढ़ की ओर प्रयाण करने का हुक्म दिया गया ।

गाज बाजे के साथ ताबागढ के काकड पर बारात जा पहुची । हलकारा भेज कर राजा हरिसिंह को बरात आगमन की सूचना दी । हरिसिंह ने प्रसन्न हो हलकारे का 5 अशर्फिया दी । गाजे बाजे के साथ बरात के स्वागताथ राजा हरिसिंह के सर दार आगे बढ़े । हाथी भूमते हुए तथा घोडे नत्य करत हुए चल रहे थ । ताबागढ़ के काकड पर आकर सुलतान से मुजरा किया । सुलतान को हीरे पन्ने और कुवर जल दीप का पाच लाल मेंट की ।

परस्पर रामास्यामा करन के बाद बारात काकड से ताबागढ हो ओर चल पडी । हीरे पन्ने बिखेरता सुलतान चला । सब प्रशसा कर रहे थे यह लखदातार दरिद्रो का दारिद्रय सदा के लिए नष्ट कर देगा । गौरव जाने पर बारात के लिए तम्बू तने हुए थ । हाथी घोडा का अलग प्रब ध था । थाल म 51 लाल रखकर सोना चादी के नारियल तिलक म दिए गए । जानी न हाथी के हौदा म हीरे जवाह रात बिखेरना शुरू किया । ताबागढ के याचक तप्त हो गए ।

कु वर जलदीप हीरे पन्नो स जडित तारण पर पहुचा । कु मकु वर की सखी सहेलिया बा द को देखकर हर्षित हो उठी । आज सभी वर की प्रशसा कर रहे थे । ताबागढ सोनागढ हो रहा था । तोरण के नेगचार होने के बाद फरो की तयारी होने लगी । फरा के बाद जेमनवार दी गई । राजा हरिसिंह न दहज म असख्य वस्त्र आभूषण और द्र य दिया । रामरमी करके बारात कीचलगढ की ओर चल पडी । सुलतान को 52 साको का वरदान था । 52 साको म उसन अब तक विजय प्राप्त करली थी । राह म काई बखेडा न हुआ ।

कीचलगढ म आज नर नारियो क हष का पार न था । खटुलिकाओ और मकानो की छता पर लोगा की भीड लगी हुई थी । सारी प्रजा ध य बारात और वर वधू को देखकर धन्य ध य कह उठी । कु वर के द्वार पर आने पर आरता उतराई तथा बारणा रुकाई के नेगचार सम्पन्न हुए । सुलतान ने हीरे पन्न दिए तथा बारण रुकाई म बहुत से परगन दिए । सवत्र हष छाया हुआ था । सब आनन्द से जीवन यापन करत रह । आज सुलतान का भौतिक शरीर इस दुनिया म नही रहा किन्तु उसका यश शरीर सदव अमर रहेगा । युग बीत जायेंगे कि तु बन के पोत सुलतान की कहानी सदा लोककठ म जीवित रहगी । धर्मी, दातार और बाली सुलतान की कथा बडी श्रद्धा और प्रम से स्मरण की जाती रहेगी ।

गोपीचन्द

गौड़ देश के राजा त्रिलोकचन्द की रानी का नाम मनावती था। रानी सन्तान के अभाव में बड़ी दुःखी रहती थी। नाथों के प्रसिद्ध गुरु जालन्धरनाथ उन दिनों वहीं तपस्या कर रहे थे। उनके योग के चमत्कारों को देख कर बहुत से व्यक्ति उनके शिष्य हो गये थे। रानी मनावती भी उनकी शिष्या थी। वह पुत्र प्राप्ति के उद्देश्य को लेकर गुरु की मनोयोग से सेवा करती थी। उसकी सेवा से प्रसन्न होकर गुरु ने एक दिन उसे इच्छित वरदान मांगने के लिए कहा। रानी ने हाथ जोड़कर आंचल मुख में दबाकर निवेदन किया कि महाराज मुझे खाने पीने, पहनने ओढ़ने, माता पिता पति आदि सभी प्रकार का सुख उपलब्ध है पर मेरी गोद सूनी है। मरने के बाद हमको कौन तिलांजलि देगा। यही व्यथा रह रह कर मन को संतप्त करती है। यदि गुरु प्रसन्न हैं तो मुझे सन्तान सुख प्रदान करें। गुरु जालन्धरनाथ ने तथास्तु कहा। तभी उन्होंने यह भी कहा कि रानी तुम्हारे एक पुत्र और पुत्री का जन्म होगा। 12 वर्ष की अवस्था प्राप्त करते ही तुम अपने हाथ से अपने पुत्र को योगी का वेश धारण करा देना। यदि इसमें तुमने प्रमाद किया तो पुत्र की जीवन रक्षा न हो सकेगी। रानी ने गद्गद् होकर गुरु के चरण पकड़ लिये। समय पर एक पुत्र और पुत्री से रानी की गोद भर गई। पुत्र का नाम गोपीचन्द और पुत्री का नाम चन्द्रावती रखा गया। राजा की सन्तान थे इसलिए दोनों भाई बहिन घड़ी फुल बढ़ने लगे। देखते देखते ही चन्द्रावती सयानी हो गई। लोक धर्म के अनुसार चन्द्रावती का विवाह कर दिया गया। वह अपने ससुराल चली गई। अपना घर पराया और पराया घर अपना हो गया। इस समय गोपीचन्द 12 वें वर्ष में चल रहा था। ज्यों ज्यों वर्ष के दिन गुजरते थे त्यों त्यों मनावती का दिल बैठता जाता था। वह अपने पुत्र का मुंह देख देख कर और भावी संन्यास की याद करके बिसूरती रहती थी। एक दिन जब वह अपने पुत्र को उबटन कर रही थी तब उसकी आंखों से आंसुओं की दो बूंद निकल कर गोपीचन्द की पीठ पर जा पड़ी। गोपीचन्द ने इधर उधर देखा। न आकाश में बादल हैं न हवा में आर्द्रता। फिर यह पानी कहां से बरसा। उसकी जिज्ञासा को शांत करने के लिए दासी ने कहा कि यह तो माता मनावती के आंसू थे। गोपीचन्द ने तत्काल मां से इन आंसुओं का भेद पूछने लगा। बाल हठ के सम्मुख मनावती को झुकना पड़ा। माता ने अपने दुःख और रुदन का कारण अपने पुत्र को बतला दिया। जिसके 12 वर्ष पूर्ण होने में केवल सात घड़ी और शेष थी। गोपीचन्द ने स्वेच्छा से निश्चित समय पर जोग ग्रहण करने की तैयारियां प्रारम्भ कर दी। मन मार कर माता ने भी गुरु के वचनों को याद करते हुए पुत्र को जोग धारण कराया। मनावती गोपीचन्द को साथ लेकर जालन्धरनाथ की धूणी पर गई। उसने गुरु से

जोगी को अत्यन्त श्रद्धा एव आदर के साथ महल म चलने का निमत्रण दिया। नगर के मध्य म होकर दस हजार दासियो से घिरा गोपीचद अपनी बहिन के महल की ओर बढ रहा था। दासिया गोपीचन्द के लिए पक्का देवल बनवा देने का सकल्प कर रही थी।

गोपीचन्द ने अपनी बहिन की डयोढी पर पहुच कर अलख निरजन की ध्वनि से अलख जगाई। चन्द्रावती ने भीख मागने वाले किसी जोगी को आया जान कर अपनी दासी हीरा को मोतिया का थाल देकर भेजा। हीरा ने गोपीचन्द को भीख देना चाहा किन्तु गोपीचन्द पीछे हट गया। उसने हीरा को पहचान लिया। क्योकि जब चन्द्रावती का विवाह हुआ था तब उसे खरीद कर बहिन के दहेज मे दिया गया था। गोपीचन्द जोगी के वेश म था इसलिए हीरा उसे पहचान न सकी। वह उसको छल रहा था। हीरा और चन्द्रावती क जीवन की गुजरी हुई अनेक घटनाओ को ज्यो का त्यो दोहरा दिया। हीरा को अब कुछ कुछ सदेह हो चला था। उसने गौर से गोपीचद की ओर देखा। राख के उपलेपन म छिपा हुआ कन्था से घिरा हुआ गोपीचन्द जब उसकी पहचान म आ गया तो उसके हृदय म से एक हूक सी उठी। आखो से बरबस आसू की धारा बह निकली न कुछ कह सकी न कुछ आगे देख सकी। वह रोती हुई चन्द्रावती के पास पहुची। दासियो ने हीरा से रोने का कारण पूछा। वह रो रो कर कह रही थी हाय मैं अभागी किसे भीक्षा देने गई थी। जोगी होता तो भिक्षा भी लेता। लेकिन वह तो रानी चन्द्रावती का भाई गोपीचन्द है। दासियो ने अविश्वास के स्वरो म अपने मन की शका प्रकट करते हुए कहा कि राजा गोपीचन्द की छाया धरती पर नही पडती तथा उसके घोडो की टापो स उडने वाली धूल आकाश को पाट देती है, दिन म ही अधेरा हो जाता है। राजा गोपीचन्द इस प्रकार और इस वेश म कभी नही आ सकता। फिर भी अपनी शका को दूर करने के लिए बाहर आकर दासियो ने जोगी से उसका परिचय पूछा। गोपीचद हसकर कहने लगा तुम्हारी शका निमूल है। मैं राजा त्रिलोकचद का पुत्र गोपीचद हू। तुम्हारी रानी चन्द्रावती मेरी सगी बहिन है। मैंने तो ससार को त्याग दिया है। जोगी हो गया हू। ससार के सभी रिश्ते मैंने धो दिये हैं फिर भी यदि चन्द्रावती मुझ स मिलना चाहे तो जल्दी भेज दो, फिर कौन जाने क्या हो? जोगी तो रमता राम है आज यहा कल वहा।

दासियां दौडकर रानी के पास गई और रानी को सारा वृत्तात सुनाने लगी। चन्द्रावती की आखो से आसुओ की धारा बह चली। उसकी आखें सावन भादो की तरह बरसने लगी। अपने भाई को जोगी के वेश म देखकर उसकी जिह्वा जड हो गई शरीर सन्न हो गया। सोने के रत्नजटित कुडल पहनने वाला राजकुमार आज कानो मे मुद्रा पहने हुए है। भाग्य की यह कसी विडम्बना है। सुगधित तल तथा पुष्प रस सिंचित चिकुरराशि भभूत से आवृत थी। यह देखकर उसका हृदय फटने लगा रेशमी वस्त्रो के स्थान पर कथा को देखकर उसके प्राण मुह मे आ गये। जिस भाई के साथ मायके म वह खेली थी, नाना प्रकार की

भरथरी

राजस्थान म व्यक्ति या किसी भी प्रवत्ति मे ग्रादशतम स्वरूप को पहचान कर व्यक्ति पूजा का प्रचलन रहा है। जन जीवन ने उत्कृष्ट ग्रादर्शों को नमन किया है तथा उनके चरित्रो को ग्रपनी टूटी फूटी जबान म दोहरा कर कृतज्ञता व्यक्त की है। वीर रस के ग्रालम्बन महापुरुषो को उनके द्वारा किये गये लोक हितकारी कार्यों की दुहाई द दकर गीतो का विषय बनाया है। प्रेम माग के दु साहसी पथिको को ग्रपने प्रेम निमित्त परीक्षा की ग्रग्नि म से सफलतापूवक गुजरने के उपलक्ष मे लोकजीवन ने धम की तरह उनके महत्त्व को ग्रगीकार किया है। इसी प्रकार ससार की धन सम्पत्ति, स्त्री, पुत्र मित्र पौत्र, बान्धव ग्रादि माया मोह को छोड कर जिन व्यक्तियो ने किसी बडे सत्य की साधना की है। वीतरागी महापुरुषो का जनवाणी ने स्वागत किया है। प्रवृत्ति या निवृत्ति, लोककल्याण ग्रथवा व्यक्ति गत ग्रादश किसी भी क्षेत्र म जहाँ कही भी जन जीवन म विशिष्टता देखी उसी का बखान लोक मानस ग्राज तक करता ग्राया है। साधु सत महात्मा फकीर वैरागी यहा पर सामान्य जन की श्रद्धा के विषय हैं। निवत्ति माग के उच्चतम सोपान पर ग्रासन जमाने वाल भरथरी राजस्थान के लोकजीवन मे दूध पानी की तरह घुल गये हैं। दृष्टातो म कथाग्रो मे, गीतो मे तथा बातो म हप रोमांच उत्साह के साथ भरथरी की गाथा कहते ही रहे हैं।

सम्पन्न राज्यश्री, सौंदयनिधि पत्नी को छोडकर जब राजा न वीतरागी जीवन स्वीकार किया तो बरबस रानी के शब्दो म लोकजीवन मे नारी के ग्राश्रय हीन जीवन को वाणी प्रदान की—

म्हारा राजाजी, कु ग्रारी रहती तो पीपळ पूजती
म्हारा राजा सीचती जी

उज्जन म राजा भरथरी राज्य करता था। उनके दो रानिया थी, एक का नाम श्यामलदे तथा दूसरी का नाम पिंगला था। दोनो ही ग्रपने रूप ग्रौर यौवन के कारण राजा भरथरी की ग्राखो की ज्योति के समान थी।

राजा ग्रपनी रानियो से ग्रत्यधिक प्रेम करता था। यहा तक कि राजकाज म भी उन्ह ग्रपने साथ ही रखता था ग्रौर उनसे योग्य परामर्श लेता था। राजा ग्रपनी रानियो के प्रेम पाश म इतना जकडा हुग्रा था कि ग्रावश्यक राज काय के लिए कुछ समय को छोडकर शेष समय रानिया के साथ ही व्यतीत करता था। राजा को न ग्राखेट का शोक था न भ्रमण का। ग्रासपास के ग्रन्य राजा लोग शिकार खेलने के लिए जगल मे ग्रात ग्रौर यदा कदा भरथरी का ग्रातिथ्य ग्रहण करते तो रानियो के मु ह से ग्रनायास ही निकल पडता कि हमारे राजा तो छुई-मुई के पौधे है जिन्हे न शिकार का शौक है ग्रौर न ग्रस्त्र शस्त्र धारण करने का।

रनिवास की यह चर्चा किसी प्रकार राजा तक पहुच गई। भरथरी को बडा विचार आया। उसने इस चर्चा की सत्यता को सच्चे मन स स्वीकार किया। राजाओं का धर्म तो युद्ध के लिए सुसज्जित रहना आखेट करना और प्रजा की पालना करना होता है। भरथरी को लगा कि मैं तो केवल इनम स प्रजा पालन के धर्म को ही थोडा बहुत निभाता हू। उसके मन मे उमग उठी की मुझे भी क्षत्रियोचित आखेट तथा शस्त्र क्रीडा का अभ्यास करना चाहिए। उसने मत्री को आखेट की व्यवस्था करने का आदेश दिया। राजा ने शिरस्त्राण धारण किया कवच पहना तथा अन्य आयुधो से सुसज्जित हुआ। उसका आखेट के लिए जाना प्रजा के लिए अचरज की बात थी। जिसने सुना राजा के वीर कर्म पर प्रसन्न ही हुआ। जगल म हरिणो की एक डार (झुण्ड) राजा को दिखाई दी। सब हिरण ऊचा सिर किये हुए राजा की ओर देख रह थे। बहुत सारे घोडो पर भाले चमकते हुए तथा धनुषबान धारण किय हुए लोगो को देखकर हिरण भयभीत हो गय। उन्होने अपने यूथप काले हिरण से कहा हम सब तो साधारण हिरण हैं हमे मारना राजा के लिए कोई बडी बात नही है। तुम हमारे सरक्षक हो। तुम्हारा रूप, शरीर सिंह चाल सभी निराले एव आकर्षक हैं। राजा की दृष्टि हम सब पर बेधती हुई अवश्य तुम पर पडेगी। काले हिरण को मारते वह हम पर हाथ नही उठायगा। इसलिए यूथप का भाग जाना ही श्रेयस्कर है। वह हिरण गर्विला था। उसको अपने अन्य हिरणो का भय समझ म नही आया क्योकि वह अपने आपको निरपराध समझता था। कभी उसने राजा के विरुद्ध कोई शत्रुतापूर्ण कार्य नही किया था इसलिए उसे इस बात पर विश्वास नही हुआ कि राजा उसी को मारेगा। काला हिरण निर्भयतापूर्वक घास के तिनके चबाने लगा। जब राजा और समीप पहुच गया तो हिरणिया व्याकुल हो गई। वे हिरण को बचाने के लिए राजा के पास पहुची और कहने लगी हे राजन तुम शिकार खेलने आये हो, खूब मजे से शिकार खेलो कि तु हमारे यूथप इस काले हिरण को न मारना। इसकी एवज म अन्य दस हिरणो को मार डालो पर इसे हाथ न लगाना। यह तो हमारा प्राण है। इसके अभाव म हम सभी आश्रयहीन हो जायेंगे। राजा भरथरी हिरणियो की बात सुनकर हसने लगा। वह शिकार के लिए आया है तो काले हिरण का ही शिकार करेगा। उसने धनुष पर बाण चढाया और छोड दिया। हिरण ने त्वरित गति से चौकडी भरी। बाण व्यर्थ गया। राजा ने दूसरा बाण चलाया। हिरण ने चपलता के साथ अपने सीगो को ढाल बनाकर वार काट दिया। अपने वार को निष्फल देखकर राजा का क्रोध भडक गया। उसने कान तक खीच कर तीसरा बाण चलाया। इस बार बाण काम आ गया। हिरण छटपटा कर उछला और धराशायी हो गया। राजा जब अपने शिकार को उठाने के लिए पहुचा तो काले हिरण ने कहा, राजन् मेरा सीग किसी जोगी को देना, छाल किसी तपस्वी को भेंट कर देना जिस पर बैठकर वह सिद्धि पायगा। और मांस तुम अपने कुटुम्ब के साथ भक्षण कर लेना। इतना कह कर हिरण ने प्राण त्याग दिये। उसके आसपास खडी हिरणिया डडकार

ी था। वे रो रोकर मानो राजा को शाप दे रही थी। राजा जिस प्रकार
ने हमारे पति को मार कर हमें रुलाया है, उसी प्रकार तेरी रानियाँ भी तेरे
योग मे रोयेंगी और तड़पेंगी। तूने निर्दोष की हत्या करके पाप कमाया है।

राजा ने हिरण को अपने घोड़े पर बाँध कर नगर की ओर प्रस्थान किया।
र्ग मे गुरु गोरखनाथ का तपोवन था। गोरखनाथ समाधि मे लीन थे। घोड़े की
पों की आवाज सुनकर उनका ध्यान भंग हुआ। राजा को मृत हिरण के साथ
खकर गोरखनाथ ने कहा कि इस निरपराध मूक पशु को तुमने क्यों मारा है?
सने तुम्हारा कौनसा अहित कर डाला था? राजा ने लापरवाही से उत्तर देते हुए
हा मैं क्षत्रिय हूँ, शिकार खेलना मेरा धर्म है। अपने धर्म का पालन करते हुए ही
ैंने इसे मारा है। यदि आपको इतनी दया आती है तो उसे पुनः जीवित कर
दीजिये। मैं भी तब समझूँगा कि आप सच्चे योगी हैं। गोरखनाथ ने गम्भीर
मुस्कान के साथ जलभरी अंजलि मृत हिरण के शरीर पर छिड़क दी। देखते देखते
वाला हिरण जीवित हो गया और चौकड़ी भरता हुआ अपनी डार मे जा मिला।

राजा की आँखें खुली रह गई। वह गोरखनाथ के चरणों में गिर पड़ा
और प्रार्थना करने लगा कि मुझे भी अपना शिष्य बना कर कृतार्थ कीजिये।
गोरखनाथ बिना परीक्षा लिए हुए किसी कच्चे मन वाले को उत्तेजित करके शिष्य
बनाने के पक्ष में नहीं थे। अतः उन्होंने कहा राजा अभी तू भावना में बह रहा है
तेरा मन कमजोर है जब समय आयगा मैं तुझे अपना शिष्य बना लूँगा। आशी
र्वाद प्राप्त करके राजा ने प्रस्थान किया। थोड़ी दूर चलने पर उसने देखा कि एक
स्त्री अपने पति के साथ सती होने जा रही है। उसे यह घटना भी बड़ी आश्चर्य-
जनक व झकझोर देने वाली लगी।

राजमहल में पहुँच कर उसने आज के आखेट का वर्णन अपनी रानियों को
सुनाया। साथ ही गोरखनाथ के चमत्कार और सती के कठोर धर्म का भी वृत्तान्त
अपनी रानी पिंगला के सम्मुख प्रस्तुत किया। पिंगला ने सती के सम्बन्ध में अपनी
प्रतिक्रिया तत्काल व्यक्त कर दी। उसका कहना था कि वह स्त्री तो अपने पति के
मरजाने पर सती हुई है लेकिन मैं तो पति की मृत्यु की सूचना मात्र से प्राण त्याग
दूँगी। राजा भरथरी अपनी पत्नी के इस प्रत्युत्तर से अत्यन्त प्रसन्न हुआ। फिर भी
उसने मन ही मन सोचा कि कभी पिंगला के कथन की परीक्षा अवश्य की जाय।

एक दिन जब वह शिकार खेलने के लिए गया तो उसने अपने एक विश्वस्त
सेवक के साथ पिंगला के पास समाचार भेजा कि राजा को शिकार खेलते समय शेर
खा गया। ज्यों ही रानी ने यह समाचार सुना वह पछाड़ खाकर गिर पड़ी। उसके
प्राण पखेरू उड़ गये। सेवक ने यह काँड देखा तो उल्टे पाँव दौड़कर राजा के पास
पहुँचा और रो रो कर कहने लगा महाराज अनर्थ हो गया, आपके सन्देश को सुनते
ही पिंगला ने प्राण त्याग दिये। अपनी प्राणप्यारी का इस प्रकार मृत देखकर
राजा शोकाकुल हो गया। वह विलाप करने लगा। संयोग से उसी समय गुरु गोरख-
नाथ आ गये। अपनी रानी के लिए जब उन्होंने राजा को रोते देखा तो उन्होंने

राजा को बोध करने के लिये अपने मिट्टी के भिक्षापात्र को धरती पर गिरा दिया। पात्र टुकडो म बिखर गया। गोरखनाथ पात्र के लिए रोने लगे। इस पर राजा ने गोरखनाथ से कहा कि मिट्टी के पात्र के लिए आप क्यो रोते हैं ? म आपको ऐसे लक्षाधिक पात्र दे दू गा। गुरु ने अवसर जान कर राजा को प्रबोधा कि तुम भी रानी के लिए क्यो रोते हो ? पिंगला को मैं पुन जीवनदान द सकता हूँ। यह कह कर गोरख बाबा ने अपने योगबल से हजारो पिंगला उत्पन्न की। राजा दौड दौड कर सबकी ओर गया पर किसी ने उसकी आर आखें उठा कर भी नही दखा। जिनके प्रति वह प्रेमाध था मोह से ग्रस्त था उनका यह रुख देखकर उसका मोह भग हो गया। भरथरी गोरखनाथ के चरणो म गिर पड। रो रो कर भरथरी गारखनाथ से शिष्य रूप ग्रहण करने की प्राथना करने लगे। गोरखनाथ ने राजा का आश्वासन दिया कि मैं तुम्हे शिष्य बनाने को तयार हू। शिष्य बनान से पूव तुम्हे अपनी रानी श्यामलदे से माता कह कर भिक्षा मागनी होगी। अगर तुम सच मुच से माया मोह से परे हो गये हो तो यह काम करो और मरे शिष्यत्व को ग्रहण करने का अधिकार प्राप्त करा।

राजा ससार के असली रूप का समझ चुका था। अब उसके लिए माता पिता पुत्र पत्नी आदि शब्द अथहीन हा गये थ। उसने बिना सकोच के गुरु के आदेश का पालन किया। जब रानी श्यामलदे ने अपने राजा को योगी वेश म देखा तो उसकी व्यथा का पार न रहा। जिस शरीर को चदन से चर्चित किया जाता था, उस पर भस्म चढी हुई थी जिन जटाओ म पुष्प गध का निवास स्थान था, उन्हें बड के दूध से जटाजूट बना दिया गया था। स्वण कडो के स्थान पर हाथो मे रुद्राक्ष था। सुकोमल वस्त्रो ने गरवे टाट का रूप धारण कर लिया था। रानी के लिए यह परिवतन असह्य था। उसने राजा को बहुत समझाया कि महलो म धूणी जगाओ, मैं स्वय तुम्हारे शरीर पर भस्म रमाऊगी केवल मेरी पुत्र की साध को पूण कर दो। राजा ने एक न सुनी। वह तो वराग्य को मनसा कमणा धारण कर चुका था। भरथरी सवस्व त्याग कर जोगी बन गया। भरथरी का आदश आज भी लागो का कठहार बना हुआ है।

पाबूजी के विवाह का पवाडा

राजस्थान एव गुजरात म 'पवाडा' शब्द कीर्ति गाथा चरित काव्य और वीरगीत के ग्रथ म प्रयुक्त होता रहा है। यह व्रज मे 'पमारा, मालवा म पवाडो' मध्यप्रान्त तथा सयुक्त प्राप्त मे पवारा' तथा महाराष्ट्र मे 'पवाडा अथवा 'पोवाडा' के नाम से प्रचलित है। महाराष्ट्रीय ज्ञान कोष के लेखक के मतानुसार पवाडा एक प्राकृत श-द है जो वीरा के पराक्रम अथवा कीर्ति के ग्रथ म लिया गया है। यह श-द ऐतिहासिक व्यक्ति के किसी चरित्र प्रसग वणन के लिए प्रयोग मे आता है। पवाडा साहित्य म गूढ भावो का प्रभाव रहता है। यह साहित्य सवसाधारण जनता के लिए बोधगम्य सरल तथा नित्य बाली जाने वाली लोक भाषा मे रचा जाता है। उसम ऊपमा, उत्प्रेक्षा आदि लोकप्रचलित होते है।

राजस्थान मे मोपे पाबूजी के पवाडे गा गा कर अपना जोवन बसर करते हैं। उनके साथ एक वडी चादर रहती है जिस पर पाबूजी की वीर गाथाएँ चित्रित रहती हैं। यह फड कहलाती है।

पाबूजी का ज म वि स 1313 तथा स्वगवास स 1337 मे हुआ था। वे मारवाड के कोलू नामक ग्राम के निवासी थे। उ होने देवल चारणी से कालमी घोडी इस शत पर ली थी कि यदि कोई उसकी गायें घेर ले जायगा तो पाबूजी प्राण देकर भी गायो की रक्षा करेंगे। पाबूजी का विवाह ऊमरकोट के सूरजमल सोढा की पुत्री सोढीजी के साथ होना निश्चित हुआ। पाबूजी बरात सहित ऊमर कोट पहुचे। पीछे से जायल के जिंदराज खीची ने देवल की गायें घेर ली। पाबूजी तीन भावर ले चुके थे, चौथा भांवर लेने ही को थे कि उनको गायो के घेरे जाने की खबर मिली। खबर मिलते ही वे भाँवर छोडकर काळमी की पीठ पर सवार हो गये।

नेह निज रीझ री बात चित ना धरी,
प्रेम गवरी तणो नाहि पायो।
राजकँवरी जिका चढी चँवरी रही
आप भँवरी तणी पीठ आयो।'

गायो की रक्षा मे ही इस वीर ने अपने प्राण दे दिये।

राजस्थानी लोक-गीतो के प्रसिद्ध सग्रहकर्ता श्री गणपति स्वामी न वडे परिश्रम और लगन से पाबूजी के पवाडो का सग्रह किया है, जिसके लिए साहित्य जगत उनका चिर ऋणी रहेगा पाबूजी के विवाह का पवाडा जा

है जिसकी प्रतिलिपि हम बिडला सेंट्रल लाइब्रेरी, पिलानी के सौजन्य से प्राप्त हुई है। इसके लिए हम बिडला एज्यूकेशन ट्रस्ट पिलानी के अत्यंत आभारी हैं।

जोसी क बेटा न सोढ़ो लीयू छ बुलवाय
कोई लगन तो भेज्यो छ र बो पाबूजी राठौड न।
पांच तो म्होर एक सोना रो नारेळ कोई
सोढ़ा तो दियो छ र बो जोसीडा क हाथ मे।
लीनी छ जोसी क बेट सोढ़ा हू वाली सीख
कोई कोळमगढ क पडग्यो है जोसीको मोण मारिगा।
दाय च्यार बासा बसिया जोसी मारगिया र मांय
कोई अगूत बास म र पाबू र काकड बड गयो।
मदरो मदरो पूछ्यो है जोसीको पणघट तीर
काई पणियारया न बूज्या जोसी पाबूजी रा बातरा।
अगूणी कहीज र जोसी पाबूजी री पोळ
कोई केळ तो भबरस रै पाबूजी री पोळ पर।
धोळा तो कहीज र ब पाबूजी रा म्हैल
काई लाल तो किवाडी र ब पाल मवर र माळिया।
पोळघा र कहीज र व चत्रण का किवाड
कोई आमा सामा कहिये र ब पाबूजी रा गोखडा।
गयो छ जोसी को बेटो पाबू क दरबार
कोई दीनी छ जोसी कै बेटे सो सो सुब असीसडी।
काडयो छ जोसी क बेट म्होर और नारेळ
कोई टीको तो दी यू छ जोसी पाबूजी राठोड न।
कर र जोसी का बेटी मोळ मन की बात
कोई टीको तो भेज्यो छ सोढाँ बूढजी राठोड न।
जद हूट बोल्यो छ बो पाबूजी राठोड
कोई छोट भाई को टीको जी दादाभाई थार ना चढ।
मतना तो चढावो यो काया थारी र पाप
कोई मतना तो करीजो वे कचेड्या कूडी वारता।
वात करतडा लाग र घणी दमदार
कोई घणू तो रिस्याळू र बूडोजा म्हैला नीसरयो।
पूरी तो पूयू को मडग्यो पाबूजी को न्याव
काई पीळा चावळ होग्या छ ब पाबूजी र कोट मे।
चादी ता कहीज र जो घणिया रा परवान
कोई यूता ता भेज छ र वो च्यारू कूट मे।
सारी तो धरती का यूतो राव अर उमराव,
कोई सारी तो धरती का र यूतो देई देवता।

देवो न्यूतो चादा र थे बालाजी न भेज,
कोई बालाजी पधारै रै व पाल मवर री जान म।
चादा र थे दूजो न्यूता करणीजी नै भेज
कोई करणीजी पधार र भळ मुरजाळ री जान म।
चांदा र थे तीजा न्यूता सतिया जी न भेज
कोई सतियाँ जी पधार र भळ पाबूजी री जान म।
चादा र थे चोथा न्यूतो पितराजी न भेज
कोई पित्तरजी पधार रै भळ रण-चक र ब्याव म।
चांदा र थे अगणू न्यूतो गोरखनाथ न भेज
कोई गोरखनाथ न भेजो र थे पीळा चावळ मोकळा।
आज्यो जी गरुजी थारो साग लेय जमात
कोई ब्याव तो मडधा छ बी थार पाबूजी राठाड रो।
अगणू न्यूतो चांदा जी थे माई भतीजा भेज
कोई आय ता चढेला जी ब पाल मवर री जान मे।
अगणू न्यूतो चादाजी थे राब सगा नै भेज
कोई आय ता चढला व मुरजाळा री जान म।
अगणू न्यूतो चादाजी थे भाण माणज्या भेज,
कोई नेग तो लेवली अड अड पाल मवर रै ब्याव मे।
न्यूतो र चादा थ खारी खावड रो सा लोग,
कोई नगरी रा न्यूतो र थ सगळा बामण बाणिया।
सुण र चादा बाघेला म्हारी एक बात
कोई न्यूतो मतना दीज्यो र थे जायल खीची जीन नै।
बूजा र मुरजाळा पाबू थान हस कर वात
कोई क्यू कोनी भेजा र न्यूतो ब्या रो जायल जीन न।
परण्योछो जी पाल मवर खीची अपरी माण,
काई तोरण तो मारया छो जी थार बाबोजी री पोळ र।
करा र थे भोळा चादा भोळ मन री बात
कोई जायल री निजरया हू र थे म्हारी निजरया ना मिल।
पाल मवर जी माई भतीजा दीगा थान दोष,
कोई भाण तो भणेया नै पाबूजी न्यूतो ना दियो।
दुलखगा जी पाल मवर खावड रा सारा लोग
कोइ बामण तो बाणियां जी थान दीगा जा जा ओळमा।
चादा बाघेला थे मान भला मत मान,
कोई नाही तो चढगा खीचो राठौडा री जान म।
भेजो र चादा बाघेला रण भुण वल जुडाय
कोई आव ता ले आबो—र भनड न सुरग ब्याव म।

सगळा तो आया छ र पाबू घर देई देव,
कोई सगळा तो आया छ र पाबू र भाई मळपी ।
सगळो तो आयो छ र खारी खावड रो लोग
कोई सगळा तो आया छ र नगर रा बामण बाणिया ।
रण भुण भला बठ र आई पाल भँवर री माण,
कोई एक कोनी आयो र बो ब्या मे जायल जीन रो ।
चान्दा बाघेला थ मान भला मत मान
कोई केसर घोडी चायेगी चढ्वा न म्हान जीन म ।
चाल्यो छ चादो बाघेलो देवळ केरी पोळ
कोइ जाय तो सुणाया र ब पाबू रा सन्देसडा ।
बारठ राणी घर छ म्हार पाल भँवर रो ब्याव
कोइ केसर घोडी चाये य म्हान पाबूजी री जीन म ।
केसर तो कहीज जी म्हारी गाया री रखवाळ,
कोइ केसर न ले ज्याया जी चादाजी म्हान ना सर ।
गाया रो रखवाळा य चारण पाल भवर जी होय
कोई खेडोडी गाया न ये थारी ल्याव पाछी वारण ।
ले ज्यावो जी चादाजी केसर न जाना माय,
कोई केसर तो रवली जी जाना री अगली मूर म ।
नाय लग केसर न घुडला राठोडा री जान,
कोई नाय तो लगला जी सोढा रा ऊमरकोट मे ।
और तो कहीज जो टारडिया जुग र माय
कोई केसर तो कहीज जी म्हारी अलल वछेरी कूदणी ।
आयो छ चादो बाघेलो नाय करी दमदार
कोई पाबू न सुणाया छ बी देवल रा सदेसडा ।
धीगडदा धीगडदा बाज छ ब ढोल
कोई भेळी तो हुव छ र जनेता च्यानण चोक म ।
चादा डामा खोलदे र लाल कन्ज री गूज
कोई आछया ता चुकादे र भल भल भूवा भाण न ।
पान भवरजी खोल दी म्हे थल्यां केरी डोर
कोई म्होरा तो चुका दी र म्हे मगळी मनड माणजी ।
चादा डामा खोल दे आजू कन्जा केरी गूज
कोई मल मल तो चुकादे र कोई म्हार चारण भाट न ।
और तो मगण्यारा र पाबू राजी होय होय जाय
कोई एक कोनी चूक जी वा देवळ थारी चारणी ।
काई दुगाणी माग र व म्हारा चारण भाट
कोई काई दुगाणी माग र बा म्हारी देवळ चारणी ।

दान दुगाणी मागै छै म थारा चारण भाट
कोई वचन तो माग छ जी वा थारी देवळ चारणी।
म्होर रुपया बकसावो थे म्हारै चारण भाट,
कोई बचन तो देवा र थे म्हारी देवळ चारणी।
असीस देता जाव छ व सगळा चारण भाट,
कोई आसूडा रळकाव छै बा ऊभी देवळ चारणी।
भूण्डो तो कहीजै ये बारठ राणी थारा सुभाव
कोई चढ़ती जाना ये थे मूण क्सूणा क्यू करो।
थे चाल्या जी पाल मँवर जी सोढा रै सुरँग कोट,
कोई थार लरा किण न जी थे म्हारो रुखाळो छोडियो।
चारण राणी कोट रुखाळो छोडयो श्री भगवान
कोई ससक्रिरण छोडयो ये म्हे रुखाळो सूरज देवता।
श्री भगवान चढला ओ पाबू थारी सुरगी जान
कोई सूरजदेव तपैला या थारै सोवन सेवरै।
गज धाघल रै पाल भवर जी बेटा थे चोईस
काई सगळा रा सगळा जी सुरगी जाना मत चढा।
बारठ राणी भाया बिन या फीकी लाग जान,
कोई भाया बिन कुण राचलो यो पाबूजी री पीठ पर।
भाया बिन कुण बदलगा साढा र साग गास
कोइ कुण तो मिलगो ये सोढा हू भर भर बाथडी।
किण हूँ करला सोढा मसकरियाँ री बात,
कोई छिण नै देवली य साढा री नारया सीठणी।
भाया नै घर छोड्या ये देवळ भूंडी लाग बात,
कोई माई तो चाबोसूं य भल चढसी जान मे।
ले ज्यावो जी पाल भँवर जी माई सगळा साथ
कोइ एक डामो छोडा जी थे म्हारो रुखाळो कोट म।
चादा डामो कहीजै म्हारा बावा खाणा हाथ,
कोई डामजी नै छोडया म्हान देवळ ना सर।
बिच बिच तो बगली म्हारी केसर घोडी खास,
कोई बावै खांध चालगा चाद डामै केडला।
डाम बिन कुण देय बधाई सोढा र घर जाय
कोई साढा री मनवारया रा डाम बिन अमल कुण कर।
दवळ भुवानी माई म्हू कहीजा छा चोईस
कोई सबहू वडला बूडा भाई न थारो रुखाळ छोडद्या।
करो छो थे पाल मवरजी भाळ मन री बात,
कोई बूड भर खाची ˆ दोया का घर बेठा थरै।

साची ता मानो जी पाबू म्हार दिल री वात
कोई डाव तो तकछ जी वा खाची बठयो जीन रो।
इन हूं चढगो जी पाबू जी थारी जान,
कोई उन हूं घेरगो जी वा खीची डामे बाळदो।
देवळ मुवानी तीन दिना दर रस्या ऊमरकोट
कोई चोथ दिन म्हे ग्राय सभाळा पूठा घर म बाळदो।
तीन दिना मे लूट खाची मू ना ती यू लोक
कोई तीन तो दिना म बो राठोडी मन दळमळ।
काई तो क्हीज बो पाबू देवळ रो उनमान
कोई दवळ र कहीज जी दो ऊठी बातें गुवाळिया।
देवळ मुवानी ज ग्रा घेर जायल थारी गाय
कोइ खबर तो कर दीज्यो ये सोढा न ऊमरकोट म।
दवळ मुवानी जिए बेळचा सुणाला खबरचा कान
कोई तिए वेळचा झट उठकी ये केसर पर काठी मेलस्या।
देवळ मुवानी ये लो म्हारा करडा कोल करार
काई थाळया पर बठघोडा ये म्हे चळू करा थार बारण।
देवळ मुवानी बे ये म्हारा साचा बायक जाए
काइ चँवरी म्हे चढयाडा ग्रावा फरा ग्रद बिच छाड क।
बारठ राणी राजी खुशी म देयो म्हान सीख,
काई ब्या रातडली पाछ ये सोढा घर बासो ना वस।
लोट गळवाया छ वो देवळ खारो लूण,
कोई बघना हू खुलणाई छ पाबू न केसर काळवी।
ग्रोर ता जनेती गया छ कोस दोयर च्यार
कोई पाबू डाम चादे रा घुडला लरा हू नीसरघा।
ग्राड सीध मारग चाल राठौडा री जान
काई इकडोकिया बाज र व पाल मवर री जान मे।
सूरज ता ऊग्यो छ राजा कासिप रो निरवाए
कोई दिनडा री उगाळी र वा बासिग ग्राडो फिर गया।
मारग म देख्या छ ग्राडो काळा बासिक नाग
कोई राय ता बग ती र राठोडी जाना रक गई।
लर हू ग्राया छ र व पाबूजी राठोड
कोइ साग ग्राया छ र व चादो डामा म्हाबळी।
पाबूजी कहै सुए चादा डामा म्हारी बात,
काई मारग ता वह ती र सुरमी जाना क्या खडी।
चलताडी जाना रो मारग राक्यो काळ नाग
कोई मारग ता वहती जी जानां क्यो खडी।

हुकम करा तो बावू पावू सारठड़ी तरवार
काई हुकम करा तो जा तारा री माटा पायन्यू ।
सान तो करीज डामा पीवाळ रा नाग,
कोई भ्रापा ता कहाआ र धरती करा नामिया।
धाण ता छाहा र डामा काळा वासिग नाग,
कोई बाव पसवाड र जाना रा घुडला हाक द्या।
धाणू लीन्यू छ पाबू काळो वासिग नाग,
काई बाव तो पसवाड र घाडी न हाक ने।
चाली छ राठाडा जाना काम दाय च्यार,
काई मारग म भ्राइ ठ वा ऊचा नीची डूगरी।
देखी छ पाबू रणवक नीजर पसार,
काइ डगर रा चोटा हूर वा नाहृवरी नारी उन्तरी।
चाग डामा देखा र व इण नारी रा काम,
काई धाटा ता रोक्या छ र इण बगती जान रा।
चादा डामा भ्रा जाना रा मूण विचार,
काई किसड तो मू णा पर र या सिघणी मारग राकिया।
मूण बूज ता थार सल्ल मूणी न बुलवाय,
काई राज रा खाव छ सत्ला मूणी वाला पटिया।
हरमल राईका भ्रक्कर थारी करली पाछा मोड,
कोइ सल्ल तो मूणी न र तू वगा ल्याव बुलाय की।
हरमल राईक दीना छ करजी न पाछी माड
काई बगती ता करली क र ब काढ़ी करडी कामठा।
सनजी मूणी वेगा थार घुड़ला न टिचकार,
काई पाबू खड़या उडाक र पाल डूगरिया र धाट म।
रळत्यो ऊ विरामण सलजी नाय करी दमग्गर
काई वैन विचारत भ्राव वा पाल मवर री जान रा।
पूछ्या छ वा सनजी मूणी माकरिया र धाट
काई जाय ता विण मुजरा करिया पाबूजी राटोड़ नू।
कहा जी पाबू कमवजिया थार मन रा वात,
काई किसड ता कारजिय जी धाट म स्हान तेडिया।
सत्ला मूणा बगा थारा मूण विचार,
काई किसड ता मूणा जा या सिंघणी नीच उतरी।
मूण मूजा ता पान मवर थारा जाना पाछा माड,
काइ हाव क साट मुग जा परणावा सोढ़ा वीनणी।
काइ ता परणीज र व हृटन मुसळमान,
काई हिन्दू ता परणीज र हृपळवो जुग म जाइ के।

चिरचा ता कर र भाई कुळ म सगळा लोग
कोई सिंघणी हू डरती र पाबू की जाना मुड गई ।
भूठो तो बणगधा छा बो मुरजाळा पाबू नार
कोई भूठा तो बणग्या छा र ब चादा डामा म्हाबळी ।
कठ तो गई र बा पाबू जी की सेल
कोई कठ तो गया र ब डामै का तीर ज कामठा ।
राठोडा रजपूता क वा लाग काळा दाग,
कोई दू" तो जरजाव र बा म्हारी कवलादे माय को ।
खडया तो उडीक छ ब सोढा सिरदार
काइ छाजा चढ देख छ सोढा र घर री कामणी ।
माळा तो ग्राव छ म्हार साम पडजान
कोई साळी तो साळेली जी ब कामण गाव डागळ ।
सोढी जी सहेल्या बठी जोव म्हारी बाट,
कोई काळा तो उडाव जी वा नीमडली रा कागला ।
जो पाछा मुड ज्यावा र म्हे धाधला रै कोट
काई काई तो कहैलो र सोढी न सात सहेलडया ।
थ ता कहै छी ये साती जी पाबूजी बण रो नार
काई पाबूजी तो कहिये कायर घुर रो गादडो ।
सिंघणी ता मिलो छी ये एक विण न घाट माय,
कोई सिंघणी क मैं मारया ये वो पाछो घर न माजग्यो ।
क ता करगी सोनी जुग म ग्रपघात
कोई क ता बा पडगी र चू री करी भाग म ।
मानण हू रह ज्यागी र बा दुनिया सारी काण
कोई दुहाई रह ज्याणी र वा जुग मे म्हारो लागणी ।
नाव तो चालगा धरती पर म्हारा गीत
कोई ताव ता गावगा र म्हारी जुगा म छावळी ।
जद ताणी रहैलो र मा म्हार धड पर सीस
काई इसडी तो कायरता र म्हार हू जुग म ना हुव ।
जद हूट वाल्या छ वो डामोजी सिरदार
कोइ हुक्म करो तो मारू जी मैं गादडती ललकार ।
मारा र डामाजा थ ग्रधक दकाळ
काई डरती ता मा[illegible] गर र सोढ[illegible] ।
ग्रापां ता कहीजा र [illegible] छतरी [illegible]
काई मरद तो ना [illegible]
धुडला न दीयू छ [illegible]
काई रान ता [illegible] री

देख्यो छै वनखण्ड री नारी डाँम रो दीदार,
कोई पूँछ तो दबाई रे डूँगर म पाछी चढ गइ।
जद हूट मारी छ विण डामजी दकाळ
कोइ इण तो बूतं पर र गादडती घाटा रोकिया।
सिंघ न कहीज रे वा रेकार री गाळ
कोई डाँमै रकार रैं वा सिंघडी पाछी वावडी।
ऊंची लीनी छ सिंघडी दुहाथण उठाय
कोइ सीधी तो आइ छ रे वा डामजी के सीस पर।
ऊबा तो जानती रैं वे निजर लगाय
कोइ जग तो देख छ रे छाट मे नारी नार को।
करल्यो ये गादडती म्हार पर पैला वार,
कोई पुरख तो नारी पर य म्हे पना ससतर ना करा।
मारी छ दुहाथड नागी डामे जी के सीस
कोइ दुहाथड राकी छ र डामे जी अपणी ढाल पर।
पाछी हटती सिंघणी पर करची छ रे डामे वार
कोइ ना री ने वनारी रे ज्यू सावण की सी काकडी।
गादडती ये खाया वण रा जम्बू घणेरा स्याळ,
कोई अबकाळ निमाणी ये डामै कैं घक्कैं बाजगी।
धीगडदा धीगडदा बाज्या छैं निसाण
कोइ परवत र घाटा हूँ र राठोडी जाना नीसरी।
चांदैं डाम दी या अपरा घुडला आग घाल
कोइ पाबू तो हकाली र वा घोडी केसर काळवी।
हालो छ राठोडी जाना नाय करी दमदार
कोइ पूची छ हवा क साग सोढा केर काकडा।
धाळा धोळा दीख्या छ व सोढा रा गढ कोट
कोई घूँघा घूँघा दीख्या छ व सोढी जी का माळिया।
देख छ भुरजाळो पाबू निजर पसार,
कोइ चाद तो डामैं नैं र बूज छ पावू मुळक की।
किण रा तो दीखैं छ र ये भूरा भूरा कोट
कोइ किण रा ओ दीख छ र ये घू धा घू धा माळिया।
आग्याछा ओ पाबू आपा धोळी धाठ क माय
कोइ काकड तो बडग्या छा ओ आपा ऊमरकोट कैं।
धोळा धोळा दीसैं छै ये सोढा रा गढ कोट,
कोइ घू घा घू धा दीसैं छ य सोढीजी रा माळिया।
देख छ पाबू रणबका हरियल हरियल बाग,
कोइ किण रा तो भावें छैं र य घुडला साम दोडला।

सोढ़ां रा दीस छ जी भुरजाळा पाबू बाग,
कोइ पड़जांनी दीस छे जा पाबूजी सामा भायता ।
रिमझिम रिमझिम करती भाइ पाल मवर मी जान
कोइ गांव र गुडा म जी पड़जांनी सामा भेटिया ।
जानेत्यां पड़जानेत्यां करिया छ राज जुहार
कोइ घुडला तो द्वाडया छ र सोढ़ां र थ्यानरा चोक मे ।
जद हुट बोल्या छ यो पाबूजी राठोड़
कोइ हरी डाळी नम्मा र डामा सोढ़ां क गढ़ कोट म ।
मोजरियां री लीनी छ खजड़ली डांम पाड़
कोइ जाय तो धरी छ र सोढ़ा री मुरगी पाळ मे ।
आधा सोढ़ा बाहर छ व आधा छ घर के माय
कोइ सोढ़ां फळस क बिच म हरियळ डाळी मेलदी ।
आधी तो सहेली ऊभी खडी छैं पोळयां बार,
कोइ आधी तो सहेली र खडी छ भीतर पोळ क ।
ऊबा ता नर नारी र कर डाम हूं अरदास
कोइ हरियल डाळी जी डामा जी थे छेड़ परो ।
म्हे तो ल्याय मेली जी सगाजी थारी पाळ
काइ तो उठायर जी डाळी जी थे मांगण मेल द्यो ।
पच पच थकिया छ वै सोढ़ा सिरदार
कोइ सरवाइ ना सरकी र डाम की डोगी खेजड़ी ।
धन हा धन डामा जी थारा मायर बाप
कोइ थार तो सरीसा भ्रो जानां म भ्राव क जरा ।
जाना रा जानेती जो बै म्हां सूं चढता भोत
कोइ म्हार सिरसो हीणू जी पाबू की जांना का नहीं ।
आधी सहेली गाव छ हरियल डाळी का गीत,
कोइ आधी तो सहेली र रळकाव हरिया मू गडा ।
सोढ़ा रा नाइ तू वेगा सिरोवण करवाय
कोइ अम्मल ता तोड छ र म्हारो निरणू काळजो ।
एक दोय मावा ल्यायो नेवगी हाथ
कोइ डाम तो अमली की र जीभां क मावा ना अड़या ।
तोजोड मावा म डामो बोल्यो हस कर बण,
कोइ थाड थाडे मावा सूं र पूरा नेवगी ना पड ।
काइ तो करो छो र म्हासू ये मखोल
कोइ काइ ता ना निपज रै अम्मल सोढा रैं देस में ।
करा छा जी डामाजी म्हे थारी मनवार
कोइ राव तो सगा हू जी टसकोळी म्हे ना करा ।

घणू तो निपजे छ अम्मल अमराणै के देस,
कोई थे वी रच रच करल्यो जी थारै घुडला नै करवायद्यो ।
रीसायो नेवगी ल्यायो पाच पचीस,
कोई इण तो मावा पर डाम अमली कुरळो ना कर्यो ।
ऊबा तो नेवगी कररचौ डांमै हू अरदास,
कोई भल भल तो पधारो जी थे अमला र कोठधार मे ।
खोल तो दीया छै नेवगी सजड किंवाड,
कोई डाम तो अमली नै जी बो भडारो सभळाइयो ।
पलो प्यालो दीयो अमली भरू क चढ़ाय,
कोई दूजो तो चढायो छै यो आबै को जळ जोगण्या ।
निठग्यो छ अम्मल बो सोढा र कोठधार,
कोई खू एण खपाए ढू ढै छ वो अमली पोसत डोडिया ।
मन म तो करै छै डामो अमली यू बात,
कोई अम्मल तो नही छै रै यो सोढा री मनवार म ।
जाय तो नेवगी देख्यो अमला रो भडार,
कोई अमला र मुळावै डामा सवा गज धरती चाटग्यो ।
रीतो तो पडचो छै राव-सोढा रो भडार,
कोई चुग चुग तो खाव छै अमली पोसतिया रा छूतका ।
सोढ़ो रै रगीला देवा बाईजी नै मार,
कोई भाटा तो थे खांगा रै थारी घोळी धाठ का ।
चालो रै मतवाळा डामा नाय करो दमदार,
कोई सोढा खड्या उडीक रै थानै सिरोवण करवायस्या ।
दोनी छै नेवगी आगण जाजिमडी बिछाय,
कोई ऊपर ढाळी छ रै बिण चोकी जगमग मोतिया ।
दीन्यू छ नेवगी सोवण थाळ लगाय,
कोई भारी भर मेली पासै मीठ पालर नीर की ।
वठ्यो छै डामो अमली सूल पलाखो लार,
कोई पुरसण तो लाग्या छ रै सोढा रा भाई भेळपी ।
पडतोड माता का अमली कर एक दो गास,
कोइ सोवण तो थाळकळी रै बा डामै की रीती पडी ।
पुरसता पुरसता र सोढ़ा गया छ हार
कोई डामै तो अमली को र यो कलेवो बी ना हुयो ।
वालटियां पर बालटियां दोनी भावा की भोज,
कोई बूरा की रळकादी सोढ़ा भावलिया की भाबसी ।
घिरतां की टोकणियां सोढां दोनी मोदी मार,
कोई डामो अमली गटकै छ वाला वाला गासिया ।

घमलां की ओवरां म डांमो जीम जीमणवार
 कोई सोढां मढ़ाना रैं डांमजी रीता कर दिया।
सोढ़ां री रसोयां की वा म्राय गई छ पोल
 कोई राख्यो पोयो तो लाग्यो घमली मव धाप्यो है ता बोल रै।
मतना थ करो र सोढ़ो धावण की म्हारी बात,
 कोई रीतो पट पड़पा छ र कनवो म्हारा ना हुयो।
इण बाई न दवो र पानळिया सोढ़ो मार
 कोई सारी जान रो भोजिन इकला सोरोवण में खा गयो।
हँस हँस साढा पूछ डांम जी न वात
 कोई थार तो सरीमा डाको थार साग क जणा।
म्हार हूँ भदकी र सोढ़ो म्हारी सगळी जान
 कोई क्रमसाणू कहीजू रै जानां बिच मैं ही एकलो।
ऊबा ता रगीला साढा करैं छ बिचार
 कोई म्रावरू ता लेसी र सारी लावड़ का मानवी।
किण विद तो तिरपतसी र य डांम-सा बडपट
 कोई किण विद तो ढबूक या राठोडां री जानडी।
भूडो तो करयो र सगपण राठोडा क साथ
 कोई मानखो तो जासी र जुग म ग्रमराणें देस को।
डामोजी कर छ र यो मन ग्रपण मे बात
 कोई भोजन तो नहीं छ रै यो सोढा री मनवार मे।
कुरला तो करवा छ घमली पोया छ ब हाथ,
 कोई जीम जूठ सोढां क ग्रागण मूछां ताव चढ़ाइयो।
डाम जी न इण विद साढा सिरोवण करवाय
 कोई राठोडी जाना न डेरा दीया हरिये बाग म।
ग्रादी जाना उतरी छ ब धोळ तमुवा माय
 कोई ग्रादी तो उतरी छ र ब सोढी जी र बाग म।
केसर वरण तमवा म उतरया छ पाबू ग्राप,
 कोई केसर घोडी ग्राथी छ हरियळ चपली की डाळ क।
ग्राया छैं रगीला सोढ़ा घोडलिया पिलाण
 कोई मुजरा तो करवा [illegible] र ब राठोडा री
वाला थारा मुजरा सोढ़ो [illegible] र जुहार
 कोई ग्रागा तो पधा [illegible]
ग्रोडी ड्योडी दीनी छ [illegible] डाळ,
 कोई राठोडा सोढ़ा व। [illegible] वाता
दोनू दळा म चाल छ व [illegible]
 कोई घुडला ।। [illegible]

काना तो सुण्या छो केसर घोडी का म्है नाव,
कोई काना की सुणयोडी घोडी आख्या हू म्हे देखली ।
सुणो जी ये मणेईजी म्हारी एक बात
कोई पुडला तो दुडावा जी आपा हरियल बाग म ।
म्हारी केसर घोडी आई हालर कोस पचास
कोई थारा तो घोडलिया जी ये खुल की आया ठाण हू ।
थारी घोडी नै देवोजी मणेई जो थे बाध,
कोई भल भल तो चढोभी जो काकजी रै नो लख ।
थार ता घोडा पर चढसी राव उमराव कोई,
म्हे ता भळे चढ़ागा जी इण म्हारी केसर काळमी ।
घाळ कागद पर भणेई जी देवो उरका माड
काई हार जी की घोडी दे देस्या चारण भाट न ।
सोढा ता तेजीडा घुडला लो या छै पिलाण ।
कोइ पाबूजी सिणगारी छ वा अपरी केसर काळमी ।
सुणल्यो ये बछेरी म्हारै मनडा री या बात
कोई लैरा जे रह ज्यागी तो थान द्यागा चारण भाट न ।
इसडी बाता पाल मवरजी मुख हू मतना काढ
कोई मैं तो नाय कहीजू कोई ढाडी डूम की टारडी ।
घुडला तो ले ज्याऊ जी मैं पूछा माय लपट,
कोई छिण म मैं छोडघाऊ जी घरती माता क ओड पर ।
काई तो करा छो म्हारी इण घुडला हू होड
कोई कहो तो दिखाऊ जी सूधई दरगा राम की ।
केसर पर चढिया छ पाबू बाप बाप मुख बोल,
कोई थापी तो मारी छै जी केसर केरी पीठ पर ।
ऊबा तो देखै छ सगळा अमरारण का लाग,
कोई म्हैला पर निरखै छ र सोढा र घर री कामणी ।
साळ मणया करली छ र दो या कारचीजू ट
कोई कर कर ललकारा र बछैरी दो या छाड दा ।
जाती केसर नेगी साग लिलडा न लगाय
कोई पूठी तो घिरती रै छोडघाई जमी कै डूड म ।
चालती तो घोडी या दीख जमी कै माय
कोई विण या उड छै र ऊंची हसमानी मारगा ।
केसर तो ब धी छ र बा घाडा री घुडसाळ
कोई सोढा री टारडियो र बध्यो छा चारण भाट क ।
घर घर म करै छै रै व घुड दोडा री बात,
कोई सोढ़ा रगोला हारया र राठोडा पाबू जीतियो ।

मवळी सवळी उठी छ सोढ़ा र मन म रीस
कोई तोरणियो वांध्यो छ रै बो ऊँच गढ़ र कागरा ।
सूरज ढल्यो छै हुई छ दिन को पछली पहर,
कोई सहल्यां मजोवै छैं वै सोढ़ा च्यानण चोक म ।
उठा रैं मुरजाळा डोर वाग री भड़काव
कोई सहेळो न चालो जी वा वाली वेळा हो गई ।
वाघोजी रगीला बनडा हुसल वसूमल पाग
कोई पेच वा सुँवारो जी माटीला सुरगी पाग का ।
साच तो मोतीडा रो सोवण सेवरिया बघवाय
कोइ किलँगी टगावा जी पच सवा लाख की ।
पहर ओढ़ की हा ज्यावो रग बनडा त्यारम त्यार
कोई केसर पर पग घालो जी सहेळ चालों राजवी ।
धीगडदा धीगडदा वाजै छ क्या का ढोल
कोई रिमभिम करती चाल छ पावू का घोडी नाचती ।
साच गजमोत्या हुँ सोढ़ा दी'यू चोक पुराय
कोई जाजिम तो ढळी छ र व हरिय रात पाट की ।
म्होरां तो भरघा छ सोढ़ा सुबरण थाळ,
कोई सोना रो नारेळो र वा लाखी सोवण पागडो ।
बठघा छैं रग बनडा पावू गादी गीदवा ढाळ,
कोई थाण ता व बाव र डामो चादो बठिया ।
आछा रग लाग्या छ या सेहळा कै माय
कोई राठोडा सोढ़ा की र बाळी रजवाड्या पड रही ।
पूज्या छ जोसी क बेट सगळा देई-देव
कोई सारा पली गणपत र रिद सिद को दाता पूजियो ।
करियो छ सूरजमल सोढ सेहळा रो नेग
कोई वाला तिलक करघा छैं रैं बो पाबूजी राठाड क ।
भाभा ता उठया छ र ब सेहळा रा लोग,
कोई तोरण तो ढुक छ र बो पावूजी बळवाकडो ।
दख्यो छै मुरजाळ बनड निजर पसार
काई तारणिया बध रया छ र हसमाली गढ र कागरा ।
मन म तो करघो छ र मुरजाळै पावू सोच
काई किण बिद तो पू चगी ये तू म्हारी केसर
मारू य बघेरी थान जीव जिया की मौत,
कोई तोरण ये बधवायो ये ऊच गढ र
जे थे घोडी जावोली छलागा म हार,
काई तो थान बकसू लो ये सोढा रैं चारण

जे जावोगी केसर घोडी छलागा म जीत
भल भल तो बधावू गो थान सोढा री घुडसाळ म ।
म्हदी तो रचावू गा मैं उर खुर थारा पाव,
कोई रतनजडाऊ घालू य मैं थार नेवर बाजणी ।
गळ म तो घलाऊ ये सोना री घूगरमाळ,
कोई माथ ता बधावू गो मैं थारै जगमग सेवरो ।
अदकी हू अदकी में करू गो थारी सार
कोई ऊबी न चरावू गो य केसर हरिया जो धणा ।
मतना ता दे दीजे य केसर थारो म्हारो पोत,
कोई मतना ता लजाये ये राठोडा री जातडी ।
पालमवर जी जे थापलो केसर केरी पीठ,
कोई तोरणियो मरवावू जी मैं चाद सूरज कै कागरा ।
उछळती गिराऊ मैं साढा र गढ री भीत,
कोई बावडती ले आवू साग ऊचे गढ रा कागरा ।
गाढो तो रहजे भ्रो पावू म्हारी ये पीठ,
कोई कस की माड लवो पावू म्हारी काठी सावणी ।
ढोली का छोरा तू मदरो मदरो ढाल बजाय
कोई ढोला क ढमाक र म्हारी केसर घोडी नाचसी ।
मदरो तो बजाव ढाली को बेटो ढोल
कोई रिमझिम रिमझिम रै बा नाच केसर काळमी ।
नाचती नाचती घोडी की ठोकी पावू पीठ,
कोई थापी क थपाक र बा केसर घोडी ऊछळी ।
ऊछळती गिराई छ सोढा रै गढ री भीत,
काई खुरिया तो रोप्या छ मानण गढ रै कागरा ।
थान छा जी पालमवरजी तोरण मारण को चाव
कोई मन की ता काडल्यो जी ये गिण गिण चिडकली मारल्यो ।
भल भल तो दो यू छै केसर तोरणिया मरवाय
काई बावडती ल आइ साग ऊँचै गढ रा कागरा ।
चाद डांम फरयो छ बो मूछा ऊपर हाथ
कोई बाग बाग होग्या छ र राठोड कुळ रा मानवी ।
नीचा तो झुकाया र रोसाळू सोढा सीस
कोई पाबू र कारजिये र सोढी की छाती फूलगी ।
पोळी म खडी छ र सोढा कै घर री नार,
काई आरतडो सजाव र ब पाबूजी राठाड को ।
सोवण थाळी चोमख दिवलो सासूजी क हाथ
कोई आरतडो करवावैं रै सुहागण सात सहेलडी ।

ऊबा छ रगराच्यो बनडो रगछड री छाय
कोई ऊबो तो करवाव जी हरियाळो बनडा आरतो ।
मिणबा ता लागै छ जी बनड को गोरो गात
कोई धई तो चढावण लागी पालभँवर क आरत ।
मतना तो मिणो जी थे म्हारो गोरो गात
कोई मतना तो चटावो जी धई थे म्हार आरत ।
धई तो चढावो जी ये केसर क लिलाड
कोई चावळ तो बगावोजी थे म्हार सोवण सेवरै ।
क्यो कोनी मिणवावो जी थ थारो गोरो गात
काई क्यो कोनी चढवावो जी धई थे थारै आरत ।
जती छा घरा पर म्हे जत मत की राखा काण
कोई नारी का पल्ला सूँ जी यो म्हारो पल्लो ना भिड ।
धई तो दी यू छै सासू केसर क लिलाड
कोई चावळ तो फीक्या छ र पाबू क सुवरण सेवर ।
इण बिध तो हुयो छ र बो तोरणिया रो नेग
काई रँग तो डेरा न र रण बका राव पधारिया ।
सोढा र आगण म होरयो माण्ड को सामान
कोई राव तो गढा म र व सोढा फिर उतावळा ।
जोसी का बेटा र तू तो चवरी बेगो माड
कोई फरा तो लिरयोडा र पतड म सू इ साज का ।
पूर छ जोसी का बेटा चू री केरो पाट
कोई तार तो लपेट छ जासी को काच सूत का ।
बदी तो रची छ जोसी सासतरा परवाण
कोई च्यार तो हिरमिचिया खू टी च्यारू कू टा रोप दी ।
कळश तो थरप्या छ जोसी सुरगी चू री माय
कोई मगल ता सराइया जोसी म्होर जुँहारी पूर दी ।
नाई का वटा तू वेगो जान बुलावो देय
कोई लगन लिखडो र फरा को सू ई साज को ।
चाल्यो छ नाई को छोरो नाय करी दमदार,
कोई मगळ बुलावो दी यू र जाना क डेर जाय क ।
धीगडदा धीगडदा बाज छ सुरगा ढोल,
काई जाना ता पधार छ साढा र रग माड तळै ।
चू री चढवा हाल्या छ व पाबूजी राठाड
काई चवर ता ढुळ छ र पाबू क सोवण सवर ।
हीरा जडिया पाटा नाई क वट दी यू ढाळ,
काई ऊपर तो विछाया छ रगीला गादी गीदवा ।

मुरजाळो रगराच्यो बनडो बिराज्यो छै आय,
कोई वेद तो पुराणू रै जोसी कै बेट खोलियो।
पुजवाया छ जोसी स धरती का देई-देव
कोई सारा पला देवा म आगळो गणपत पूजिया।
आई छ सोढा री बाई सात सख्या र साथ,
कोइ आय तो बिराजी छ मुरजाळ क अग जीवण।
हाथ जोड की ऊभो छै सो सोढा रो परवार,
कोइ मार तो लगी छ रै सोढा घर कन्या दान की।
पला तो सूरजमल सोढ करयो किया को दान,
कोई पाछ तो सूरजमल सोढै ना मण सोनू सकळप्यो।
बीजा करिया सोढो की मा मोती सवा मण दान
कोई भाई तो भोजायाँ र दी यू छ अनधन मोकळो।
काकै तावा दी यू छ वो घण म्होरा रो दान,
कोई मामा नाना दी या छ धोळी गाया रा बाळदा।
बाला वाला करवाया छै सोढ़ा किया दान,
कोई जुग जुग म चालैगी र इण घण दाना री वारता।
माड तळ वठ्या छ चाँदो डामो परधान
कोई बीजा तो वठ्या छ र पावू का भाई-भेळपी।
वठ्या छ धरती केरा सगळा देइ देव
कोई राठोडी धरती का रै वठ्या सगळा मानवी।
सगळा तो सरायो छ सोढा रो किया दान,
कोइ चिरचा तो करै छ रै सोढा रै बठ्या आंगण।
कदे ना सुण्या छा जी म्ह कांनी इसडा दान
कोइ दाय तो नणाँ हू जी म्हे जुग मे कठ ये न ओळख्या।
वेद पढता होगी छै जोसी न पूरी पहर,
कोइ हथळेवो करवायो छ सोढीजी अर पाल को।
रग तो बरस छ यो सोढा क घर आज
कोइ कमधजिया पाबूजी र जिण र आंगण चू री चढया।
गल तो हुयो छै बो पालमॅवर राठोड
कोइ आग तो हुइ छ रै वा सोढ़ा केरी लाडली।
सात सहेली गाव छै वै चू री केरा गीत
कोइ मदरा तो मदरा र सोढीजी पगल्या धर रया।
पहल फेर जुड्या छ बनड बनडी का जीव
कोइ सोढा अर राठाडां का वै बाला सगपण जुड गया।
दूज फेर दूद नीर ज्यू मिल्या दायतणा जीव,
कोइ ` का व गादा सगपण घुळ गया।

वठ्यो तो बाच छा जोसी वेद पुराण
कोइ फेर तो फेर म रैं सवा मण घीरत होमियो ।
चारणकै मारी छ केसर घोडी हिणकार,
कोइ दांवणिया तोडघा छ केसर हसली बीजळस्यार का ।
जावो जी चादा वाघेला घोडी न बिलमाय,
काइ फेरा हूँ उठतो पावू मार कस कस कोरडा ।
हाल्यो छ चादा वाघेलो पावू रो परधान
कोइ जाय तो विसवास छ पावू की केसर काळमी ।
थारो तो कहीज ये केसर बळज्याणू सूभाव,
कोइ रगराची बेला म ये थे क्यू कर ग्रारो घालियो ।
दोय फेरा लीया ये केसर सोढी पावू लेय
कोइ दोय तो फरा ये केसर लेणा ग्रब वाकी रया ।
रग तो हुयो छ ये केसर सुरग माण्डै माय
कोइ रग न बिरँगो य थे केसर घोडी ना करो ।
ज सुण लेगो पालमँवर थारी बीजोडी हिणकार,
कोइ वचना को बाध्योडा ये फेरा में ग्रद बिच उठ चन ।
तीजोडा फेरां मे ये केसर मतना करो भिजोक
कोइ गाळ तो देवली ये थान सोढा केरी डावडी ।
नाही तो देवगी जी सोढी जी म्हान गाळ,
कोइ वयान तो मारगो जी पाबूजी कस कस कोरडा ।
जिण तो गाया को चादा पीयो मीठो दूध,
कोइ उण तो गाया न जायल खीची लेग्यो घेर की ।
कडकड बडवड चाब छ बा केसर घोडी दात
कोइ दोलडिये दांता हूँ र बा ऊबी घोडी लोह दळ ।
सुणो हो चादा जी थे मन म्हार की बात
कोइ देवळ भुवानी ग्राव छ वा देखो थारी ग्रोट मे ।
खुल्ला तो कर राख्य। छ भुवानी सिर का कस,
कोइ ग्राय तो कुरळाइ छ वा मोढा केरी पोळ मे ।
थ पावूजी रीझ्या छो सोढी हूँ हृयळवो जोड
कोइ खीची तो रीझ्यो छ जी म्हारी गाया र बाळद ।
चादा थे कह द्यो ना म्हान साची साची बात
कोइ कुणसोड कारजिये र या देवळ भुवानी ऊतरी ।
खोटो तो कहीज र इण चारणी रो सुभाव
ग्राय ता कुरळाइ र इण साढा र गढ कोट म ।
काइ तो सुणांवां बा पावूजी थान बात
कोइ खीची खेदर लग्यो जी देवळ चारण को बाळदो ।

इतणी सुणतां झड़काई छ रग वागै की डोर,
कोई हथळेवो तो छोडचा जी फेरा म अदबिच ऊठियो।
हथळेवा छुडाता सोढी करयो घणेरो सोच,
कोई उठतीड़ै पाबू को र साड़ी जी पल्लो पकडियो।
काई तो गुम्रो ग्रो पाबू करियो म्हारै बाप,
कोई काई तो गुम्रो ग्रो पाबू करियो माता जलम की।
काई तो गुम्रो ग्रो पाबू करियो म्हारै परवार,
कोई काई तो गुम्रो ग्रा पाबू म्हार म थे ग्रोळख्यो।
नाही तो गुम्रो जी सोढी करियो थारै बाप,
कोई नाहीं तो गुम्रो जी थारी माता करियो जलमणी।
नाही तो गुम्रो जी सोढ़ी करया थार परवार,
कोई नाही तो गुम्रा जी सोढी थारै म म्हे ग्रोळख्या।
तीजोड़ा फरा म जी पाबू किण विद चाल्या छोड,
कोई ग्रादी तो कुंवारी जी म्हानै ग्रादी ब्यायोडी छोडदी।
गुम्रो तो भरया छा ये सोढ़ी जी म्हे खास,
कोई बचना का बाध्योडा ये तीजै फेरै मे उठ चल्या।
बचन बाप मरण क सोढी कहीज जुग म एक
कोई धरम तो कहीजै जी सोढी जी फेरा ग्रागलो।
बचना का बाध्योडा जी सोढी धरती ग्रर हसमान,
कोई बचना का बांध्योडा जी सोढी पुनर पाणी ग्रागला।
बचना का बाध्योडा जी सोढी जुग मे सूरज चाद,
कोई बचना हूँ बडेरो जी सोढी जी जुग मे को नही।
देवळ चारण बसै छै सोढी जी म्हारै वास
कोई लर तो पडयो छ जी विण र जायल जीन को।
चडतोडी जाना क देवळ दीधी छ ग्रडवार
कोई गाया रो म्खाळो देवळ डाम जी नै मागियो।
डामजी न ल्याया छा म्ह सुरगी जाना माय
कोई देवळ न दे ग्राया छा म्हे बाचा साचा बार का।
थे तो जाय रमोया पाबू सोढा रै सुरग कोट
कोई सासरियो माणता जी देवळ की विणती ना सुणी।
भोळी छ ये देवळ भुवानी भोळी थारी जात
कोई फेरा ग्रदबिच छोडा ये थारी वरणा गाया का बारवी।
बचना का बाध्योडा जी सोढ़ीजी म्हे कुळ माय
कोई सीस तो लगायो जी म्हे चारण केरी ग्रोट मे।
घुडला पर माण्डांगा जी सोढ़ी जी बेगा जीन,
कोई गाय तो ल्यावागा जी पूठी चारण क बारणै।

भेजू जी पावूजी म्हार बाजो सा री फौज,
कोई पकड ता मगवाल्यू जी थारो तडकै जायल जीनको ।
जीमो जी पावू जी वठ्या जिनवा रा भात
कोई चोपड पासा खेलो जी थे म्हार सुरगं म्हैल म ।
म्हारै तो लाग जी सोढी मूरापए क दाग
कोई थारी तो फोजा पर म्हारी कुळ म मूछाँ ना चढै ।
दुलरव जी सोढी जी म्हानै जुग रो सारो लोग,
कोई खारी ता सायड का जी म्हान टबक भूण्डै बोलणां ।
ग्राव ता रम छै पावू सासरिये र माय
कोई सोढा र भातरिया न भेज्या गाया का वारवी ।
छोड्या नाय गयो पावू हूँ सोढी जी रो साथ
कोई देवळ क बचना न भूल्यो सासरिये मे जाय क ।
चढो जी पावू रणबका भल गाया री बार,
कोई सनाएी दे ज्यावो जी म्हन थार हाथ की ।
जीवागा तो फर मिलागा सोढी थां सू माय
कोई मरज्यावा तो ल्या देगो ग्रोठी म्हारा महँमद मोळिया ।
चाल्यो छ मुरजाळा पावू बाग न झडकाय
कोई बाग कै बिलमी छ पावू की सासू साळिया ।
काई ग्रो मुरजाळा म्हारी बाईसा मे ग्रोगए काढ
कोई थान तो परणावा जी म्हारी बीजी वाली डीकरी ।
दूदा सिरसी उजळी थारी बाईसा जुग जुग र माय,
को ग्रोगणियो नही छ जो थारी बाईजी म गुए मोक्ळा ।
ग्रोगए तो कहीज जी सासू जी म्हार माय
कोई देवळ तो चारणी न बेच्याया मसतक ग्रापणां ।
चाल्यो छ मुरजाळो पावू तणिया न सभाळ
कोई तणिया क लटूमी छ ब रग री सात सहेलिया ।
चादा बाधेला खोलनै थार लाल कबजाँ री लूम
कोई बारी बारी भरद्यो र ये झोळी सात सहेलियाँ ।
पाबूजी सोढा हूँ करिया मुजरा ग्रौर जुहार
कोई जीवांगा तो ग्रावांगा म्हे ग्रोजू सुरग सासर ।

भाटिया री राड रो पवाडो

(पवाडे रा साराश)

डामा से पराजित होकर जायल का जिंदराज खोची अपने मामा के यहाँ सहायता माँगने गया जो भटनेर मे शासन करता था। मामा ने सारा हाल सुनकर सभी भाटी सरदारो को इक्ट्ठा किया और डामा का पकडने के लिए भरे दरबार मे बीडा घुमाया कि तु सवा पहर बीत जाने पर भी जब काई बीडा उठाने के लिए तयार न हुआ, तब भाटीराज ने कहा कि क्या मैं यह समझलूँ कि आज यह धरा क्षत्रिय विहीन हा गई ? क्या भाटियो की नारियाँ वीर प्रसविनी नही रह गइ ? यह सुनकर ज्ञानसिह भाटी को जोश आ गया और उसने डामा को पकडने का बीडा उठाया। भाटियो की विशाल वाहिनी ने पाबूजी की भूमि मे प्रवेश किया। नान सिंह घोडे पर सवार हो पाबूजी के पास पहुचा और अभिवादन के अन तर कहने लगा—हे पाबूजी ! आपने डामा के रूप म सिंह पाल रखा है आज मैं उसे युद्ध मे समझ लूँगा। पाबूजो ने उत्तर दिया—खीचियो की लडाइ म डामा ता कभी का काम आ चुका। ज्ञानसिंह भाटी ने कहा—हे पाबूजी, भूठ न बोलिए आप कितना ही छिपाइए मैं इस जुलमी डामा को मारे बिना नही छोडू गा। पाबूजी ने कहा—हे भाटी सरदार जरा धीरे धीरे बोल, अ यथा तू सोये हुए शेर को जगा देगा। इतना सुनते ही डामा जी की आँख खुली, भूखे शेर की भाँति वह कच्ची नीद म ही उठ खडा हुआ और उसने ज्ञानसिह भाटी का ललकारा। डामा को देखकर यद्यपि भाटी-सरदार बहुत भयभीत हो गया तथापि काइ उपाय न देख कर उसने कडी छाती की और लडने के लिए तयार हो गया। ग्यानसिंह भाटी डामा के हाथो युद्ध मे काम आया। इतने म पीछे से चीटियो के नाल की भाँति भाटियो की एक लाख फौज आ पहुँची। पाबूजी ने एक राईका (ऊट चराने वाला) से कहा कि तुम ऊटनी पर सवार हाकर भाटियो की फौज और उनक मोर्चों को देख कर आओ। राईका ने आकर कहा कि भाटियो की विशाल पौज के सामने डामा नही टिक सकता। यह सुन कर पाबूजी वापिस गौरँ गू जव (अपने स्थान पर) आ गय और चादा डामा से कहने लगे कि हम पहाड की ओट हो जायँ भाटियो से जीत नही सकेंगे। डामा ने कहा—पाबूजी आप कसी भोली भाली बातें करते हैं ? एसा करगे तो क्या आप अपनी कमलादे जसी वीर माता का दूध नही लजायेंगे ? पाबूजी ने कहा डामा किसको तो ढाल बनाओगे और किसके बनाओगे मोर्चे ? डामा ने कहा—छाती को ढाल और मूछो के मार्चे बनाकर युद्ध म अमर हो जायेग। ऐसा ही हुआ। पाबूजी और चादा डामा ने शत्रुओ की असख्य सेना को धराशायी कर दिया किन्तु अन्त म स्वय भी खेत रहे। पाबू को लिवाने स्वग से विमान आया और चांदा-डामा के लिए आई पालकियाँ। तलवार की जीत तो हुई जायल के जिन्दराव

की, और यश की जीत हुई पाबूजी की । तलवार से जीतने वाला के तो धरती ऊपर केवल निवास स्थान बनेंगे कि तु यश विजेताओं की दवताओं की भाँति पूजा होगी, उनकी पाषाणमयी प्रतिमाएँ बनेंगी ।

जो पवाडा नीचे दिया जा रहा है वह श्री गणपति स्वामी द्वारा सग्रहीत है और बिड़ला सेंट्रल लाइब्रेरी पिलानी के सौज-य से हमे प्राप्त हुआ है ।

पवाडा

लीलो नर घोडो जिन खीची पातळियो[1] हसवार
कोइ जाय पुकारण[2] खीची र वो भाटघा री मटनेर नै ।
एक दोय बासो बसियो र वो, मारगिये रै माय
कोइ तीजाइ बास म र बो सीवा[3] खीची साचरयो[4] ।
सूरज तो ऊग्यो है राजा, कासिप केरो पूत
कोइ पछी भी बोल छ रै ब मीठी सुरग रू खडा[5] ।
जागी जागी जग री सगळी जागी जीवा जूण
कोइ हळिया ले ले आव र खेता मे हाळी[6] बाळदी[7] ।
भीणी भीणी चाल बा तो ठडी ठडी बाळ[8]
कोइ मनडो तो हरखाव र वा ाग घणी सुहावणी ।
पीळ पीळ वादळिया री सुरँगी सुरगी कोर
कोइ नैणा न रीझाव रै ब सोन की सी डूगरी ।
सहसर धारा फूटो छै सूरज को एकै साथ
कोइ सूरज की किरणा क सागै, खीची काकडिये[9] बडयो[10] ।
डावू बावू जोयो खीची जोयो निजर पसार
घुडला न थाम्यो जिन जायल टीबडली री भोक[11] म ।
आळ गुवाळाँ बूजै खीची माम रा सनाण[12]
कोइ कुणसाड सनाण र म्हे मामाजी न ओळखा[13] ।
वाळ तम्बू को र खीची (धार) मामै का सैनाण,
कोइ सुरगो भिंडो फरक थारै, मामजी र बारणै ।
इतणी सुणता थाभी जायल, लीला री बगडोर,
कोइ चलतोड घुडलै क जायल कसकी[14] मारी कामठी[15] ।
छिण म वो पूच्यो है जायल, माम क दरबार,
सूरज की साखा म खीची, माम हू मुजरो करयो ।

---

1 छरहरे बदन वाला, पतला, सु दर 2 पुकारने के लिए 3 सीमा पर 4 जा पहुँचा 5 पेडो पर 6 किसान 7 बल 8 हवा 9 गाव की सीमा 10 प्रवेश किया 11 ढाल 12 चिह्न निशान 13 पहचाने 14 कस कर 15 छड़ी, बेंत

मा'या र भाणजिया थारा, मुजरा ग्रौर जुहार
कोइ खोलोनी[1] पागरखी रै थे, वठो माया जाजिमा।
जाजिम ऊपर वैठण रो मामाजी नाही जोग,
कोइ जाजिमडी ता लेग्यो म्हारो, पाबूजी रा डामरो।
काई र भाणजिया थे तो, करिया गजब ग्र याव
कोइ काई र थो खेदो चारण देवळ केरो वाळदो।
नाई जी मामाजी म्हे तो करिया गजब प्र'याव
कोइ नांइ तो म्हे खेद्या चारण देवळ केरो बाळदो।
धरी छो जो मामाजी म्हे ढाढी[2] दोयर च्यार,
कोइ लैरा म्हार चढ़ ग्रायो बा, पाबू जी रो डामरो।
काई तो दीयो थे खीची, कोई सरवत जुवाब
कोइ काई तो कह्यो र थांन पाबू जी कै डामर।
हँस हँस की दी'यो छा मामा भीठो म्हे जूवाब,
कोइ ग्रायोड डाम की म्ह तो कीनी भाभा खातरी[3]।
ग्रादो गाया लेज्यावो डामाजी थारै साव,
कोइ ग्रादी गाया दे ज्यावो थे वणेई न दायज।
जद हूट बोल्यो सुणताई जी डामो करडी वात
कोइ घग्रस तो चैढ़ायो जी बै बावन टडी[4] को तीरियो।
ग्रादी गाया लसी खीची, थारो चारण भाट
कोइ सगळी गाया ले ज्यासी यो, पाबूजी को डामरो।
जीयो चावो तो रै डामा, पाछा घर न जाय,
कोइ भूवयोडा सेला की ग्रणिया डामाजी थे ना चढ़ो।
म्हारी तो खेंडी छै डामा सजवज सारी फोज
कोइ थे तो दीसो छो र डामा रण म म्हांनै एकला।
थान रै डामाजी मारया ग्राव छ कीरात्य[5],
कोइ लोया तो दुलखैगा[6] थारी, मनड देगी मोळमा।
रातोडं रणखेता खींची इकलो मतणा जाण
कोइ पीठा पर नगारो म्हार बाजै लिछमण[7] देव का।
इतणी कह कर वठघा डामो दळ म गोडी[8] ढाळ,
कोइ तीरा का लग्गाया म्हाबळ ग्रमळी सावण[9] भादवा।
मारो जी मामा जी म्हारी सैंस दळा की फोज,
कोइ चुग चुग कर मार्‌या जी म्हरा इज[10] बीजै सूरवा।

---

1 जूत खोल दा न 2 गायो से तात्पय है 3 वडा ग्रातिथ्य, स्वागत सत्कार 4 फाल 5 दया 6 दुलक्ष्य करेंगे 7 पाबू जो लक्ष्मण का ग्रवतार समझा जाता है 8 घुटने 9 बौछार 10 चने [illegible]

जद हुट वोल्यो र भाटघा रो बा सिरदार,
कोइ काई र भाटया म भाया धरा नबीजी[1] हो गई।
काई रै सिरदारो थान दूद चुंघायो घाय,
कोइ काई तो थे लोटया भाया, गादडिया री कूख मे।
काई तो जलमण हूँ रगी मटियल जुग म नार
कोइ काई तो नीछतरापरण[2] यो भाटीप म ग्रा गयो।
ग्रा हाथा मे सोहै कोनी माला ग्रर तरवार
ग्रां हाथा म सोहै भाया थार जेळी रापडा[3]।
हाथा रा दूधासा भाया थ्रो जाजिम पर नाख[4],
कोइ खुरप्या तो सम्हावो रै थे खोदो बरण म दूबडी।
किण रै बूते डटरयो छ यो विन खब हुसमान
कोइ किरा र सत पर डटरी छ या नीच माता धरतरी।
इतणी सुणता ग्यानसिघ क उमडी तन मे भाळ[5]
कोइ घिरतोडा बीडा त र ब, भुजा पसार र झेलियो।
बीडो झलत दीयो र बो ग्यान को लीलाड
कोइ बीडो चा॰या पाछ वो कुमळायो काच फूल ज्यू।
धक धक तो कर छ र बो ग्यान को सरीर,
कोइ हीमरा तो टूटो[6] रै डरत को फाटै काळजो।
इण बिद वणियो ग्यानसिह तो फाजा केरो बीद
कोइ जी र तो बांध्या छ र ‘यावा[7] रा काकर डोरडा।
धीगडदा धीणडदा चाली भाटीडा री फोज
कोइ मारग मे नइ माव र बा, चाल ऊबड[8] तावळी[9]।
लाम्बै तो भूबाँ की भाटी तोपा दी हुकवाय
कोइ ग्रोछ तो पला का रै हुँकवाया जुजरवा रेखळा।
पड पड पर माटी राजा गेर छ पडाव
पग पग पर खुदवावै छै जळ केरा कूवा बावडी।
रात रात नै चालै फोजा पूरी कोस पचास,
कोइ सूरज की ऊगाली[10] र व खोल कम्मर पेटिया।
ग्रेक दोय बाना वसिया र ब, मारगिये र माय
कोइ तीजोड बास म पूच्या पाबू जी री भोम[11] म।
ऊच स मगर पर दीनी भाटी जाजिम ढाळ
कोइ ग्यानसिघ भाटी तो लिलडा ऊपर काठी[1] गेरदी[13]।

---

[1] बीज रहित नि क्षत्रिया 2 नि क्षत्रियत्व 3 भाड झखाडोको काटने के लिए हाडी 4 डाल 5 ज्वाला 6 हिम्मत 7 युद्ध रूपी विवाह के ऊबड खाबड 9 शीघ्रता से 10 उदय 11 भूमि 12 जीन 13 ...

जीवां तो मीला र भाया, थांसू पाछा जाय
कोइ मर ज्यावां तो भाया म्हारा पछला मुजरा मानज्यो ।
हाथां तो लोनी छै भाटी मूवा[1] मण की सांग,
कोइ गळगळिये गेरयो छ भाटी खाण्डो बीजळ स्यार[2] को ।
मगरा[3] पर बांधी छ भाटी गोडा की हुसली ढाल
कोइ कड़पा तो कटारा वकँ भाटी बाध्यो बाकड़ो ।
भेली छै पातळिये भाटी लिलडा री लगाम,
कोइ घुडला री पीठां पर भाटी थापी देयर[4] चढ़ गयो ।
कई रे जितवाया लिलडा म्हांने तू रण खेत,
कोइ कई र मोड़ी[5] म लिलडा म्हटक्या कारज सारिया ।
आज तो पड़यो है लिलडा डाम जी हू काम,
कोइ रतोडो रण खतां रे तू म्हारी टेकी राखिये ।
मजल्यां मजल्यां पूछ्यो भाटी राठोड़ै दरवार
कोइ मरी ता कचेड़या बो जा पाबू हूँ मुजरा कर्‌या ।
माया रे म्हे ग्यानसिंघ थारा मुजरा नेक जुहार,
कोइ खोलोनी पागरखी[6] र थे, बठो म्हारी जाजिमा ।
जाजिम पर बठण रो पाबू नाई म्हानें चाव
कोइ म्हान तो बतावो पाबू थारो मड तरवारियो ।
डाम जी न पालयो पाबू खावड म थे नार,
चुग चुग तो मरवाया र थे जिण हू खीची बापडा ।
आज मैं समजू लो पाबू थारलो बो नार
कोइ रण म तो देखूँलो पाबू बा रो सगती[7] वाणियो ।
डामो ग्यानसिंह भाटी रे ! अठ कहीजे नाय
डामो जी तो मरग्यो र वो खोच्या केरी राड[8] मे ।
झूठा जी पाबू जी थे तो कूडा मतना बोल
ल्हकोयो[9] नड छोडूगो कोइ थारो जुलमी[10] डामरो ।
चल्यो जा र ग्यानसिंघ तू थारी ज्यान बँचाय,
कोइ दया तो आव छ म्हान थार इसडै डोल पर ।
हळवाँ हळवाँ ग्यानसिंघ तू चनक[11] हळवाँ बोल
कोइ अब की घडिया म र तू सूत्यो सेर जगायसी ।
इतणी सुणता टूटी र बा डामें जो की नींद,
काची तो निंदरा मे र बो उठियो सूख नार ज्यू ।

---

1 सवा 2 अच्छी फौलाद का 3 पीठ 4 देकर 5 बिपत्ति 6 जूते
7 शक्ति-बाण 8 युद्ध, लडाई 9 छिपाया हुआ 10 अन्यायी 11 जरा

करयो छै खखारो डाम भाकरिया[1] री ग्रोट,
कोइ काट तो गरणायो[2] र ग्यान का पग पाछा पड्या ।
ऊठ्या छ डामो जी बो तो ग्राळसिया[3] सा माडय
कोइ ध्रूण तो वतळावै र यो मोळ इण सिरदार हूँ ।
ग्यानसिंघ भाटी क गइ काना माय वलेल[4]
कोइ पीठा तो थररायो र बो, मुख बा को फीको पड्यो ।
ताळव क चिपगी है बा भाटी की जब्बान
कोइ कठ तो सूक्या छ र बा बोली नाई ऊपड[5] ।
डरतो डरतो भाटीडो बो काड[6] छ जब्बान
कोई मुजरा तो कर छ र बो डाम जी सिरदार हूँ ।
पाछो चाल्या लागै वो भाटी क माथ दाग
कोइ मुखडो तो दीखाव रै बो किस बिद पूठो[7] जाय की[8] ।
ग्राग नै सरक तो दीख सामी[9] ऊबी मात
कोइ जीवतडो ना बचसी र यो डामो माथा बाढसी[10] ।
करडो करनी छाती भाटी काठो करियो जीव,
कोइ इण जीवा हूँ भाटी र बो मरबो भलो बिचारियो ।
जद हुट बोल्यो रै बो भाटी भूटा कूडा वण
कोइ खाण्डो तो सभाळो र डामा ग्रावो इण रण खेत मे ।
थे मार्‍या छ डामाजी व राव घणा उमराव,
कोइ ग्रवकाळ[11] तो डामाजो पाळ हूँ पाळो[12] भिड गयो ।
इतणै मे ग्रायो छ डामो वको वको चाल,
कोइ ग्यानसिंघ भाटी हू रै बै बांध्यो सामू मोरचो ।
पैला तू करले रै भाटी म्हारै ऊपर वार
कोइ नाही तो ले ज्यासी र तू घोखो सागै सुरग में ।
पला तो बायो छ भाटी सूवा मण की साग
कोइ साग तो वचाई डामै, भर की वालो पैंतरो ।
दूजा तो जाड्यो छ भाटा बावन टही को तीर,
कोइ ग्यानसिंघ ग्रर लीलो घोडो जाय जमी भेळा हुया
इतण मे चढ ग्राई छ बा फोज,
कोइ सामा ता राप्या छ मदान
लाख दळां को कहिये राजा
कोइ ताता बधियो ग्रावै ाडे नाळ

पहाड 2 गूज उठा 3 ग्रगडाई भाटी
गये *5 निकलती है 6 निकालता* 8
0 काट डालगा 11 इस वार 12 गया

टूटी छै भाटी की फोजा की भगली बा मूर[1],
कोइ भाटीवाडा उलटयो छ यो रातोडा रण खेत म।
जद हट बोल्यो छ वो वको पाबूजी राठोड
कोइ सांड[2] पिलाणो[3] रै राइका[4] जा भाटयाँ र मोरच।
फिर घिर देखो रै राईका भाटीप को साथ
कोइ नणां थे सजावो राइका भाटीडा रा मोरचा।
किस बिद तो देखू जी मैं बा फिर घिर सगळी फोज,
कोइ किस बिद तो भाळू जी मैं अब भाटीडाँ रा मोरचा।
राखला कोइ भाटी म्हान भ्रदबिच रण रै खेत,
जातो ता मैं जास्यू जी पिण पूठो किस बिद पुगस्यू।
लीज रै राईका तू तो म्हारो जदही[5] नाव
कोइ राती भूरी करली[6] थानै पडती रिडती ल्यावसी।
चुग चुग ता मारयो छै पाबू भाटी सारो साथ[7]
कोइ ढू ढ ढू ढ कर मारयो छ खीच्या को जायो जामतो।
बावन भरू कर छं व रात रण म नाच
कोइ रुधिर तो पीव छ बै प्राव[8] की चोसट जागणी।
पाबू खातर[9] प्राया छ ब दरगा हू बीवाण
कोइ चांद डाम खातर ग्राई ग्ररसा[10] पर हू पालखी।
जसड तो जीत्यो है र वो कोलम को दरबार
कोइ खांड तो जीत्यो है र बो खीची जायल जीन को।
खाड जीतणिया का वससी धरती ऊपर बास
कोइ जस जीतणिया री तो होसी बण म भाया देवळी।[11]

---

1 प्रागे की पक्ति 2 ऊँटनी 3 जीन कसो 4 ऊट चराने वाला 5 जभी 6 ऊँटनी 7 समूह 8 प्रासमान 9 लिए 10 आसमान, स्वर्ग 11 पाषाण मयी प्रतिमा।

करयो छै सखारो डामँ भाकरिया[1] री ग्रोट
कोइ कोट तो थरणायो[2] र ग्यान का पग पाछा पड्या ।
ऊठयो छ डामो जी बो तो थाळसियो[3] सा मोड्य
कोइ कुरण तो बतळावे र यो मोळ इरण सिरदार हूँ ।
ग्यानसिंघ भाटी क गइ काना माय बलेल[4]
कोइ पीठा तो थररायो र बो मुख बा को फीको पड्यो ।
ताळव कै चिपगी है बा, भाटी की जब्बान
कोइ कठ तो सूक्या छ रै या बोली नाई ऊपड[5] ।
डरतो डरतो भाटीडो बो काड[6] छ जब्बान
कोई मुजरा तो कर छै र बो डामँ जी सिरदार हूँ ।
पाछो चाल्या लाग बो भाटी क माय दाग
कोइ मुखडो तो दीखाव र बो क्सि विद पूठो[7] जाय की[8] ।
ग्राग नै सरक तो दीख सामी[9] ऊबी मोत
कोइ जीवतडो ना बचसी र यो डामो माथो बाडसी[10] ।
करडी करली छाती भाटी काठो करियो जीव,
कोइ इण जीवा हूँ भाटी र बो मरबो मलो विचारियो ।
जद हूट बोल्यो र बो भाटी झूठा कूडा बरण
कोइ खाण्डो तो सभाळो रै डामा ग्रावो इरण रण खेत मे ।
थे मार्‌या छ डामाजी व राव घणा उमराव
कोइ ग्रबकाळ[11] तो डामाजी पाळ हू पाळो[12] मिड गयो ।
इतणँ मे ग्रायो छ डामो बको बको चाल,
कोइ ग्यानसिंघ भाटी हू रै बै बांध्यो सामू मोरचो ।
पला तू करले र भाटी म्हार ऊपर वार
कोइ नाहो तो ले ज्यासी र तू धोखो साग सुरग मे ।
पला तो बायी छ भाटी सूवा मरण की साग
कोइ साग तो वचाई डाम, भर की बालो पैंतरो ।
दूजा तो जोड्यो छ भाटा बावन टडी को तीर
कोइ ग्यानसिंघ ग्रर लीलो घोडो जाय जमी भेळा हुया ।
इतणं म चढ ग्राई छ बा भाटीडा री फोज,
कोइ सामा तो राप्या छ र ब मोरचिया मैदान म ।
लाख दळा की कहिये राजा भाटा जी की फाज
कोइ तातो बधिया ग्राव रै यो लडबा कीडी नाळ ज्यू ।

---

1 पहाड 2 गूंज उठा 3 अँगडाई लेकर 4 ग्यानसिंह भाटी के कान बहरे हो गये 5 निकलती है 6 निकालता है 7 वापिस 8 जाकर 9 सामने 10 काट डालेगा 11 इस बार 12 समान प्रतिपक्षी मिल गया

टूटी छँ भाटी की फोजा की अगली बा मूर[1],
कोइ भाटीवाड़ा उलटयो छँ यो राठोड़ा रण खेत म ।
जद हूट बोल्यो छ वो बको पाबूजी राठोड़,
कोइ साड[2] पिलाणो[3] रै राइका[4] जा भाटयाँ रै मोरच ।
फिर घिर देखो रै राईका भाटीप का साथ,
कोइ नणा ये सजोवो राइका भाटोड़ा रा मोरचा ।
किस बिद तो देखू जी मैं बा फिर घिर सगळी फाज,
कोइ किस बिद तो भाळू जी मैं अब भाटीड़ाँ रा मोरचा ।
राखलो कोइ भाटी म्हानै अदबिच रण रै खेत,
जातो ता मैं जास्यू जी पिण पूठो किस बिद पूगस्यू ।
लीज र राईका तू तो म्हारो जदहीं[5] नाव
कोइ रातो भूरी करली[6] थान पडतो रिडतो ल्यावसी ।
चुग चुग तो मारयो छँ पाबू भाटी सारो साथ[7]
कोइ ढूढ ढूढ कर मार्‌यो छ खीच्या को जायो जामतो ।
बावन मरू कर छ बै रात रण म नाच
कोइ रुधिर तो पीव छ बै आव[8] की चोसट जोगणी ।
पाबू खातर[9] आया छ बै दरगा हू बीवाण
कोइ चाँद डाम खातर आई अरसा[10] पर हू पालखी ।
जसडै तो जीत्या है रै वो कोलम का दरबार,
कोइ खांड तो जीत्या है र बो खीची जायल जीन को ।
खाड जीतणियां का बससी धरती ऊपर वास,
कोइ जस जीतणिया री तो होसी बण मे भाया देवळी ।[11]

---

1 आगे की पंक्ति 2 ऊँटनी 3 जीन कसो 4 ऊट चराने वाला 5 जभी 6 ऊँटनी 7 समूह 8 आसमान 9 लिए 10 आसमान स्वर्ग 11 पाषाण-मयी प्रतिमा ।

मानाँ गूजरी को पवाडो

मानाँ गूजरी का पवाडा राजस्थानी गूजर साहित्य की एक अच्छी गीत कविता है। यह कदाचित गूजर भाषो द्वारा एक मुगलकालीन घटना को लेकर रची गई है। मानाँ एक षोडश वर्षीया गूजर महिला है, जा अत्य त सु दर, निडर, कमठ, हठी तथा वाचाल है। वह घरवाला तथा अ य स्वजनो क द्वारा बार बार मना करने पर भी दही बेचने को दिल्ली जाती है जहाँ वह किसी मनचले मुगल शासक द्वारा रोकली जाती है। मानाँ की अनुचरी हीरा इस घटना की खबर उसके घर पहुचाती है। फलत गूजर लोग दिल्ली पर आक्रमण करते हैं जिसम वह मुगल सरदार हार कर मानाँ को अपनी धम बहिन मान लेता है और कठिनाई से अपना पीछा छुडा पाता है। इसमे शृङ्गार हास्य और वीर रस का अच्छा सम वय हुआ है।

सिरी मडळ की मानाँ गूजरी नवर का झिणकार।
टाक तोल कर पाणी पीव रती भरयो अन खाय॥
दो चावळ को पक्यो पेटियो, तीज म छिक ज्याय।
चोथो चावळ खाय गूजरी पेट फाट मर ज्याय॥
मिरगलडी का नण गूजरी, भूँहा खिची कबाण।
जोबन जोर चढयो गूजरी, दूदाँ चढचा उफाण॥
चोटी बासिग नाग गूजरी, नाक सुव की चाच।
माथो भळका खाय गूजरी, ज्यू काइ चिलक काच॥
होठ पप का फूल गूजरी दाँत दाडू का बीज।
आळ की सी बीज गूजरी सावण की सी तीज॥
मु गफळी सी बणी आगळी, बेलण बेली बाँह।
मँगर बण्या मखतूल गूजरी, पेट पीपळ को पान॥
बाळ बाळ म मोती पोया कर सोळा सिणगार।
अटकी लीनी मटकी लीनी दही लियो सिर च्यार॥
साग लीनी हीरू छोकरी भई दिली नै त्यार।
सासू बरज सुसरो बरज बरज है भरतार॥
बरज देवर जेठ गूजरी बरज सो परवार।
आडासण पाडोसण बरज गाँव गळी की नार॥
मान कह्या मसतान गूजरी दिली सहर मत जाय।
दिली सहर मुगलाँ को थाणू राखैगा बिलमाय॥
क्यूँ मन बरज सासू सुसरो क्यू बरज परवार।
जलम लियो मैं घर गूजर क, बिणज करू ब्योहार॥

घाया थारा बिणज गूजरी, बैठ रहा घर मांय।
जिद मत कर मसतान गूजरी, थारं कुबद कमाय ।।
अमलदार क धक चढ़ं, थानं अम्मल मे गिट ज्याय।
सुलफवाज कै धक चढ़, थान भर सुलफी पी ज्याय ।।
छल मरद क धकं लड, थानं बांध पलं ले ज्याय।
पूंन तणू फटकारो लाग्या, तन म बळ पड ज्याय ।।
मतवाळै की मोज गूजरी, दिल की बा दरियाव।
कह्यो न मान्या नेक गूजरी, लाग्या घणू उमाव ।।
नीच पहरघा घूम घागरो, ऊपर दिखणी चीर।
हरे पाट की आंगी पहरी भइ दिलो नै भीर ।।
आयल बाज पायल बाज, बिछियां को खिणकार।
एक गळो मे नीसरी 'स वा सस गळया भिणकार ।।
रूप देख साऊकार का 'स कोइ, चलियो छोड बजार।
छोड ताखडी ताला चाल्या, छोड पलो पलदार ।।
बिणज भूलग्या बाणियुं स काइ बैल गुमाग्या जाट।
पनवाडीको पान भूलग्या, तेली की टूटी लाठ ।।
स्वामी अोगड नाथ मरघा अर बामण मरघा पचास।
घरबारी थोडा मरया स रडवां को अ्रत न पार ।।
टाबर टाळी वच गया स, बुडळां को होग्यो नास।
बामण बिणज वाणियां बिणज्या बिणज्यो सकल बजार ।।
तेलो बिणज तमाळी बिणज्या, गई मुगलां क वार।
रूप देख कर गूजरकी को, बोल्यो मुगल पठाण ।।
खडी खडी मसतान गूजरी, भरो राज को डाण।
घणं दिनां हू मोको पाया आज न चूंगो जाण ।।
जे थांन अब जाबा द्यू ता खुदा पीर की आण।
जद हट बोली गूजरकी वा, सुण आ मुगल पठाण ।।
खारग खोपरां ढाण लगं अर दूद दह्यां पर ढाण।
छाछ राबडी फिरूं बेचती, वयां को मागं डाण ।।
छोटी हूं मोटी हुई स मैं, इ दिल्ली कै मांय।
कदे न द्यू गी ढाण मियां मन भरू नाथ की आण ।।
के थांन घडी सिलावट स कोई, के थांन घडी सुनार।
के थान सांच ढाळतां 'स काइ भूल करी करतार।
ना मोय घडी सिलावट स कोई, ना मोय घडी सुनार ।।
जलम दियो मेर मायर बाप, अर रूप दियो करतार।
मेर रूप को के देख्या, तूं बडी नणद नै देख ।।

छोटी नणदल देख रांडका, कुवो खाड कर लय।
छोटी भाण न देख मियां तूं सीस फोड मर ज्याय।।
ग्रसी बरस की सास देख तूं कब्बर मे गड ज्याय।
डाए डूण सब जाए देस कोई कह मटकी का मोल।।
दमडा देखू रोकडी स तूं मतना कर मखोल।
छोटी मटकी का लाख टका, घर वडली का लख च्यार।।
गेल बगतो खाय बटाऊ घरवारी ल खाय।
सीतमीत खांवणियां थांसूं टको न खरच्यो जाय।।
सूका पाका पळक टूकडा ठडो पाणी पीय।
देख पराया दूद दही तूं, मना चलाव जीव।।
मोल माल सव जाएदेस तूं ग्राव हमारै लर।
धूम घागरो खोलदेस तूं तिलक सूथनी पर।।
पडद दाखल होय गूजरी बठी पढो कुरान।
वठी मोज उडावो गूजरी म्हैला कै दरम्यान।।
सावळ सावळ बोल मियां तूं मतना कावळ बोल।
ग्रबकै कावळ बोलतां स थारै मूं पर मारूं घोल।।
बानर कै उणिहार राडका घाटै तणूं लगूर।
न देख्यो तो देखलेस तूं तेरो काच म नूर।।
गलबल गलबल मत करस तूं मना बजाव गाल।
ऐसी मारूं लात कीस ज्यू हळ म ठोकी हाल।।
कँवर हमारा देख गूजरी हुरमां बीबी देख।
म्हैल माळिया देख हमारा ग्रबलख टट्टू देख।।
के देखूं तेरा कँवर मिया मर लरडयां तणां गुवाळ।
के देखूं तेरी हुरम मियां मरै नीर भरैं पणिहार।।
के देखूं तरा म्हैल तुरक मेर भस्यां का सा ठाण।
तेर सरीसा रामजिना मां, छाछ पीवैं सा साठ।।
की गूजर की डावडी स, तूं की गूजर की नार।
की सखसां कै कारण स, तूं करडा मर जुवाब।।
होरैं गूजर की डावडी स मैं चान्दै की घर नार।
दवर मेरो देवजो स बरछां को बांवणहार।।
सुसरो मेरो सूरमा'स कोद परण्यो गोळमदार।
जेठ बड की के बूज, फोजां को ढावणहार।।
भाई भतीजा घर की परग दुनियां मे सरनांव।
ग्राठ कोट छप्पन दरवाजा, बो गूजर को गांव।।
इजगर नै मत छेड मियां तूं मना बुलाव काळ।
सुवा पहर म कोट किला, तेरा करदी पणियां ढाळ।।

पवड़ा बोल सुण्या मानाँ का, मियूँ गयो भुँजळाय।
धक्क पर धक्का दियाँ'स, कोइ म्हैलाँ दई चढाय॥
जिण मरदाँ को कर्‌यो गीरवो, वाँ नै उर बुलाय।
थार मन की काडले स, कोइ जोरी ले अजमाय॥
जा ए हीरू छाकरी'स, गूजर नै वेग बुलाय।
उरल बास ह हला द, ज्यूँ परलै मे सुण ज्याय॥
चाली हीरू छोकरी स वा, नहो करी दमदार।
कोई पग धरती पर टिकिया, कोई टिकियो नाय॥
कै सोवै चान्नी दालदी'स, थानै क्याकी ग्राव नीद।
डूब मरण की बेळाँ वाजी, घुड़लाँ हारा जीद॥
छाछ बेचती गूजरी'स, वा मिरज लीनी डाट।
लाजण लाग्यो जानक'स, कोइ कुळ कै लाग्यो काट॥
काचो नीदाँ ओदक्यो स, जद कान पड़ी मणकार।
मार हुबड़खो ऊठियो स, बो ज्याँणू बिचर्‌यो नार॥
ग्रेंवळी सेंवळी बाँध पागड़ी झट बाँधी तरवार।
नोपत पर डको पड़यो स, कोइ गूजर होग्या त्यार॥
मुजा मुजा पर नरू बठ्या, चोसठ जोगणी लार।
गूजर हूँ गूजर अड्यो'स कोई दिल्ली तणै बजार॥
तिल गेरण नै जाग्या कोनी याळी देवी तिराय।
म्हैलाँ चढ चढ मिरजो देख, ग्राई बुरी बलाय॥
मैं जाण्यो कोइ हाली बाळदी, यो जबरो उमराव।
ईं गूजर की गूजरी'स, काइ दोरी राखी जाय॥
मड़ी चढी बीबी बोली, म्हे कर देस्याँ न्याव।
बीच बठाद्यो गूजरी'स काइ लड़ल्या दो यूँ जवान॥
हारणियें की माण भाणजी, जीतणियें की नार।
ताळा दे कर मिरजा हँसियो भलो चुकायो याव॥
छाछ राबड़ो पीवणियूँ बो के घालै रण घाव।
म्हे जीमाँ छाँ सकर मलीदा वद बाँवाँ तरवार॥
मार कूट गूजर न काडाँ, लेवाँ गूजरी राख।
पलो माला मिरज मार्‌यो लियो खुदा को नाँव॥
दूजा माला मारताँ स, नरूजी दियो उकाय।
सकर मलीदो बह गयो स अब छाछ राबड़ी चाख॥
झिडो लीन्यूँ खोस मिर्में को, दई दूर क भाँय।
तळ पजामू फाटग्यो'स कोइ टोपी उड़ती जाय॥
तळ मियूँजी ऊपर गूजर लोट-पळटा खाय।
घास फूस मू म स लीयूँ, मैं तेरी काळी गाय॥

छोटी नणदल देख राडका, कुवो खाड कर लय।
छोटी भांए नै देख मियाँ तू सीस फोड मर ज्याय।।
असी बरस की सास देख तू कब्बर मे गड ज्याय।
डाण डूण सब जाण देस कोई कह मटकी का मोल।।
दमडा देदू रोकडी स तू मतना कर मखोल।
छोटी मटकी का लाख टका, अर बडली का लख च्यार।।
गेल बगता खाय बटाऊ घरबारी ले खाय।
सीतमीत खांवणियाँ थाँसू, टको न खरच्यो जाय।।
सूका पाका पळक टूकडा ठडो पाणी पीय।
देख पराया दूद दही तू मना चलावै जीव।।
मोल माल सब जाणदे स तू आव हमार लर।
घूम घागरो खोलदे स तू तिलक सूथनी पर।।
पडद दाखल होय गूजरी बठी पढो कुरान।
वठी मोज उडावो गूजरी म्हैला क दरम्यान।।
सावळ सावळ बोल मियाँ तू मतना कावळ बोल।
अबकै कावळ बोलताँ स थार मूं पर मारू घोल।।
बानर क उणिहार राडका घाट तणूं लगूर।
न देख्यो तो देखले स तू तरो काच म नूर।।
गलबल गलबल मत कर'स तू मना बजाव गाल।
ऐसी मारू लात की स ज्यू हळ म ठाकी हाल।।
कँवर हमारा देख गूजरी हुरमां बीबी देख।
म्हैल माळिया देख हमारा अबलख टट्टू देख।।
के देखू तेरा कवर मिया मेर लरड्याँ तणाँ गुवाळ।
के देखू तेरी हुरम मियाँ मेर नीर भरै पणिहार।।
के देखू तेरा म्हैल तुरक, मर भैंस्याँ का सा ठाण।
तेर सरीसा रामजिना याँ छाछ पीवै सो साठ।।
की गूजर की डावडी स, तू की गूजर की नार।
की सखसाँ क कारण स तू करडा भर जुबाब।।
हीरै गूजर की डावडी'स मैं चान्द की घर नार।
दवर मेरा देवजी'स, बरछाँ को बांवणहार।।
सुसरो मेरो सूरमा'स, कोइ परण्यो गोळमदार।
जेठ बड की के बूज फाजाँ को ढाबणहार।।
भाई भतीजा घर की परग दुनियाँ म सरनाँव।
आठ कोट छप्पन दरवाजा बो गूजर को गाँव।।
इजगर न मत छेड मियाँ तू मना बुलाव काळ।
सुवा पहर म कोट किला, तेरा करदी पणियाँ ढाळ।।

मवडा बोल सुण्या मार्नां का, मियूँ गयो कुँजळाय।
धक्क पर धक्का दियां'स कोइ म्हैलां दई चढाय ।।
जिण मरदां को कर्यो गीरबो, बां नै उर बुलाय।
थारै मन की काडले स, कोइ जोरो ले अजमाय ।।
जा ए होरू छोकरी'स, गूजर न वेग बुलाय।
उरल वास हू हलो दे, ज्यूँ परलै म सुण ज्याय ।।
चाली होरू छोकरी'स बा, नहीं करी दमदार।
कोई पग धरती पर टिकियो, कोई टिकियो नाय ।।
के सोवै चांदां दालदी म, थानै वयाकी ग्राव नीद।
डूब मरण की वेळां वाजी घुडलां हारो जीद ।।
छाछ वेचती गूजरी'स, बा मिरज लीनी डाट।
लाजण लाग्यो जानकैं'स, कोइ कुळ कै लाग्यो काट ।।
काचो नीदां ग्रोदस्या स, जद कान पडी मणकार।
मार हुवडखो ऊठियो स बो ज्याणू विचरचो नार ।।
ग्रॅवळी-सॅवळी बांध पागडी झट वांधी तरवार।
नोपत पर डको पडघो स कोइ गूजर होग्या त्यार ।।
भुजा भुजा पर भरूँ बैठघा चोसठ जोगणी लार।
गूजर हूँ गूजर ग्रडघा स काइ दिल्ली तणै बजार ।।
तिल गेरण न जाग्यां कोनी थाळी देवी तिराय।
म्हैलां चढ चढ मिरजो देखै ग्राई बुरी बलाय ।।
मैं जाण्यो कोई हाली बाळदी यो जबरो उमराव।
इ गूजर की गूजरी स कोइ दोरी राखी जाय ।।
मडी चढी बीबी बोली म्हे कर देस्यां न्याव।
बीच बठाद्यो गूजरी'म, कोइ लडल्यो दो यूँ जवान ।।
हारणियें की माण भाणजी जीतणियें की नार।
ताळी दे कर मिरजो हँसियो भलो चुकायो न्याव ।।
छाछ रावडी पीवणियूँ बो, के घालै रण घाव।
म्हे जीमां छां सकर मलीदा वद बांवां तरवार ।।
मार कूट गूजर नै काडां लेवां गूजरी राख।
पलो मालो मिरज मारयो लियो खुदा को नांव ।।
दूजा मालो मारतां स, भरूँजी दियो उठाय।
सकर मलीदो वह गयो'स ग्रब छाछ रावडी चाख ।।
भिडो लीयूँ खोस मियें का, दई दून कै मांय।
तळ पजामू फाटग्यो'स कोइ टोपी उडती जाय ।।
तळ मियूँजी ऊपर गूजर, लोट पळटा खाय।
घास फूस मू मे ल लीयूँ -मैं-तेरी काळी गाय ।।

छोटी नणदल देख रांडवा, कुवो खाड कर लय।
छाटी भोंण न देख मियाँ, तू सीस फोड़ मर ज्याय॥
पसो बरस की सास देख तू कब्बर म गड ज्याय।
डाण डूण सब जाण देस काई कहू मटको मा माल॥
दमड़ा देख रोकडी स तू मतना कर मखोल।
छोटी मटकी का लाख टका, प्रर वडली का लख च्यार॥
गेल बगतो खाय बटाऊ परवारी ल खाय।
सौंतमीत खांवणियाँ थांसू, टको न खरच्यो जाय॥
सूका पाका पळक टूकड़ा, ठडा पाणी पीय।
देख पराया दूद दही तू मना चलावै जीव॥
मोल माल सब जाणदे'स तू प्राव हमारै लर।
घूम घागरो खोलदे स, तू तिलक सूथनी पर॥
पडद दाखल होय गूजरी वठी पढ़ो कुरान।
बठी मोज उडावो गूजरी म्हैलां क दरम्यान॥
सावळ सावळ बोल मियाँ तू मतना कावळ बोल।
प्रबकै कावळ बोलतो स थार मू पर मारू धोल॥
बानर क उणिहार राडका घाट तणू लगूर।
न देख्यो तो देखले स तू तरा काच म नूर॥
गलबल-गलबल मत कर'स तू मना बजाव गाल।
ऐसी मारू लात की स, ज्यू हळ म ठोकी हाल॥
कँवर हमारा देख गूजरी, हुरमाँ बीबी देख।
म्हैल माळिया देख हमारा, प्रबलख टट्टू देख॥
के देखू तेरा कँवर मियाँ मर लरडयाँ तणाँ गुवाळ।
के देखू तेरी हुरम मियाँ मेर नीर भरै पणिहार॥
के देखू तरा म्हैल तुरक मेर मस्याँ का सा ठाण।
तेर सरीसा रामजिना याँ, छाछ पीवै सो साठ॥
की गूजर की डावडी'स, तू की गूजर की नार।
की सखसा क कारण स तू करडा मर जुबाव॥
हीरै गूजर की डावडी स, मैं चान्द की घर नार।
देवर मेरो देवजी स, बरछाँ को बांवणहार॥
सुसरो मेरो सूरमा'स कोइ परण्यो गोळमदार।
जेठ बड की क बूज फोजाँ को ढावणहार॥
भाई भतीजा घर की परग दुनियाँ म सरनांव।
प्राठ कोट छप्पन दरवाजा बो गूजर को गाँव॥
इजगर न मत छेड मियाँ तू मना बुलाव काळ।
सुवा पहर म कोट किला, तेरा करदी पणियाँ ढाळ॥

भ्रवडा बोल सुण्या मानाँ का, मियूँ गयो भूँजळाय ।
धक्क पर धक्का दिया'स, कोइ म्हैलाँ दई चढाय ॥
जिण मरदाँ को कर्‌यो गीरबो, वाँ नैं उर बुलाय ।
धार मन की काडले'स, कोइ जोरो ले भ्रजमाय ॥
जा ए हीरू छोकरी'स, गूजर नैं वेग बुलाय ।
उरल वास हू हेलो दे, ज्यूँ परलै मे सुण ज्याय ॥
चालो हीरू छोकरी'स वा, नहीं करी दमदार ।
कोई पग धरती पर टिकियो, कोई टिकियो नाय ॥
के सोवै चाँगाँ दालदी'स, थानैं क्याकी भ्राव नीद ।
डूब मरण की वेळाँ बाजी, घुडलाँ डारो जीद ॥
छाछ वेचती गूजरी स, वा मिरज लीनी डाट ।
लाँजण लाग्यो जानकँ'स, कोइ कुळ क लाग्यो काट ॥
काची नीदाँ भ्रोदक्यो स जद कान पडी भणकार ।
मार हवडको ऊठियो'स बो ज्याणू विचरयो नार ॥
मेंवळी-सवळी बाँध पागडी झट वाँधी तरवार ।
नोपत पर डको पडयो स, कोइ गूजर होग्या त्यार ॥
भुजा भुजा पर भैंरू बठया, चोसठ जोगणी लार ।
गूजर हूँ गूजर भ्रडयो'स, कोई दिल्ली तण बजार ॥
तिल गेरण नैं जाग्याँ कोनी थाळी देवी तिराय ।
म्हैलाँ चढ चढ मिरजो देखैं भ्राई बुरी बलाय ॥
मैं जाण्यो कोई हाली बाळदी यो जबरो उमराव ।
इ गूजर की गूजरी'स कोइ दोरी राखो जाय ॥
मडी वठी बीबी बोली म्हे कर देस्याँ न्याव ।
बीच बठाद्यो गूजरी स, कोइ लडल्यो दोयूँ जवान ॥
हारणियें की माण भाणजी जीतणियें की नार ।
ताळी दे कर मिरजो हँसियो मलो चुकायो याव ॥
छाछ राबडी पीवणियूँ बो, के घालै रण घाव ।
म्हे जीमाँ छाँ सकर मलीदा, वद बाँवाँ तरवार ॥
मार कूट गूजर न काढाँ लेवाँ गूजरी राख ।
पलो मालो मिरज मारयो लियो खुदा को नाँव ॥
दूजो मालो मारताँ स भैंरूजी दियो उकाय ।
सकर मलीदो बह गयो'स भ्रब छाछ राबडी चाख ॥
भिडो लीन्यूँ खोस मियें को, दई दून क माँय ।
तळै पजामू फाटग्यो स कोइ टोपी उडती जाय ॥
तळ मियूँजी ऊपर गूजर लाट-पळेटा खाय ।
मैं वेरी काळी गाय ॥

जिया मोत मत मरा गूजरी, करूँ घरम की भाए।
गूजरक न पागडी'स, कोइ थानै लेयू वेस ॥
जायो जामतो गुण मान थारा, मानौं मेट कळेश।
जीती मानौं गूजरी'स बो हारयो मिरजो खान ॥
दिल्ली तण बजार मे'स, बा ढोल बजाती जाय।
दातारां मे परगटी'स बा झूजारां म नांव ॥
सोळा बरस मे माना गूजरी करगी ग्रम्मर नांव।

नोट—श्री गणपति स्वामी के सग्रह से बिरला कालिज के सौजन्य से प्राप्त